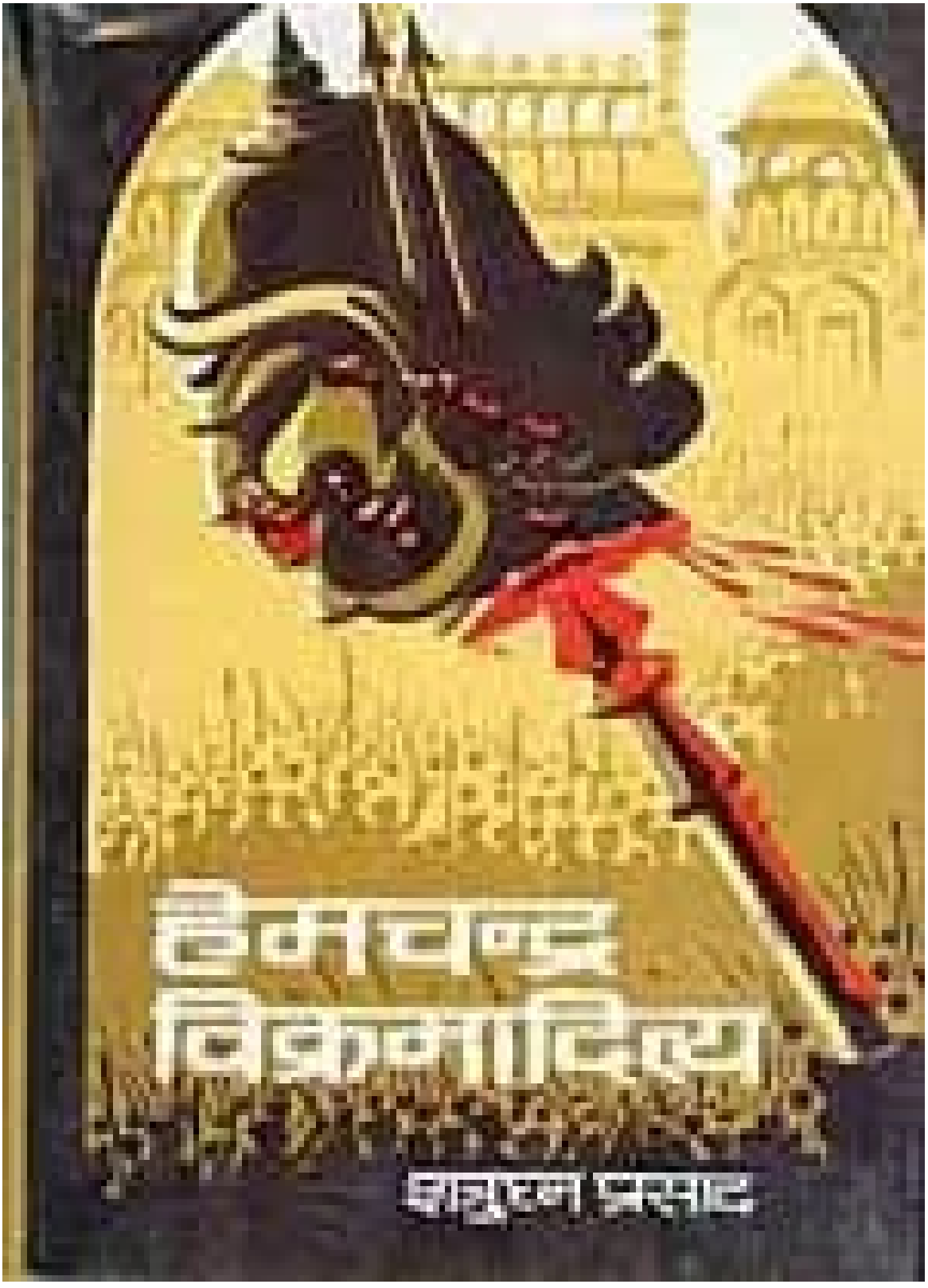
বিক্রমাদিত্য
আশুতোষ মুখোপাধ্যায়

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

इतिहास का यह सत्य अभी तक उपेक्षित रहा है। अपने सम्पूर्ण द्वन्द्वों और सीमाओं के साथ यह सत्य इस उपन्यास में साकार हुआ है। इस सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता, सहमति-असहमति पर चर्चा हो सकती है। सुधी समीक्षकों के प्रत्येक शब्द को सुनना-समझना चाहूंगा। लिखना है तो सुनना-समझना भी है।

- शत्रुघ्न प्रसाद

एक

रेवाड़ी के पास का गांव। पूरब में सूरज का गोला झलक उठा। पश्चिम में चांद पीला पड़ गया। अंधेरा उजाले में घुलने लगा। सारा गांव जग उठा। उत्तर में नाथपंथी मठ खड़ा था। उधर से शृंगी की ध्वनि आयो। गांव के युवक उधर ही चल पड़े। इन युवकों में एक हेमचन्द्र भी था, जिसे सभी हेम् कहते थे।

नाथपंथी योगी शिवनाथ ने शृंगी बजाना बन्द कर दिया। हाथ में त्रिशूल लेकर युवकों का अभिनन्दन किया गया। युवकों ने 'जय गुरु गोरखनाथ' का स्वर उच्चारा। योगी ने आशीष दी। सबके शीश झुके।

योगी बोल उठे -- 'इस संसार के जीवन को जीना हो या साधक बनना हो तो शरीर और मन को बलवान् बनाओ। हाथों में शूल और त्रिशूल हों। नहीं तो, सब उजड़ जाएगा। केवल रोना रह जाएगा। जीवन रोना नहीं, हंसना है जैसे आकाश में सूरज हंसता रहता है।'

सबके हाथों के दण्ड और शूल ऊपर उठ गए। इन सबके ऊपर योगी का त्रिशूल था। त्रिशूल और शूल की नोकों पर लाल किरणें झिलमिलाने लगीं। योगी ने एक बार सबको देखा। मन सन्तुष्ट हुआ। क्षण भर के बाद गम्भीर स्वर सुनाई पड़ा – 'पहले आसन और प्राणायाम का अभ्यास हो।'

मठ के मैदान में पच्चीस युवक आसन का अभ्यास करने लगे। हेम अपने प्रिय साथियों - धर्मपाल और खेमराज के साथ अपने अभ्यास में आगे बढ़ रहा था। योगी प्रसन्न थे। आसन के बाद प्राणायाम करते समय हेम का मन टिक नहीं सका। बार-बार श्मशान में चिता की लपट को देखने लगता। लपटों के बीच पारो का मुख झलक उठता।

वह अशान्त हो उठा। उसने किसी प्रकार प्राणायाम की क्रिया को पूरा कर लेना चाहा। मन कहता कि लपटों में पारो को देख लो। राख होती जा रही पारो की अन्तिम झलक ले ही लो।

योगी निकट आ गए थे। उन्होंने हेमू की चंचलता का अनुमान कर लिया। स्नेह से थोड़ा डांटा, थोड़ा समझाया। फिर शूल के अभ्यास के लिए आदेश दे दिया।

श्रृंगी का स्वर गूंजा। सभी उठकर खड़े हो गए। सबके हाथों में शूल चमकने लगे। योगी के आदेश के अनुसार शूल का अभ्यास होने लगा। हेमू का मन फिर भटकने लगा। उसे लगा कि खवास खां का सिपहसालार पारो की पीठ में तलवार को नोक चुभो रहा है। वह आवेश में आ गया। शूल लेकर उछलना चाहा। योगी दिखाई पड़ गए। वह सम्भल गया। मन का भटकना रोक दिया।

गांव के कुछ अधेड़ और बूढ़े टहलते-टहलते मठ के पास आ गए। गांव के युवकों के शस्त्राभ्यास को देखने की उत्कंठा से खड़े हो गए। कुछ को अच्छा लगा । कुछ को अद्भुत लगा। एकाध बुदबुदा उठे कि यह नाथपंथी योगी विचित्र हैं। सबको योग और शस्त्र की शिक्षा दे रहे हैं। सभी तो अधिकारी नहीं हैं। शास्त्र की उपेक्षा कर रहे हैं। वर्ण और जाति का ध्यान नहीं रखते।

ऐसे लोग अपने उजड़े हुए गांव को देखकर शास्त्र की बात बोल नहीं सके। खुलकर विरोध नहीं कर सके। बुदबुदा कर रह गए। युवकों का अभ्यास चलता रहा।

आध घंटा के बाद शंख बजने लगा। आज का अभ्यास पूरा हुआ। सभी योगी को प्रणाम कर लौटने लगे। हेमू धर्मपाल और खेमराज के साथ लौट रहा था। उसने कहा-'जब-तब मन भटक जाता है। क्या करूं?'
धर्मपाल ने समझाया-'धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा, हेमू! योगी जी के त्रिशूल की नोक पर मन को टिकाने का यत्न करो।'

खेमराज ने बताया-'मन तो चंचल होता ही है। इसमें घबराना क्या! "धीरे-धीरे ही वश में आएगा।'

हेमू ने सिर हिलाया।

खेमराज ने स्मरण दिलाया कि आज उसे रेवाड़ी जाना है। हेमू ने उत्तर दिया-'वह धर्मपाल के साथ रेवाड़ी जाएगा। वहां से 'पृथ्वीराज रासो' के दो खंड लायेगा। उसे याद है।'

देवली गांव की धरती पर रात उतरने लगी। संध्या में हेमू धर्मपाल के साथ रेवाड़ी से लौट आया था। 'रासो' के दो खंड मिल गए थे। अंधकार में गांव का स्वरूप छिपने लगा। उधर आकाश में तारों के चेहरे चमकने लगे। गांव में द्वार-द्वार दीप जलने लगे किसी-किसी घर की खिड़की से प्रकाश का तार खिंचा चला आता था। जब-तब कुत्ते भौंकने लगते। खेमराज हेमू के घर जा पहुंचा। धर्मपाल वहीं था। हेमू दीपक के
प्रकाश में रासो के छंद पढ़ने लगा। दोनों साथियों की आंखों में एक चमक थी। हेमू
बड़े उत्साह से ओजस्वी स्वर में पाठ कर रहा था-

हिन्दुवान-थान उत्तम सुदेश । तहं उदिग द्रुग्ग दिल्ली सुदेश।।
संभरि-नरेस चहुआन थान । पृथिराज तहां राजंत भान।।
संभरि नरेस सोमेस पूत । देवत्त रूप अवतार धूत।।

'लड़ाई की कथा सुनाओ, हेमू!...पृथिराज और सुलतान की लड़ाई ।' खेमराज ने अनुरोध किया।

'जैसे कल मैंने गोरा-बादल की वीरता का गीत सुनाया था।' धर्मपाल ने संकेत कर दिया।

'जब हम भोर और सांझ में शूल का अभ्यास कर रहे हैं तो युद्ध की कथा सुनना भी सही है ।' हेमू ने समर्थन किया।

'वैसे भी हम हर बरस इस धरती पर लड़ाई ही देख रहे हैं।' खेमराज ने कहा।

'पृथ्वीराज के बाद से तो लड़ाई चल ही रही है। हम चाहकर भी लड़ाई के दमामे-नगाड़े और गरजन-तरजन से दूर रह नहीं पाते। खेत की फसल सिहरती रहती है। बुढ़े-बच्चे सहमे-सहमे रहते हैं। स्त्रियां घर में दुबकी रहती हैं।' धर्मपाल के शब्दों में पीड़ा थी।

'समय ने सबको मार-काट सह लेने के लिए समझा दिया है।' यह खेमराज के शब्द थे।

'तो सुनो चौहान-सुलतान का युद्ध-वर्णन...

चाहुआन कंमान खंचिलीने सु पंच शर।
बख्खर पख्ख र सँ पलान, असु ढर्यो मीर धर।।
दूजे बान तकंत, तक्कि भंज्यो खां-गौरी।
तीजै बान तकंत, साहि भंजी बिय जोरी॥

महाकवि चंद लिखते हैं कि पृथ्वीराज ने पांच बाण हाथ में ले कमान को खींचा। प्रथम बाण से पाखर को जर्जरित कर दिया। जीन सहित शाह के घोड़े को बेध कर जमीन पर गिरा दिया। द्वितीय बाण से स्वयं शाह को घायल कर दिया। तृतीय बाण ने गोरी के दो सरदारों को मार गिराया।'

द्वार पर हेमू के चाचा करणमल आ गए थे। तीनों नौजवानों की कथा-वार्ता सुनने लगे। उन्हें वह सब अच्छा नहीं लगा। वे बोल उठे'हेमू बेटे! तुमसे कुछ कहना है।'

चाचा के शब्दों से छंद का बहाव रुक गया। अरुचिकर मौन छा गया। हेमू ने चाचा की ओर देखा। धर्मपाल और खेमराज रासो के शब्दों पर नजर दौड़ाने लगे क्योंकि वे चाचा से नजर बचाना चाहते थे।

हेमू! दिन-रात यही सब होता रहेगा या कुछ काम-धंधा भी होगा?' चाचा ने प्रश्न कर दिया।

'उसके बिना घर-द्वार कैसे चलेगा, चाचा जी! दो-दो बार व्यापार का श्री गणेश किया। लड़ाई सब मटियामेट कर देती है।' हेमू ने उत्तर दिया।

'इसीलिए तलवार भांजना शुरू कर दिया है। रोटी-दाल के लिए तराजू को सम्भालना है, बेटे! वणिक-पुत्र हो।'

'चाचा जी! घर में रहें या मठ में, रास्ता चलें या खेती-व्यापार करें, शाहों की लड़ाई से रक्षा के लिए माथा को सोचना पड़ता है और हाथों को कुछ करना पड़ता है।'

'उसके लिए पिंगल पढ़ना है और तलवार भांजना है। रोटीदाल को जटाना मेरा काम है। यही न!'

'चाचा जी! सोच रहा हूं कि काम-धन्धे के लिए बाहर ही जाना पड़ेगा। यहां व्यापार चल नहीं सकता।'

'भैया वैष्णव साधु हो गए। वे वृन्दावन में झांझ-करताल बजा रहे हैं। और तुम तलवार भांज रहे हो!'

'चाचा जी! मैं आप पर भार बनना नहीं चाहता। मैं पिताजी से मिलकर उधर ही काम-धंधा शुरू करूंगा।'

'जैसा तुम्हारा विचार! जवान बेटे का धरम-करम की ओर ध्यान दिलाना मेरा फर्ज है।' यह कहकर वे घर के भीतर चले गए।

धर्मपाल और खेमराज ने ऊंची सांस ली। फिर दोनों ने एक साथ कहा-'हेम! चाचा जी की बातों से घबराकर गांव छोड़ने का निर्णय भी हो गया!...गांव के इतने नौजवान कुछ

सीख रहे हैं। तुम्हारे चले जाने से रंग में भंग हो जाएगा।

'संसार का काम कभी नहीं रुकता, मित्रो!.. केवल मुझे जाना है। तुम दोनों यह अभ्यास कराते रहोगे।' हेमू ने समझाया।

'तुम्हारे जाने के बाद उत्साह तो ठण्डा पड़ जाएगा। सबको मिलाकर चलना बड़ा कठिन काम है, हेमू!' धर्मपाल ने अपनी शंका रखी।
'चाचा की बात मानकर यहीं व्यापार करो, हेमू! कहां भटकते रहोगे।' खेमराज ने अपनी राय दी।

'मुझे एक बार पिताजी से मिलने वृन्दावन जाना है। वर्षों से भेंट नहीं हुई है। मां इस संसार से दूर जा चुकी हैं। पिताजी भक्तिलोक में विचर रहे हैं। और मैं भटक रहा हूं।'

'अपने देवली गांव में घूमना-फिरना भटकना है! न लाहौर गए और न दिल्ली। न अजमेर गए और न आगरा। अपने घर से मेरे घर गए और वहां से मठ। कभी-कभी पारो के गांव की ओर टकटकी लगाकर देखते रहे। यह भटकना है?' खेमराज बोला।

'खेमराज! हेमू का मन भटक रहा है। अपने गांव में अपने साथ रहकर भी भटक रहा है।
पारो की मौत के कारण मन शान्त नहीं है।' धमपाल ने गम्भीर स्वर में बताया।

'हां, यह बात हो सकती है। पर पारो को मन में कब तक बैठाए रहोगे?' खेमराज ने कहा।

'पारो को भूलना कठिन है, खेमराज!' हेम् ने उत्तर दिया।

भूलना पड़ेगा, हेम्! यही तो संसार है । जीने के लिए कुछ भूलना पड़ता है ।' धर्मपाल ने समझाने का प्रयत्न किया।

'किसी से मन का लगाव, किसी का अत्याचार और फिर खून से सनी हुई राख...इस स्थिति में मन की गति को कौन समझे और कैसे रोके!' हेमू ने पीड़ा से कांपते स्वर में कहा।

'ऊपर से रोटी-दाल के अरजने का आदेश पीड़ा तो बढ़ेगी ही।' खेमराज ने सहानुभूति दर्शायी।

'चाचा जी का कहना ठीक ही है। इसलिए भाग्य का खेल देखने के लिए रेवाड़ी से थोड़ी दूर जाना है। पिताजी से मिलना आवश्यक है। मैं जाऊंगा।'

'वृन्दावन हो आओ। पर उधर रह नहीं जाना। तलवार के बदले झांझ बजाना मत शुरू कर देना।' खेमराज ने अनुरोध किया।

'पंजाब का नौजवान अपनी मिट्टी को भूल नहीं जाता, खेमराज! अपना गांव कैसे छूट जाएगा? मैं करताल नहीं, कृपाण की चमक देखने लगा हूं। अब तलवार के साथ चलना सीख

रहा हूं। योगी जी का आदेश मान लिया है।'

'बस, यही उचित है, हेमू! वृन्दावन कब जाना चाहते हो?' धर्मपाल ने पूछा।

'कल भोर में ही जाना चाहता हूं। चाचा जी की आवाज को समझ लिया है। तुम दोनों को यह अभ्यास जारी रखना है।'

वह तो चलेगा! अब शूलों का चमकना नहीं रुकेगा।' धर्मपाल ने भरोसा दिलाया।

'हम दोनों भोर में विदा करेंगे।' खेमराज ने उठते हुए कहा।

धर्मपाल और खेमराज दोनों अपने-अपने घर की ओर चल पड़े। हेमू दीया दिखाता रहा। दीये की लौ कुछ दूर जाकर रुक गई । केवल उनके पदचाप सुनाई पड़ते रहे। वह दीप लिये अपने दालान में आ गया। बिछावन पर लेट गया। आंखें मूंद लीं। कुछ सोचने लगा-वणिक-पूत्र का कर्म-धर्म यापार और फिर ब्याह - मानो भटकना और थम जाना। जीवन एक पशु है जिसे एक खंटे से बंध जाना है? या जीवन सूर्य का रथ है जिसे उजाले और अंधेरे में चलते ही जाना है? पर मन तो पारो की पीड़ा से विकल है। वह क्या करे, क्या नहीं करे!

पंजाब और दिल्ली शाहों-सुलतानों की तलवारों से घायल हैं। हमेशा लड़ाई होती रहती है। कभी शांति नहीं। खेती और व्यापार उजड़ते रहते हैं । साधु-संन्यासी और गृहस्थ सभी हाहाकार करते रहते हैं। आंखों के सामने पारो की चिता जल रही है। रक्त से लथपथ पारो की पीड़ा को अग्निदेवता ने शान्त कर दिया। पर मेरी पीड़ा बढ़ती जा रही है।

गुरु नानक जी ने मुगलों के सरदार बाबर के आक्रमण से दुःखी होकर कहा है-'बाबर पाप की बारात लेकर काबुल से चढ़ आया है। बलात् भारत रूपी दुल्हन का हरण करना चाहता है।' सचमुच गुरुदेव नानक जी ने सबको भक्ति में भुला नहीं दिया है। सबको जगा भी दिपा है। पंजाब की प्रजा जग रही है। सबको एक नया विश्वास मिल रहा है।

अफगान शेरशाह के राज्य में थोड़ी शान्ति रही है। राज के प्रबन्ध में थोड़ा सुधार हुआ है। किसानों को थोड़ा चैन मिला है। परन्तु सबको जजिया नाम का खिराज तो देना ही पड़ा है। यह पीड़ा तो नहीं मिट सकी है। हम दूसरे दर्जे के रियाया हैं। इसी के बेटे इस्लामशाह यानि सलीमशाह के राज्य में मेरी पारो की मौत हो गई।
गांव के निहत्थे लोग बचा नहीं सके।

उधर वृन्दावन-गोकुल में श्रीकृष्ण की भक्ति की मुरली बज रही है। मन कहां रमे? मन की भटकन और रोटी-दाल का सवाल! पिताजी से एक बार मिलना है।

दो

पूरब की लाली देख पंछी कलरव करने लगे। देवली गांव का सारा आकाश पंछी समूह के कलरव से गूंज उठा। आकाश के नीचे घर-घर से बूढ़ों का भजन सुनाई पड़ने लगा। उधर नाथपंथी मठ में गोरखनाथ की वाणी का पाठ शुरू हुआ।

हेमचन्द्र (सबका हेम) कन्धे में झोली लटकाए घर से निकला। द्वार पर खड़े वाचा करणमल के चरण छुए। पड़ोस के द्वार खल गए। सबको झुककर प्रणाम किया। उसी समय उसके मित्र धर्मपाल शर्मा और चौधरी खेमराज आ गए। डबडबाई आंखों में विदाई का भाव लिये पास आए। हेमू अपने को रोक नहीं सका। वह उनसे लिपट गया। कुछ क्षणों के लिए समय का रथ मानो रुक गया। केवल हृदय की धड़कनों की गति का अहसास होता रहा। आकाश में पंछियों के गीतों के साथ-साथ नाथपंथी मठ से आता एक स्वर मंडरा रहा था-

गगन सिषर महि सबद प्रकास्या,
तहं बुझै अलष विनांणी।

थोड़े-सी देर के बाद श्रृंगी की ध्वनि सुनाई पड़ी। हेमू ठिठक गया। धर्मपाल और खेमराज उधर ही देखने लगे। हेमू की आंखों के आगे योगी शिवनाथ और उनके त्रिशूल झलक उठे।

श्रृंगी की ध्वनि बन्द हुई। गांव के युवक शूल लिये उधर जाने लगे। हेमू देखता रहा। धर्मपाल और खेमराज ने सोच लिया कि आज वे नहीं जाएंगे।। हेमू बोल उठा- 'योगी का बुलावा आ गया। अब दोनों को उधर जाना है। मेरी ओर से क्षमा मांग लेना, धर्मपाल !'

'आज तो हम हेम को विदा करेंगे। धर्मपाल ने खेमराज की ओर देखकर कहा।

खेमराज ने सिर हिला दिया। दोनों साथ-साथ चलने लगे।

'हम जीवन भर साथ-साथ चलेंगे, धर्मपाल! पर शस्त्रों का अभ्यास जरूरी है।' हेमू ने समझाया।

'कहो तो हम मथुरा भी साथ-साथ चलें। तीर्थ भी हो जाएगा।' खेमराज ने प्रस्ताव कर दिया।

अभी पहला धर्म शस्त्रों का अभ्यास है, खेमराज! दोनों को रुकना है। नहीं तो सारे नौजवान बैठ जायेंगे। हेमू ने प्रस्ताव को बड़े स्नेह से ठुकरा दिया।

दोनों मान भी गए। दोनों गांव की सीमा तक हेमू के साथ गए। हेम् ने उन्हें लौट जाने का अनुरोध किया। दोनों आधे मन से लौटे। पर वे बार-बार पीछे देख लेते थे।

हेम् की आंखें भी पीछे मुड़ जाती थीं। आंखें मिलती थीं। आंखों में अलग होने का दर्द छलक उठता था। क्षण भर के लिए पैर रुक जाते थे। फिर दूसरे क्षण चाचा को फटकार गूंजने लगती थी। तीसरे क्षण हेमू को लगता था कि वृन्दावन में पिताजी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वहां पहुंचना है। अब रुकना नहीं है। चलते जाना है। और उसके पैर चल पड़े। धूप निकल आई थी।

हेमू ने देखा कि पश्चिम की तरफ बादल के टुकड़े मंडराने लगे हैं। उधर ही तो पारो का गांव है। दो वर्ष बीत गए। उसे बसंत के मेले में देखा था। उसने भी देखा था। अपनी सहेलियों के साथ थी। उसका भाई भी था। उसने कुछ समझा था। ब्याह की बात चली। बात पक्की हो गई थी। मन में बड़ा उत्साह था। मेले की एक झलक आंखों की उपासना बन गई थी। धर्मपाल और खेमराज दिन-रात विनोद करन लगे थे। लगता था कि जीवन के सरोवर में कमल खिल उठा है। भौंरों का गुंजन शुरू हो गया है। हंस अपने सुनहले डैने समेटे तट पर आ गए हैं। कभी लगता था कि वह वसंत के मेले में पारो के साथ घूम रहा है। शहनाई वाले ने उन दोनों को घेर लिया है। शहनाई के संगीत में वे दोनों बंध गए हैं। मेले की भीड़ नहीं रह गई है। केवल वे दोनों ही हैं और शहनाई के सुर हैं।

सहसा समाचार मिला कि अफगान बादशाह सलीमशाह सूर का सरदार खवास खां बागी बनकर पंजाब की ओर जा रहा है। वह गांव को उजाड़ता चला गया। उसके सिपहसालार ने पारो को पकड़ना चाहा। उसने उसी के खंजर से आत्महत्या कर ली। खून और मिट्टी ने
पारो को ढक दिया। खवास खां चला गया। उजड़े हुए गांव में प्राणहीन शव पड़े हुए थे। मनहूस सन्नाटे में चीख फैल रही थी। वह दौड़कर गया, साथ में धर्मपाल और खेमराज थे। चारों तरफ सन्नाटा था। खून से लथपथ लाशें थी। प्राणहीन पारो का मुखड़ा कुछ कह रहा था। उसने साहस के साथ अपनी प्रतिष्ठा बचा ली थी। उसके अंतरमन ने चाहा कि वह इस साहस पर न्यौछावर हो जाए। उसे फूलों से सजा दे, और आंखों के सामने से ओझल न होने दे।

चिता धधक उठी। उसका हृदय भी धधकने लगा। वह कभी आगरे की ओर अपनी आग को उड़ेल देना चाहता था। और कभी लाहौर की ओर। पर चिता की आग में केवल पारो जल रही थी। लपटें ऊपर उठीं। लेकिन लाहौर और आगरा दोनों बहुत दूर थे।

वह धर्मपाल और खेमराज के साथ चिता की राख लेकर लौट आया। उसकी आग को चाचा जी समझ नहीं सके। उसकी उदासी को पढ़ नहीं पाए। समझाते जरूर थे। वह समझ नहीं पाता था। दिन कट रहे थे। धर्मपाल और खेमराज बातचीत से मन को बहलाने का यत्न करते थे। यह गांव भी उजड़ चुका है। हुमायूं और शेरशाह की लड़ाई के समय उनकी फौज ने इसे रौंद दिया था। गरीब गांव क्या करता! आह भरकर रह जाता। युद्ध और उसके विनाश को भूला नहीं जा सकता। युद्ध की छाप गांव के जीवन पर ऐसी पड़ती कि बरसों तक इसे कोई मिटा नहीं पाता।

शाही फौज, घोड़ों की टापें, नगाड़े, बेरहम तीर-तलवारों का टूट पड़ना, मौत की चीखें और गांव का विनाश इनसे बचाव कैसे हो? यह जीवन की कठोर सच्चाई है। पारो कितनी पारों का अपहरण या मृत्यु का आलिंगन · खेती-व्यापार का उजड़ जाना गांव छोड़कर भागना-यही भाग्यलेख बन गया है। इस भाग्यलेख से टकराने के लिए अपने गांव

में नाथपंथी मठ के मैदान में गांव के नौजवान शूल का अभ्यास करने लगे हैं। योगी का त्रिशूल सबमें विश्वास पैदा करने लगा है। कुछ लोग इसे बचकानी बात समझ रहे है। कुछ इसे संकट का बुलावा मान रहे हैं। पर योगी शिवनाथ त्रिशूल उठाकर नौजवानो का स्वागत करते हैं। कितना अच्छा लगता है।

वह वृन्दावन जा रहा है गांव छोड़कर। उसका मन भटकता रहा है। चाचा जी उसके मन को समझ नहीं पाते। उनकी अपनी समस्या है। अपना संसार है। वे अपनी सीमा में बन्द हैं। वे भी क्या करें!

सूरज शीश पर चमक रहा था। किसान खेत में हल चला रहे थे। कुछ पेड़ों की छाया में बैठकर विश्राम कर रहे थे। आषाढ़ का दूसरा पक्ष था। एक बार वर्षा हो चुकी थी। बादलों का आना-जाना चल रहा था। हेमू ने देखा कि वह बड़ी सड़क पर आ गया है। इसे ही 'सड़के-आजम' कहते हैं। इसे शेरशाह ने बनवाया था। यह सड़क आगरा की ओर जा रही थी। शायद यही सड़क मथुरा की ओर भी जाएगी। वह आगे पूछ लेगा। वह थकान और भूख महसूस कर रहा है। सामने सराय है। पेड़ों की सघन छाया है।

हेमू सराय के दरवाजे पर पहुंच गया। वह अफगान बादशाह शेरशाह के इन्तजाम को अपनी आंखों से देखने लगा। दूर तक लम्बी सड़क है। दोनों ओर पेड़ हैं। सराय में आराम हो सकता है। साथ में डाक घर है। घोड़े पर हरकारा डाक ले जा रहा है। दूसरा घोड़ा भी मौजूद है। सराय के भीतर यात्री विश्राम कर रहे हैं। उसे यह बड़ा अच्छा लगा। वह भी सराय के भीतर जाने लगा। दरबान ने उससे पूछताछ की। उसे ठहरने की जगह मिल गई। वह सराय के पीछे हरे-भरे बाग में कुएं पर पहुंचा। उस कुएं से पानी भर कर हाथ-पैर धोये। वहीं एक यात्री से मालूम हुआ कि यह सराय नयी-नयी बनी है। बादशाह सलीमशाह सूरी ने बनवाई है। यहां भोजन का भी प्रबन्ध है। परन्तु वह तो अपनी झोली में रोटी-साग लेकर चला था। उसे हिन्दुओं के भोजनालय से रोटी-दाल की जरूरत नहीं थी।

हेमू ने थोड़ा विश्राम कर भोजन किया। फिर सराय के कोने में गमछा बिछाकर लेट गया। झपकी लग गई। पास में बनी मस्जिद से अजान की आवाज आई। वह उठ बैठा। आसपास अनेक यात्री खर्राटे भर रहे थे। उनमें से कई एक अजान की आवाज पर उठ बैठे। वह कुएं पर गया। शीतल जल पीकर तृप्त हुआ। फिर अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

कभी बादलों की छाया और कभी पेड़ों की छाया से गुजरता हेम आगे बढ़ता गया। आगे की सराय में पूछताछ कर उसने रास्ता बदल लिया। अब वह मथुरा की राह पर चल पड़ा। मथुरा-वृन्दावन की ओर जाने वाले तीर्थ-यात्रियों के छोटे-बड़े झुंड दिखाई पड़ने लगे। वह भी उनके साथ हो गया। पुरुषों से सुरक्षित घेरे में स्त्रियां चेहरा छिपाकर चल रही थीं। वे बूढ़ी और अधेड़ उम्र की स्त्रियां थीं। चूंघट में ही श्रीकृष्ण का नाम ले रही थी। कुछ भजन गा रही थीं। पुरुषों के हाथ में झांझ-करताल के साथ डंडे भी थे। कन्धे पर झोले थे। कुछ के सिर पर कम्बल-बिछावन थे। ये झुंड चारों ओर देखते हुए और सुरक्षा का ध्यान रखते हुए चल रहे थे।

कोई कह रहा था- वृन्दावन में भक्तों का संगम है। कोई बता रहा था-गोकल-गोवर्धन

में सन्तों का समागम है। कोई वल्लभाचार्य और सूरदास का नाम ले रहा था। कोई हितहरिवंश की प्रशंसा कर रहा था। एक ने हितहरिवंश का पद गुनगुनाना शुरू कर दिया। दूसरे ने सूरदास के पद को गाना आरम्भ कर दिया।

हेमू की उत्कण्ठा बढ़ गई। वह एक नये लोक में पहुंच रहा था। मथुरा, वृन्दावन और यमुना जी...और उस पार गोकुल, गोवर्धन, बरसाना श्रीकृष्ण की लीलाभूमि। सचमुच पिताजी भाग्यशाली हैं। परन्तु वे घर-द्वार और गांव की सारी समस्याओं से अलग हो गए हैं। कोई चिन्ता नहीं है। माया से मुक्त हैं। तो क्या यह सब माया है? भ्रम है? सत्य नहीं है? ऐसा तो नहीं है! घर-द्वार और गांव की समस्याएं प्रत्यक्ष सत्य हैं। भ्रम मात्र नहीं हैं।

संध्या होते-होते वह तीर्थ-यात्रियों के साथ मथुरा के पास पहुंच गया। तीर्थयात्री भुनभुना रहे थे कि पहले तीर्थयात्रा का कर भी चुकाना होगा। यह शाही कानून है। खिराज का भुगतान जरूरी है। हेमू इस शाही कानून के बारे में सोच नहीं सका था। उसे धक्का-सा लगा। तो क्या अपने देश में रहने के लिए जजिया कर और तीर्थयात्रा के लिए अलग से कर देना होगा क्यों? क्योंकि हम सल्तनत की नजर में काफिर हैं। काफिरों से खिराज वसूल होता है। हमें देना है। सर झुकाकर देना है। नहीं तो हेमचन्द्र के बदले मेहताब आलम बन जाना है। सचमुच पराधीनता में शीश झुका ही रहता है। सपने में भी सुख नहीं मिलता।

तीन

संध्या हो गयी। मथुरा नगर की चारदीवारी के बाहर सबको ठहरना था। धर्मशाला थी।
इसलिए तीर्थयात्री चिन्ता में नहीं पड़े। वे अपने-अपने समूह के साथ धर्मशाला में प्रवेश करते गये। सबको स्थान मिलता गया। हेमू सबके बाद प्रबन्धक से मिला।
उसे भी स्थान मिला। वह अकेला था। पर चारों ओर तीर्थयात्रियों की भीड थी।

हेमू ने सोचा-वह सबके साथ हो जाय या सबसे अलग रहे! कोई अलग तो नहीं रह सकता है।
अपने गांव में भी वह अकेला नहीं था। यह ठीक है कि पारो की मृत्यु, मन की पीड़ा, शाहों-सुलतानों के प्रति असन्तोष और उजड़े हए गांव में रोटी की समस्या के कारण वह बेचैन रहा है। अकेलेपन में इस बेचैनी को तीव्रता से अनुभव किया जाता है। उसने किया है। भटकन की पीड़ा का अनुभव सबसे अलग रह कर ही होता है। पर यह अकेलापन तो बहुत बड़ा दंड है। जीने के लिए किसी स्थान, किसी व्यक्ति या किसी भावना से जुड़ना पड़ता है। किसी विचार-चिन्तन का आधार लेकर जीना पड़ता है। एक धुरी से लगकर जीवन के लम्बे पथ पर चलना होता है। अकेलापन स्मथ नहीं देता। साथ देने वाला कोई तो हो। उससे जुड़ी कोई भावना हो। वह तो भटक रहा है। और इन तीर्थयात्रियों की भटकन का अन्त हो चुका है। ये भटक नहीं रहे हैं। ये एक विश्वास के साथ उमग-उछाह, के पैरों से चल रहे हैं। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए चल रहे हैं।

हेमू को तीर्थयात्री अच्छे लगने लगे। उसने देखा कि वे सभी एकदूसरे को सहयोग देते हुए विश्राम कर रहे हैं। दीपक के मन्द-मन्द प्रकाश में एक-दूसरे से पूछताछ कर भोजन करने लगे हैं। उस कोने में लेटी बुढ़िया के थके पांवों को अधेड़ स्त्रियां सहला रही हैं। वह बूढ़ी सबको आशीष दे रही है।

'भाई! यह परसाद है। इसे ले लो।' कोई हेमू को दोना भर कर दे रहा था।
हेमू अचकचा गया। वह उसे देखने लगा। कुछ बोल नहीं सका।
'हम सबके साथ आये हो। धर्मशाला में रात बितायेंगे। हम सभी भगवान का परसाद लेंगे।' उस व्यक्ति ने स्नेह के साथ समझाया।
हेमू ने देखा कि दोने में रोटी और शक्कर है। पूरा भोजन नहीं है। वह बोल उठा-‘पर मेरे पास रखने के लिए।'
'होगा! जरूर होगा! पर यह तो परसाद है। हम परसाद को आपस में बांट कर खाते हैं। तुम अकेले हो। हम तुम्हें अकेले कैसे रहने देंगे?' उस तीर्थयात्री ने उसके हृदय को छू दिया।
'अब मै अकेला नहीं हूं। आप सबके साथ हूं।' हेमू ने तीर्थयात्री की भावना का आदर करते हुए दोने को थाम लिया।
तीर्थयात्री की आंखों में सन्तोष झलक उठा। होंठों पर मुस्कान छा गयी। वह भी मुस्करा उठा। तीर्थयात्री ने परसाद-ग्रहण करने का संकेत किया। वह संकोच छोड़कर प्रसाद को ग्रहण करने लगा। वह भोजन करने लगा। तीर्थयात्री अपने समूह के पास जा चुका था। वह अकेला भोजन कर रहा था। परन्तु उसने अनुभव किया कि वह अकेला नहीं है। किसी की भावना और धारणा से जुड़ गया है। वह भले ही जुड़ नहीं सका है, परन्तु इन लोगों ने अपने से जोड़ लिया है। यह जुड़ना अच्छा लग रहा है। शाहों-सुलतानों के लगातार युद्ध, शिव का ताण्डव, गांवों का उजड़ना, स्त्रियों पर अत्याचार, जजिया कर और कुछ लोगों का नया पंथ अपना लेना-इन सबके बाद भी लोग एक विश्वास को अपना कर जीना चाहते हैं। गुरु रामानन्द, गुरु नानक, गरु गोस्वामी वल्लभ और हितहरिवंश-ये इन्हें नया विश्वास दे रहे हैं क्या? दिन-रात कांपते जीवन को सम्बल दे रहे हैं? यह भी समझना पड़ेगा। पिता जी भी गुरु हितहरिवंश के शिष्य हैं। वह भी उधर ही जा रहा है। वह निकट मे देखेगा। समझने का यत्न करेगा।

भजन-कीर्तन के शब्द मधुर स्वर में फैलने लगे। लगा कि ईंट-ईंट से ये शब्द टकरा कर चारों तरफ फैल जाते हैं। सजीव मानव कंठ से निकले शब्द निर्जीव ईटों से मिलकर एक प्रतिध्वनि उत्पन्न कर देते हैं। करतल-ध्वनि भी चल रही है। वह केवल सुन रहा है। वह उनके -साथ मिल नहीं सका है।

हेमू सुनता रहा। उसे लगा कि वह सब कुछ भूल रहा है। शब्दों का संसार उसके चारों ओर छा गया है। शब्द धीरे-धीरे आकार धारण कर रहे हैं। उसकी कल्पना में शब्द कृष्ण और राधा के रूप धारण कर लेते हैं। उसने भी पलकों को बन्द कर राधा और कृष्ण के रूप की कल्पना की। रूप झलकने लगे। धीरे-धीरे राधा का रूप पारो में बदलने लगा। पारो राधा बन जाती। राधा पारो बन जाती।

किसी के बोल सुनाई पड़े—'श्रीकृष्ण को पाने के लिए श्रीराधा की आराधना आवश्यक

है।'

कोई कह रहा था-'श्रीकृष्ण को मां यशोदा अपनी गोद में सूलाती है। लोरी सुनाती है। श्रीकृष्ण पलकें बन्द कर लेते हैं। फिर दो क्षण के बाद वे अपने बाके नयनों से मां को देख लेते हैं। यह सुख तो वात्सल्य भाव में ही पाया जा सकता है।'

हेमू का मन चंचल हो उठा। वह क्या करे...पारो की राख....पीड़ा...भटकना और इन तीर्थयात्रियों का यह सुख! वह उस पीड़ा में विकल है। अब सुख कहां! इन लोगों का इस सुख में बेसुध हो जाना विचित्र है!!

पलके भारी हो रही हैं। ये लोग कब सोयेंगे? उसने सोने की चेष्टा की। उसे नींद आ गयी। धीरे-धीरे सभी सो गए। रात में वर्षा होने लगी। रात का सन्नाटा टूट गया। पर किसी की नींद नहीं टूटी। सभी गाढ़ी नींद में थे।

भोर होते-होते सबकी नींद खुल चुकी थी। सभी शौच-स्नान से निपटकर मथुरा नगरी में प्रवेश करने की तैयारी करने लगे। सबको स्वच्छ-पवित्र होकर तीर्थ में पहुंचना है। यमुनाजी में स्नान करना है। सबमें अपूर्व उत्साह दीख पड़ा। हे पु उनके उत्साह को देख चकित था।

सभी 'जय-जय श्रीकृष्ण' का घोष करते चल पड़े। किसी ने शंख बजा दिया। किसी की बांसुरी बजने लगी। स्त्रियां पुरुषों के सुरक्षित घेरे में थीं। हेम भी सबके पीछे-पीछे चला।

नगर-द्वार पर शाही सिपाहियों के साथ तीर्थयात्रा कर वसूल करने वाला 'मुकद्दम' मौजूद था। अपने दफ्तर में 'मुहतसिब' भी था जो जजिया और तीर्थ कर की देखरेख करता था।

सभी तीर्थयात्री बारी-बारी से पांच-पांच 'दाम' 'कर' के रूप में देने लगे।
अभ्यस्त या दबा हुआ मन क्षुब्ध नहीं हुआ। कुछ में असन्तोष उभर कर दब जाता था। हुकमत का रोब जो था। सबको खिराजवसूली की पर्ची मिलने लगी। सभी पर्ची लेकर खुशी- खुशी मथुरा जी की धरती पर सिर टेक कर आगे बढ़ने लगे।

हेमू अनमने भाव से खिराज-वसूली देख रहा था। लोगों की विवशता का अनुमान कर रहा था। हुकूमत के रोब का अनुभव कर रहा था। उसका अन्तर क्षुब्ध हो उठा। पर वह कुछ कर नहीं सकता था। न ही कुछ कह सकता था। उसने कहा-'मैं तीर्थ करने नहीं आया हूं। मैं अपने बूढ़े पिता से मिलने आया हूं। मुझसे खिराज नहीं लिया जाय।'

‘जरूर मुलाकात करने जाओ, बरखुरदार! खिराज तो तुमको देना ही पड़ेगा।' मुकद्दम ने कड़क आवाज में जवाब दिया।

लेकिन यह खिराज तो तीर्थयात्री के लिए है। मैं तो तीर्थयात्री नहीं हूं। मुझसे खिराज नहीं लिया जाय।' हेमू ने तर्क दिया।

'तुम तो जियारत करने वालों के साथ हो। और कहते हो खिराज नहीं दूंगा। खिराज दो या लौट जाओ।'

'पिताजी से मिलने आया हूं। लौटकर वापस जाने नहीं आया हूं। तीर्थ करने नहीं आया हूं। आप को ख्याल करना है।'
'रोजगार करने आये हो?'
'जी, नहीं!'
'तब बहस क्यों कर रहे हो? शहंशाह शेरशाह और सलीम शाह सूरी की सल्तनत में काफिरों को तकलीफ नहीं है। इसे तुम्हें ख्याल रखना है। यह जुल्मी मुगलों की हुकूमत नहीं है। इन्तजाम के लिए खि राज देना है। देना ही है।'
'आप ठीक कह रहे हैं। मैं मानता हूं। लेकिन...'
'लेकिन-लेकिन क्या लगा रखा है। जाओ, मुहतसिब से कानून को बारीकी पर बात कर लो। मेरे पास वक्त नहीं है।'
हेमू मुहत सिब के पास गया। अपनी बात रखी। वह भी उसकी बात को सुनने-समझने को तैयार नहीं हुआ। वह आंखें लाल कर सिपाही को बुलाने लगा। हेमू ने अपनी विवशता को सह लिया। पर भीतर-ही-भीतर उबलता रहा। वह फिर से मुकद्दम के पास आ गया। मुकद्दम मुस्करा रहा था। उसने क्षोभ के साथ खिराज का भुगतान कर दिया। पर्ची मिल गयी। वह पर्ची को देखता रहा। उसे लगा कि पीले कागज के टुकड़े पर बड़े काले अक्षर उसे चिढ़ा रहे हैं। उसे जंजीर में बांधकर ढकेल रहे हैं। वह जंजीर में बंधकर जाने लगा।
तीर्थयात्रियों का झंड उसके लिए रुक-रुक कर चल रहा था। उसे देखकर सभी प्रसन्न हए। वह उन्हें देखकर धीरे-धीरे तनाव से मुक्त होने लगा।
श्रीकृष्ण जन्मभूमि का मन्दिर आ गया। सभी हर्ष में विभोर हो गये। पर यह क्या- श्री केशव देव के मन्दिर के स्थान पर तो और कुछ है। मन्दिर की दीवार है। टूटा हुआ शिखर है। पर भीतर तो ईदगाह है। चारों ओर शाही सिपाही हैं।

हेमू ने अपने साथ के तीर्थयात्रियों को देखा। सबके शीश झुके हुए हैं। कोई कह रहा है-'सिकन्दर लोदी ने मन्दिर को तोड़ दिया था। उस स्थान पर ईदगाह बनवा दिया।'

'तब इधर आने की क्या जरूरत है।' हेमू बोल उठा।

'हम कैसे भूल जायें-भगवान की जन्मभूमि को, मन्दिर को-यह तो हमारे विश्वास की बात है। यह हमारे भाव की भूमि है।'

'भाव की भूमि है! ठीक कहते हो। टूटा हुआ शिखर विश्वास का आधार हो सकता है। भाव का आधार हो सकता है।' हेम् की आंखों में निर्जीव पारो की देह झलमला आयी।

'भाव को कैसे मिटाया जा सकता है? विश्वास को कैसे तोड़ा जा सकता है?'

'विश्वास को सम्भाल कर रखना। बड़ी बात है।' यह कहकर हेमू ने भी शीश झुका दिया।

वह खड़ा रहा। सब की परिक्रमा देखता रहा। विश्वास की लीला देखता रहा। भावना का अनुभव करता रहा। वह तीर्थयात्रियों को प्रणाम कर आगे बढ़ गया। उसे पिताजी के पास पहुंचना है। इस विश्वास को समझना है। विश्वास या अन्धविश्वास या जीने का आधार-इसे समझना है। और रोटी की समस्या तो गरदन पर सवार है। पिताजी ही रास्ता दिखायेंगे।

चार

हेमू कुछ सोचता हुआ वृन्दावन की ओर मुड़ गया। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। उसने नगर-प्रवेश के लिए हकमत को खिराज दिया। उसे देना पड़ा। और उसे विध्वंस देखना पड़ा। मानो सिकन्दर लोदी के जुल्म को देखने के लिए खिराज दिया है। ये श्रद्धालु आंसुओं और उसांसों को छिपाकर विध्वंस के आगे मत्था टेक देते हैं। नहीं, विश्वास के आगे शीश झुका देते हैं। केवल विश्वास वचा है। साहस नही-शूरता नहीं।

राणा सांगा ने पूरे विश्वास के साथ साहस किया था। विदेशी मुगलों की फौज घबरा गयी थी। बाबर ने शराब के प्याले तोड़कर सबमें हिम्मत बंधा दी थी। वह विजयी हो गया। विदेशी मुगलों के अत्याचार से सारा पंजाब थर्रा उठा था। सन्त नानक देव को बड़ी पीड़ा हुई थी।

अफगान शेरशाह ने विदेशी मुगलों को मार भगाया है। हुमायूं भटक रहा है। शेरशाह ने अच्छे ढंग से शासन प्रबन्ध किया है। प्रजा को थोड़ा सन्तोष हुआ है। पर मुस्लिम और गैर-मुस्लिम का फर्क बन रहा है। जिमनी जजिया देते को मजबूर हैं। शासन तो कठोर होता ही है। यदि राजा विधर्मी विदेशी हो, विजेता हो तो कठोरता बढ़ जाती है। कठोरता क्रूरता में बदल जाती है। इस क्रूरता और कट्टरता के बीच थोड़ी सी उदारता तिनके का सहारा बन जाती है। शेरशाह की थोड़ी-सी उदारता के कारण बरसों से दुःखी प्रजा शाह का नाम लेने लगी है। लेकिन यह खिराज..विध्वंस के स्मारक...उधर भक्तों का नया विश्वास...

नगर से बाहर होते ही वन-प्रान्तर दिखायी पड़ा। उसे अच्छा लगा। विध्वंस की नगरी से वन-प्रान्तर बुरा नहीं, बहुत अच्छा है। इस वन में विध्वंस की नहीं, श्रीकृष्ण की अनुभूति हो सकती है। एक बार मथुरा के राजा कंस ने श्रीकृष्ण के जन्मदाता को भी कैद कर लिया था। तभी तो कारागार में उनका जन्म हुआ। और फिर उन्हें यमुना पार गोकुल में जाना पड़ा। युगों के बाद लोदी खानदान के सुलतान सिकन्दर शाह ने केशव देव के मन्दिर को तोड़ दिया। श्रीकृष्ण के प्रति विश्वास को तोड़ देने की कोशिश की। तीस-चालीस वर्ष हो गए। कृष्ण को फिर से वृन्दावन-गोकुल में भटकना पड़ रहा है। पर लोगों का विश्वास टूट नहीं सकता है।

उसका बहुत कुछ टूट गया है। वह भटकता हुआ इधर आ गया है। उसके मन को शांति नहीं है। वह टूटे हुए को कैसे जोड़ ले। नया विश्वास कैसे पा ले। योगी शिवनाथ नया विश्वास जगा रहे हैं। पर रोटी का सवाल उठकर खड़ा हो गया। नया विश्वास सुगबुगा कर रह गया। वह अकेला है। इस जंगल में अकेला भटक रहा है। आगे तीर्थयात्रियों का झुंड दिखायी पड़ा। पीछे से भी एक दल निकट आ गया।

किसी के शब्द सुनायी पड़े-'जानते हो, भैया! मथुरा जी के मन्दिर को तोड़ने वाला हिन्दू मां का बेटा था।'

दूसरे ने अचरज के साथ पूछा-'सिकन्दर लोदी हिन्दू मां का बेटा था?'

'हां, भाई! यह सच है।'
'तो फिर उसने ऐसा क्यों किया?'
'उसे मजहबी कट्टरता का संस्कार मिला था। उसने सुल्तान बनने के लिए भी कट्टरता का परिचय दिया।'
'यह तो कुसंस्कार है।'
'तुम्हारे लिए...।
हेमू सोचने लगा कि हिन्दू रक्त और मुस्लिम संस्कार मिलकर एक अच्छाई की रचना नहीं कर सके। प्रजा की भावना को आदर नहीं दे सके। इस देश के खून से पैदा सिकन्दर यहां की मिट्टी के आगे झुक नहीं सका।

उसे बादशाह बनना था। बादशाह बनने के लिए अपने अमीरों और सरदारों को खुश करना था। कट्टर-क्रूर बनकर सबको खुश कर सका। शहंशाह बन सका। उदार और भला नहीं। अपनी कट्टरता से एक तरफ हिन्दू प्रजा को डराया और दूसरी तरफ सरदारों को एतबार दिला दिया कि वह सच्चा मुसलमान बादशाह है। उसकी बादशाहत चलती रही। यह कैसी प्रकृति है? कैसा संस्कार है? यह कैसी बादशाहत है?

कहा जाता है कि कबीर में भी हिन्दू-रक्त था। मुस्लिम परिवार के संस्कार भी थे। पर वे तो सबको प्यार दे रहे थे। वे सच्चे साधुफकीर के जीवन को जीते रहे। उनकी चादर में कोई दाग नहीं लग सका था। यह कैसे हो गया? इतना फर्क कैसे आया? वह जुलाहा परिवार विदेशी मुसलमान नहीं था। हिन्दी मुसलमान था। कुछ ही दिन पहले मुसलमान बना था। उसमें इस मिट्टी की सोंधी गंध थी। गुरु रामानन्द के शिष्य बन गये थे। वे सब में एक ही साईं के दर्शन कर चुके थे। उनके लिए सभी बराबर थे। यही तो मानवता है और सही धर्म है।

पीछे से ध्वनि आयी-'एक ही समय में एक ही धरती पर हिन्दू रक्त से ही सिकन्दर लोदी और कबीर दोनों ही जन्मे। पर एक लाशों के तख्त पर बैठा, दूसरा आदर के आसन पर विराजमान हुआ।'

दूसरी आवाज आयी-'मतलब यह हुआ कि एक ने तुरुक बादशाह बनकर सबमें फरक माना, दूसरे ने बुनकर बनकर सबके हृदय को एक बुनने की कोशिश की।'

तीसरा बोल रहा था-'पर कबीरदास निगुनिया थे। भगवान की लीला और मूर्ति में विश्वास नहीं करते थे।'

चौथा बोल रहा था-'परन्तु वे मन्दिर-मूर्ति को तोड़ नहीं रहे थे। वे भेदभाव और पाखंड को तोड़ रहे थे।'

हेमू तीर्थयात्रियों की बातचीत सुनकर विचार करने लगा कि जैसे बुनकर धागों को जोड़ता है, उसी तरह कबीरदास ने सबको जोड़ने का प्रयत्न किया है। जात-पात और ऊंच-नीच-भावना की निन्दा की है। समता की भावना को जगाया है। तभी तो सबको भक्ति-भजन करने का अधिकार मिला है। सचमुच वे महान् थे।

वृन्दावन में देखना है कि श्रीकृष्ण की भक्ति में सबको भजन-पूजन का अधिकार मिला है या नहीं!

तीर्थयात्री जय घोष करने लगे। वृन्दावन आ गया। हेमू अपने पिताश्री के दर्शन की आशा में तेजी से चलने लगा। मन में नया उत्साह जग गया। पीछे से आने वाला यात्रीदल साथ आ गया। हेमू को लगा कि वह अकेला नहीं रह गया। पर वह साथ कैसे चले? वह किसी को जानता नहीं। पर उसे तो वृन्दावन में अपने पिता जी को ढूंढ़ना है। राधावल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिर को पहचानना है। इसलिए इनके साथ हो जाना चाहिए।

यह सोचकर वह साथ-साथ चलने लगा। एक ने बड़े स्नेह से पूछा-'अकेले हो, क्यों?'

'हां, अकेला ही हूं।' हेमू ने उत्तर दिया।
'क्यों, घर से रूठ कर आए हो?'
'जी, नहीं; वृन्दावन में पिताजी से मिलने आया हूं।'

'क्या वे भक्ति-भजन में परिवार को भूल गए हैं?'
'वे राधावल्लभ सम्प्रदाय में बहुत दिनों से हैं।'
हम भी राधावल्लभ सम्प्रदाय को ही मानते हैं। हम सेवाकुंज चल रहे हैं।' 'मैं भी साथ ही चलूंगा।'
'जरूर चलो। कहां से आ रहे हो?'
'रेवाड़ी के पास से।'
'संत पूरनदास और नवलदास रेवाड़ी के ही हैं।'
'संत पूरनदास मेरे पिताजी हैं।'
'अरे, संत के पुत्र होकर भटक रहे हो! भटकना तो हमें है। हम तो तुम्हारे साथ चलेंगे।'
हेमू के अंतर में आत्मविश्वास अंकुरित हुआ। उसने विनम्रता के साथ कहा-'आप लोग संकल्प के साथ तीर्थ करने आए हैं। मैं तो अकेला भटकता हुआ आया हूं। कुछ विचार करने आया हूं। मैं तो आप लोगों के साथ चलकर पिताजी के पास पहुंच सकूँगा।'
'संत का पुत्र भटकता है-यह विश्वास नहीं होता।'
"भगवान कृष्ण को भी मथुरा छोड़कर गोकुल में भटकना पड़ा था। आज भी वे मथुरा से भगा दिए गए हैं। वे वृन्दावन-गोकुल में ही बांसुरी बजा रहे हैं। मैं तो साधारण

जन हूं।'
'यह तो भगवान की लीला है।'
'नहीं, यह तो शाहों-सुलतानों की हुकूमत का तौर-तरीका है।'
'यह तो तुम ठीक कह रहे हो। पर हम क्या कर सकते हैं? हम तो इस संसार को भगवान की लीला समझकर जीने का अवलम्ब पा लेते हैं।'
हेमू ने सिर हिलाया। देववन से आया हुआ दल सेवाकुंज के पास पहुंच गया। वृन्दावन के बीच में पेड़-पौधों तथा लता-गुल्म से घिरे क्षेत्र में श्री राधावल्लभ जी का मन्दिर दिखाई पड़ा। दिन का तीसरा पहर था। उत्थापन-सेवा का समय हो गया था। वीणा और मृदंग की मधुर ध्वनियां सुनाई पड़ने लगीं। तीर्थयात्री हर्षित हो उठे। उन्हें लगा कि वे सौभाग्यशाली हैं। वे लोग उत्थापन-सेवा के समय आ गए हैं। दोपहर के राजभोग के बाद राधा वल्लभ श्रीकृष्ण के विश्राम का समय होता है। विश्राम का समय बीत गया है। अब वे विश्राम से उठ रहे हैं। धूप, आरती और अल्पाहार के बाद वे वनविहार को जायेगे।

हेमू के हृदय की धड़कन बढ़ गई। वह बरसों बाद पिताश्री के दर्शन करेगा। वे किस रूप में होंगे? क्या वह पहचान सकेगा? क्या वे निकट पाकर प्यार दे सकेंगे? वे तो राधावल्लभ जी की भक्तिसेवा में लीन होंगे। राधावल्लभ कृष्ण और राधा...राधा जी की प्रधानता... मंदिर का रूप अद्भुत होगा!

वीणा और मृदंग का संगीत मन को खोंच रहा था। वह बढ़ता जा रहा था। भीड़ बढ़ रही थी। वह सबसे आगे निकल जाना चाह रहा था। परन्तु लोगों को धक्के देकर आगे निकल जाना ठीक नहीं लगा। सभी श्रद्धालु भक्त हैं। दूर-दूर से आए हैं। वह धीरे-धीरे खिसकने लगा। वह पिताजी के पास शीघ्र पहुंच जाना चाहता था। वे आगे होंगे। आगे पहुंचना है। देववन का तीर्थयात्री दल हेमू को आगे बढ़ता देख रहा था। उन्हें हेमू का भाव समझ में आ गया था। बुरा नहीं लगा। कुछ लोगों को बुरा लग रहा था पर हेमू आगे बढ़ रहा था। वह मन्दिर के ओसारे में पहुंच गया पर ठिठक गया। उसने देखा। पहचान लिया। पिताश्री एक कोने में खड़े-खड़े ध्यानस्थ हैं। साथ में एक और वृद्ध हैं। संत नवलदास नहीं हैं. कौन है? इनकी आंखें बन्द हैं। पर होंठ फड़क रहे हैं।

हेमू का हृदय धड़क उठा। चाहा कि पिता के चरणों पर झुक जाए। पर वे तो ध्यान में हैं। वीणा के स्वर पर उनके होंठ फड़क रहे हैं। यही भक्तिलोक है! वृन्दावन का सेवाकुंज है!! पिताजी अपने कृष्ण के पास हैं। और वह उनके पास आकर ठिठका हुआ है।

पांच

हेम की दृष्टि अपने पिताश्री संत पूरनदास पर लगी हुई थी। पर संत तो ध्यानस्थ थे। मन्दिर के भीतर धूप-आरती हो रही थी। बाहर वीणा, मृदंग और बांसुरी पर पद-गायन

हो रहा था-

आरती कीजै स्यामसुन्दर की, नन्द के नन्दन राधिका वर की
भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती, साधु संगत करि अनुदिन राती।

हेमू की आंखों ने देखा कि अधिकांश की दृष्टि मन्दिर के भीतर लगी हुई है। वह भी राधावल्लभ कृष्ण की मूर्ति की ओर देखने लगा। आरती के बाद फल और मेवे का भोग लग रहा था। घंटी की ध्वनि आने लगी। दो क्षण के बाद पुजारी आचमन कराकर प्रार्थना करने लगा। उसके चारों तरफ खड़े भक्त भी हाथ जोड़कर प्रार्थना में सम्मिलित हो गए। वह क्या करे? सोच नहीं सका। उसके हाथ नहीं जड़े हुए थे। वह तो देख रहा था कि आवरण हट रहा है श्रीकृष्ण की सुन्दर मूर्ति दिखाई पड़ने लगी। बायें भाग में प्रिया राधा जी की मूर्ति नहीं थी। केवल गद्दी थी। उस पर एक स्वर्ण पत्र था, फूलों से श्रृंगारित।

हेमू को आश्चर्य हुआ। सेवाकुंज के मन्दिर में केवल श्रीकृष्ण की मूर्ति है। ऐसा क्यों? यहां तो राधा जी की प्रधानता है। पर राधा की मूर्ति नहीं है। मूर्ति के बदले गद्दी और उस पर रखे स्वर्ण-पत्र का क्या अर्थ है? राधा वल्लभ सम्प्रदाय की मान्यता क्या है? पर अभी किससे पूछा जाए? वह तो इतने भक्तों के बीच खड़ा है। सबकी हथेलियां जुड़ी हुई हैं। कुछ ध्यान में हैं। कुछ गुनगुना रहे हैं। कुछ झूम रहे हैं। वह सबके बीच सबसे अलग खड़ा है। उसकी न हथेलियां जुड़ी हैं, न आंखें मुंदी हैं और न होंठ गुनगुना रहे हैं। ये लोग क्या समझते होंगे? उसे पीछे रहना चाहिए था। वह सबसे आगे आ गया। पर वह चपचाप खड़ा है। लोग तो उस पर हंस सकते हैं। कुछ बोल सकते हैं। उसने हाथ जोड़ दिये।

कीर्तनकार समाज का मुखिया वनविहार का पद गाने लगा। बांसुरी का स्वर बड़ा मधुर लगा।

वन की कुंजनि कुंजनि डोलनि।
निकसत निपट सांकरी वीथिनि परसत नाहि निचोलिनि।

हेमू ने अनुमान किया कि प्रायः सभी झूमने लगे हैं! मानो सभी वनविहार की कल्पना कर रहे हैं। वनविहार करते श्रीकृष्ण को निहार रहे हैं। उसकी दृष्टि पिताश्री पर गई। वे बेसुध थे। यह बेसुधी अद्भुत है! यही भक्ति का संसार है! लगता है कि वनविहार में मुरली बज रही है। गोपसखा कृष्ण के साथ वन में विचरण कर रहे हैं। वह भी मारकाट, गांव का उजड़ना, चाचा जी की डांट-फटकार और भटकना भूल रहा था। यह कैसा लोक है? भक्ति भी प्रेममूलक दूसरा पद सुनाई पड़ने लगा।

उत्थापन-सेवा पूरी हुई। सभी शीश नवाकर बैठ गए। पद का गायन चलता रहा। हेम् ने देख लिया कि पिताश्री का ध्यान टूट गया है। वह सहमता हुआ उनके पास पहुंचा। उनके चरणों में झुका। संत पूरनदास हेमू को देख नहीं सके थे। परन्तु चरणों में झुके हुए श्रद्धालु को स्नेह के साथ उठाकर हृदय से लगा लिया। अपने बेटे को पहचाना। हेमू की आंखों से आंसू बहने लगे थे। संत की आंखें भी भीग गयीं। वे अपने

वात्सल्य को दबा नहीं सके। पुनः हृदय से लगाया। हेम को लगा कि उसने सब कुछ पा लिया। वह भूल गया कि वह गोस्वामी हितहरिवंश के सेवाकुंज में है। वह वात्सल्य के दिव्यलोक में पहुंच गया था।

संत राजा परमानन्द यह दृश्य देखकर चकित थे। आंखों में प्रश्न उभर आया। अनुमान से कुछ समझ भी रहे थे। 'संत राजा! यह मेरा हेमचन्द्र-हेम है। गांव में ही अपन चाचा करणमल के साथ रहता रहा है। आपने ठट्ठा से लौटते समय कहा था कि रेवाड़ी होते चला जाय। हेमू से मिल लिया जाय।' संत पूरनदास ने सिंध के ठट्ठा राज्य के राजा सन्त परमानन्द को बताया।

'आपने रेवाड़ी का रास्ता ही बदल दिया था। आप रेवाड़ी नहीं गए। हेमू ही अपने पास आ गया। यह भी तो कृष्ण का रूप है।' संत परमानन्द ने हेमू को अपने पास बुलाया।

हेमू उनके चरणों में झुक गया। परमानन्द ने उसे उठाकर गले लगा लिया। दोनों भाव-विह्वल हो गए। दोनों सन्तों ने हेम को लेकर अपनी कटिया की ओर चलने का निश्चय किया। प्रसाद का वितरण हो रहा था। दोनों ने प्रसाद लिया। हेमू ने भी श्रद्धा के साथ प्रसाद को ग्रहण किया। और तीनों मन्दिर से बाहर निकले।

रास्ते में सन्त परमानन्द ने कहा- 'पूरन जी! बेटे का ब्याह तो होते-होते रुक गया था। अब तो ब्याह हो जाना चाहिए।'

'शाहों-सुलतानों के युद्ध और आतंक के राज्य में ब्याह और व्यापार करके सम्मान से जी लेना बड़ा कठिन हो गया है। आप तो स्वयं देख रहे हैं।' हेमू ने उत्तर दिया।

हेमू बेटे! ठीक कह रहे हो। मैं ठट्ठा राज्य का राजा रहा हूं। मुगल बादशाह हुमायूं का मनसबदार बनना पड़ा। हुमायूं और शेरशाह की लड़ाइयों में अपनी दुर्गति होती रही। ऊबकर संत पूरन जी के साथ वन्दावन आ गया।' परमानन्द ने अपनी कहानी सुना दी।

हेम् अपने को रोक नहीं सका। उसने पठानों और मुगलों की लड़ाइयों में गांव के उजड़ने, व्यापार नष्ट होने, बादशाह सलीमशाह के सरदार खवास खां के विद्रोह और पारो को आत्महत्या की दुःखभरी कहानी को रख दिया। उसके स्वर में रोष था। दोनों सन्तों ने रोष के भीतर छिपे तेज का अनुमान कर लिया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखने लगे। दोनों को सुखद आश्चर्य हो रहा था।

हेमू सेवाकुंज के हरे-भरे पेड़ों और लताओं से होते हुए पिताश्री की कुटिया में आया।

संत परमानन्द ने कहा-'पूरन जी! आज हेमू बेटे को विश्राम लेने दो। थका हुआ है। फिर दर्शन-पूजा और कथा-वार्ता...।'

'संध्या में गुरु गोस्वामी के दर्शन आवश्यक हैं। उन्हें मालूम हो जाना चाहिए

कि गांव से हेमू आया है।'

'आप ठीक कह रहे हैं। संध्या में हम उनके दर्शन करेंगे।'

'दर्शन के बाद मन की शंका-जिज्ञासा रखी जा सकती है?' यह हेमू के शब्द थे।

'क्यों नहीं! गुरुश्री हितहरिवंश सबके लिए सहज हैं।' संत पूरन जी ने उत्तर दिया।

हेमू! कुछ खा-पी लो और विश्राम करो और हां, रात को मेरे यहां प्रसाद पाना है।
स्मरण रखना।' संत परमानन्द ने सस्नेह आग्रह किया।

'और आपसे भी बातचीत करूंगा।' हेमू ने मुस्कराकर कहा।

'जवान बेटा थोड़ा ढीठ हो जाता है। अच्छा लगता है। तुम तो जिज्ञासु हो। बातचीत अवश्य होगी।'

हेमू ने हाथ जोड़कर संत परमानन्द को विदा किया। वे अपनी कुटिया में गए। उसी समय संत नवलदास जी आए। हेमू पहचान गया। उसने झुककर चरण स्पर्श किया। आशीष मिली। तीनों साथ-साथ बैठे। कुशलक्षेम के बाद संत नवलदास ने हाथ-पैर धोने और प्रसादग्रहण के लिए हेमू से कहा। हेमू ने हाथ-पैर धोकर पिताजी के साथ प्रसादग्रहण किया। फिर भोजन किया। दोनों सन्तों ने उसे विश्राम करने के लिए कहा। वह लेट गया। थका हुआ था। लेटते ही उसे नींद आ गई।

आकाश में बादल छा रहे थे। धीरे-धीरे हवा चल रही थी। लग रहा था कि हवा रुक जाएगी। गर्मी बढ़ जाएगी पर इस उपवन में ऊमस नहीं थी। ऊमस रहे या नहीं – थका हुआ हेमू नींद में बेसुध था। पूरन दास भी नवलदास के साथ बातचीत करते-करते सो गए।

दो घण्टे बीतने को आए। हेमू प्यास के कारण उठ बैठा। घड़े का शीतल जल पीने लगा।
हल्की-सी ध्वनि हुई। दोनों संत उठ गए। वे भूल गए हैं कि वे बूढ़े हैं। वात्सल्य बुढ़ापे में नया जीवन ला देता है। वैसे भी वे अपनी भक्ति-भावना में बुढ़ापे पर विजय पा चुके थे। उन्हें स्मरण आ गया कि हेमू को लेकर गुरुश्री हितहरिवंश जी के पास जाना हैं। उनकी कटिया भी पास ही थी।

हाथ-मुंह धोकर सभी तैयार हो गए। तीनों गुरु गोस्वामी की कुटिया की ओर चले। हेमू वृन्दावन के हर पेड़-पौधे को देख रहा था। एकएक व्यक्ति के हावभाव को समझने का प्रयत्न कर रहा था। अपने गांव के लोगो से तुलना कर रहा था।

श्री हितहरिवंश जी की कुटिया आ गई। तीनों सहर्ष कुटिया के द्वार पर आए। श्री हितहरिवंश जी ओरछा से आए हरिराम व्यास से बातचीत कर रहे थे। तीनों ने झुककर नमन किया। आशीर्वाद के साथ बैठने का स्नेहपूर्ण आदेश मिला। संत पूरन जी ने हेम् का परिचय दिया। हेम ने पुनः हाथ जोड़कर प्रणाम किया। क्षणभर के बाद देखा कि राधा

वल्लभ सम्प्रदाय के प्रधान हितहरिवंश के होंठों पर मन्द मुस्कान है। उसे अच्छा लगा। उनके शब्द सुनाई पड़े– 'संत पूरनदास जी! आपका पूत्र तेजस्वी है। पर इसका मन चंचल है।'

'इसीलिए हेमू आपकी शरण आया है।' संत पूरन जी के स्वर में श्रद्धायुक्त विनम्रता थी।

'हेमचन्द्र! हृदय में राधावल्लभ जी को स्थान दो और मन को एक लक्ष्य पर लगाओ।' ये हितहरिवंश जी के शब्द थे।

गांव की स्थिति ने मन को विकल बना दिया है, गरुदेव! अब तो लगता है कि अपना गांव हो या समूचा देश-स्थिति लगभग एक ही है। जबकि अफगान शेरशाह का राज्य-प्रबंध अच्छा रहा है।' हेम् ने अपनी बात कह दी।

'शेरशाह और उसके बेटे सलीमशाह का प्रबन्ध अच्छा चल रहा है। तब तो यह स्थिति है! तुम ठीक कह रहे हो। इससे मन घबराता है; भय खाता है और विकलता बढ़ जाती है। गांव-नगर सर्वत्र त्रास है। शासन कभी तुर्क-पठान का है, कभी मुगल का। ये अधिकतर निर्दयी और क्रूर हैं। कोई थोड़ा उदार हो जाता है। प्रजा को थोड़ी शान्ति मिलती है।'

'ऐसे में क्या किया जाय? कोई रास्ता नहीं सूझता। रक्षा करने वाला कोई नहीं दीखता। राजागण लगभग हार कर बैठ गए हैं। अपने-अपने छोटे राज्य और गढ़ में सिमट गये हैं।' हेमू ने चिता प्रकट की।

'हां, बेटे! सही कह रहे हो। परन्तु रास्ता तो खुल गया है। निराधार मन को अवलम्ब मिलने लगा है।'

'वह रास्ता कौन-सा है?'

'भक्ति मार्ग है। अपने हृदय की भावना के अनुसार भगवद्-भक्ति! अपने आराध्य पर मन का टिक जाना आवश्यक है। इससे मन का भय द्र होगा। अपने पर विश्वास बढ़ेगा। आज की स्थिति में अपने आराध्य के प्रति निष्ठावान बन निर्भीक होना बड़ी बात है। यही धर्म है।'
'तो क्या सभी वृन्दावन और गोकुल में आकर भजन-कीर्तन करें और गांव-घर को भूल जायें?'
'नहीं, बेटे! सभी राधावल्लभ के दर्शन से निष्ठावान बन जायें। निर्भीक बन जायें और अपनी गृहस्थी को संभालें। मैं भक्तों को वैरागी और संन्यासी नहीं बनाता। तुमको भी नहीं बनना है। केवल भय से मुक्त हो जाओ, मन को अपने आराध्य पर केन्द्रित करो और उत्साहउमंग से जिओ।'

'जी यह चिंतन तो कल्याणकारी है।'

'अभी हम संध्या आरती में चलेंगे।'

सभी संध्या-आरती में चलने के लिए तत्पर हो गये। आगे-आगे गुरु हितहरिवंश जी थे। साथ में उनके पुत्र वनचन्द्र जी भी थे। सभी पीछे-पीछे चल पड़े। अंधेरा हो गया था, दीपक जलने लगे थे। सेवाकुंज का अंधेरा छंटने लगा था, आकाश से बूंदाबांदी भी होने लगी थी। वाद्य संगीत की मधुर ध्वनि से सम्पूर्ण वातावरण रागमय हो उठा! आरती का पद गूंजने लगा-

आरती व्रज-जुवति जूथ मनभावै, श्यामलीला हरिवंशहित गावै।
सखि चहुं ओर चंवर कर लीय, अनुरागन सौं भीनै हीय।
सनमुख बीन मृदंग बजावै, सहचरि नाना राग सुनावै।
सबके हाथ जुड़ गये। हेमू को छोड़कर सभी की आंखें मुंद गयीं।

हेमू तो देख रहा था कि मन्दिर के भीतर सिंहासन पर राधावल्लभ कृष्ण हैं और राधा नहीं हैं। ये सभी अपने आराध्य के प्रति एकनिष्ठ हैं। यह विश्वास, विश्वास की टूटन में अद्भुत है। तुर्क शासन में मन के विश्वास को तोड़ने का प्रयास चलता रहा है। मन को भयभीत किया जाता रहा है। तुर्क-मुगल शासन का यही मतलब है। परन्तु रामानन्द, कबीर, नानकदेव और हितहरिवंशजी मन में अपूर्व विश्वास जगा रहे हैं; एक नया भाव जगा रहे हैं। यह विराग नहीं है, पर लगता है कि विराग है। अनुराग आराध्य के प्रति और विराग सांसारिक जीवन के प्रति...यह शंका तो है। सांसारिक जीवन में पीड़ा है -अत्याचार और अन्याय की पीड़ा है। शायद इसीलिए सांसारिक जीवन के प्रति उदासीनता है, इसे समझना पड़ेगा। इस उदासीनता से घर-द्वार गांव कैसे बचेगा?

छह

रात में भोजन के लिए संत राजा परमानन्द की कुटिया पर निमन्त्रण था। शयन-आरती के बाद परमानन्द जी हेमू को साथ लेते गए। संत पूरनदास को भी साथ देना पड़ा। रास्ते में कांच के आलोकपात्र में दीपक जल रहे थे। अंधेरे का भय नहीं था, कहीं-कहीं हलका अंधेरा जरूर था। पर पास ही में हल्का उजाला भी था।

'देखो, हेमू! अन्तर में भक्ति का उजाला हो और आसपास जलते दीपक का उजाला-तब जीवन तमस् से ज्योति की ओर बढ़ता जायेगा।' संत पूरन जी ने बेटे को मंत्रवत् संकेत दिया।

'यह तो सही है, पिताजी! पर तुर्कों के कारण गांव उजड़ जाता है, मथुरा का विध्वंस हो जाता है, खेत-व्यापार घोड़ों की टापों से रौंद दिए जाते हैं, किसी की बेटी- बहू छीन ली जाती है, मन तो टूटकर बिखर जाता है।

हेमू ने शंका की।

क्षण भर की चुप्पी छा गयी।

'यह भक्ति-भावना इसी टूटते और बिखरते मन को संभाल रही है, हेमू! दक्खिन में तो भक्ति व्यक्ति की एकान्त साधना के रूप में प्रकट हुई थी। पर आज उत्तर में भक्तिभाव नवजागरण बन गया है। एक मन्दिर टूटा तो विश्वास के साथ दूसरा उठकर खड़ा हो गया। दूसरा नहीं भी बना तो लोग कहीं नदी-तट पर, किसी उपवन में, कहीं 'पहाड़ पर और किसी खंडहर के आसपास इकट्ठे हो रहे हैं।'

'यह तो लग रहा है।'

'शाही फरमान से पत्थर और ईंट की भित्तियां टूट जायें, पर मन का शिखर नहीं टूटे। देखो, हेमू! वन-उपवन में भक्ति की मुरली बज रही है। मन का शिखर ऊपर उठता जा रहा है। यह तो विश्वासपूर्ण अस्तित्व की घोषणा है।'

'यह तो ठीक है, परन्तु एक शंका है।'

कुटिया आ गयी। परमानन्ददास ने कहा- 'शंका का समाधान दूसरे दिन अब तो भोजन और विश्राम का समय है।'

हेमू चुप रह गया। उसे लग रहा था कि उसे थोड़ा समाधान मिला है। पर बहुत कुछ नहीं मिला। यदि वृन्दावन का भी विध्वंस हो जाय तो क्या होगा? जैसे मथुरा का! शेरशाह के खानदान के राज्य में तो नहीं होगा। शासन उदार है, बाद में क्या विश्वास? कौन कैसा सुलतान तख्त पर आयेगा-कौन बतायेगा?

गोबर से लिपी हुई धरती पर केले के पत्ते पर भोजन आ गया। सभी हाथ-पैर-मुंह धोकर एक साथ बैठे। अपने इष्ट देवता का स्मरण हुआ, और तीनों भोजन करने लगे।

कुटिया में दीपक का मन्द-मन्द प्रकाश फैल रहा था। दोनों संत बार-बार हेमू को देख लेते थे। उसके मुखड़े पर संतोष के भाव को ढूंढ़ने की कोशिश कर लेते थे। लगता था कि वह संतुष्ट हो रहा है। भोजन हो गया। पूरनजी अपनी कुटिया में जाने के लिए सोचने लगे। हेमू कुछ पूछने के लिए कुलबुलाने लगा। रह नहीं सका, वह पूछ बैठा, 'संत राजा! आप तो सिन्ध की तरफ से आये हैं। हुमायूं की क्या दशा है? अब तो इधर नहीं आना चाहिए।'

हेमू! तुम्हारा मन कहां-कहां दौड़ता रहता है? सौभाग्य की बात है कि इस रात में वृन्दावन की पवित्र लीलाभूमि में हो। राधा वल्लभ जी की नित्य रासलीला इस वृन्दावन के उपवन में होती है। मन को ठहराओ, आनन्दचेतना में विभोर हो जाओगे।' पूरन जी ने समझाया।

परमानन्द जी भी कह उठे-'हां, बेटे! रात तो राधावल्लभ जी की लीला के लिए है। हुमायूं और कामरान की कहानी फिर सुन लेंगे। गुरु गोस्वामी ने इस रासलीला का वर्णन किया है-

श्याम संग राधिका रासमंडल बनी।
बीच नंदलाल ब्रजबाल चंपक बरन,
ज्यों घन तडित बिच कनक मर्कत मनी।

यह सुनकर पूरनदास मगन होने लगे। हेमू को मौन रह जाना पड़ा। वह दोनों भक्तों की बेसुधी को देख अचरज में पड़ गया। यह तो गांव के पंडितजी के पूजा-पाठ से भिन्न प्रकार का भावलोक है। यह नाथपंथी योगी की योगसाधना से भी सर्वथा अलग है। यह तो भावना का लोक है। क्या वह पारो की चिता की लपटों को भूलकर राधा और राधावल्लभ के चरणों में मन को लगा दे? क्या यह हो सकेगा?

सहसा वह बोल उठा-'श्रीराधावल्लभ जी के साथ श्री राधा जी की मूर्ति कहां है?'

दोनों संत मुस्कराने लगे। एक क्षण के बाद पूरनदास के शब्द सुनायी पड़े—'हेमू! श्रीराधावल्लभ जी के बायें भाग में श्री प्रिया जी की गद्दी है। स्वर्णपत्र पर उनका नाम अंकित है। क्योंकि श्री राधा जी का रूप वर्णन से परे है। मूर्ति में उनका सम्पूर्ण रूप नहीं आ सकता। और वे ही इस पंथ में प्रधान गुरु के स्थान पर प्रतिष्ठित हैं। इसीलिए गुरु की गद्दी है। उनके रूप की भावना हमारी निष्ठा है।'

'जी...गद्दी का रहस्य समझ में आ गया। यह इस सम्प्रदाय की विशेषता है।' हेमू ने विनम्रतापूर्वक कहा।

'धीरे-धीरे सब समझ जाओगे।' परमानंद जी ने बताया।

दोनों पिता-पुत्र परमानन्द दास से विदा लेकर अपनी कुटिया में आ गये। दीपक की लौ कम कर दी गयी। हल्की-हल्की पीली ज्योति में मन्दिर से कभी बांसुरी की ध्वनि आ जाती। कभी पेड़-पौधों के झुरमुट से झींगुरों की झंकार सुनायी पड़ जाती। पर ये दोनों पिता-पुत्र गाढ़ी नींद में सो गये थे। रात बीत रही थी।

एक पहर रात रहते ही पूरनदास उठ गये। प्रातः-स्मरण करने लगे। हेमू की नींद टूट गयो। पिताश्री के चरणों को स्पर्श किया। संत का हृदय भाव-विह्वल हो उठा। लगा कि वे पुत्र-स्नेह की आनन्द चेतना में मग्न हो गए। सहसा कुछ ध्यान में आया, नित्य-क्रिया से निवृत्त होने लगे। हेमू भी संकेत समझ गया, दोनों स्नान कर मन्दिर में पहुंच गये। भक्तगण मन्दिर का परिमार्जन कर रहे थे।

श्री जी (राधावल्लभ कृष्ण) को शयन से उठाया गया। मंगला भोग और मंगला आरती की व्यवस्था होने लगी। भक्तों का समूह मन्दिर में आ गया, कीर्तनकार मुखिया ने पदगायन आरम्भ किया। जागरण का पद सुनायी पड़ा -

प्रात समय दोऊ रसलम्पट सूरत जुद्ध जयजुत अतिफूल।
श्रमवारिज घनबिन्दु वदन पर भूषन अंगहि अंग विकूल।।

हेमू सोचने लगा कि जागरणपद में उत्कट शृंगार है। इस शृंगार में लौकिक प्रेम ही भक्ति के स्तर पर रख दिया गया है। परन्तु सभी तो उस स्तर पर पहुंच नहीं सकेंगे। जन सामान्य तो कामवासना में ऊभचूभ करने लगेगा। ठीक है कि यह विराग नहीं, अनुराग की स्थिति है, पर इस रसिकता को भक्ति के रूप में संभालना बहुत कठिन है। यह शृंगार-मूलक भक्तियोग ही है। भक्तियोग है 'नाथपंथ का योग, सांसारिक वासना से मुक्त विशुद्ध योग है। वह तो कठिन है ही। इसीलिए कुछ योगी अपने चमत्कार से जनसामान्य को चकित करते रहते हैं। भावनाप्रधान भक्ति में उत्कट शृंगार आ जाने पर लोग फिसल सकते हैं, पर उसकी समस्या यह नहीं है।

मंगला आरती आरम्भ हो गयी। दूसरा पद सुनायी पड़ने लगा।

नन्द के लाल हर्यो मन मोर
हौं अपने मोतिन लर पोवति कांकरि डारि गयो सखि भोर।

यह पद उसे अच्छा लगा। वह आरती के मन्द प्रकार में राधा वल्लभ जी की प्रतिमा देखने लगा। यहां तो मंगला आरती, शृंगार और भजन की बेसुधी है। वह बेसुध नहीं हो पा रहा है, वह तन्मय नहीं हो सका है। वह तो अपनी उलझनों में पड़ा हुआ है, कोई पास आ गया, प्रसाद दे रहा था, उसने प्रसाद ले लिया, माखन-मिश्री का रुचिकर प्रसाद था, उसने पिताश्री की ओर देखा, वे मुस्करा रहे थे, वह भी मुस्करा उठा। फिर उसने चारों ओर देखा मन्दिर के प्रांगण में भक्तों की भीड़ थी। कुछ लोग एक तरफ खड़े थे, नीचे ही एक तरफ सबसे अलग थे, प्रसाद उन्हें भी मिल रहा था। तो ये शूद्र हैं, मन्दिर में दर्शन के अधिकार मिल गए हैं, परन्तु अभी दूरी है। कबीरदास ने इस दूरी को समाप्त कर दिया है। परन्तु सभी उन्हें मान नहीं रहे हैं। धीरे-धीरे सबको मानना है। भक्त और भगवान की दूरी अनुचित है।

संत राजा परमानन्द जी दिखायी पड़ गये। वे पास आ गए, उसे स्मरण आ गया कि इनसे पश्चिम का समाचार जानना है। वह उनके साथ हो गया, उनके साथ उनकी कुटिया में गया, उसने अनुरोध किया कि हुमायूं के बारे में कुछ बताएं। संत परमानन्द पश्चिम की गाथा सुनाने लगे।

मुगल बादशाह हुमायूं विक्रम संवत् १५६७ में कन्नौज के युद्ध में पराजित हो गये। उन्हें भागना पड़ा, मैंने शक्ति भर सहायता की, लेकिन शेरशाह का भय था। वे आगे बढ़ गये, अमरकोट में अकबर का जन्म हुआ, परन्तु वहां ठहरना सम्भव नहीं था। वे काबुल चले गये, भाई कामरान ने सहायता के बदले बन्दी बनाना चाहा। उन्हें फारस भागना पड़ा, सुन्नी से शिया बन जाने पर फारस के बादशाह ने मदद की। काबुल पर उनका अधिकार हो गया, पर हुमायूं और कामरान की आपसी लड़ाई कन्धार में चलती रही। मैं सन्त पूरनदास के साथ भक्ति भावना में बेसुध होने लगा। उधर भाइयों में तख्त के लिए लड़ाई चलती रही। हुमायूं सबको हराकर आगे बढ़ गए हैं। पेशावर पर कब्जा हो

चुका है, अब शेरशाह का भय नहीं है। लाहौर पर नजर है। दिल्ली-आगरा पर कब्जा करने के लिए वे कोशिश करेंगे। मझे हुमायूं और शेरशाह के बेटे सलीमशाह से मतलब नहीं है। अब तो श्रीराधावल्लभ जी ही मेरे सर्वस्व हैं।

हेमू सोचने लगा-विदेशी मुगल फिर इधर आयेंगे। फिर युद्ध होंगे, लाहौर से दिल्ली- आगरे तक आग की लपटें फैलेंगी। गांव-नगर धू-धू कर जलगै। आगरा पास है, देश की राजधानी है, इस्लामशाह याने सलीमशाह सूरी सिंहासन पर है। आगरा, यमुना जी के किनारे...आगरा....हिन्दुस्तान की राजधानी...एक बार उधर भी जाना चाहिए।

सात

राधावल्लभ सम्प्रदाय के प्रधान श्री हितहरिवंश जी का प्रवचन आरम्भ हुआ। शिष्यों और भक्तों का समुदाय श्रद्धा के साथ उनके सामने बैठा था, सन्त परमानन्द जी हेमू के साथ आ गये। हेमू पास ही बैठ गया, परन्तु मन में आगरा जाने की इच्छा जग रही थी। वह उधर की ही कल्पना करने लगा।

श्री हितहरिवंश जी मधुर स्वर में कह रहे थे – 'यह वृन्दावन नित्य विहार का पावन धाम है। हमारा सौभाग्य है कि हम वृन्दावन की धूलि में विराजमान हैं। इसी वृन्दावन में विदग्धनागरी श्रीराधा और रसिक शेखर श्रीकृष्ण नित्य आनंददायिनी क्रीड़ाएं करते हैं। यह वृन्दावन तो साक्षात् राधा रूप है, आप सभी प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। श्रीराधा की रोमराशि वृन्दावन की यमुना है, अंगों की दीप्ति वृन्दावन का बंधूक पुष्प है, नाभिविवर्त्त वृन्दावन के सरोवर हैं, वक्षोज ही वृन्दावन के पुष्पगुच्छ हैं; भुजाएं वृन्दाविपिन की लताएं हैं, नूपुरों की गुंजार भौंरों का गुंजन है यह वृन्दावन नित्य वृन्दावन है। यह पार्थिव होकर भी अपार्थिव है, इसलिए यहां ही नित्य किशोरी राधा और नित्य किशोर कृष्ण का नित्य विहार होता रहता है। हम इसमें सम्मिलित होते हैं। हमें ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होती है, हमारा जीवन सार्थक हो जाता है।

सबके शीश झुक गए -- दो बार। एक बार नित्य वृन्दावन की भूमि पर और दूसरी बार गुरु के चरणों में।

हेमू सोचने लगा कि उसे पिताजी आगरा जाने की अनुमति देंगे? नहीं देना चाहेंगे। वे रोकेंगे, पर उसे जाना है, उसे रोक नहीं सकेंगे। वे बहुत प्यार करते हैं, अनुमति देंगे वह वृन्दावन के दर्शन कर चुका, उसने संत पूरन जी की ओर देखा, पूरन जी प्रसन्न दिखायी पड़े।

श्री हितहरिवंश जी ने प्रवचन समाप्त कर दिया था। वे आसन से उठकर खड़े हुए, सभी लोग उठकर खड़े हो गए। वे अपनी कुटिया की ओर चल पड़े। पूरनदास जी हेमू के साथ

चलने लगे, धूप कड़ी हो गयी थी, वे हेमू के कन्धे पर हाथ रखकर छांव में चलते गये। अपनी कुटिया में आ गए, हेमू पंखा झलने लगा, पिता का हृदय तृप्त हुआ। वे बोल उठे- 'हेभू! यहां तुम्हें कैसा लग रहा है?'

'हां, पिताजी! वृन्दावन तो भगवान कृष्ण की लीलाभूमि है, परम पवित्र है, आज का प्रवचन बहुत अच्छा लगा।'

'तुम्हारा यहां आना ठीक रहा। इस भक्तिभाव के साथ तुम कहीं भी रह सकते हो। यदि विचार प्रखर और भाव जागृत रहे तो मनुष्य सुख से जीवन जी लेगा।'
'जी, हां! जीने के लिए विचार का आधार आवश्यक है। अब तो हमारे कल के आराध्य श्रीराधावल्लभ जी हैं। सदा प्रेरणा मिलेगी।

'अब क्या सोचते हो? रेवाड़ी जाओगे या मथुरा में रहकर कोई व्यापार या चाकरी करोगे? अब तुम्हारा विवाह भी होना चाहिए।'

'पिताजी, आपकी आज्ञा हो तो आगरा जाऊं - देश की राजधानी है, वहां व्यापार कर आगे बढ़ा जा सकता है।'

'आगरा जाओगे! दूर तो नहीं है, पर वहां किसी को शांति नहीं है। यवनों का दबदबा है, फिर किसी उलझन में पड़ जाओगे।'

'पिताजी! आपके पास आकर मन को शांति मिल गयी है। अब तो श्रीगधावल्लभ जी के प्रति निष्ठा जग गयी है। इसके साथ कहीं भी भाग्य से लड़ा जा सकता है। यवनों का दबदबा तो सारे देश पर है, उनके राज्य में ही रहना है, जजिया देकर रहना है, केवल आपके आशीर्वाद से सब मंगलमय रहेगा।'

तुम्हारा बाल हठ बाध्य कर रहा है, हेमू! जाओ! एक पत्र दंगा, बेटे! आगरा में पहचान के एक सेठ हैं, भगवद्भक्त हैं। वे सहायता करेंगे, आज संध्या में नरवाहन जी से कहूंगा कि वे तुम्हें आगरा तक पहुंचाने का प्रबन्ध करा दें।'
ये नरवाहन जी कौन हैं?'
'यमुनाजी के पार के भैगांव के हैं। बड़े क्रूर जमींदार रहे हैं, इनसे लोग पीड़ित रहते थे। एक दिन चीरघाट पर रासमंडल में भेंट हो गयी, कहीं से आ गये थे, श्रीगुरुरेव के दर्शन तथा वार्ता से उनमें परिवर्तन आ गया। वे शिष्य बन गए, अब वे सबके प्रिय बन गए हैं।'
'जैसी आपकी इच्छा!'
राजभोग के समय नरवाहन अपने पुत्र विजयवाहन के साथ आये। आरती में सम्मिलित हए, आरती और भजन के बाद सबने राजभोग का प्रसाद पाया। हेमू अपने समवयस्क विजयवाहन को देख फूला नहीं समाया। पूरनदास ने नरवाहन और विजयवाहन से हेमू का परिचय कराया। नरवाहन की घनी मूछों के बीच मन्द मुस्कान उभर आयी। विजयवाहन हेम की ओर देखता रह गया। हेम पास आ गया, दोनों बातचीत करने लगे। दोनों में दुराव नहीं रह गया, वे दोनों बातचीत करते मन्दिर के बाहर निकल आए।

संत पूरनदास ने नरवाहन से अनुरोध किया- 'बेटा आगरा जाना चाहता है, उसे कल प्रभात में मंगला आरती के बाद जाना है। यदि साथ में विजयवाहन जाय तो दोनों हंसते-बोलते पहुंच जायें।'
'यह कौन-सा बड़ा काम है, संतजी! बस, बीस कोस जाना है। दो दिनों में घूम-फिर कर लौट भी आएंगे।' नरवाहन ने आश्वासन दिया।
'लौटकर नहीं आना है। बेटा आगरा में रहकर व्यापार करना चाहता है, इसलिए सोचता हूं कि सेठ सोहनलाल के नाम एक पत्र दे दूं। भक्त-पुरुष हैं, पर वे बहुत दुःखी हैं।'

'वे दुःखी तो हैं, परन्तु वे सहायता करेंगे। उन्हें तो अपने व्यापार में सहायता मिल जाएगी, आपने ठीक सोचा है।'

'दूसरा कोई तो सूझ नहीं रहा है।'

'सरकारी दफ्तर में मेरी जान-पहचान है। पर वहां से मदद नहीं मिल सकेगी, सेठजी से मेरा भी परिचय है।'

'बेचारे का बेटा पठान लड़की से शादी कर पास रहकर भी दूर हो चुका है। मोहनलाल, जमाल अहमद बन गया है।'
'मैं उसे समझाने गया था, लेकिन उस पर प्रेम-इश्क का नशा चढ़ गया था, वह समझने को तैयार नहीं हुआ।'
'कोई लोभ से, कोई भय से और कुछ लोग ऊंच-नीच के व्यवहार से बचने के लिए अपना धर्म छोड़ रहे हैं। हर शहर और हर परगने से यह संवाद मिलता रहा है। क्या किया जाये?' 'उधर अलाउद्दीन खिलजी, सिकन्दर लोदी और बाबर के समय तो भय प्रबल हो उठा था। शेरशाह की समझदारी से भय थोड़ा कम हुआ है, संतजी!'
'सबसे बड़ी बात है, नरवाहनजी! कि कबीरदास, नानकदेव, हितहरिवंश जी और वल्लभाचार्य के भक्तिपंथ के कारण भय कम हुआ है। अपने आराध्यदेवता के प्रति निष्ठा के साथ जीवन जीने का विश्वास बढ़ा है।'
'यह तो आप ठीक कहते हैं।'
'सारे भारत में भक्ति का शंख गूंज रहा है, नरवाहनजी! शाही दरबारों में लोग भय या लोभ से जाते हैं। पर वृन्दावन-गोकुल में तो सारे देश से लोग श्रद्धा से आते हैं। मैं नित्य अनुभव करता हूं।'
'हां, संत जी! यह बहुत बड़ी बात है। नक्कारा, दमामा, दहल और नगाड़े की आकाशभेदी आवाज के सामने बंगाल से पंजाब तक शंख और घंटे-घड़ियाल बड़ी उमंग से बजने लगे हैं। वीणा और बांसुरी उदास मन को मोहने लगी हैं, पर एक बात कांटे के समान खटक रही है।'

'वह कौन-सी बात है? शंका न पालें।'
'यही ऊंच-नोच की जन्मजात स्थिति! छूत-अछूत से बंटे हुए लोग! राम, कृष्ण और गंगा के सामने झुकने वाले श्रद्धालू लोग आपस में कितनी दूर-दूर रहते हैं! जहां हृदय मिलता है; वहीं हृदय अलग-अलग हो जाता है। कोई सर्वश्रेष्ठ है, कोई श्रेष्ठतर है और कोई श्रेष्ठ है। कोई हीन है तो कोई अछूत, हीनतम हैं। कुछ के शीश तने हुए हैं

तो कुछ के झुके हुए हैं-यही वर्णव्यवस्था है न!'
पर भक्ति ने सबको एक स्थान पर ला दिया है। सबके हृदय को मिलाया है, सबको भक्ति का अधिकार मिला है। क्योंकि भक्ति तो हृदय का धर्म है।'
'थोड़ा परिवर्तन आ रहा है।'
'आया है तो आता ही जायेगा।'
'गुरु रामानन्द ने रास्ता दिखाया है। सबको अपनाया है, पर पंडित-पुरोहित समुदाय इसे मानने को तत्पर नहीं है। गांव का जनसमुदाय तो पंडित-पुरोहित के आदेश पर सांस लेता है।'
'वे भी धीरे-धीरे मानेंगे, वे शास्त्र की रूढ़ियों से बंधे हैं।'
'इसीलिए कभी-कभी लगता है कि कबीरदास की बातें सही हैं। वे सबसे लोहा लेते रहे, मुल्ला और पंडित सभी से।'
'निस्सन्देह वे निर्भीक सन्त थे। हृदय की गहराई से बोलते थे। तभी तो दूर-दूर गांवों में उनकी वाणी सुनाई पड़ने लगी है। केवल उनके गोविन्द गोपाल हमारे राधावल्लभ नहीं थे, पर इससे बहुत अन्तर नहीं आता। एक ही सत्य की बात कर रहे थे।'

संत पूरनदास जी के स्वर में गाम्भीर्य था।
कोलाहल सुनाई पड़ा। दोनों सावधानी से इधर-उधर देखने लगे।
विजयवाहन और हेमचन्द्र-दोनों ने एक युवक को पकड़ रखा था। इधर ही ले आ रहे थे।
कुछ तीर्थयात्री उस युवक पर बरस रहे थे। विजय ने नरवाहन जी के सामने उसे ला दिया। और कहा- 'यह मथुरा का है। इन तीर्थयात्रियों के पीछे-पीछे आ रहा था।
'राधा-- अनुराधा-विशाखा' बोल-बोल कर चिढ़ा रहा था।
'हाथ-पैर बांधकर इसे मथुरा भेज दो। काजी इन्साफ कर सजा देगा। यह तो सहन नहीं किया जा सकता।' नरवाहन ने रोष के स्वर में कहा।

'अपराध वृन्दावन में हुआ है। साक्षी यहीं हैं। पीड़ित यहीं हैं। यहां की पंचायत निर्णय कर सकेगी। पंचायत का तो अधिकार है ही।' पूरन जी ने सुझाव दिया।

'हां, आपका यह सुझाव समुचित है। पंचायत ही निर्णय करेगी। इसे एक कुटिया में बन्द कर दिया जाय। पंचायत को सूचना दी जाए।' नरवाहन जी ने निर्णय दे दिया।

अपराधी युवक नरवाहन जी को देखकर कांप रहा था। उसका सर झुक गया। वह भय से कुछ बोल भी नहीं पा रहा था। चारों तरफ लोग अपनी आंखों से आग उगल रहे थे। हेमू विजयवाहन से संकेत कर रहा था कि इसे कुटिया में बन्द कर दिया जाय।

दोनों उस अपराधी को कुटिया में बन्द करने के लिए आगे बढ़ आए।

आठ

मंगला आरती के बाद संकीर्तन के स्वरों के मध्य प्रसाद का वितरण होने लगा। संत पूरनदास ने हेमू को संकेत दिया कि वह शीश झुकाकर प्रसाद ग्रहण कर ले। हेमू ने शीश झुकाकर ही प्रसाद ग्रहण किया। संत जी उसे श्री हितहरिवंश जी के पास ले गए। उन्होंने ब्रजरज और रोली से हेमू के भाल पर तिलक कर दिया, और आशीष देते हुए कहा-'हेमू! तिलक की रेखाएं कृष्ण रूप हैं तथा रोली की लाल बिन्दी राधा रूप। अब तुम सदा इनके साथ हो।'

'हां, गुरुदेव! आपकी आशीष भी प्रत्येक क्षण मेरे साथ है।' हेमू ने विनम्र भाव से कहा।

'राधावल्लभ जी के प्रति भक्ति प्रत्येक क्षण जाग्रत रहे। इसके साथ तुम्हारी सहज तेजस्विता, निर्भीकता तथा दु:खी लोगों के प्रति सेवाभावना बनी रहे। जीने के लिए ये आवश्यक हैं।'

'इस मन्त्र को सदा स्मरण रखंगा।'
'तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो।'
हेमू ने हितहरिवंश जी का चरण स्पर्श किया। आशीर्वाद मिला। पूरनदास गद्गद थे। संत नवलदास, संत परमानन्द, हरिराम व्यास तथा नरवाहन जी भी आ गए थे। विजयवाहन भी उपस्थित था।

सभी सत पूरनदास जी की कुटिया में आए। पूरनदारा ने रास्ते के लिए भोजन की पोटली हेमू की झोली में रख दी। फिर सोने की एक पुरानी अंगूठी उसकी हथेली पर रखकर कहा- 'हेमू बेटे! मेरे पास यह अंगूठी बच रही थी। तुम्हें देने के लिए समय की प्रतीक्षा कर रहा था। इसे संभाल लो! इससे कुछ सहायता मिल जाएगी। और यह चिट्ठी है। आगरे के सेठ सोहनलाल के नाम है। इस चिट्ठी के साथ सेठ जी के पास पहुंचना है। वे अवश्य ही सहायता करेंगे।'

हेमू ने हाथ फैला दिया। चिट्ठी को ले लिया। उसकी दष्टि पिताश्री के मुख पर गई। देखा कि उनकी आंखों में आंसू हैं। उसकी आंखें भी भीग गईं। पलकें झुक गईं। कुछ बोल नहीं सका। पर आंसुओं की भाषा सबकी समझ में आ रही थी।

पूरनदास जी मन्द स्वर में बोल उठे–'हेमू! तुम आगरे में अपने को अकेला मत समझना। हम सबका आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। पुत्र के बहक जाने से दुःखी सेठ सोहनलाल का स्नेह भी पा लोगे। उन्हें पितृवत् समझना।'

'मुझे प्रकाश मिल गया, पिताजी! इसीलिए तो आपके पास आया था। आपकी आशीष से आगरा शहर अपना हो जाएगा। अब आप मुझे विदा दें।'

हेमू सबको नमन कर और सबसे भंगल कामना पाकर विदा हुआ। कंधे पे झोली लटकायी। देख लिया कि झोली में भस्मी की डिबिया है। पारो की स्मृति जग गयी। विजय ने संकेत किया। वह उसके साथ चल पड़ा। सेवाकुंज से बाहर निकलने पर दो घोड़े तैयार मिले। दोनों घोड़ों पर सवार हुए। घोड़ों की टापें उठीं। आकाश पर बादल मंडरा रहे थे। विजयवाहन ने कहा-'हेमू भाई! आकाश हमारा स्वागत कर रहा है। देखो, इन्द्रधनुष छा गया है।'

'विजय! जब कोई व्यक्ति संकल्प कर धरती पर पैर रोपता है, आकाश मंगल रंग बिखेरता ही है।' हेमू के स्वर में दृढ़ता थी।

विजय हेमू के इन शब्दों पर विचार करता रहा। दो क्षण के बाद बोल उठा-हेमू! पहले पिताजी कठोर जमींदार के रूप में हुंकार करते थे। गरीब किसान भय से सहमे रहते थे। आज वे भक्ति का संकल्प कर चुके हैं। अब उन्हें आदर का मंगल पुष्प मिल रहा है। "पर शाही तख्त क्या चाहता है? मैं कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा हूं।'

'जो ओहदा, दौलत और ऐयाशी चाहता है, वह तख्त के इशारे "पर चले। लेकिन यह अच्छा नहीं है।'

'अच्छा क्या माना जाय, हेमू भाई!'

'स्वाभिमान के साथ जीना, सबके साथ जीना और अपनी धरती मां की प्रतिष्ठा के लिए जीना।'

'इतनी दूर तक कैसे सोच लेते हो?'

'भाई विजय! अपने चारों ओर के जीवन को देखते-सुनते और कुछ पढ़ते-समझते ये बातें अन्तर में गूंजने लगती हैं।'
तुर्क-पठानों के राज्य में स्वाभिमान के साथ जीना सम्भव नहीं। इसलिए तो मेवाड़, जयपुर, रणथम्भौर की ओर जाना पड़ेगा।'
'विजय! तुर्कों के आक्रमण और विध्वंस के बाद उनका कठोर शासन शुरू हुआ है, हम हताश हो गये हैं। यह सही है। यह भी सही है कि जब-तब रोष उभरता है। पर कुचल दिया जाता है। एकाध वीर राजे अकेले लड़ लेते हैं। परिणाम तो मथुरा का विध्वंस है। निराशा स्वाभाविक है। परन्तु निराश नहीं होना चाहिए।'

'आशा-विश्वास कैसे जगे?'

'वृन्दावन और गोकुल में नये विश्वास के आधार पर लोग जीने लगे हैं। कबीर की वाणी भी नयी आशा दे रही है।'

'हां, यह तो लग रहा है। पर तुम तो आगरा जा रहे हो। वहां शाही कानून के मुताबिक व्यापार करोगे। नये विश्वास और स्वाभिमान के साथ कैसे जी सकोगे?'

'तुम्हारा प्रश्न उचित है। आरम्भ में कठिनाई होगी। धीरे-धीरे परिस्थिति को अनुकूल बनाना होगा। क्या करूं! भोर-संध्या रोटी चाहिए। रोटी के साथ सोचने की आजादी चाहिए और जीने के लिए स्वाभिमान एवं विश्वास।'

'तब तो आगरा में टिक नहीं सकोगे। अपने गांव में रह जाते या वन्दावन में।'

'शाहों की लड़ाइयों से गांव उजड़ जाता है। मेरा गांव भी उजड़ गया है। बहुत कुछ लुटाकर आया हूं। सोचा है कि आगरा में रहकर उसके रंग-ढंग को समझू। राजा क्या करता है और कैसे लूटता है?

'तुम व्यापार नहीं कर सकोगे, हेमू! और कुछ करके आफत मोल ले लोगे।'

'तुम सहायता करोगे न!'

'हित-मित बन गये हो। सहायता करनी पड़ेगी। पर मैं तो यही कहूंगा कि अधिक सोचना बन्द कर व्यापार करो। राजधानी में धन कमाओ। हमें भी खिलाओ-पिलाओ।'

'खिलाना तो अभी से आरम्भ करूंगा। चलो, थोड़ा सुस्ता कर खा लिया जाय।

हेमू ने घोड़े को रोक लिया। विजय ने चारों ओर देखा। पास में ही गांव और गांव से सटा उपवन दिखायी पड़ा। वह भी रुकने और विश्राम करने को तैयार हो गया। दोनों गांव की तरफ चले। उपवन के पास घोड़ों से उतर गये। उन्हें पेड़ों से बांधकर इधर-उधर देखा। कुआं दीख पड़ा। वहीं जाकर दरी बिछा दी। दोनों विश्राम करने लगे। फिर हाथ-मुंह धोकर खाने बैठ गये। हेमू ने झोली से भोजन की पोटली निकाली। पोटली में रोटी, साग और पेड़े थे। दोनों खाकर तृप्त हुए। जल पीकर पुनः विश्राम करने लगे।

लोगों के शब्द सुनायी पड़े। गांव के लोग उपवन में इकट्ठे हो रहे थे। कुछ लोगों ने पेड़ की छांव में एक चौकी रख दी। उस पर कम्बल बिछा दिया। सभी हरी-हरी घास पर बैठ गये। उजले कपड़े में एक साधु आये। चौकी पर आसन जमाया। सबके शीश झुके। साधु का प्रवचन आरम्भ हुआ—'सद्गुरु कबीर दास ने कहा है--'जांत-पांत पूछ ना कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।'

भगवान सबका मालिक है। सबका परमपिता है। वह सबको प्यार करता है। हम उन्हें प्यार करें। उनकी भक्ति करें। जांत-पांत की कोई जरूरत नहीं है। जो भगवान की भक्ति करेगा, वही भगवान का प्यारा कहलाएगा। जाति के कारण नहीं, पाक-पवित्र भक्ति के कारण हम सभी हरि के जन हैं, हरि के प्यारे हैं। उनकी भक्ति के लिए किसी बाहरी आडम्बर की जरूरत नहीं है। कहीं भटकना नहीं है। वह तो हम सबके अन्दर है। अन्दर की जोत को पहचानने के लिए कौन रोकेगा? इसीलिए सद्गुरु ने बताया है-

'मन मथुरा, दिल द्वारिका, काया कासी जान,
दस द्वारे का देहरा, तामें ज्योति पिछान।'

कोई उठकर खड़ा हुआ और बोला-'तो मन्दिर में जाना और तीरथ करना बेकार है?'
दूसरे ने कहा- 'वे मन्दिर में जाने भी कहां देते हैं?'

साधु ने उन्हें शान्त करते हुए बताया—'यह मानव-शरीर ही मन्दिर है। इस मन्दिर में ही आत्मा रूप परमात्मा है। इसे जगाओ, इसी के दर्शन करो। कहीं मत भटको।'

तीसरा उठकर बोलने लगा-'आज भोर में एक सूफी साधु आये थे। वे भी ईश्वर और खुदा को एक बता रहे थे। खुदा के सुन्दर रूप से प्रेम व इश्क की बातें कर रहे थे।'

साधु ने मन्द मुस्कान के साथ समझाया-'सद्गुरु कबीर इसी धरती मां की सन्तान हैं। उन्होंने ही सबसे पहले हिन्दू और तुर्क के, ब्राह्मण और शूद्र के और मानव एवं मानव के भेदभाव मिटाने की आवाज दी है। उन्होंने सबको भगवान की भक्ति के लिए मन्त्र दिया है। वे ही महान गुरु रामानन्द के शिष्य थे। उन पर तो तुर्क बादशाह भी नाराज हुआ और काशी का पंडित भी। पर वे निडर होकर अपनी वाणी सुनाते रहे। इसीलिए उनके शिष्यों को मन्दिर के पुजारी से डांट नहीं सुननी पड़ी और न अपना धर्म बदलना पड़ा। हम शुद्ध जीवन जियें। आत्मा को पवित्र बनायें। परमात्मा अपने आप दर्शन देगा। 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।'

ऐसा लगा कि सबके मन को समाधान मिल गया है। सभी प्रसन्न दिखायी पड़े। विजय और हेमू भी साधु के प्रवचन को सुन रहे थे। जब-तब एक-दूसरे को देख लेते थे।

साधु ने पद-गान शुरू कर दिया -
मन लागा यार फकीरी में,
जो सुख पायो रामभजन मे, सो सुख नाहिं अमीरी में।

विजय और हेम् चलने को तैयार हुए। पर उनके पैर रुक गए। वे भी भजन सुनने लगे। भजन समाप्त हुआ, दोनों घोड़ों पर सवार हुए। गांव के लोग उन्हें देखने लगे। क्या ये बादशाह के चाकर हैं? हाकिम हैं? उन्हें थोड़ा भय हुआ। वे एक-दूसरे से पूछने लगे। साधु ने समझ लिया कि ये भोले-भाले ग्रामीण भयभीत हैं। साधु ने सद्गुरु कबीर का जीवन-प्रसंग सुनाया। और वे सबके साथ गांव की ओर बढ़ गये। सभी भय से मुक्त होकर अपने-अपने घर के द्वार पर आए। साधु बच्चों से हंसने-बोलने लगे।

उधर हेमू कह रहा था-'भाई विजय! यदि शेरशाह के वंशज का शासन और उदार हो जाता और युद्ध का डर दूर हो जाता तो बड़ा कल्याण होता। यदि ये साधु सन्त पूरी स्वतन्त्रता के साथ मानव को समता, करुणा और प्रीति का सन्देश दे पाते तो अपना देश स्वर्ग बन जाता।'

हेमू भाई! तुम स्वर्ग के सपने देख रहे हो! यहां तो कलियुग प्रबल है। स्त्रियां डर से घर में छिपी रह रही हैं। मानव-मानव में भेदभाव चल रहा है। कहीं जाति के नाम पर भेदभाव है और कहीं धर्म के नाम पर। यह तो नरक है।' विजय ने उत्तर दिया।

'नरक और घिनौना बनने वाला है, विजय! मुगल फिर आ रहे हैं। युद्ध, रक्तपात,

विध्वंस और स्त्रियों की दुर्दशा की आंधी आएगी। बचना कठिन होगा। मैं सब कुछ लुटाकर भटक रहा हूं।' हेमू के स्वर में पीडा झलक आयी।

विजयवाहन हेमू की आंखों में पीड़ा पढ़ने लगा। हेम् की आंखों में पारो की चिता धधकने लगी। विजय तो देख नहीं सका। पर कुछ अहसास-सा कर रहा था।

आगरा निकट आ गया। सीकरी की ओर न जाकर वे दोनों आगरा की ओर मुड़ गये। सांझ हो चली थी। आगरा-सीकरी मार्ग में लोगों की भीड़ दिखायी पड़ी। विजय और हेमू के घोड़े थक गए थे। पर उन दोनों का उत्साह बढ़ गया था। भीड़ से बचकर ये आगरा की ओर बढ़ते गए। संध्या की लाली में आगरा नगर की चारदीवारी, बुर्ज, ऊंची अट्टालिकाएं और आसपास की अटारियां दिख रही थीं। घुड़सवार सिपाही भाले और तलवार से लैस होकर आगरा की ओर जाते दिखायी पड़े। ये दोनों भी बढ़ते ही गये।

आगरा यमुना के दोनों ओर बसा था। किला और शाही हुक्मरानों के दफ्तर नदी के पार थे। इस पार शहर का बाजार था! सैनिक चौकी थी। नदी के दोनों तरफ सुरक्षा की पूरी व्यवस्था थी। नगर के प्रवेश-द्वार पर भी जांच चौकी थी। ये दोनों पहुंचे। हेम के हृदय की धड़कन बढ़ गयी। वह सोचने लगा-वह हिन्दुस्तान की राजधानी में आ गया है। इसी के संकेत पर देश का शासन होता है। कानून लागू होते हैं। युद्ध की घोषणा होती है। वह इसी राजधानी को देखेगा। बादशाह को देखेगा। पर पहले रोटी का प्रबन्ध करना होगा।

जांच चौकी पर ये दोनों रोक लिये गए। विजय ने चिट्ठी पेश की। चिट्ठी की जांच हुई। पूछताछ भी हुई। विजय जवाब देता रहा। और तब उन्हें नगर-प्रवेश की अनुमति मिली। दोनों आगे बढ़े। हेमू आश्चर्य से देखने लगा। वर्षा आरम्भ हो गयी। वर्षा की शीतल फुहार में भीगते हुए दोनों सेठ सोहन लाल के लक्ष्मी भवन के द्वार पर जा पहुंचे।

नौ

लक्ष्मी भवन के द्वार के आगे काठ के खम्भे पर बत्ती जलने लगी। विजय और हेम् घोड़े से उतरे। बत्ती जलाने वाले नौकर ने उन्हें देखा। पहले तो घबराया परन्तु वह तुरन्त ही समझ गया कि ये किले से नहीं आए हैं। उसकी घबराहट दूर हो गई। विजय ने कहा—'हम दोनों वृन्दावन से आए हैं। संत पूरनदास की चिट्ठी लेकर सेठ जी से मिलना है।'

'पर वे तो पीड़ा में हैं। एक हफ्ते से खाट पर पड़े हैं।' नौकर ने बताया।

'तब तो अवश्य मिलना है। मैं उनके मित्र चौधरी नरवाहन का पुत्र विजयवाहन हूं। ये

वृन्दावन के भक्त पूरनदास के पुत्र हेमचन्द्र हैं। हम उनके दर्शन के लिए ही आए हैं।' विजय ने कहा।

नौकर ने उन दोनों को आदर से स्वागत-कक्ष में बैठाया। और भीतर जाकर सेठ जी को सूचना दी। पीड़ा में बेहाल सेठ जी चौधरी नरवाहन और भक्त पूरनदास के नाम सुनकर थोड़े शान्त हुए। साथ में बैठे वैद्य जी को भी अच्छा लगा। सेठ जी की पत्नी और पुत्री की -विकलता भी कम हुई। सेठ जी ने उन दोनों को बुलाने का आदेश दिया। दोनों गम्भीरता एवं विनम्रता के साथ अन्दर आए। कांच के फानूसों (आलोक पात्रों) में झिलमिलाती मोमबत्तियों के प्रकाश में दोनों ने सर झुकाए और फिर संकेत पाकर दोनों गद्देदार आसनों में बैठ गए। हेमू वैभव से शृंगारित इस श्रेष्ठी कक्ष को देख चकित था। वह चारों ओर देखता सेठजी के मुखड़े पर आंखें टिका देता। फिर दीवारों और खंभों के रूप-रंग को देखने लगता। विजय ने वैद्य जी की ओर कुछ जानने के लिए निहारा। सेठ जी धीरे से बोल उठे-'आप दोनों वृन्दावन से आए हैा!'

'जी, हां! मैं चौधरी नरवाहन का पुत्र विजयवाहन हूं। और ये संत पूरनदास जी के पुत्र हेमचन्द्र हैं। संत जी ने आपके नाम से एक चिट्ठी दी है।'

'तुम्हें तो थोड़ा-थोड़ा पहचान रहा हूं, विजयवाहन! नरवाहन जी अच्छे हैं न?' 'जी, हां! अच्छे हैं। आपकी पीड़ा से दोनों चिन्ता में हैं।'
'संत जी तो भगवान के नित्य विहार में सम्मिलित हैं। उनकी कृपा से ही दूर होगी। यह मेरा सौभाग्य है!'
'दोनों ने आपका कुशल-क्षेम पूछा है।'
'बेटे! मेरा कुशल-क्षेम...? क्या बताऊं? देख ही रहे हो। मेरा बेटा मोहन पठान लड़की से विवाह कर जमाल अहमद बन गया है। किसी की बात नहीं मानी। चौधरी नरवाहन ने भी समझाया था। अब मैंने घर से निकाल दिया है। ऐसे कपूत की क्या जरूरत है। इत्रफरोश इलाहीबख्श के पास पहुंच गया है। इत्रफरोश का दामाद बाप से आंखें फेर चुका है। आह! दूसरी तरफ एक माह से सारा व्यापार ठप्प है। कौन गांवों में जाकर गेहूं और चना खरीदे। किले में गेहूं और चना भेजना है। मुझे ही भेजना है। बादशाह मालवा से लौटने वाले हैं। मैं रोग और चिन्ता में गल रहा हूं। यम का द्वार दिखाई दे रहा है।' सेठ सोहनलाल ने आह भरकर करवट ले ली।

'आप शान्त रहें। अधिक न बोलें।' वैद्य जी ने समझाया।

'अधिक नहीं बोलना है, वैद्य जी! बोलने वाला तो भीतर-हीभीतर दुःख से तड़प रहा है। आप चिट्ठी पढ़ दें।'

वैद्य जी ने चिट्ठी को पढ़ना आरम्भ किया-
'सेठ सोहनलाल जी!
जय श्री राधावल्लभ जी की!!
श्री प्रिया जी की अनुकम्पा से आप स्वस्थ एवं सानन्द रहें। आपके दुःख का संवाद मिला है। धैर्य रखें। कालचक्र कठोर है। सभी पिस रहे हैं। पर निराश नहीं होना है, आशा रखें।

आपकी सेवा में अपने एकमात्र पुत्र हेमचन्द्र (हेमू) को भेज रहा हूं। भवत नरवाहन के पुत्र विजयवाहन के साथ आ रहा है। रेवाड़ी का इलाका बहुत कुछ उजड़ गया है। बहुत कुछ खोकर हेमू भटकता हुआ आया है। भीतर से अशान्त है। भगवद्-कृपा से ही मन की शान्ति मिल पाती है।

इसे छोटे-मोटे व्यापार का अनुभव है। यह आपकी सेवा में लग जाना चाहता है जिसे दोनों छाक भोजन मिल सके। जीवन चल सके। यदि सम्भव हो तो इसे आप अपने काम में लगा लें।

आप श्री राधावल्लभ जी का स्मरण करें। मन को शान्ति मिलेगी। हम सबकी मंगल कामना है।
कुशल समाचार भेजने की कृपा करें।

इति शुभम्

- पूरनदास'

वैद्य जी ने पत्र को पूरा कर दिया। चिट्ठी को सेठ जी के पास रखा। वे कभी हेम को देखते और कभी सेठ सोहनलाल को। हेमू और विजय पत्र का प्रभाव जानने के लिए सेठ सोहनलाल की ओर देखने लगे। सेठ की पत्नी दुर्गा कुंवर और पुत्री पार्वती सिर झुकाकर बैठी थीं। सोहनलाल आंखें मूंदकर कुछ सोच रहे थे। संत पूरनदास का पुत्र आया है। उनका पत्र भी है। वे क्या करें? बादशाह सलीमशाह सूर मालवा से लौटने वाले हैं। वे किले में गेहूं और चना भेज नहीं सके हैं। बादशाह नाराज होंगे। शाही इत्रफरोश इलाहीबख्श कान भर सकता है। कुछ मोहन ने बरबाद किया और कुछ बादशाह के प्रकोप से बरबाद होगा। पड़ोसी हंसेंगे। कोई सहायक नहीं दिखता। हेमचन्द्र को साथ में रखा जाय। यह काम संभाल सकता है। संत जी की बात रह जाएगी। किसी को खिल्ली उड़ाने का अवसर नहीं मिलेगा।

सेठ ने आंखें खोलीं। देखा कि सबकी आंखें उन्हीं पर लगी हैं। सन्नाटे में सबकी सांसें सुनी जा सकती हैं। सबकी उत्कण्ठा को पढ़ा जा सकता है। अपनी पत्नी की ओर देखा। असहमति का भाव नहीं था। और तब उनके शब्द गूंज उठे-

हेमचन्द्र यहीं रहेगा। मेरा काम सम्भालेगा। संत जी का अनुरोध मुझे स्वीकार है।'

कक्ष में हर्ष की लहर फैल गई। लगा कि अभी तक रात का अंधकार बढ़ रहा था। अब शुक्लपक्ष की रात का प्रकाश आ गया। अंधकार बाहर जाने लगा। दासी शीतल पेय रख गई। सेठ जी के संकेत से सभी शीतल पेय पीने लगे। हेमू और विजय ने महसूस किया कि उनकी थकान मिट गई। हेम तो भीतर से बहुत प्रसन्न हो उठा था। चाकरी मिल गईं, रोटी-साग का प्रबन्ध हो गया। आगरा में ही हो गया।

सेठानी दुर्गा कुंवर पार्वती के साथ जाने लगीं। सेठ ने कहा- 'दोनों के लिए

भोजन...।'

सेठानी ने शीश हिलाकर मान लिया। वर्षा थम गई थी। वायु में ठण्डक आ गई थी। वैद्य जी ने शीतल पेय पीकर घर लौटने की इच्छा प्रकट की। उन्हें अपना शुल्क मिल गया। वे सहर्ष लौट चले।

सोहनलाल वृन्दावन और सेवाकुंज के बारे में बातचीत करने लगे। कभी विजय उत्तर देता और कभी हेमू। फिर वे रेवाड़ी के बारे में पूछने लगे। हेमू ने बड़ी विनम्रता से बातचीत की। कुछ बताया और कुछ छिपाया।

भोजन का समय हो गया। वहीं भोजन आया। सेठ जी ने सबके साथ थोड़ा-सा भोजन किया।

नौकर हुलास ने दोनों को भवन के पिछवाड़े की वाटिका में मुंशी हरसुख के पास पहुंचा दिया। मुंशी हरसुख ने इन दोनों का स्वागत किया। पास की कोठरी में उनकी ठहरने की व्यवस्था करा दी। दोनों गाढ़ी नींद में बेसुध हो गए।

अंधेरे के बीच उजाले का रंग उभरने लगा। पंछी कलरव करने लगे। मुंशी हरसुख ने बिछावन से उठकर भजन गाना आरम्भ किया। सूरदास का पद मन्द स्वर में फैलने लगा। हेमू की नींद टूट गई। पर आंखें बन्द रहीं। उसने पद के शब्दों को पहचानने की चेष्टा की। यह श्री हितहरिवंश का पद नहीं है। पद की अन्तिम पंक्ति से मालूम हो गया कि सूरदास का पद है। उसने भी चाहा कि वह श्री हितहरिवंश का पद गुनगुनाये। उसने आंखें खोलीं। अंधेरे में उस कोठरी का आभास मिला। बाहर वाटिका है। विशाल भवन का अंग है। यानि वह अब आगरा में है। यह सब कैसे हो गया? रेवाड़ी के छोटे-से गांव से आगरा आ गया। क्या उसकी इच्छा-शक्ति का परिणाम है? या यही काल की गति है ? क्या यही नियति का चक्र है? परिस्थितियों ने उसे अशान्त बना दिया। गांव उजड़ गया। पारो की चिता धधककर राख हो गई। वह पीड़ा से विकल होता रहा। उसके भीतर जूझने का विचार जगा। योगी जी के पास पहुंच गया। रोटी की समस्या खड़ी हो गई। उसे गांव छोड़ना पड़ा। वृन्दावन आया। एक तरफ मन का विश्वास बढ़ा। दूसरी तरफ मुगलों के आक्रमण की सम्भावना की सूचना मिली। उसकी अशान्ति बढ़ गई। वह आगरा आ गया। पर यहां वह क्या कर लेगा? पारो का प्रतिकार सम्भव है? खवास खां तो बादशाह से विद्रोह कर पश्चिम चला गया है। ये तुर्क अफगान आपस में लड़ते हैं और प्रजा को तबाह करते हैं। वह कैसे समझा सकेगा?

वह तो सेठ के यहां नौकरी करेगा। दोनों संध्या रोटी-साग पा लेगा। पर इतने से उसका मन सन्तुष्ट नहीं होगा। वह राजधानी को बताने की कोशिश करेगा कि मुगल कितने बर्बर हैं। इन्हें रोको। अपने देश से दूर करो।

विजय ने करवट ली, आंखें खोलीं, वह उठकर बैठ गया। उसे लगा कि हेमू अभी तक सोया है, उसने उसे झकझोर दिया, वह तो जागा हुआ था, मुस्कराता हुआ उठ बैठा।

मुशी हरसुख का भजन पूरा हो गया। वह उनके पास आया, दोनों को जमना जी में नहाने का

निमन्त्रण दिया। दोनों ने निमन्त्रण को स्वीकार किया, कछ ही देर में वे तीनों आगरा नगर के राजमार्ग को पार कर यमुना जी के तट की ओर बढ़ गए।

हेमू ने देखा कि यमुना के पार आगरा का आधा भाग झलक रहा है। किले का ऊंचा परकोटा लहराते हुए झंडे के साथ सिर उठाए खड़ा है।

मुंशी हरसुख बता रहा था कि सिकन्दर लोदी के राज में हिन्दुओं के यमुना-नहान पर भी रोक थी। उसने मथरा के केशवदेव मन्दिर को तो तोड़ा ही, स्नान-पूजा को भी बन्द कर दिया, पता नहीं कितने लोग इस अत्याचार के विरोध में मारे गए!

मुंशी जी ने आगे बताया कि मुगल बाबर तो परदेशी था। उसने राणा सांगा की पराजय के बाद सबको कुचलकर अपना राज्य खड़ा किया। अपने गुरु-फकीर के इशारे पर अयोध्याजी में श्रीराम मन्दिर को तोड़ दिया। वहां के लोग लड़ते रहे, अपना खून देते रहे।

'तब तो अफगानों के सूरी वंश का राज्य कुछ उदार है।' हेम् ने पूछा।
'हां, बहुत कुछ उदार है। तभी तो हम यमुना जी में नहाने आ गए हैं।' मुंशी जी ने उत्तर दिया।

वे नदी तट पर आ गए थे। स्थान-स्थान पर सुरक्षा चौकी बनी हुई थी, सैनिक तैनात थे, हेमू ने उन्हें देखा। वे सभी पठान-अफगान नही थे, कुछ हिन्दू भी थे, उनके चेहरे से लग रहा था। उसे अच्छा लगा। विजय ने चाहा कि वह स्नान के बाद पूजा भी कर ले।

मुंशी जी ने समझाया कि वह नहाकर घर पर ही पूजा करेंगे, यहां इससे अधिक नहीं।
हेमू नहाते समय सोच रहा था कि यमना की लहरों में शरीर और मन का मुक्त बहाव है, परन्तु सर के ऊपर शाही झंडा है....झंडे का आतंक है, पर अत्याचार की स्थिति नहीं है। यही बहुत है! लोग सहमते हुए आते हैं। जल में डुबकी लगाकर धन्य हो जाते हैं।

तीनों लौट चले, कुछ लोग साथ लौट रहे थे। कुछ लोग अलग-अलग आ-जा रहे थे।

दस

आगरा शहर के दक्खिन-पश्चिम स्थित सिकन्दराबाद नामक मुहल्ले के एक मकान में सेठ सोहनलाल का पुत्र मोहनलाल, जमाल अहमद बनकर रह रहा है। सुबह होने वाली थी, उसकी बीवी नूरी की नींद टूट गई। उसकी पहली नजर जमाल (मोहन) पर गयी। नींद में बेसुध जमाल का चेहरा बड़ा खूबसूरत लगा। वह देखती रह गयी, उसके दिल ने चाहा कि वह अपने जमाल को देखती रहे। वे कभी दूर नहीं हों, वह उनके पास तितली की तरह मंडराती रहे, वे फूल की तरह खिले रहें, पर उसके पास दूसरी तितली न आ जाए। कभी वह फूल बन जाए और वे भंवरे के समान गुनगुनाते रहें, पर वे दूसरे फूल की तरफ मुड़ नहीं जायें।

लेकिन कुदरत ने ऐसा नहीं बनाया। बाग में बहुत-से फूल खिलते हैं, भंवरे एक फूल से दूसरे फूल पर मंडराते रहते हैं, तितली भी एक जगह नहीं टिक पाती। यह तो ठीक नहीं है, वे दोनों फूल और तितली नहीं हैं, वे तो इंसान हैं, प्यार में सारी दुनिया को भूल जानेवाले औरत और मर्द हैं। अब वे सिर्फ औरत और मर्द नहीं हैं, बीवी और शौहर हैं, प्यार से एक-दूसरे को पाया है, इन्होंने तो कुरबानी दी है-अपने घर-परिवार और धरम की, इन्होंने प्यार को सबसे ऊंचा माना है।

जमाल (मोहन) ने करवट ली, चेहरा थोड़ा छिप गया, नूरी देखती रही, अजान की आवाज सुनायी पड़ी, वह उठ बैठी। उसने दिल में उमड़ते जज्बे को समझा, एक पल सोचा और जमाल (मोहन) के कदमों “पर झुक आयी। चाहा कि उसे जगा दे। नहीं, थोड़ा और आराम कर लें यह सोचते हुए उठकर कमरे से बाहर आ गयी। आंगन में अमरूद और शरीफे के पेड़ थे, उन पर परिन्दे चहचहा रहे थे।

जमाल (मोहन) ने करवट ली, नींद टूट रही थी, उसे अनुभव हुआ कि नूरी उसके पैरों पर झुक रही है, हिन्दु स्त्री के समान पैरों को छकर प्रणाम कर रही है। उसे अच्छा लगा, उसने आंखें नहीं खोलीं, "पलकें बन्द किए नरी के प्यार का अहसास करता रहा। उसे लगा कि वह सब कुछ पा ग ग है, उसने गलती नहीं की है। पर उधर के सारे लोग उसे गलत मान रहे हैं। पिताजी ने अधर्म मान लिया, डांट-फटकार की, उसने सिर झुकाकर सहा, बहन पार्वती ने समझाया, परन्तु वह विवश था। नूरी के लिए मन में कहां से प्यार उमड़ आया था! वह समझ नहीं सका था, धीरे-धीरे वह प्यार गहराता गया।

वह होली में इत्र के लिए इसके मकान पर आया था। इसके अब्बा हुजूर इलाहीबख्श अपनी दुकान से इत्र भेज नहीं सके थे, भूल गए थे, वह पिताजी के कहने पर ही इत्र के लिए गया था। वहां उसने पर्दे से झांकती नूरी को देखा, उसकी झुकी पलकें, झांकती आंखें और शहद घुली बोली-उसने अजीव आकर्षण का अनुभव किया। वह आकर्षण धीरे-धीरे अनुराग में प्यार में बदलता गया। पहले तो इसके अब्बा हुजूर कुछ नहीं समझ सके, वे तो समझ रहे थे कि आगरा के सेठ सोहनलाल का बेटा इत्र खरीदने के लिए बार-बार आ रहा है, एक कामयाब सौदागर के समान स्वागत-सत्कार कर रहे थे। वैसे भी गन्धीइत्रफरोश के व्यवहार में जूही-केवड़े और गुलाब की मोहिनी गन्ध बसी रहती है। इसी मोहक वातावरण में प्यार की गन्ध अनदेखे-अनजाने प्राणों में बसने लगी। इलाही बख्श को अन्दाज मिला, तेवर बदल गये, उनका भतीजा सरवर अली तो बहुत ही गुस्से में था, इस काफिर को धमकी मिलने लगी।

उस समय उसे लगा था कि वह मार खाकर घर में छिपने को मजबूर हो जाएगा, हो सकता था कि घर भी सहारा नहीं दे, तब वह न घर का रहेगा न घाट का। शायद वह प्यास से तड़पता रह जायेगा, धमकियों के बीच उसका चलना-फिरना-जीना कठिन हो गया। ऐसा लगता था कि उसे चारों ओर से घेरकर आग सूलगा दी गयी है, वह प्रेम की तपस्या की स्थिति थी। उधर सगे-सम्बन्धी एक अधर्मी से घिनाने लगे, इधर के लोग उसे काफिर समझकर गस्सा करने लगे। लाल-लाल आंखों के बीच से होकर बच निकलना बहत कठिन हो गया। नरी ने सहारा दिया, उसके अब्बा ने धर्म बदलने की बात की। सरवर तो गुस्से में पागल हो रहा था, वह नूरी पर भी नाराज था। कारण था कि वह अपनी चचेरी बहन नूरी से शादी करना चाहता था। इलाहीबख्श भी चाह रहे थे, वह बीच में मोहन आ गया, नूरी ने उसे चाहा, चाहों के

संगम पर ऐसी लहर उठी कि बेचारा सरवर दूर किनारे फेंक दिया गया।

नूरी से प्यार पाकर वह सबके क्रोध से टकरा गया। टकराने के लिए धर्म बदलना जरूरी लगा, एक ही रास्ता था, वह धर्म बदलने को तैयार हो गया। पिताजी ने घर से निकाल दिया, मां और बहन रोती रह गयीं, चौधरी नरवाहन ने आकर समझाया, थोड़ा धमकाया भी, वह अपने रास्ते पर अकेला था। प्रहारों के बीच बढ़ता गया और उसने नूरी के हाथों को थाम लिया। कलमा पढ़ना और निकाह की रीति पर उसका ध्यान न था, उसकी आंखों के सामने केवल नरी थी, नूरी की झुकी हुई पलकें थीं।

सरवर अली ने जोरदार विरोध किया, लेकिन इस्लाम मजहब अपना लेने से इलाहीबख्श और पड़ोसी मुसलमानों का दिल पिघल गया। शादी हो गयी, नूरी उसकी हो गयी, शहनाई के स्वर ने अन्धड़ को बयार में बदल दिया।

एक माह बीत गया, लगता था कि वह सेहरा पहने शहनाई की धुन पर नूरी के गले में माला डाल रहा है और वह अपनी माला उसके गले में डालती हुई हृदय से लग रही है। माला में फूलों की गन्ध नहीं, प्यार की सुगन्ध है, घृणा और क्रोध की बदबू को उसने दूर हटा दिया।

मालूम है, उधर सभी उससे घृणा कर रहे हैं। उसी घृणा ने उसे हठी बना दिया। सरवर के गुस्से ने उसके हठ को आठ गुना कर दिया। आरम्भ में थोड़ा-सा डर हुआ था, पर नूरी ने डर मिटा दिया। उसके बाद भी रास्ता नहीं मिल सका था, प्यार में अपना धर्म बाधक बन गया, धर्म और मजहब-दोनों दो दिलों को मिलाने में रुकावट डाल चुके थे, दोनों लाठी तान रहे थे, पर उसे मजहब की शरण में जाना पड़ा। सरवर की चुनौती को जवाब देने के लिए एक ही रास्ता बच रहा, जान रहा था कि घर-द्वार, मां-पिताजी-बहन और धन-संपत्ति सबको छोड़ना पड़ेगा। धर्म ने सबको जोड़ रखा था, दूसरे से जुड़ गया, अपने से अलग कर दिया गया, पर मन तो मां को प्रणाम करता है। पिता के सामने झुक जाता है, बहन को प्यार करता है, लेकिन वह उनके पास जा नहीं सकता, उनकी तरफ जा नहीं पाता। इधर ही रहना पड़ता है, यह तो जब-तब बहुत अखरता है।

नूरी को अपने पास पाता है, सरवर का विफल क्रोध देखता है, वह सब कुछ भूल जाता है, इनके रहन-सहन के ढंग को भी सह रहा है, सीख रहा है, उसने अनुचित नहीं किया। प्यार करके अधर्म नहीं किया। अपने लोगों ने अधर्म माना है, अब वह विधर्मी बन गया है, ऐसा क्यों?

उसने किसी के पैरों की आहट सुनी। वह सोच ही रहा था कि उस पर जल के छींटे बरस पड़ें। वह अचकचा गया, वह उठ बैठा। उसने महसूस किया कि पानी के छींटे तो केवड़े में मिले थे और आंखों के सामने गुलाब-सी मुस्कराती नूरी खड़ी थी।

'हुजूर सेठजी! सुबह हो चुकी है, परिन्दे इस्तकबाल कर रहे हैं।' नूरी शरारती मुस्कान के साथ बोल उठी।

'परिन्दे केवड़े के पानी से स्वागत करते हैं, पाहुने का! बहुत खूब!! पर इनमें

बुलबुल भी हैं या सिर्फ गौरैया?' जमाल अहमद (मोहन) ने भी शरारती सवाल कर दिया।

'नहीं, जनाब! परिन्दे तो अगवानी का गीत गा रहे हैं, और... पुजारन अपने देवता की पूजा के बड़े के पानी से कर रही है। सिर्फ फूल लाना भूल गयी थी, इस गलती के लिए माफी।'

'इस अजीबोगरीब बात के लिए कौन किसको माफ करे! मोहनलाल जलाल अहमद बन गया और नूरी प्रभारानी बन गयी है।'

'नूरी प्रभारानी कैसे बन गयी? हुजूर जरा समझायें।'
'नूरी पूजा जो करने लगी।
'मैंने अपने देवता की पूजा की है, जानेमन! बुतखाने के देवता की नहीं।'
'अगर मैं देवता हूं तो नूरी देवी है।'
'यह इश्क की करामात है, सरकार!'
'इसी इश्क के कारण सब छोड़ चुका हूं, नृरी! बहुत खोकर तुझे पाया है। इसी खशी में डूबा रहता हूं।'
नूरी ने महसूस किया कि उसके देवता के दिल में दर्द है, अपने घर और अपने धर्म से जुदा हो जाने का। सचमुच इन्होंने बहुत कुरबानी दी है, अगर इन्हें इतना खोना नहीं पड़ता और दोनों की शादी भी हो जाती तो कितनी बड़ी बात होती, पर ऐसा नहीं हो सका।

मजहबी दुनिया का कैसा दस्तूर है!

नूरी ने जमाल (मोहन) का हाथ थामकर उठाया। जमाल उठ कर खड़ा हो गया, दोनों ने एक-दूसरे को देखा, नूरी की पलकें झक आयीं। जमाल ने अधखुली पलकों को देखते-देखते हृदय से लगा लिया, नूरी ने मधुर स्वर में कहा-'आप फरागत हो लें, नाश्ता तैयार है।'

'देवी का हुक्म सर-आंखों पर।' यह कहकर जमाल सहन की ओर चला गया।

नूरी देखती रह गयी। अचानक बगल से उड़ता हुआ एक कौआ आ गया, शरीफे के पेड़ पर बैठ गया, कांव-कांव करने लगा। उसे याद आयी कि सरवर भाई गुस्से में कुछ-न-कुछ बकते रहते हैं। पीछे की गली में ही तो मकान है। मात खा गए हैं, गुस्सा तो कर ही सकते हैं, ऐसा न हो कि कुछ नुकसान पहुंचा दें। बदमिजाज तो पहले से हैं। अब तो वे बदगुवां भी हो गए हैं, कुछ भी कर सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। अल्लाह की मेहरबानी है तो कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। इधर के सब लोगों ने इस शादी पर खुशी मनायी है। अब सरवर साहब क्या करेंगे? उससे होशियार तो रहना है।

ग्यारह

नी ने अपने जमाल (मोहन) के लिए नाश्ते का इन्तजाम किया। वह दोनों वक्त नाश्ते और खाने को अलग से तैयार कर लेती थी। उसकी कोशिश रहती थी कि गोश्त की बू तक न मिले। उसने अच्छी तरह से समझ लिया था कि सेठ का खानदान बैश्नो रहा है। नाश्ता और खाना वहत पाक होना चाहिए। सचमुच यह ख्याल बहुत अच्छा है, वे कहते हैं कि तन और मन पाक-साफ हों तभी आदमी के अन्दर इंसानियत पैदा हो सकती है।

जमाल (मोहन) कुछ गुनगुनाता हुआ आ पहुंचा। देखा कि दस्तर ख्वान पर कचौड़ी और हलवा की तश्तरियां सजी हैं। नूरी पंखा लेकर खड़ी है। उसने नूरी के हाथ से पंखा लेकर नीचे रख दिया और कहा- 'दोनों के बीच में इसकी क्या जरूरत है?'

'तो क्या मक्खियों के सरगम की जरूरत है?' मुस्कराती हुई नूरी ने पूछा।

'दोनों के बीच में प्रेम-संगीत की जरूरत है, जानेमन! देखो न! सूफी शायर मंझन याने जुम्मन ने लिखा है-

पेम अमोलिक नग सयंसारा, जेहिं जिअं पेम सो धनि औतारा।
पेम लागि संसार उपावा, पेम गहा बिधि परगट आवा॥
'क्या मतलब हुआ? जरा समझा दो ना!'

'तुम्हें तो सिर्फ फारसी और खड़ी बोली की खिचड़ी जुबान चाहिए। एक वे मिया मंझन हैं, जो इस देश की भाषा में प्रेम-कथा सुना रहे हैं। मियां मंझन से कुछ तो सीखो।'

'अब तो सीखना ही है, हजरत! आप हर हफ्ते परेम का किस्सा लाते रहे हैं। खोज-खोजकर लाते रहे हैं। सुना-सुनाकर सिखा दिया है परेम-इश्क का ढंग।'

'साफ-साफ कह दो कि नल-दमयन्ती, लोरिक-चन्दा और रतनसेनपद्मिनी की कहानियां सुना- सुनाकर बहला दिया, फुसला लिया।'

'बात तो यही है, जनाब!'

'तुमने लैला-मजनू और शीरी-फरहाद की कहानियां नहीं सुनायी थीं। ठीक है, अब मैं नहीं सुनाऊंगा।'
'लोरिक और चन्दा का वस्ल हो ही गया, तब क्या?'
और दोनों एक साथ मुस्करा उठे।
'हां, तो सूफी कवि कहता है कि प्रेम इस संसार का बेशकीमती नग है। जिसके दिल में प्रेमभाव है, उसका पैदा होना धन्य है। विधाता ने प्रेम के लिए-इश्क के लिए संसार को बनाया है, और खुद प्रेम को लेकर ही इस संसार के रूप में वह प्रकट हुआ है। बात कुछ समझ में आयी?' जमाल (मोहन) ने गम्भीर होकर पूछा।

'थोड़ा-थोड़ा समझ रही हूं, इसीलिए परसाद के रूप में हलवा पेश कर रही हूं। हुजूर कबूल करें।'
जमाल अहमद मुस्कराता हुआ नाश्ता करने लगा। नूरी पंखा झलने लगी, नोंक-झोंक भी चलती रही।
बाहर के कमरे से इलाहीबख्श की आवाज आयी। दोनों मुखातिब हुए। इलाहीबख्श बातचीत के लिए जमाल को बुला रहे थे।
जमाल अहमद नाश्ता के बाद इलाहीबख्श के पास जा पहुंचा। इलाहीबस्श ने बड़े प्रेम से बैठने को कहा। वह बैठ गया, वह समझ नहीं रहा था कि उसे किसलिए बुलाया गया है। उसने देखा कि उसके ससुर सन्दूक में सजी शीशियों को निकाल रहे हैं। इत्र की शीशियां हैं, इन्हें छोटे-छोटे डब्बे में रख रहे हैं, किस्म-किस्म की खुशबू कमरे में 'फैल रही है। उसे बड़ा अच्छा लगा, सहसा उसने पाया कि इलाही बख्श रुई के फाहे में इत्र लगाकर देने लगे। उनके होंठों पर मुस्कान थी, आंखों में मिन्नत थी, उसने रुई के फाहे को लेकर सर झुकाया। इलाहीबख्श खुश हो गए। वे बोल उठे-

'बेटे जमाल! मैंने सरवर की धमकियों की फिक्र नहीं कर तुम्हें अपनी बेटी बख्श दी है। यह तुम ख्याल रखना। किसी का खौफ नहीं है। खुदा हाफिज है, अब तुमको अल्लाह और दीन पर ईमान लाना है। इसके लिए पांचों वक्त नमाज बहुत जरूरी है। आहिस्ताआहिस्ता सब सीख जाओगे, ठीक है न!'
‘जी, हां! धीरे-धीरे सीख रहा हूं, अब्बा हुजूर!'
'सरवर अभी भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। लेकिन तुम्हें बेखौफ रहना है। बस, तुम्हें जमाल अहमद बनकर उस पर हावी हो जाना है।'
'मुझे तो अजीब लगता है। वह आपका भतीजा है। नूरी का चचेरा भाई है। फिर इस तरह की हरकतें क्यों?'
'अपना-अपना मिजाज है। चूंकि शादी नहीं हो सकी, इसलिए वह गुस्से में है।'
'यह तो अच्छी बात नहीं है।'
'मैं उसे समझा लूंगा, जमाल! तुम्हें भी कुछ समझना है।'

'क्या समझना है?
'मौलवी साहब से फारसी पढ़ना शुरू कर दो।'
'हम तो हिन्दुस्तान के हैं। इस देश की भाषा में हम...।'
'लेकिन मजहब की किताबें तो अरबी-फारसी में हैं।'
'सूफी फकीर तो इस देश की भाषा में मजहब की बातों को रख रहे हैं। सूफी शायद कुतुबन, जायसी और मंझन–सभी तो अवधी में लिख रहे हैं। मंझन साहब तो आगरा में आए हुए हैं। जरूर सुना होगा!'
'हां, सुना तो है। लेकिन हमारे बुजुर्गवार तो बाहर से आए थे। हमारी जुबान फारसी है। मजहबी किताब-कुरान शरीफ अरबी में है। हम पूरी तरह यहां की जुबान समझ नहीं पाते।'
'सूफी फकीर भी बाहर से आये थे-आ रहे हैं। उन्हें तो परेशानी नहीं हो रही है।' 'क्यों बेटे! सूफी हो रहे हो क्या?'
'इंसान और खुदा के बीच इश्क-प्रेम के रिश्ते की बात अच्छी लगती है।'
'बेटे! इश्क-मुहब्बत के ख्यालों और ख्वाबों से पेट नहीं भरता। कुछ और भी करना

पड़ता है।'
'जी, हां! रोजी-रोटी के लिए सबको कुछ-न-कुछ करना पड़ता है।'
'लेकिन तुम्हें अपना ख्याल नहीं है। सोहन लाल ने घर से निकाल दिया और तुम चुप रह गए।'
"वह उनका अधिकार था।'
'उस जायदाद पर तुम्हारा हक है। मैं चाहता हूं कि उन्हें खबर भेज दी जाय।' 'नहीं-नहीं, ऐसा नहीं करें। वे बहुत दुःखी हैं।'
'अगर वे तुम्हारा हक नहीं देंगे तो मैं तो बादशाह से कहूंगा।'
'आप ऐसा नहीं करें। मेरी विनती है।'
'लेकिन जिन्दगी ऐसे तो नहीं कटेगी, जमाल साहब! हम दोनों का दरबार में आना-जाना है। बात उठेगी ही।'
जमाल कुछ जवाब नहीं दे सका। उसे लग रहा था कि यह पिता जी पर अत्याचार है। इलाहीबख्श उनकी सम्पत्ति के लिए उतावले क्यों हो गए हैं? क्या लोभ जग गया है? या मेरी फिक्र कर रहे हैं? यह ठीक है कि बहुत दिनों तक बेटी-दामाद को रख नहीं सकते। वह स्वयं यहां पड़ा नहीं रहेगा। कुछ तो करना पड़ेगा। बात सही है कि केवल सपनों से मनुष्य जी नहीं सकता। यह मस्ती आखिर कब तक चलेगी?

पिताजी को भी सोचना चाहिए। परन्तु उसने ही तो सारे सम्बन्धों को तोड़ डाला है। उसने ही अपने अधिकारों को खो दिया है। सब खोकर ही नूरी को पाया है। अब आगे क्या होगा? ये तो झंझट पैदा कर रहे हैं। एक नयी लड़ाई! नहीं, यह नहीं-उचित नहीं! 'जाओ, बेटे! ठण्डे दिल-दिमाग से सोच लेना। कुछ तो करना है।' इलाहीबख्श ने आखिरी इशारा कर दिया।
वह भारी मन से उठा। नूरी के पास चला आया। वह इत्र के फाहे को भूल आया था। अब उसे फाहे की याद आयी। चाहा कि इत्र का फाहा नूरी को दे दे। पर फाहे के लिए लौटकर इलाहीबख्श के पास जाने की इच्छा नहीं हुई। प्यार की सुगंध के बीच वे बातें कांटे के समान चुभ रही थीं। पर प्रकृति का सत्य है कि कांटों के बीच फूल खिलता है और फूल के बीच सुगंध इठलाती है। जीने के लिए धन चाहिए। वह तो धनी बाप का बेटा है। मगर अब नहीं। अब वह जमाल अहमद है। उसके पास केवल प्यार का धन शेष है।
नूरी खाना पका रही है। वह किससे बातचीत करे? राय-सलाह करे? वह आंगन में चक्कर लगाकर अपने कमरे में चला आया। बिस्तर पर लेट गया। कुछ सोचने लगा-वह प्रेम कहानियों में डूबा रहा है। उसने स्वयं भी प्रेम की एक कहानी रच दी। आगरा में यह कहानी फैल रही है। उसे कोई रोक नहीं सका। किसी का क्रोध कुछ बिगाड़ नहीं सका। वह विजयी रहा। उसने धर्म-पंथ और सम्प्रदाय से प्रेम को ऊंचा माना। पहले भी वह कठोर नियमों से नहीं बंधा था। आज भी वह नहीं बंधेगा। वह लकीर का फकीर नहीं बनेगा। एक नये रास्ते पर चलेगा।

कबीरपंथी साधु, सूफी कवि और वृन्दावन-गोकुल के कृष्ण-भक्त भी पूजापाठ की रूढ़ियों के बदले प्रेम और भक्ति को महत्त्व दे रहे हैं। मानव-मानव के बीच रूढ़िमुक्त प्रेम का सम्बन्ध हो और अपने इष्ट देवता के प्रति भी निश्छल प्रेमभाव ही हो। यही तो आज की लहर है। यही तो नया रास्ता है। वह इसी रास्ते पर चलेगा। उसने चलना आरम्भ कर दिया है। पर चलने के लिए उसे मोहन के बदले जमाल बनना पड़ा है।

वह चल पड़ा है। चलने के लिए पैरों के नीचे धरती तो रहेगी। इसी धरती पर चलना है। वह अकेला भी नहीं है। अब वह दो हैं। वह वैभव में पला है। कंगाली में वह कैसे चल सकेगा? साधु-फकीर तो नहीं बन सकता। घर-गृहस्थी के लिए धन चाहिए। व्यापार करने के लिए धन चाहिए। कहां से...? पिता जी के धन पर उसका अधिकार है। पर वह अधिकार छोड़ चुका है। वह उधर जा भी नहीं सकता। जाना चाहिए। सुना है कि वे अस्वस्थ हैं। बहन रोती होगी। मां दिन-रात बिलखती होगी। उसे जाना चाहिए।

मुंशी हरसुख लाल से मिलना हो सकता है। संध्या में भेंट हो सकती है। मुंशी चाचा कुछ रास्ता निकाल सकते हैं। पिता जी का समाचार मिल जाएगा। और यदि उसे कुछ मिल जाए तो वह व्यापार कर सकता है। रोटी का प्रबन्ध किया जा सकता है। किसी पर निर्भर रहना ठीक नहीं है। पर धन के लिए पिताजी से अधिकार की बात नहीं करेगा। यह अनुचित है। ससुर साहब की बात नहीं मानेगा।

बारह

हेमू और विजय यमुना-स्नान से लौटकर लक्ष्मी भवन आ गये। हेमू ने सबसे पहले सेठ सोहन लाल के चरण स्पर्श किए और फिर यमुनाजी का जल प्रदान किया। विजय भी उनके चरणों में झुका।

सोहन लाल गद्गद हो गए। यमुना-जल को माथे पर लेकर नामस्मरण किया। इन दोनों को आशीष दी। दोनों को बड़ा सन्तोष मिला।

हेमू और विजय सोहन लाल से अनुमति लेकर वाटिका की ओर आये। अपने कक्ष में आ गए। हेमू ने कम्बल बिछाकर थोड़ा योगासन किया। मुंशी हरसुख और विजय देखते रहे। हेमू ने चाहा कि खड्ग का भी थोड़ा अभ्यास हो जाय। परन्तु यहां तो नाथपंथी योगी शिवनाथ नहीं थे। कौन अभ्यास करावे। शस्त्रगुरु के सामने ही अभ्यास सम्भव है।
किसी को ढूंढ़ना पड़ेगा। तब तक सीखे हुए हाथ को दुहरा लिया जाय। यह सोचकर हेमू ने खड्ग के प्रारम्भिक अभ्यास को दुहरा लिया।

मुंशी हरसुख अचरज के साथ हेमू को देख रहा था। विजय को बधाई दे रहा था कि उसे ऐसा सखा मिल गया है। विजय भी हर्षित था।

हेमू ने विजय की सहायता से अपनी कोठरी को संवारना आरम्भ किया। मुंशी हरसुख भी अपनी पूजा को पूरा कर आ गये। एक चौकी, एक मेज और एक कर्सी का प्रबन्ध कर दिया। कुछ क्षण के बाद देखा कि हेम ने मेज पर राधावल्लभ जी की मूर्ति रखी। काठ के एक छोटे डिब्बे को सामने सजाया। डिब्बे के पास कपड़े की गठरी में बंधी पुस्तकों को रख दिया। माली से पूछकर फूल तोड़ लाया। फूलों से मेज को सजाया। वह मेज मानो

मन्दिर बन गयी। अगरबत्ती की सुगन्ध फैलने लगी।

हेमू ने पलकों को बन्द कर सेवाकुंज में स्थापित राधावल्लभ जी और उनकी भक्ति में लीन पिताजी का ध्यान किया। बन्द आंखों के सामने वह दृश्य झलक गया। परन्तु मन टिक नहीं सका। क्षण भर में दृश्य बदल गया। सेवाकुंज वसन्त के मेला में परिवर्तित हो गया! मेला में पारो दिखायी पड़ी। लगा कि वसन्त पारो में साकार हो उठा है। फिर दूसरे क्षण में दृश्य पलट गया। पारो की जलती हुई चिता चमक उठी। और वह नम आंखों से मेज पर रखे डिब्बे में चिता की राख को देखने लगा। वह झुक गया, उच्छ्वास अगरबत्ती के धुएं में घुल-मिल गये।

विजय कोठरी से बाहर आया। मुंशी जी को उस डिब्बे का रहस्य बताया। मुंशी जी ने कहा-'तो हेमू राधावल्लभ जी के साथ अपनी पीड़ा की भी पूजा करता है।'

'हां, मुंशी जी! इस पीड़ा में ही हेमू अपने गांव से वृन्दावन आ गया। और वृन्दावन से आगरा तक।'

‘पर इस पीड़ा की ओषधि आगरा में?'

'नहीं, मुंशी जी! इस पीड़ा का कारण आगरा और दिल्ली में है। शाहों-सुलतानों की लड़ाइयों से गांवों का उजड़ना, खेती-व्यापार का लुट जाना, बहू-बेटियों का विनाश और मन्दिर-मठों का विध्वंससब तो होता रहता है।'

‘पर वह क्या कर सकेगा? राणा सांगा ने तो विदेशी मुगलों को रोकना चाहा था।'

ये मुगल फिर आ रहे हैं। हेमचन्द्र चाहता है कि अफगान बादशाह प्रजा की सहायता से विदेशी मुगलों से जूझने को तैयार हों। ऐसा हो कि गांव न उजड़े, पारो की मृत्यु न हो और प्रजा पर जजिया कर न लगे।'

'अफगान राज्य में प्रजा को थोड़ा चैन तो है। राज्य के लिए लड़ाइयां तो होती ही रहेंगी। लड़ाई में फौजी सिपाही और सिपहसालार रावण हो जाते हैं। कोई रोक नहीं पाता है। खून की प्यास बड़ी भयानक है। पर इसी में खेती और व्यापार को होना है। रो-गाकर जीना है। और तुर्क-अफगानों के राज्य में जजिया भी चुकाना है, काफिरों को चुकाना है। हम क्या कर सकते हैं?'

'यह तो है ही...सैकड़ों वर्षों से हम पिस रहे हैं। इन पर कालदेवता खुश हैं।'

'विजयवाहन! यह सन्त जी का पुत्र व्यापार-धन्धा करेगा या राणा सांगा के रास्ते पर चलेगा? कुछ समझ में नहीं आता।'

हेमचन्द्र कोठरी से बाहर आ गया। उसने मुंशी जी की बात सून ली। क्षण भर के लिए ठिठक गया। वे दोनों उसकी ओर देखने लगे।

हेमू मन्द स्वर में बोल उठा-'मशी जी! मैं राणा जी कैसे बन सकंगा! पर उनको याद करना कैसे भूल जाऊं! मै व्यापार-धन्धे के लिए आगरा आया हूं। आपके साथ तुला उठाऊंगा। यह अवश्य चाहता हूं कि सभी लोग योग और शस्त्र-दोनों का अभ्यास करें। गुरु रामानन्द, कबीरदास, गुरुनानकजी, गोस्वामी हितहरिवंश और वल्लभाचार्य से हम जीने का नया विश्वास पा लें। विवश होकर नहीं जियें। स्वाभिमान और साहस के साथ जियें। अफगान शासन को थोडा और उदार बनकर प्रजा के पास आना है। प्रजा की भावना का आदर करना है।'

'सही बात बोल रहे हो, बेटे! बड़ी ऊंची बात है। मैं तो इस लक्ष्मी भवन का मुंशी हूं। कितनी बातें सोचूं!'
'मैं भी लक्ष्मी भवन का कर्मचारी बन गया हूं, मुंशी जी! पर सोचना तो है।'
'जरूर सोचो। गल्ले की खरीद के लिए बाहर जाना है। पहले इसके लिए तैयार होना है!' 'मैं तैयार हूं।'
'मैं तो मथुरा लौट जाऊंगा।' विजय ने कह दिया।
'फिर कब मिलना होगा, विजय? अभी रुको न!'
'मैं कहीं भी हूं, हेमू भाई! सदा साथ हूं।'
सभी सेठ सोहनलाल के पास पहुंचे। सबका एक साथ ही अल्पाहार हुआ। विजयवाहन ने लौटने की आज्ञा मांगी। सोहनलाल ने सन्त पूरनदास जी को अपना संदेश दिया-विजय! हेमचन्द्र को पुत्र के समान मानूंगा। इसे कोई कष्ट नहीं होगा। सन्त जी निश्चिन्त रहें। यह व्यापार में आगे बढ़ेगा! और क्या कहूं!'

'हां, चाचाजी! आपके संदेश को सन्त जी के समक्ष निवेदित कर दूंगा। आप अपने दुःख को भुलाने का यत्न करें।' विजय ने विनम्र स्वर में अनुरोध किया।
'चाहता हूं, बेटे! कि उस पतित को भुला दूं। पर उसकी मां को देखकर भूल नहीं पाता! वह इस नगर में है...पर कितनी दूर है!

कुछ कर नहीं सकता। न स्नेह और न क्रोध। इस शासन में जमाल अहमद साहब पर कैसे क्रोध किया जाएगा!'

'आप बहुत सोचते हैं। अशान्त रहते हैं। आप मन की शान्ति के लिए वृन्दावन आ जाएं- कुछ दिनों के लिए।' विजय ने परामर्श दिया।

'आना चाहता हूं, बेटे! पर सब कैसे छोड़ दूं? हेमचन्द्र को व्यापार का काम सीखना है। थोड़ा समझा दूं। बेटी पार्वती है। हाथ पीला करना है। बड़ी समस्या है।'

कक्ष में सन्नाटा छा गया। द्वार पर सोहनलाल की पत्नी दुर्गा कुंवर और बेटी पार्वती कुंवर दोनों आ गयीं थीं। वे रुक गयीं, आंखें झुक गयीं।'

कुछ क्षणों के बाद विजय ने सन्नाटे को दूर किया। उसने विदा होने के लिए आज्ञा मांग ली। मुंशी जी को भी हेमू के साथ गल्ले के क्रय के लिए अनुमति मिल गयी।

तीनों एक साथ लक्ष्मी भवन से निकले। कुछ दूर तक साथ-साथ चले। विजय अपने घोड़े पर चल पड़ा। हेमू देखता रह गया। ऊमस बढ़ रही थी। पर वह विजय की निरन्तर धुंधली होती आकृति को देख रहा था।

इधर लक्ष्मी भवन में मां दुर्गा कुंवर पार्वती के साथ बेटे मोहन के बचपन की कहानियों का स्मरण कर रही थी। मोहन प्रतिदिन पूजा के समय वाटिका में चला जाता था। खिले फूलों को तोड़ लाता था। माली से पूछ-पूछकर हर फूल का नाम ध्यान में रखता। हर फूल का नाम बताकर थाली में सजा देता। वह प्रसन्न हो मोहन को हृदय से लगा लेती। और पूजा में अपने मोहन के लिए राधा-मोहन से प्रार्थना करती।

एक बार मोहन फूल लेकर नहीं आया। माली भी नहीं आया। पूजा में विलम्ब हो रहा था। माली से पूछताछ हुई, वह दौड़कर आया। वह घबराया हुआ था। उसने बताया कि मोहन लालजी फूल लेकर चले आए थे। यह तो चिन्ता की बात हो गयी। सारे सेवक दौड़ पडे। घर और वाटिका में खोजने लगे। वह तो भगवान का स्मरण कर रही थी। कुछ देर के बाद वह माला लेकर आ पहुंचा। पता नहीं, कहां छिपकर बैठा था! वह पूजापाठ भूल गयी। वह केवल देखती रही। कभी मोहन को और कभी उसकी गूंथी हुई माला को।
मोहन बोल उठा---'मां, माला अच्छी बनी है न! यदि अच्छी बनी है तो मुझे पुरस्कार मिलना चाहिए! माली चाचा की माला से अच्छी है न?'

सभी मुस्करा उठे। तुम्हारे पिता जी का रोष ठण्डा पड़ गया। वे भी मुस्कराने लगे, और फिर सबने देखा कि वे सोने की अंगूठी पुरस्कार में दे रहे हैं। आनन्द छा गया। और आज उसने मंगल भवन को अमंगल बना दिया है। वह ऐसा कैसे हो गया? वह आता। उसे आशीष देती, भूल जाती कि वह विधर्मी हो गया है। और उसकी बहू तुरुक है- मांस खाने वाली, पर वह कैसे आए? इनका क्रोध जेठ के सूरज के समान धधक रहा है।

पार्वती की आंखों में आंसू आ गए, वह स्मरण कर रही थी कि भैया मोहन उसे कितना मानते थे। कहानियां सुनाया करते थे, वे कैसे होंगे? क्या उन्हें याद नहीं आती होगी? वह कितनी श्रद्धा मे खिलातीपिलाती थी! वे दोनों साथ-साथ वाटिका में घूमते थे। अपनी-अपनी तितलियों के रंग-रूप का मिलान करते थे। आम पकने लगे हैं, पर भैया नहीं हैं, बहुत दूर हैं। वह कैसी होगी जिसके लिए उन्होंने सब कुछ बिसार दिया है! राजा रतनसेन पद्मिनी के लिए योगी बनकर निकल गए थे। पर वे योगी नहीं बने, वे तो तुरक बन गए। क्या वहां उन्हें घर का सुख मिल रहा होगा? इतने सुख-वैभव में पले हैं! वे कैसे रहते होंगे? यहां का शुद्ध-पवित्र खाना-पीना-वहां क्या खाते होंगे? वे सब भूल गए, क्या स्त्री के प्रेम में पुरुष इतना बदल जाता है?

इस प्रकार मां-बेटी मोहन का स्मरण कर लेतीं, रो-धो लेतीं। मन हल्का हो जाता, दिन बीतता जाता।

लक्ष्मी भवन के तीसरे तल्ले से बहुत दूर पश्चिम में सूरज डूब रहा थी। उसकी लाली पर धीरे-धीरे काला रंग चढ़ रहा था। पंछी अपने घोंसलों की ओर चले जा रहे थे। लक्ष्मी भवन का सेवक हुलास दीपों को साफ-सुथरा करने लगा। पार्वती सोच रही थी कि वह एक दीप भैया के कक्ष में जला दे। पर पहले पूजा-घर में तो दीप जल जाय! वह पूजा-

घर में दीप जलाने की तैयारी करने लगी। हलास भवन के बाहरी द्वार के पास दीप जलाने आ गया। उधर पार्वती पूजाघर में दीप जलाकर मोहन के कक्ष में दीप जलाने लगी। वातायन से बाहर की झलक मिल रही थी, हुलास ने दीप जला दिया था। उसी समय कोई आता दिखई पड़ा, पार्वती का हृदय धड़कने लगा, वह द्वार पर आ गयी। ओट में खड़ी हो गयी। आने वाला हुलास से बातचीत करने लगा। उसने स्वर को पहचान लिया, वह हर्ष के आवेग में बाहर आ गयी। बोल उठी-'भैया! इतने दिनों के बाद सुधि आयी है?'

'पार्वती!' जमाल (मोहन) इससे अधिक बोल नहीं सका। पलभर स्नेह से बहन की ओर देखता रहा। और फिर उसकी आंखें झुक आयीं।

'भैया! हमने कौन-सा अपराध किया है कि आपने आंखें फेर ली हैं?'

'मैंने अपराध किया है, पार्वती! इसलिए सबने मुझसे आंखें फेर ली हैं।

'मां ने आपको कभी अपराधी माना है? छोटी बहन ने कभी कुछ कहा है? हमारी तो आंखें पथरा गयी हैं -बाट जोहते-जोहते।'

'पर मैं तो अब विधर्मी हूं, म्लेच्छ हो गया हूं। सभी तो मुझसे घृणा करते हैं।' 'नहीं, भैया! ऐसा नहीं है, हम तो अपनी वाटिका में तितलियों के पीछे दौड़ते थे। कभी अलग नहीं होते थे, इस बार तुम एक तितली के पीछे दौड़ते-दौड़ते दूर चले गए। बहना रास्ता देखती रह गयी।'

'नहीं, पार्वती! भाई और बहन को तो अलग-अलग रास्ते पर जाना ही पड़ता है। मैंने एक नया रास्ता अपना लिया है।'

'मां की गोद को छोड़कर!'
'नहीं-नहीं, ऐसा न कहो।'

'तो चलो भीतर 'मां से मिल लो।'
'मुंशी जी से मिलना है, उनसे मिलकर फिर...।'
'मुंशी चाचा तो नहीं हैं।'
'कहां गए?'
'वे तो गल्ले की खरीद के लिए गांवों की ओर गए हैं।'
'अकेले गए हैं?'

'नहीं, भैया! वृन्दावन के सन्त पूरनदास जी के पुत्र हेमचन्द्र को भी पिताजी ने काम में लगा दिया है। दोनों आज ही गए हैं। परसों तक आ जायेंगे।'

भीतर से सेठ सोहन लाल के शब्द तैरते हुए आ गये- 'दीप जलाने में देर क्यों हो रही है? पार्वती! कहां हो? हुलास कहां चला गया?'

जमाल अहमद (मोहन लाल) घबरा गया। अब उसे रुकने का साहस नहीं हुआ। वह कहता निकल

गया कि वह परसों तक आएगा, मां से भी मिलेगा।

'भैया! रुको....खा-पीकर जाओ।'
जमाल एक बार मुड़ा, फिर आगे बढ़ गया।

'भैया! भाभी को साथ लेते आना।' पार्वती के शब्द जमाल (मोहन) तक पहुंच गए। पर वह अंधकार में बढ़ता चला गया। पार्वती अंधकार में आंखें गड़ाये खती रही। पिता के शब्द सुनायी पड़े, वह अन्दर लौट गयी, परन्तु परों में कम्पन था। हृदय में उथल-पुथल हो रही थी। उसने क्षणभर विचारा, फिर हुलास को कह दिया कि वह भैया के आने की चर्चा न करे। हुलास ने सर हिला दिया, वह डांट सुनता हुआ दीपक जलाने लगा।

पार्वती सोच रही थी कि दो दिन अपने को सम्भालना है। यदि भैया आ गए तो मां कितनी प्रसन्न होगी! पर वे तो मुंशी चाचा को खोज रहे थे, मुंशी जी के लिए इतनी विकलता क्यों? मां के लिए क्यों नहीं? बहन से बातचीत करने के लिए चाह क्यों नहीं? बात क्या है? जो भी हो, वे आयेंगे, यही बहुत है। पर पिता जी का क्रोध!

क्या वे ठहर सकंगे? पार्वती ऐसी ही अनेक बातें सोचती रह गई।

तेरह

उसे मां से मिल लेना चाहिए था। बहन के अनुरोध को मान लेना ठीक होता, वह क्यों भाग चला? पिता जी के तीखे बोल से वह घबरा गया, इस तरह घबराने से काम तो नहीं चलेगा। बहन क्या सोचती होगी? उसके मन में खटका लगा होगा कि वह मुंशी जी को क्यों खोज रहा था, वह मां और बहन के स्नेह को भूल गया? वह विनती कर रही थी, वह विधर्मी तो नहीं मान रही थी। वह तो उसके लिए व्याकुल हो रही थी, तो क्या वह उसके स्नेह-प्रेम के बदले धन-दौलत के लिए विकल हो उठा है? वह तो इसीलिए गया था। मुंशी जी से मिलने का तो मतलब यही था, मुंशी जी की सहायता से लक्ष्मी की प्राप्ति-भेंट नहीं हुई। वह चला आया, मां और बहन को धन के आगे भुला दिया। यह तो उचित नहीं हुआ। यह पाप नूरी के लिए! वह तो धन-दौलत की भूखी नहीं है। वह प्रेम की सजीव मूर्ति है, उसका कोई दोष नहीं है। उसके लिए यह पाप नहीं। इलाहीबख्श के कारण ऐसा हो गया। यदि वे जोर नहीं देते तो वह मुंशी जी से मिलने दौड़ता नहीं, लेकिन जीने के लिए रुपये चाहिए। आज नहीं तो कल रुपये की जरूरत उसे घेरेगी। अपने पैरों पर खड़ा होना है, दाल-रोटी का जुगाड़ तो करना ही होगा।

इलाहीबख्श साहब की तो एक ही बेटी है। परेशानी क्या है? वे इतना बेचैन क्यों हैं? उन्हें जरूर लोभ हो गया है, जरूरत तो उसे है। पर वह बेचैन नहीं है। ससुर के इशारे पर क्या अपने पिता जी से उलझ जाय? उन्होंने हेमचन्द्र को बुला लिया है।

व्यापार में लगा लिया है, उनका काम तो नहीं रुकेगा। अब उसकी पूछ नहीं होगी। तो क्या उसका सब अधिकार समाप्त हो गया? नहीं, उसका अधिकार समाप्त नहीं होगा। हेमचन्द्र के कारण उसका अधिकार नहीं। धर्म वदलने से उसके अधिकार पर प्रश्न चिह्न लग गया है, मां तो है। वह बेटे पर कृपा कर सकती है। पर वह उससे मिल कर नहीं आया, उसने उपेक्षा की, यह तो अपराध हो गया। इस बार अवश्य ही मिलेगा।

पार्वती कह रही थी कि भाभी को लेते आना। नूरी को कौन स्वीकार करेगा? नूरी के साथ जाने से अनादर होने की शंका है। नहीं, उसे साथ नहीं ले जाना है।

जमाल अहमद (मोहन) एक तनाव लिये लौट रहा था। तनाव और चिन्ता में डूबा इआ नूरी के घर पहुंच गया। लेकिन दरवाजे पर रुक गया। लगा कि दो लोग आहिस्ता-आहिस्ता बात कर रहे हैं, वह छिपकर सुनने लगा।

'चचा जान! आप सुन लें, समझ लें। सेठ की जायदाद पर कब्जा हो जाय। मुझे आधा मिल जाय तो मैं नूरी पर से अपना दावा छोड़ दूंगा।'

'सरवर! तुम्हारी धमकी गैरमुनासिब है। नूरी की शादी हो चुकी है, मोहन जमाल बन चुका है। जायदाद के लिए वह खुद कोशिश कर रहा है, लेकिन तुम धमकी मत दो, सेठ की जायदाद पर कोई दावेदार कैसे हो जाएगा?'

'मुझे धोखा दिया गया है, मैं बर्दाश्त नहीं करूंगा। मैं तो धमकी देता रहूंगा। सेठ की जायदाद में हिस्सा लेकर रहूंगा या नूरी को तलाक दिला दूंगा।'

'तुम्हारी धमकी से कोई खौफ खाने वाला नहीं है, सरवर मियां! तुम अपनी हरकत बन्द करो। यह मजहब के खिलाफ है, अब तुम जा सकते हो।'

'मैं देख लूंगा।' '
बदतमीज! निकल यहां से!'

सरवर गुर्राता हुआ बाहर आया। जमाल को देखा, आंखें दिखाता चला गया। जमाल ने भी हिम्मत के साथ आंखें मिलायीं, अपने गुस्से को जाहिर कर दिया। और फिर भीतर गया, पर वह इलाहीबख्श से नहीं मिला। उसके मन का तनाव बढ़ गया, सर भारी हो रहा था। इलाहीबख्श से मिलने पर तनाव और बढ़ सकता था। वह नूरी के पास गया।

नूरी इन्तजार कर रही थी। उसने जमाल को अपने पास पाया, वह मुस्कराती हुई उठकर खड़ी हो गयी। लेकिन उसने देखा कि जमाल साहब के चेहरे पर स्याह साया मंडरा रहा है, उसके तनाव और द्वन्द्व को समझ नहीं सकी। वह बोल उठी—'जानेमन! तब से फिर दौसे-ख्याली में इक बुत को तराश रही हूं। और अपने दिल की धड़कन को उसमें भर रही हूं। लगता है कि बुत में जिन्दगी धड़कने लगी है।'

'नूरी! इस बुत में जिन्दगी तो धड़कने लगी है। पर चेहरे पर चौदहवीं का चांद चमकते-चमकते सहम गया है।'

'मेरे चांद को चमकना है; सहमना नहीं है।'

"किसी शैतान की करतूत से चांद में ग्रहण लग जाने की शंका हो गयी है, नूरी! लाचार होने लगा हूं।'

'हमारे इश्क के दरम्यान शैतान कहां से आ गया? हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। अब्बाजान की दुआएं साथ हैं। हमें कोई जुदा नहीं कर सकता।'

'नूरी! सरदर की धमकी है। जायदाद की ललक है। मैं क्या करूं? तुम क्या चाहती हो?' मेरे हमदम! मैं क्या कहूं? आप मेरे दिल की धड़कनों को पढ़ लें, मुझे न जायदाद चाहिए और न आपका बदला हुआ मजहब- मुझे तो मेरा मोहन चाहिए जिसे मैंने प्यार किया है।'

'सच, नूरी! तुम सच कहती हो?'

जमाल के चेहरे का तनाव मिटने लगा। अन्दर का उल्लास धीरेधीरे प्रकट होने लगा।

'हुजूर! अर्जासमा में इश्क है सारा–चारों ओर भरा है इश्क। हम हैं जनाबे-इश्क के बन्दे, नजदीक अपने खुदा है इश्क।'

यह कहकर नूरी ने अपने चेहरे को जमाल के सीने में छिपा लिया, जमाल सरवर की धमकी को भूल गया। तनाव से मुक्त होकर उसने चैन की सांस ही नहीं ली, वह तो अपनी मधुर अनुभूति में बेसुध हो उठा।

खाने के वक्त जमाल अलग-थलग बैठा था। अपना शाकाहारी भोजन कर रहा था। नूरी पर्दे में रहकर ही खिला रही थी। इलाहीबख्श थोड़ी दूर बैठकर खाना खा रहा था। वह चाहकर भी कुछ पूछ नहीं सका। नूरी की अम्मा ने भी इशारे से रोक दिया। वह चुप रह गया, पर उसे चैन नहीं था। वह जमाल से बातचीत के लिए उतावला हो रहा था।

सुबह इलाहीबख्श चुप नहीं रह सका, उसने बड़े स्नेह से समझाने की कोशिश की-'जमाल अहमद! पूरी जिन्दगी का सवाल है। जिंदगी को जीने के लिए हिम्मत की जरूरत है। अपने हक को छोड़ना नहीं चाहिए, अपने वालिद से बातचीत करनी चाहिए।'

'वे बीमार हैं, इस हालत में क्या बातचीत हो!'

'जब वे अच्छे हो जाएं, तभी बातचीत करो। उनसे मुलाकात करते रहो।'
'जी, यही ठीक रहेगा।'

'उन्हें इशारा कर देना कि अगर वे बेटे का हक नहीं देगे तो उनके बाद सारी जायदाद हुकूमत की हो जाएगी।'

'ऐसा क्यों?'
'यह सरकारी कानून है।'
जमाल गम्भीर हो गया, इलाहीबख्श ने सोचा कि तीर निशाने पर लगा है। उसने फिर कहा-'उसे काजी साहब से मदद मिल सकती है, अगर वह हिम्मत के साथ अपने हक के लिए खड़ा रहे।'

'मैं कहूंगा, लेकिन सोचता हूं कि धन-दौलत के लिए इतना बखेड़ा क्यों? उनसे लड़ना उचित नहीं है।'

'यह लड़ना नहीं है, लड़ाई तो सल्तनत के लिए होती है। यह तो बेटे का बाप से अपना हक मांगना है।'

'यदि बेटे को बाप से प्यार है तो सब मिल जाएगा।'

'यह तो ठीक कहते हो, जमाल! किसी भी मुश्किल में मैं मददगार हूं, अपने को अकेला मत समझना।'

'जी, हां!' यह कहकर जमाल घर से बाहर निकल आया।

रात में उसका मन हल्का हो गया था। नूरी के स्नेह से उसका सारा तनाव दूर हो गया था। सुबह फिर उसका मन भारी हो गया। हक, कानून और मदद-इन तीन शब्दों ने उसे घेर लिया। इस अफगानी राज्य का कानून भी अजीब है, वह क्या करे? हक ''उसका हक कानून की मदद "धन-सम्पत्ति को पा लेना फिर सुख का जीवन- यह कैसा घेरा है! वह क्यों नहीं अपने हाथों से धन अजित करे। फिर थोड़े में ही सुख से जिये, होना तो यही चाहिए। प्रेम का जीवन और अपने श्रम की रोटी-यह सोचता हुआ वह गलियों से होता हुआ दूर निकल गया।

बुनकरों की बस्ती थी, बुनकरों में कुछ इस्लाम को कबूल कर चुके थे। कुछ हिन्दू थे, दोनों का साथ-साथ रहना होता था। कपड़ा बुनाई का काम भी एक साथ करते थे, बहुत फर्क नहीं आया था, परन्तु मजहब अलग हो जाने के कारण मन में थोड़ा फर्क आ गया था। सामाजिक-धार्मिक व्यवहार में भी फर्क आने लगा था। हिन्दू बुनकर मुस्लिम बने बुनकरों को अपने से छोटा समझने लगे थे। मुस्लिम बने बुनकर हिन्दू बुनकरों को काफिर मानने लगे थे। मुल्ला के कारण मुस्लिम बुनकरों का दबाव बढ़ रहा था।

ये नये मुसलमान हिन्दी मुसलमान कहाते थे। अरबी, तुर्की, ईरानी और अफगानी मुसलमान अपने को बड़ा समझते थे। अपने को शासक मानते थे, इन हिन्दी मुसलमानों को अपने से छोटा ही समझते थे। हिन्दी मुसलमानों को इसका थोड़ा अहसास था, पर उन्हें लगता था कि वे हिन्दुओं की जातिगत भेदभावना के बन्धन से मुक्त हो गए हैं। वे अब शूद्र नहीं हैं, उन्हें कोई शूद्र कहकर डांट नहीं सकता है। अब उन्हें जन्म से छोटा मानकर झुककर जीने को लाचार नहीं किया जाएगा। अब तो हिन्दुओं का राज छिन गया है, मन्दिर टूट गए हैं, अब हिन्दुओं को छोटा बनकर जीना है। जजिया देकर जीना है, सैकड़ों साल हो गये, ये सिर उठाते हैं, कुचल दिए जाते हैं।

सीकरी की ओर से एक सूफी फकीर आया था। रात में ही आया था, मुस्लिम बुनकरों के पास ठहरा था, हिन्दी मुसलमान खुश थे। सूबह सबने देखा कि वह सूफी फकीर नाथपंथी योगी के समान योगासन कर रहा है। आसन के बाद माला लेकर आंख मूंदकर जप किया, उसके पास लोग इकट्ठे होने लगे। हिन्दी मुसलमानों के साथ हिन्दू भी आ गए, उसी समय जमाल अहमद भी पहुंच गया।

फकीर का वाज (उपदेश) शुरू हुआ। फकीर बोल रहा था-'हम सबको बनानेवाला एक है, इस खल्क का खुदा एक है। यह सारी दुनिया-सारी कुदरत उसका ही हुस्नो-जमाल है। उसका जमाल ही इस खल्क का जमाल है। हम इसे समझ नहीं पाते, शैतान हमें समझने से रोकता है। इसलिए हम दुनियाबी हुस्न और दौलत की ओर दौड़ते हैं। उन्हीं में मुब्तिला हो जाते हैं, हम मालिक से दूर होते जाते हैं, अगर सही पीर मिल जाए तो शैतान से नजात मिल सकती है। हम सच्चे मरीद बनकर उसके जमाल का दीदार कर सकते हैं। इश्क हकीकी का नया सूरज चमक सकता है। हम बेखुदी में खुदा के नजदीक पहुंच सकते हैं।

मलिक मुहम्मद जायसी साहब ने देशी जुबान में इसी सच्चाई को रखा है। उसके जमाल
को–उसके हुस्न को हम देखें-पद्मावती की खूबसूरती में-

का सिंगार ओहि बरनौं राजा। ओहिक सिंगार ओहि पै छाजा ॥
प्रथमहि सीस कस्तुरी केसा। बलि बासुकि कौ और नरेसा ॥
भंवर केस वह मालति रानी। बिसहर लुरहिं लेहिं अरघानी ॥
बेनी छोरि झारु जौ बारा। सरग पतार होइ अंधियारा ॥

ऐसे ही ईश्वर से—अल्लाह से इश्क जरूरी है। यही इश्क हकीकी राजा रतनसेन का पद्मावती रानी के लिए है। इसी इश्क से हमारी जिन्दगी संवर सकती है, इंसान की
जिन्दगी में सबसे बड़ी चीज यही इश्क है। एक-दूसरे को प्यार करें और उस मालिक से
प्यार का रिश्ता जोड़ें। जायसी साहब कहते हैं-

भलेहि प्रेम है कठिन सुहेला। दुइ जग तरा प्रेम जेइ खेला ॥

फकीर का वाज (उपदेश) खत्म हुआ। सभी के सर झुक गए। फकीर ने सबको दुआएं दीं, हिन्दी मुसलमान अपने हिन्दू पड़ोसियों की ओर देख रहे थे। हिन्दू भी सिर हिलाकर समर्थन कर रहे थे। धीरेधीरे लौटने लगे, कुछ खड़े होकर फकीर को देखने लगे। कुछ हिन्दी मुसलमान फकीर के पास बैठकर हाथ दिखाने लगे। फकीर नजूमी भी था, वह हाथ देखने लगा, कुछ बताने लगा, लोगों पर असर पड़ रहा था।

जमाल अहमद (मोहन) उठा, चुपचाप चल पड़ा। सोच रहा थायहां भी हुस्न और इश्क की कहानी है। वृन्दावन में राधा और कृष्ण की प्रेम-कथा सबको रमा रही है। ये सूफी फकीर भी प्रेम की ही बात कर रहे हैं, देश की भाषा में इस देश की कहानी सुना रहे हैं, और प्रेम से अपने मजहब का प्रचार कर रहे हैं। यदि ऐसा हो तो किसी को शिकायत नहीं हो सकती है, लेकिन यहां तो हिन्दुओं को जजिया देना पड़ता है। उनके मन्दिर तोड़े जाते हैं, उन्हें दबाकर रखा जाता है, पर वह तो मुसलमान बन गया है। वह

क्यों हिन्दू की चिंता कर रहा है? दोनों को दो क्यों माना जाय? जबर्दस्ती क्यों धर्म बदला जाए? उसे ही क्यों जमाल अहमद बनना पड़ा? इश्क के लिए यह रुकावट क्यों? और धर्म बदलने पर घर का अधिकार क्यों छीना जाए? वह यही सब कुछ सोचता हुआ चलता रहा।

चौदह

मुंशी हरसुख और हेमू गल्ले की खरीद का काम पूरा कर लौट आए। दोनों वर्षा में भीग गए थे। हेमू को थोड़ी सर्दी हो गयी, पर उसने चिन्ता नहीं की। वह तो खुश था कि खरीद का काम पूरा हो गया, सेठ सोहनलाल को बादशाह से मुंह छिपाना नहीं पड़ेगा। अब लक्ष्मीभवन के व्यापार को धक्का भी नहीं लगेगा। तीन दिनों के अन्दर खरीदा हुआ गेहूं बैलगाड़ियों से आ जाना है। किसानों को मूल्य का आधा भाग दे दिया गया है, शेष आधा आगरे में दे दिया जाएगा, और फिर यहां से सारा गेहूं किले में पहुंचाना होगा। सम्भव है कि उसे भी शाही किले में जाना पड़े।

मुंशी हरसुख लाल ने हेमू को विश्राम करने के लिए कहा। वह सर्दी में छींक रहा था, दोपहर हो चका था, बादल फट गए थे, धप निकल आयी थी। हेमू ने शरीर में सरसों का तेल लगाकर स्नान किया। ताजे फूलों से राधावल्लभ की मूर्ति की पूजा की। चिता भस्म की डब्बी को भी फूलों से सजाया। दो क्षण ध्यान लगाए रहा, दासी सोना गर्म-गर्म दूध में हल्दी मिला करके ले आयी। मुंशी जी के संकेत पर हेमू ने पी लिया। कुछ देर बाद भोजन की थाली आयी, उसने एकाध रोटी खा ली और फिर लेट गया। सो जाने का प्रयत्न करने लगा, पर उसके आगे सीकरी के आसपास के गांवों का दृश्य झलक रहा था। दो क्षण के बाद सीकरी की पहाड़ी दिखायी पड़ने लगी, पहाड़ी पर सफी शेख सलीम चिश्ती की खानकाह बनी हुई है। शेख साहब ने मुगल सरदार बाबर के लिए दुआएं की थीं, राणा सांगा पराजित हो गए थे, बाबर की विजय हो गई थी। इसी खुशी में बाबर ने सीकरी में खानकाह बनायी थी, अब सीकरी की पहाड़ी सूफियों का केन्द्र बन गयी है।

अजमेर चिश्तियों के सूफी सम्प्रदाय का सबसे बड़ा केन्द्र है। अजमेर के आसपास रहकर ही ख्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती ने मुहम्मद गोरी की विजय में मदद की थी। उन्हीं की दुआ से मुहम्मद गोरी ने दिल्ली में तुर्क हुकूमत की नींव डाली और तब से–१२वीं सदी से तुर्क राज्य चल रहा है, केवल शाहों का खानदान बदल रहा है। शायद इसीलिए अजमेर वाले ख्वाजा तुर्कों में इतने बड़े मान लिये गये हैं। अब सीकरी की खानकाह मुगलों की मददगार बनी हुई है। लगता है कि अफगान बादशाह का इस पर ध्यान नहीं गया है। आगरा के पड़ोस में भेदिया मौजूद हैं, इस देश को कौन बचाएगा?

यह सोचते-सोचते हेम को नींद आ गयी।
मुंशी हरसुख लाल ने भोजन कर थोड़ा विश्राम किया। विश्राम के बाद वह सेठजी के कक्ष के द्वार पर आ गया। वे भोजन कर विश्राम कर रहे थे, पर सोए नहीं थे। पत्नी

दुर्गा कुंवर अपनी पुत्री पार्वती के साथ उपस्थित थीं। दासी सोना ने सूचना दी, मुंशी जी को बुलाया गया। मुंशी जी ने पास में ही बैठकर गेहूं के क्रय का विवरण दे दिया। हेमू की बुद्धिमत्ता की चर्चा करते हुए अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

सोहनलाल ने पूछा-'हेमू कहां रह गया?'
'वर्षा में भीग जाने के कारण उसे सर्दी हो गयी है। मैंने विश्राम करने के लिए कह दिया है।'
'ठीक ही किया, संतजी का पूत होनहार लगता है।'
'जी, हां! होनहार है, तेजस्वी भी है, और वह बड़े संयम-नियम के साथ रहता है।' 'ऐसा?'
'परन्तु वह अन्दर से बहुत दुःखी है।'
'क्यों? वह किस बात से दुःखी है? मैंने तो कह दिया है कि उसे कर्मचारी नहीं समझा जाएगा।'
'यह बात नहीं है। एक युवक हृदय की पीड़ा है, जिस कन्या से विवाह होने वाला था, वह कन्या बादशाह के सरदार ख्वास खां के विद्रोह और उपद्रव में मारी गयी। उसे वह भूल नहीं सका है, चिता की भस्म लेकर आया है, लगता है कि भम्म उसकी इष्ट देवी है। यह देखकर मन को बड़ी पीड़ा होती है। वह अपनी मुस्कानों में अपनी पीड़ा को छिपाये चलता है।'
'हृदय का इतना कोमल और संवेदनशील है?'
'हां, सेठजी! वह तो और कुछ भी है।'
'वह क्या?'
'वह शाहों-सुल्तानों की लड़ाइयों और जुल्मों की याद कर रोष में आ जाता है। मुगलों को तो देख नहीं सकता।'

'यह सब सोचेगा तो व्यापार का काम कैसे करेगा?'
'मैंने तो उसे काम-धन्धे में कुशल पाया है।'
'तब तो ठीक है, जाइये, आप भी विश्राम करिये।'
मंशी हरसुख लाल कक्ष से निकलकर चलने लगे। दृष्टि पार्वती कंवर पर पड़ी। उसे लगा कि वह बड़े ध्यान से उनकी बातों को सुन रही है। दृष्टि मिलते ही उसकी आंखें झुक गयीं।

सोहन लाल को नींद आ गयी, पार्वती पंखा झलने लगी, सोना दासी आ गई, उसे मना कर दिया। वह पंखा झलती रही और सोचती रही- वृन्दावन के संत नवलदास, जो ओरछा से लौट रहे थे, यहीं ठहरे थे। उनके साथ हरिराम व्यास थे। उन्होंने श्रीकृष्ण और राधाजी की कथा सुनायी थी। राधाजी की प्रेम-विकलता की कहानी मन को छू गयी थी, पर ये हेमचन्द्र तो प्रेम की पीड़ा के पुजारी लगते हैं। भैया प्रेम में उन्मत्त होकर तुर्क बन गए और ये चिता की भस्म को इष्ट देवी मान बैठे हैं! सभी पुरुष तो ऐसे नहीं होते। पिताजी तो दिन-रात रोष में ही रहते हैं। मां डरती रहती हैं, पड़ोस के चाचा के यहां भी यही बात है, पर सन्तजी का पुत्र तो अद्भुत है। हृदय कितना कोमल होगा-नारी-हृदय के समान। चिता भस्मी के आगे झुके हुए नयन दीप के समान जलते होंगे।

यह प्रेमी मन की रीझ है। मन की मनमानी है, सचमुच यही प्रेम है। यह प्रेम किसी बाड़ी में नहीं अंकुरता, किसी हाट में नहीं बिकता। यह तो मन की स्थिति है, मन का निश्छल अर्पण है, भैया ने अपने को अर्पित कर दिया और हेमचन्द्र ने भी अपने को।

पार्वती के हाथ का पंखा नीचे झुक गया, वह पंखा झल ना भूल गयी। मां दुर्गा कंवर को लगा कि उसे नींद आ रही है। उसने पंखा को अपने हाथ में ले लिया, उसे अपनी कोठरी में जाने को कह दिया। पार्वती सकपका गयी, उसे लगा कि उससे गलती हो गयी। वह प्रेम के बारे में क्या-क्या सोच रही थी! मां को भान हो गया। वह लजा गयी, वह उठकर अपनी कोठरी में जाने लगी।

पार्वती अपनी कोठरी में आ गई। पता नहीं, क्या उसके मन में आया कि उसने एक अगरबत्ती जला दी। सुगन्धि फैलने लगी, उसने अपनी सांसों में सुगन्ध का अहसास किया। दो क्षणों के बाद उसने छोटी इलायची के दानों को मुख में डाल लिया। तृप्ति की अनुभूति में मग्न होने लगी।

दोपहर ढल रहा था। आंगन के खम्भे के पास लटके पिंजरे में सुग्गा बोल उठा। उसने मन में ही कहा- 'क्या वह रतनसेन का संदेश लाया है? पर वह तो पद्मिनी नहीं है....पद्मिनी-सी सुन्दर नहीं है।'

दासी सोना दिखाई पड़ी, उसे सुग्गे को पके अमरूद देने को कहा। सोना अमरूद लाने गई, पार्वती कोठरी से बाहर आयी। सोना से अमरूद लेकर सुग्गे को दिया, सुग्गा अमरूद खाने लगा। पार्वती मुग्ध होकर देख रही थी, सहसा आंगन की दूसरी तरफ हुलास खड़ा दिखाई पड़ा। उसे आने का संकेत दिया, हुलास आ गया और धीरे से बोल उठा- 'दीदी जी! आज भैया आ सकते हैं न!'

'ओह, मैं तो भूल रही थी। तुम संध्या में तैयार रहना, मैं भी।'

हुलास चला गया, सोना घर-आंगन और रसोई साफ करने का आदेश पाकर काम में लग गयी। पार्वती सोचने लगी-भैया को इधर बैठाया जाए या वाटिका में! भैया के साथ भाभी आयेंगी, पिताजी का क्रोध जग जाएगा, दोनों का अनादर हो सकता है। यह अनूचित होगा, पर पिछवाड़े बैठाने पर भाभी क्या समझेगी? वह सब जानती है, बुरा नहीं मानेगी। मां पिताजी को मना लेगी तो घर में लाया जाएगा। भाभी को साड़ी और गहने तो देने हैं, उसने तो मां से बातचीत नहीं की है। अब तो कह देना चाहिए, मुंशी चाचा को भी बता देना है। भैया तो उनसे मिलना चाहते ही हैं।

पार्वती वाटिका की ओर जाने लगी, जूही और बेला की लताओं के बाद चम्पा का पेड़ था। उसके बाद चमेली और गुलाब की क्यारियां थीं। उन क्यारियों के बाद हरसिंगार की छाया में कोठरियां बनी हुई थीं। वह उधर जा पहुंची। कोठरियों के द्वार बन्द थे, पर खिड़कियां खुली हुई थीं। पार्वती की दृष्टि गयी, वह हेमू की कोठरी थी, उसके पैर रुक गए। खिड़की से भीतर का दृश्य दिखाई पड़ गया। राधावल्लभजी की मूर्ति, भस्मी की डब्बी और बेठन में बंधी पुस्तकें फलों से सजी हुई...नहीं फूलों से पूजित...उसके हृदय की धड़कन बढ़ गयी, उसके पैर तेजी से आगे बढ़ गये। मुंशी चाचा

अपनी कोठरी में सोए हुए थे, खर्राटे भर रहे थे। हुलास आ गया, उसने मुंशीजी के द्वार को खोल दिया। भीतर जाकर धीरे से जगाया, मुंशीजी की दृष्टि पार्वती पर गयी, इसलिए क्रोध जाग नहीं सका। बाहर आकर पूछा-

'क्या बात है बिटिया?'

'मुंशी चाचा! हो सकता है कि आज संध्या में भैया आ जायें। आपसे मिलना चाहते हैं, आप इधर ही रहेंगे।'

'हां, बिटिया! जरूर रहूंगा, और तुम अच्छे-अच्छे पकवान भी बना लेना।'

'वह सब हो जाएगा, पर भैया को कष्ट न हो, उनका अनादर न हो।'

'सेठजी को मनाना टेढ़ी खीर है, बेटी!'

'उनको हम सभी मिलकर धीरे-धीरे मनायेंगे।'

यह कहकर पार्वती चली गई, रुचिकर पकवानों की तैयारी करने लगी। यह सब देखकर मां को अचरज हुआ, उसने मां के कानों में बता दिया। मां को विश्वास नहीं हुआ, पर पार्वती की मुस्कान ने विश्वास दिला दिया। उसके हर्ष की सीमा न रही, लगा कि खोयाखोया मातृत्व अपने को पा गया। रो-रोआं वात्सल्य से झूमने लगा, अपनी पेटिकाओं को खोल-खोलकर बहू के लिए कपड़े और गहने चुनने लगी। पार्वती को भी बुला लिया, मां-बेटी-दोनों साड़ियों और स्वर्णाभूषणों के चयन में बेसुध होने लगीं। बीच में मां बोल उठी“तुमने पहले क्यों नहीं कहा? नये गहने बन जाते।'

पार्वती चुप ही रही।

पन्द्रह

संध्या हो गयी, आकाश के तारे तो बादलों में छिप गए थे। अन्धकार बढ़ता जा रहा था, पर घरों में दोप जलने लगे थे। यदि कोई ऊपर से देखता तो लगता कि नीचे तारे चमकने लगे हैं।

जमाल अहमद लक्ष्मी भवन के द्वार पर जा पहुंचा। हलास ने प्रणाम किया, पिछले द्वार से वाटिका में दोनों आ गए। मुंशी हरसुखलाल और हेमू ने द्वार पर स्वागत किया, मुंशीजी जमाल को अपनी कोठरी में लाये। दुर्गा-कुंवर और पार्वती-दोनों उपस्थित थीं, आहट पाकर दोनों उठ गयीं। जमाल मां के पैरों पर झुक गया। मां ने उठाकर हृदय से लगा लिया, आंसुओं से कन्धे भीग गए।

सिसकती हुई पार्वती बोल उठी— भैया! मेरी भाभी कहां है?'
'उसे तो नहीं ला सका, बहना!'
'क्यों, मैं उनका सत्कार नहीं कर सकती?'
'पार्वती! वह इस घर के लायक नहीं है।'
'पर मैंने तो भाभी के सत्कार-शृंगार के लिए सारी तैयारियां कर रखी हैं। हमारे मन को क्यों इतना दुखाते हो, भैया!'
'क्यों, मोहन! तुमको मां पर कुछ भी दया नहीं आयी?' यह मां का भीगा स्वर था। 'मां! मैं विवश हो गया, मैं आप सब का मोहन नहीं रह गया। घर, परिवार, धर्म-सबसे दूर हो गया, फिर साहस नहीं हुआ कि।'
'मां और बेटे का नाता तो सबसे ऊपर होता है, इस बात को भूल गये? मैं सांझ-सकारे रास्ता देखती रहती हूं, पिताजी का शरीर. गिर रहा है, और बहन घर के कोने-कोने में भाई को ढूंढ़ती रहती है।'
'मेरे अपराध को क्षमा कर दो, मां! पर मैं जमाल अहमद बनकर कैसे आ सकता हूं।' मुंशी चाचा ने कहा-'आप लोगों की बातचीत होती रहेगी। पहले इस मिलन के त्यौहार पर मुंह मीठा तो हो।'
'लाओ, पार्वती! मैं अपने हाथों से बेटे को खिलाऊंगी।'
सोना थाली सजाने लगी, पार्वती ने अपने हाथों से अपने भैया के पैरों को धोया। फिर थाली लाकर सामने रखी, मां ने स्वयं अपने हाथों से खिलाना आरम्भ कर दिया। जमाल का हृदय भर आया, वह इतना स्नेह कहां सम्भाल कर रखेगा! उसे तो ऐसा विश्वास नहीं था, अपना घर...अपनी मां...अपनी बहन-इतना स्नेह! वहां केवल नरी...उसका प्रेम भी अगाध है, नूरी को लाना चाहिए था। फिर कभी..!

वह अपने हाथ से खाना चाह रहा था, पर मां तो अपने हाथ से खिलाकर तृप्त हो रही थी। आंखों से आंसू बह रहे थे, उसकी आंखें भी भीग गयीं। उसने पानी पीने के लिए हाथ बढ़ाया। मां ने पानी भी पिला दिया।

उसकी दृष्टि मुंशी चाचा और साथ खड़े हेमू पर गयी। वह पूछ बैठा-'क्या यही हेमचन्द्र हैं?'

हेमू ने कहा- 'जी, हां! मैं ही रेवाड़ी से भटकता हुआ आया हूं। आपके यहां शरण मिली है, काम कर रहा हूं।'

'सन्त जी रेवाड़ी के हैं?'
'जी, हां!'

ठीक है, पिताजी की सहायता कीजिए। बादशाह सलीमशाह की फौजी छावनी को गल्ले की पूर्ति समय पर हो, यह ध्यान में रखना होगा।'

'पहले खा लो, फिर बातचीत करना।' मां ने उलाहना दिया।

पार्वती पंखा रखकर मिठाई परोसने लगी। हेमू ने पंखा झलना शुरू कर दिया, जमाल

अहमद (मोहन) कभी पार्वती को मिठाई परोसने से मना कर रहा था और कभी हेमू को पंखा झलने से। पार्वती ने हेमू को पास से देखा। क्षण भर के लिए पलकें झुक गयीं, जमाल को लग रहा था कि वह अपने पूर्व परिवार के स्नेहपूर्ण मायाजाल में बंध गया है। पहले से ही बंधा था, बीच में उसने तोड़ दिया था। पर वह पूरी तरह तोड़ नहीं सका, मां और बहन के प्यार के बंधन को तोड़ना कठिन है।

उसने देखा कि पार्वती दही परोस रही है। वह गद्गद कण्ठ से बोल उठा—'देख बहना! तुझे बचपन में पारो कहता रहा हूं, इतना खिलाओगी तो फिर पारो कहना शुरू कर दूंगा"

'पारो' शब्द सुनकर हेम् एक अनजान कम्पन से सिहर उठा। पंखा झलना रुक गया। उसकी दृष्टि पार्वती पर जा पहुंची, फिर वह सम्भल कर पंखा झलने लगा।

अथाह स्नेह और विविध व्यंजनों के साथ जमाल का भोजन पूरा हुआ। मां का हृदय तृप्त हो गया, पार्वती तो भैया को खिलाने-पिलाने में बेसुध थी।

जमाल भोजन के बाद मां और मुंशी चाचा के साथ एकान्त में बात चीत करने लगा कि अब वह क्या करे? उसने विवाह तो कर लिया। पर जीवन कैसे चले? पिताजी तो क्रुद्ध हैं।

मां भरोसा दिला रही थी। मुंशी जी को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दिया जाये! वे सेठानी की बातों पर सिर हिला रहे थे। जमाल को थोड़ा भरोसा मिल रहा था, उधर सोहन लाल को भनक मिल गयी कि मोहन आया है। वे छड़ी के सहारे चलते हुए वाटिका में आ गए। देखा कि सारा परिवार यहीं है। जमाल ने देखा, घबरा उठा। पर मां के संकेत पर पिताजी के पास जाकर झुका। सेठ सोहन लाल ने जाने-अनजाने पीठ पर हाथ धर दिया। पूछा'क्या मोहन अपने घर लौट कर आ गया?'

'आपसे मिलने आया हूं, पिताजी!'

'इलाहीबख्श के दामाद के रूप में या सोहन लाल के पुत्र के रूप में?
'दोनों ही रूपों में...।'
'नियम के अनुसार एक ही रूप में रहना पड़ेगा। मोहन कहूं या जमाल?'
'मुझे जमाल तो बनाया जा चुका है, पिताजी पर आपका तो मोहन ही हूं।'
'जमाल बन गए तो मोहन नहीं रहे, अब मोहन कहाने का मोह क्यों? हुकूमत भी जमाल अहमद और इलाहीबख्श की है, मैं तो काफिर प्रजा हूं।'

'ऐसा न कहें, बेटे को प्यार चाहिए और सहारा चाहिए। मुझे घर के काम धन्धे में लगा लें।'

'जमाल अहमद! जिस साहस से इत्रफरोश की बेटी से व्याह किया है और घर-परिवार का त्याग किया है, उसी साहस के साथ जिओ। मैंने अपने काम-धन्धे में हेमू को लगा लिया है, अब किसी की जरूरत नहीं है।'

यह कहकर सोहन लाल छड़ी घुमाते हुए लौट गए, सबकी दृष्टि उन पर लग गयी। जमाल समझ नहीं पा रहा था कि किस पर क्रोध करे-अपने पर, अपने पिता पर या इस नवागन्तुक हेमू पर।

हेमू को भी लग रहा था कि वह इन दोनों के बीच कैसे आ गया। चाहा कि वह कुछ कहे, पर कुछ कह नहीं सका। वहां वह घुटन-सी अनुभव करने लगा।

मां ने बेटे को घर के भीतर चलने का अनुरोध किया। जमाल ने हाथ जोड़कर अस्वीकार कर दिया। मां ने कुछ देना चाहा, उसने देखा भी नहीं, वह मां के चरणों पर झुका। पार्वती की पीठ को थपथपा दिया। मुंशी चाचा को नमस्कार किया, हेमू की ओर देखा, आंखों में असन्तोष झलक उठा। पर हेम ने विनम्रता के साथ प्रणाम किया। जमाल झटके से वाटिका के द्वार से निकल गया।

मां द्वार पर पहुंच गयी, अंधेरे में देखती रही। सिसकती रही, पार्वती ने मां को सम्भाला। साथ लेकर भीतर चली गयी। लक्ष्मीभवन के कक्ष में साड़ियों का ढेर था। आभूषणों की चमक थी, अब इनका क्या मूल्य था? लगा कि ये सब व्यर्थ हैं। मां चीख पड़ी-'यह सब मेरी आंखों के आगे से दूर करो।'

'नहीं, मां! ऐसा मत कहो, निराश मत हो, भाभी को उपहार जाएगा। कोई रोक नहीं सकेगा।' पार्वती ने बड़े विश्वास से समझाया।

'वह लौटा देगा।'

'एक बार...दो बार....तीन बार...बार-बार जाएगा।'

'कौन लेकर जायगा, बेटी! काम सहज नहीं है।'

'मुंशी चाचा हैं, सन्त जी के पुत्र हेमचन्द्र हैं।'

दुर्गा कुंवर ने सोच-विचार कर हेमू को बुलाया। हेमू कुछ सोचते हुए-कुछ समझते हुए आ गया। पार्वती सिर झुका कर बैठी रही, मां दुर्गा कुंवर ने करुण स्वर में कहा—'हेमचन्द्र! मां के हृदय को समझ रहे हो? मेरी सहायता करो।'

'मां जी! आप आज्ञा करें।'

'पहले तुम अपनी सम्मति दो, बेटे की बहू तुरुक है। बेटा भी विधर्मी बन गया है, घर का बन्धन तोड़कर चला गया है। पर मां का हृदय तो नहीं मानता, बहन भी बेचैन है। बहू को कपड़े-गहने-मिठाई भेजना सही है न!'

'जी हां, बिल्कुल उचित है।'

'पर मोहन तो डांट-फटकार सुनकर खाली हाथ लौट गया। क्या वह स्वीकार करेगा?'

‘मैं मनाने की चेष्टा करूंगा, मां जी! मुझ पर विश्वास रखें।'
'कल संध्या में...क्यों, पार्वती! कल संध्या में उपहार सजा लोगी?"
'जी, हां! कल संध्या में ही...।' पार्वती ने धीरे से उत्तर दिया।
'तो ठीक है, हेमचन्द्र! कल संध्या में अपनी बुद्धि से उपहार पहुंचा दो। मेरे बेटे को प्रसन्न कर दो।'
'आपकी आज्ञा का पालन होगा।' हेमू ने कहा।
उधर बादशाह सलीम शाह सूरी मालवा से लौटकर किले में प्रवेश कर रहे थे। काले पर्वत से हाथी पर कसे सुनहले हौदे में बैठे. थे। सिर पर जड़ाऊ छत्र था, आगे-आगे अलम-बरदार अलम लिये चल रहे थे। सोंगे बज रहे थे, किले के प्रवेश द्वार पर दमामा दहल और नफीरी के संगीत से बादशाह का स्वागत हो रहा था।

सोलह

दूसरे दिन सुबह बादशाह सलीमशाह किले के शाही महल के दूसरे तल्ले के दीवानखाने में आकर चांदी की कुर्सी पर बैठे। सारे वजीर उठकर खड़े हो गए, सबने तीन बार झुककर कोनिश की और अपनी जगह पर बैठ गए।

दरबार के पहले बादशाह अपने वजीरों और जासूसों से सल्तनत का सारा हाल जानना चाहते थे। उनका यह कायदा भी था, वे इस कायदे के पाबन्द थे।

बादशाह के चेहरे पर थोड़ी थकान थी, लेकिन उन पर खुशी की रौनक भी थी। उन्होंने अपने वजीरों पर एक नजर डाली और बोल उठे– 'खुदा का शुक्र है कि मैं मालवा से कामयाब होकर लौटा हूं। मालवा के जागीरदार शुजात खां ने दो बार गड़बड़ी की, मैंने इसे बर्दाश्त नहीं किया। मैंने किसी जागीरदार या अमीर के गरूर को बर्दाश्त नहीं किया। अफगान सल्तनत बादशाह के लिए है, बादशाह रिआया के लिए है। जागीरदारों और अमीरों की अकड़ और ऐश के लिए नहीं है। इसीलिए मैंने बेरहमी से जागीरदारों और अमीरों को दबाया है। शुजात खां ने माफी मांग ली, मैंने माफ कर दिया। जागीर की वापसी का हुक्मनामा भेज दिया जाये।

वकील (मुख्य सचिव) ने खड़े होकर शाही हुक्म को कबूल किया।

बादशाह ने फिर कहा-'अफसोस है कि ख्वास खां बागी हो गया। उसकी बगावत को भी कुचल दिया गया। वह भागकर लाहौर की तरफ चला गया है, सुना है कि रास्ते में गांवों को नुकसान पहुंचाया है। उधर के किसानों की मालगुजारी में थोड़ी माफी दी जाय।'

वजीर (माल) ने खड़ा होकर शाही हुक्म को कबूल किया।

'मुझे उम्मीद है कि तख्तगाह में मेरी गैरहाजिरी के बावजूद अमनचैन होगा?' बादशाह ने पूछा।

वकील ने दीवाने-वरीद के वजीर की ओर देखा, वजीर सदर जासूस के साथ मौजूद था। उसने बताया कि ख्वास खां ने पंजाब के सूबेदार हैवत खां निजायी को भड़काया है। दोनों मिल गए हैं, उधर से बगावत की बू आ रही है। और मुगल सरदार हुमायूं अपने भाई कामरान को अन्धा बनाकर हिन्दुस्तान की सरहद के नजदीक आ पहुंचा है।

बादशाह ने यह जानकारी लेकर ऐलान किया—'मुझे तो हैबत खां पर कभी एतबार नहीं रहा है। मौका आ गया है, इन दोनों को सबक सिखाना पड़ेगा। और हुमायूं सरहद के नजदीक आ गया है। मैं भी गफलत में नहीं हूं, हिन्दुस्तान की जमीन पर मुगलों को पांव नहीं रखने दूंगा।

दीवाने अरीज के वजीर (वजीरे जंग) ने उठकर बताया कि हमारी फौज हर वक्त तैयार है। हर फौजी छावनी पूरी सरह चुस्त और चौकस है।

सदर मुहतसिब ने खबर दी कि बाजार की हालत ठीक है। रिआया को कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन किले में सेठ सोहन लाल की ओर से गल्ला नहीं आ सका है। मालवे की ओर से फौज तो लौटकर आ गयी है। इसी वक्त सेठ के पास फरमान भेजा जा रहा है।

'अभी फरमान भेजकर सेठ को बुलाया जाये और इस लापरवाही की वजह पूछी जाये।' बादशाह ने हुक्म दिया।

वकील (मुख्य सचिव) ने खुशी जाहिर करते हुए बताया। 'सूफी शायर मंझन आगरा में हाजिर हुए हैं, वैसे वे मुगलों के तरफदार शेख मुहम्मद गौस के मुरीद हैं। लेकिन जैसे आम तौर पर सूफी शायर सियासत से अलग रहकर मसनवी लिखने में लगे रहते हैं, उसी प्रकार मंझन साहब देशी जबान में इश्कहकीकी का पुरलुत्फ किस्सा लिखकर पहुंचे हुए हैं। हुजूर की खिदमत में पेश करना चाहते हैं, इजाजत होने पर तीसरे पहर वे दरबार में हाजिर हो सकते हैं।'

'आज दरबार न हो, थोड़ा आराम जरूरी है। तीसरे पहर यहीं आ जाएं। मैं सुनना चाहूंगा, और सेठ सोहन लाल को भी बुला लिया जाय। अब तो पंजाब की फिक्र हो गयी है। हैबत खां नियाजी और ख्वास खां के मसले पर मुझे जल्द फैसला कर लेना है।'

यह कहकर बादशाह चांदी की कुर्सी से उठने लगे, सभी उठकर खड़े हो गए। बैठक खत्म हो गयी, झांझ और नफीरी बजने लगी। वे हरम की ओर चले गये।

वकील और वजीर की देखरेख में शाही हुक्मनामे तैयार होने लगे। सबसे पहले सेठ सोहन लाल के पास फरमान भेजकर उन्हें तलब किया गया।

सोहनलाल की खुशनसीबी थी कि हेमू का खरीदा हुआ गेहूं उसी सुबह आ पहुंचा था। फरमान पाकर वे नहीं घबराए। सोचा कि संकट टल गया, अब वे सहर्ष बादशाह हुजूर के पास पहुंचेंगे। साथ-साथ गेहूं भी किले के द्वार पर पहुंच जाएगा। उनका गुस्सा अपने आप ठण्डा हो जाएगा! क्या साथ में हेमू को ले जाना ठीक रहेगा? ठीक ही रहेगा ! इसी के द्वारा गल्ले का काम होना है। साथ जाने पर जानपहचान भी हो जाएगी। मोहन के बारे में पूछा जाएगा, जवाब देना होगा। पर क्या जवाब दिया जाएगा?

सोहन लाल के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आयीं। जवाब तो होगा, मजहब बदल लिया— या मनमानी शादी कर ली–या आवारा हो गया! इत्रफरोश से मजहब बदलने की खबर मिल ही जाएगी। छिपाना कठिन है, क्रोध भी नहीं किया जा सकता। उन्हीं का शासन है, शासक का ही मजहब है। काफिर का क्रोध व्यर्थ होगा!

हेमू प्रसन्न था कि उसे गेहूं की खरीद में सफलता मिली है। समय पर गेहूं किले में पहुंच जाएगा। अब वह आगरा में टिक सकेगा। अफगान बादशाह और उनके वजीरों को नजदीक से देखने और समझने का अवसर मिलेगा। अवसर तो आज ही है, क्या सेठ जी साथ ले जायेंगे? पर आज सांझ तो छोटे सेठ की ससुराल में जाना है। मोहन लाल का प्रेमभाव तो अनुचित नहीं है। पर धर्म और मजहब सहज जीवन के रास्ते में रोड़े बन गए हैं, अपना धर्म ऐसे विवाह की अनुमति नहीं देगा। पुराने युग में तो ऐसा विवाह होता रहा है। इधर ये बन्धन कड़े होते जा रहे हैं। उनका मजहब धर्म, परिवार, परम्परा से अलग कर अपने में मिला लेता है और तब शादी भी करा देता है। यह अलगाव अनुचित है। क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि दोनों धर्म ऐसे प्रेम-विवाह की अनुमति दे दें। धर्म बदलने और परिवार से कटने की बात न आवे। दोनों पति-पत्नो को अपने-अपने विश्वास के अनुसार पूजा-पाठ की आजादी रहे। ऐसी आजादी मिलनी चाहिए। जैसे एक परिवार में शैव और वैष्णव रह सकते हैं, गुरु रामानन्द के शिष्य सगुण और निगुण राम की भक्ति में साथ-साथ चल सकते हैं। तो यह क्यों नहीं हो सकेगा, कबीरपंथी ऐसा मार्ग निकाल सकते हैं।'

सोहनलाल ने उसे बुलाया। वह उनके पास पहुंचा, बादशाह के पास साथ चलने का निर्देश दिया। वह भीतर से उल्लसित हो उठा, परन्तु गम्भीर बना रहा।

तीसरे पहर सेठ सोहनलाल हेम के साथ किले के दरवाजे पर जा पहुंचे। पीछे से गेहूं के बोरे भी गाड़ियों पर लदकर आ रहे थे। यमुना नदी को पार करना था, उन दोनों को किले के अन्दर जाने की इजाजत मिली। वे दोनों शाही महल के द्वार से होते हुए ऊपर के दीवानखाने में पहुंच गए। बैठने की जगह मिली, सूफी शायर मंझन भी मौजूद थे।

नफीरी के मधुर संगीत के मध्य बादशाह सलीमशाह सूरी का आगमन हुआ। सबके सिर झुके, सबने कोनिश की। बादशाह तख्तनशीन हुए।

वकील ने उठकर बताया कि सेठ सोहनलाल हाजिर हैं। सूफी शायर मंझन हमारे बीच आ गये हैं।

बादशाह ने कहा-'सबसे पहले सूफी शायर मसनवी के कुछ हिस्से को सुनावें, मैं सुनना

चाहूंगा। सूफी शायर देशी जुबान को अपना कर मसनवी लिख रहे हैं। यह बहुत अच्छी बात है।'

मंझन ने मधुमालती के कुछ हिस्सों को सुनाना शुरू किया। पहले आरम्भ के अंशों को ही रखा-

प्रेम प्रीति सुखनिधि के दाता। दुइ जग एकोंकारि विधाता।
बुधि प्रगास नाही तुम ताई। तुअ अस्तुति जे करौं गोसाई।
तीनि भुअन चहुं जग ते राजा। आदि अंत जग तोहि पै छाजा।
आगे पैगम्बर साहब के बारे में बयान किया गया--

मूल मुहम्मद सभ जग साखा। विधि नौ लाख मटुक सिर राखा।
ओहि पटतर दोसर कोइ नाहीं। वह सरीर यह सभ परिछाहीं।

अब शाहेवक्त का वर्णन है-

साहि सलेम जगत भा भारी। जेई भूजी बर मेहिनि सारी।
जौ रे कोंपि पैंरी पां चापै। इंदर कर इंद्रासन कांपै।
नौ खंड सात दीप सम ठाऊं। भएउ भरम अति कित गा नाऊं।
और आगे इस सृष्टि के मूलभाव के बारे में कहा गया है-

प्रथमहिं आदि पेम परविस्टी। तो पाछे भई सकल सिरिस्टी।
उतपति सिस्टि प्रेम सों आई। सिस्टि रूप भर पेम सवाई।
जगत जनमि जीवन फल ताही। पेम पीर उपजी जिअ जाहीं।

इसके बाद तो राजकुमार मनोहर और राजकुमारी मधुमालती के प्रेम-विरह का वर्णन है!

बादशाह ने शायरी की तारीफ करते हुए कहा-'प्रेम का किस्सा बाद में सुना जाएगा।
आज इतना ही रहे, शायर अणरा में ही रहें। अब हम वजीरों से राय-मशविरा करेंगे।

शायर मंझन खुशी-खुशी रुखसत हो गए। बादशाह के इशारे पर सोहनलाल ने खड़े होकर सलामी दी, और फिर बताया- 'बीमार हो जाने के कारण गफलत हो रही थी। बेटा भी शादी के बाद अलग हो गया है। लेकिन हुजूर की मेहरबानी से सारा गल्ला आ पहुंचा है। कुछ ही देर में किले के दरवाजे पर आ जाएगा, बीमारी की हालत में यह हेमचन्द्र रेवाड़ी से आ गया। इसकी मेहनत और समझदारी से मैं कसूरवार बनने से बच सका हूं।'

'बहुत ठीक, सेठ सोहन लाल! मैं किसी तरह की लापरवाही को माफ नहीं करता। ईमानदारी से हुकूमत की खिदमत होनी चाहिए, मै आपके इस नौजवान को दाद देता हूं।' बादशाह ने जवाब दिया।

सोहन लाल के संकेत पर हेमू ने खड़ा होकर सिर झुकाया और कुछ कहने की इजाजत मांगी। सोहनलाल अचरज में पड़ गए, बादशाह को भी ताज्जुब हुआ, एक पल सोचकर इजाजत

दे दी। हेमू ने साहस के साथ कहना शुरू किया—'जहांपनाह, बागी अमीर ख्वास खां ने रेवाड़ी के इलाके में काफी बरबादी कर दी है! मेरी आंखों के सामने की बात है, मैं बरबाद होकर ही इधर आया हूं। ख्वास खां लाहौर पहुंच गया है, उधर मुगल भी अपने देश की सीमा के पास आ चुके हैं, ऐसा न हो कि पंजाब का सूबेदार हैवत खां ख्वास खां के बहकावे में आकर हुमायं की मदद कर दे।'

बादशाह सलीमशाह खुश हो गए। उन्होंने महसूस किया कि यह नौजवान होशियार और समझदार है। वे पूछ बैठे-'तो तुम्हारी सलाह क्या है?

'मेरी छोटी बुद्धि में तो यही बात आती है कि ख्वास खां तथा हैबत खां में मेल न होने दिया जाए। दोनों को होशियारी से जुदा कर दिया जाए, ख्वास खां अकेला पड़ जाए, सरहद की चौकसी ठीक से होती रहे।' हेम ने निवेदन किया।

सारे वजीर बादशाह की ओर देख रहे थे। बादशाह हेमू के शब्दों पर विचार कर रहे थे। सोहन लाल अपना सिर खुजला रहे थे।

बादशाह बोल उठे-'नौजवान! मुझे बहुत खुशी है कि तुमने सोच-समझकर सलाह देने की हिम्मत की है। तुम्हारी सलाह काबिले गौर है, तुम दरबार में आ सकते हो।'

हेमू का आत्मविश्वास जग गया, बादशाह के इशारे पर यह बैठक खत्म हो गयी। सलीम उठकर खड़े हो गए, सोहन लाल हेमू को बारबार देख रहे थे।

सत्रह

जमाल अहमद अपने पिता के पास से लौटा, भीतर की उथल-पुथल के साथ। वह सोच नहीं पा रहा था कि वह अपने पिता पर क्रोध करे या लक्ष्मी भवन में आए। हेमचन्द्र पर या अपने पर। उसे लग रहा था कि हेमचन्द्र ने आकर पिताजी को अपने वश में कर लिया है। पिताजी तो ऐसे नहीं थे! इतना प्यार करते थे! वह तो उनका इकलौता पुत्र है, उसे उनका सारा प्यार मिलता रहा है। वही तो उनका सर्वस्व है, हेमचन्द्र तो हाल में ही आया है, पता नहीं, क्या जादू कर डाला, पर वे तो पिछले एक माह से अप्रसन्न हैं। उनका प्यार, घृणा और क्रोध में बदल गया है। उन्होंने उसे घर से निकाल दिया और स्वयं खाट पर गिर गए, इसमें हेमचन्द्र का क्या दोष है? वह तो मुंशीजी के समान सेवक ही है। वह तो उसे आदर दे रहा था, उसके व्यवहार में कोई खोट तो नहीं है, परन्तु मनुष्य पर क्या विश्वास? हो सकता है कि उसके मन में आ गया हो कि छोटे सेठ को दूर ही रखा जाये... पर वह तो खुद दूर हो गया है। मोहन से जमाल अहमद बन गया है। वह खुद अपने हृदय के बहकावे में आ गया, प्रेम-कथाएं पढ़-पढ़कर नूरी से प्रेम कर बैठा। पिताजी की दृष्टि में पापी बन गया और अपनी दृष्टि में प्रेम-पथिक बना,

इस प्रेम के लिए उसे त्याग करना पड़ेगा, लेकिन वैभव का जीवन दारेद्रता में कैसे काटेगा।

यह तो ठीक है कि प्रेम का जीवन स्वाभिमान के साथ जीना है, पर रोटी-दाल का क्या होगा? उसे कोई रास्ता निकालना पड़ेगा। हजरत इलाहीबख्श की बातों से भड़कना नहीं है, सरवर अली की धमकी से घबराना नहीं है, हेमचन्द्र पर भी ध्यान रखना है, उसमें भी लाभ हो सकता है।

नूरी ने उसकी बेचैनी को समझने की कोशिश की। जमाल ने लक्ष्मी भवन की बातचीत को छिपा लेना चाहा पर छिपा नहीं सका। नरी से अपनी बेचैनी को छिपाकर कहां रहेगा, वह अकेला पड़ गया है, वह तो साथ देगी ही इसलिए लक्ष्मी भवन की बातचीत को तो नहीं, पर अपनी बेचैनी को प्रकट कर दिया। नूरी दो क्षण सोचती रही और फिर जमाल की हथेली को थामकर कहा- 'मेरे महबूब! आपकी जिन्दगी की राह में आ गई हूं, आपके नक्शे कदम पर हमेशा साथ हूं। न मुझे आपके वालिद को दौलत चाहिए और न मुझे अपने वालिद की, सरवर अली की धमकी का भी कोई खौफ नहीं है।'

'नूरी! बहुत अकेलापन लगने लगा है, तुम्हारा ही भरोसा है। मैं तो भगवान राधावल्लभजी से भी अलग हो गया हूं।'

'मैं खुदा से आपके लिए दुआ कर रही हूं, आप भगवान से दुआ करें। क्या खुदा और भगवान दो हैं?'

'नहीं, नूरी! दो नहीं हैं, एक हैं, लेकिन दो मानकर ही मुझे अपने राधावल्लभजी से अलग कर दिया गया है।'

'आप अपने को अपने देवता से अलग न मानें, उन पर भरोसा रखें। हम दोनों को एक मानकर चलेंगे।'

'पर जीने के लिए, शरीर को चलाने के लिए?'

'उसके लिए अपने पर ही भरोसा...और किसी पर नहीं।'

नूरी की इस बात को सुनकर जमाल ने अपने भीतर एक स्फूर्ति का अनुभव किया।

दूसरे दिन वह बड़ा खुश था, नूरी भी खुश थी, इलाहीबख्श पूछताछ के लिए बेचैन था। उसे मौका नहीं मिल रहा था, नूरी जमाल का भोजन अलग बनाती थी। अलग भोजन कराती भी थी, इलाहीबख्श चिढ़ता रहता था, लेकिन नूरी के जज्बात को चोट पहुंचाना नहीं चाहता था। भोजन के वक्त ही उसने जमाल को आवाज दी। जमाल 'जी, हां' करके भोजन करता रहा, और भोजन के बाद घर से बाहर निकल गया।

वह सोचता हुआ कदम बढ़ा रहा था कि सल्तनत में नौकरी की जाय या व्यापार किया जाए? अपने सगे-सम्बन्धी तो इस विधर्मी की सहायता नहीं करेंगे। ये पठान-अफगान सहायता

कर सकते हैं। अब तो हम-मजहब हैं, उधर वे हिन्दी मुसलमान हैं, उनसे भी मदद मिल सकती है, वे तो इसी देश के हैं। नये मुसलमान हैं जैसे वह है।

वह धीरे-धीरे हिन्दी मुसलमानों की बस्ती में पहुंच गया, बुनकरों की बस्ती थी। उनमें कुछ मुसलमान बन गये थे, कुछ हिन्दू रूप में रह रहे थे, एक बस्ती में एक साथ रहना होता ही था, परन्तु मन में थोड़ा दुराव पैदा हो गया था। पूजा-प्रार्थना के साथ पर्व-त्यौहार, रहन-सहन और भाषा में भी थोड़ा-थोड़ा फर्क आ रहा था। इसी फर्क के कारण दुराव पैदा हो रहा था।

करघे की आवाज से बस्ती गूंज रही थी। कहीं सूत रंगा जा रहा था, कहीं सूते के लच्छे सूख रहे थे। जमाल उस बस्ती में पहुंचकर चलते हुए करघे और बुनते हुए कपड़े को देखने लगा। उस पर एक बुनकर की नजर पड़ गयी, बुनकर को लगा कि इस राही को कुछ चाहिए। उसने इशारे से बुलाया, वह दरवाजे के भीतर चला गया। चलते हुए करघे को निकट से देखने लगा, उसे बड़ा अचम्भा लगा। धागे जुड़ रहे थे, कपड़ा बुना जा रहा था। वह पास बिछी चटाई पर बैठ गया। कुछ देर बाद उसने बुने हुए कपड़ों और उनकी बिक्री के बारे में बातचीत आरम्भ की। धीरे-धीरे वह खुलता गया। बुनकर ने भी सहानुभूति दिखाई और कहा–'भाई! तुम तो नगर सेठ के बेटे हो। क्यों फिक्र करते हो ? खुद मेहनत करना चाहते हो तो करघे के साथ बैठकर हाथ चलाओ या बुने हुए कपड़ों को बेचो, इंसान को एकदूसरे का ही भरोसा होता है।'

'मुझे खरीद-बिक्री की जानकारी तो है। आपके भरोसे यह काम कर सकता हूं।'

'हम पर भरोसा रखो, हम मदद करेंगे।'
'बड़ी मेहरबानी होगी! एक बात पूछूं?'
पूछो, भाई!'

'मैं तो मन की लाचारी से मुसलमान हो गया, आप कैसे बदल गए?'

भाई, क्या कहूं! पंडित-पुरोहित जी के व्यवहार से दुःखी होने के कारण अपना धरम बदलना पड़ा। हम बुनकर ईमानदारी से मेहनत करते हैं, पसीना बहाते हैं, सबका तन ढकते हैं, भगवान को मानते हैं, पंडितजी के आगे झुकते हैं, लेकिन वे तो अपने को भगवान ही मानते हैं और हमें बहत छोटा-शहर! मन अपने को हीन समझने लगा था, जब-तब मन बेचैन हो जाता था। इसी हालत में तुरक-फकीरों ने पास बैठकर बताया कि कोई भी छोटा नहीं है, खुदा की नजर में सब बराबर हैं। इस बात का असर पड़ा, इज्जत से जीने के लिए हमने धरम बदल लिया। कुछ भाइयों ने धरम नहीं भी बदला है, बहुत से लोग तो डर और दबाव से मुसलमान बन गए हैं।'

'बात तो ठीक है कि एक ओर तुर्क शासन ने हिन्दुओं को दबाया है तो दूसरी ओर हिन्दुओं की जात-पात के भेदभाव ने इन्हें कमजोर किया है।'

'ये समझेंगे तो बचेंगे, नहीं तो हम क्या करेंगे!'

'हम अपने भगवान और मन्दिर-मठ को भूलते जा रहे हैं। कैसा लगता है?

'मन को कचोटता है, पर पंडितजी हमें वापस बुलाने के लिए कहां सोच पाते हैं? वे अपनाने को कहां तैयार हो पाते हैं? धीरे-धीरे हमारे बाल-बच्चे देवी-देवता को एकदम भूल जायेगे। मुसलमानी हुकूमत है, कुछ तो सहारा भी मिल जाता है, जजिया नहीं देना पड़ता है।'

'हां, यह भी एक बात है।' जमाल ने कहा।

'आज कबीर पंथी साधु साईंदास का सत्संग है। इनकी बात सही लगती है, ठहरकर सुन लो फिर लौट जाना।'

जमाल ने बुनकर शकील का अनुरोध मान लिया, वह ठहर गया। शाम हो गई, बस्ती के बीच में बरगद की छाया में लोग इकट्ठे होने लगे। हिन्दू और मुसलमान दोनों इकट्ठे हुए, दोनों ने मिलकर सत्संग का प्रबन्ध किया। साईंदास आए, चौकी पर कम्बल बिछा हुआ था। साधु साईदास उसी पर बैठे, उनका प्रवचन शुरू हुआ-

'मेरे सत्संगी भाइयो! सद्गुरु कबीरदास ने सहज समाधि से सत्य रूप को पा लिया था। इसलिए वे निडर होकर कहते रहे हैं कि हिन्दू और तुरुक, दोनों सही रास्ते पर चल नहीं रहे हैं। दोनों भटक गए हैं।

हिंदू तुरक कहां ते आए किनि एह राह चलाई।
दिल महि सोचि विचार कवादे भिसत दोजख किन पाई।।

ये दोनों अलग-अलग मालिक से पैदा नहीं हुए हैं। दोनों के अलगअलग रास्ते कैसे बन गए? सबको सोचना चाहिए, कोई मुसलमान होने से बहिश्त (स्वर्ग) पा जाता है? क्या केवल हिन्दू दोजख (नरक) पाता है? जो एक साईं को भूलकर दूसरे पर जुल्म करेगा, वही तो नरक पाएगा। जो सबको भगवान रूप मानकर प्यार करेगा, वही तो स्वर्ग पायेगा। अजीब बात है कि मुसलमान जुल्म और जबरदस्ती से सबको मुसलमान बनाकर बहिश्त पहुंचाने का ठेका ले रहे हैं। पंडितजी मेहनत से कमाई करने वालों को छोटा- शूद्दर मानकर नरक पहुंचा रहे हैं। यह धर्म नहीं, अधर्म है। पुण्य नहीं, पाप है।
दोनों ही गुनहगार हैं।

सद्गुरु ने सच्चे साधु की पहचान करायी है। सच्चे इंसान की पहचान बतायी है।

कबिरा सोई पीर है, जो जाने पर पीर।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर॥

किस्म-किस्म के भेष बनाने में साधुपन नहीं है। राम और रहीम को अलग-अलग मानने में साधुपन नहीं है, साधुपन सिर्फ उपदेश देना नहीं है, साधुपन तो परपीड़ा को महसूस करने और परोपकार करने में है। जो दूसरे के दुःख और तकलीफ को नहीं समझता है, वही बेरहम काफिर है। हिन्दू होना काफिर होना नहीं है, मानव के प्रति बेरहम

होना काफिर होना है।

इसलिए सभी को प्यार करने और हमदर्द बनने से वह राम; वह रहीम खुश होगा। ऊंच-नीच और जुल्म-जजिया के जमाने में सबमें एक हो राम...एक ही रहीम के दर्शन करें, सबको प्यार करें, यही धर्म है, यही सद्गुरु की वाणी है।

जमाल को अन्धकार में एक किरण दिखाई पड़ी। सचमुच चारों तरफ घृणा की हवा है, यह घृणा...यह डर, यह दहशत अन्धकार ही है। मुसलमान हिन्दू को काफिर समझते हैं, अपने शासन के बल पर दबाते हैं। हिन्दू मुसलमान को म्लेच्छ मानते हैं। कबीरदास ने रामरहीम को एक माना है। क्या इस सत्य को सभी मानेंगे?

अठारह

हेमू ने प्रभात में योगासन के साथ शस्त्रों का अभ्यास भी आरम्भ कर दिया। यमुनातट स्थित फौजी छावनी के गजराज सिंह से सम्पर्क हो गया। प्रातःकाल आ गया, आज पहला दिन है, घंटे भर का अभ्यास हुआ, उसके बाद हेमू विश्राम करने लगा।

गजराज सिंह को लगा था कि सेठ सोहन लाल अपने कर्मचारी को थोड़ा-सा शस्त्र चलाना सिखा देना चाहते हैं। नगर-सेठ की सुरक्षा के लिए शस्त्रधारी आवश्यक है, इसीलिए यह युवक तलवार और भाले चलाना सीख रहा है, पर यह कठिन श्रम कर नहीं सकेगा। पर यह तो परिश्रमी दिखाई पड़ रहा है। थोड़ी-सी जानकारी भी है और इच्छा-शक्ति भी है, यह योद्धा बन सकता है।

हुलास आया, कलेवा लेता आया। साथ ही हेमू को सेठानी जी का संवाद भी दिया। वह कल संध्या में छोटे सेठ की ससुराल जा नहीं सका था, किले से लौटते-लौटते विलम्ब हो गया था।

उसने जलपान कराके गजराज सिंह को विदा किया और फिर सेठानी से मिलने गया। वह विकलता से प्रतीक्षा कर रही थीं, देखते. ही बोल उठीं-'कल सांझ तो तुम भूल गए हेमू, आज मत भूल जाना।

‘जी, नहीं! मैं आ ही रहा था।'

'तो यह समझ लो-पांच पिटारियों में मिठाइयां हैं, एक में वस्त्र हैं, चन्दन की मंजूषा में गहने हैं, इसे तुम संभाल लो। हुलास के साथ और कामगार रहेंगे, सोना भी जाएगी।'
'अभी जाना है न?'
'हां, अभी जाओ। पिछले द्वार से जाना है, उन्हें मालूम न हो।'

‘मां! मैं एक चिट्ठी दे रही हूं-भैया के नाम।' यह पार्वती का स्वर था।

'तो तुरन्त लाओ, अब क्या विलम्ब है?'
हेमू को स्मरण आ गया कि उस दिन मोहन लाल ने इन्हें पारो कहा था। 'पारो' शब्द सुनकर उसे रोमांच हो आया । स्मृति की पीड़ा ने उसे थरथरा दिया, उसी स्मृति को लेकर वह आगरा पहुंचा है। आगरा ने ही उससे पारो को छीना है, वह कुछ कर न सका, अब यहां आकर सेठजी के यहां काम में लग गया है और अफगान बादशाह के पास भी पहुंच गया है। ख्वास खां से प्रतिशोध के लिए उसने एक रास्ता भी निकाला है, पारो की स्मृति । भस्मी सर्वदा साथ है। मोहन लाल ने तो अपनी प्रेयसी को पा लिया है, भाग्यशाली हैं, पर इसके लिए बहुत कुछ त्यागना पड़ा है । वे अपनी प्रेयसी के कारण संघर्ष कर रहे हैं, रंग-राग नहीं, संघर्ष!

'भैया-भाभी के लिए मेरी यह चिट्ठी है, भैया के लिए बहन पारो की मंगल कामना है।' पार्वती ने मां की ओर देखते हुए कहा।

हेमू 'पारो' शब्द सुनकर सिहर उठा । उसकी दृष्टि सामने खड़ी पार्वती पर गयी। क्षण भर के लिए लगा कि वह 'पारो' की झलक पा रहा है । उन आंखों में 'पारो' ही झांक रही है।
पार्वती लजाकर अपने कक्ष में चली गयी, हेमू चिट्ठी ले चुका था, वह सिकन्दराबाद मुहल्ले में जाने के लिए तैयार हो गया । कामगार आ गये, पिटारियां उठीं। सोना ने वस्त्र की पिटारी को अपने सर पर ले लिया। दुर्गा कुंवर ने हेमू को चन्दन की मंजूषा दे दी। वह सादर मंजूषा को ग्रहण कर वाटिका के द्वार से चल पड़ा।

किशनपुरा की गलियों से होता हेम सिकन्दराबाद मुहल्ले में जाने लगा। घरों से लोग झांक रहे थे, पिटारियों को देखकर आपस में कानाफूसी कर रहे थे, हेमू को पहचानने की चेष्टा कर रहे थे।

हुलास इस मुहल्ले से परिचित था। पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं हुई, परन्तु हेमू का हृदय धड़क रहा था । इत्र-फरोश इलाहीबख्श के मकान पर जाना है, घर के भीतर पहुंचना है, छोटे सेठ मोहन लाल. अब जमाल अहमद और उनकी नूरी की सेवा में ये मिठाइयां, कपड़े और गहने हैं। वे तो लक्ष्मी भवन से असन्तोष और अनादर के साथ लौट आए है । वह उनके पास पहुंच रहा है, उन सबका कैसा व्यवहार होगा? ऊपर आकाश में गरजन-तरजन है, बादल टकरा रहे हैं, वह उनसे टकराने जा रहा है।

वह इलाहीबख्श के मकान पर पहुंच गया, इलाहीबख्श अपनी दुकान में सुगन्धित तेलों और इत्रों को सजा रहा था। हेमू ने विनम्रता के साथ पूछा- 'जनाब इलाहीबख्श साहब का मकान ढूंढ़ रहा हूं, क्या आप बतायेंगे?'

'हां, यही है, बोलिए, क्या खिदमत करूं?' इलाहीबख्श ने हेमू की ओर मुखातिब होकर जवाब दिया। उसने पिटारियों को देखा, वह सोचने लगा कि यह इत्र खरीदने आया है या उसके घर?

'मैं सेठ सोहन लाल जी के यहां से आ रहा हूं, सेठानी जी ने अपनी बहू के लिए उपहार भेजा है।'

'अल्लाह की मेहरबानी है कि उन्हें अपनी बहू की याद आ गयी।' इलाहीबख्श पिटारियों को देख बेइन्तहा खुशी में डूब चला।

अचानक बारिश होने लगी, उसी समय सरवर अली अपनी गली में जाने लगा। उसने कामगारों के सर पर पिटारियों को चाचा इलाहीबख्श के घर में सरकाते देखा। चंद लमहे रुककर देखता रहा, फिर कुछ सोचता हुआ आगे बढ़ गया।

इलाहीबख्श ने हेम की इजाजत से कामगारों, हुलास और सोना को घर के अन्दर पहुंचा दिया। अपनी बीवी को खबर कर दी, हेमू को बड़े अदब के साथ दुकान में बैठाया।

जमाल अहमद जलपान कर बाहर निकलने की तैयारी कर रहा था। उसने हुलास और सोना को देखा। पिटारियों को देखकर कुछ समझने लगा। नूरी पीछे खड़ी थी, सबको देखकर कमरे में चली गयी, चिलमन से झांकने लगी। जमाल यह सब देखकर क्रुद्ध हो उठा, वह तीखे स्वर में चीख पड़ा-

'हलास! यह सब क्या है?

'छोटे मालिक! मां जी ने बहरानी के लिए यह सब भेजा है। बाहर हेमचन्द्र जी हैं, वे भी कुछ लाये हैं।' हुलास ने खड़े होकर निवेदन किया।

सोना चिलमन से झांकती बहू को देखने के लिए बेताब हो रही थी। एक झलक तो मिली थी, पर उसकी आंखें नहीं भरी थीं। छोटे मालिक के तीखे शब्दों को सुनकर घबरा गयी।

'हेमचन्द्र को बुलाओ, मैं पूछ लूं तभी बाहर जाऊंगा।' जमाल ने हलास को आज्ञा दी।

हुलास ने बाहर आकर हेमचन्द्र को बताया। बाहर दुकान में बैठे इलाहीबख्श के चेहरे की रौनक हर लमहा बढ़ रही थी। इसी खुशी में उसने हेमू को भीतर जाने के लिए इशरार किया। हेम उठा, अस्थिर चित्त लिये अन्दर गया, जमाल के तने हुए चेहरे को देखा, लेकिन उसने मन्द मुस्कान के साथ नमस्कार किया। पल भर में अनुभव कर लिया कि वातावरण अनुकूल नहीं है। छोटे सेठ की आंखों में रोष है, हुलास परेशान है, सिर्फ इलाहीबख्श खुश है।

'हेमू! यह सब लेकर क्यों आए? मुझे तो उस घर से कुछ नहीं चाहिए।' जमाल ने तीखे स्वर में कहा।

'मां जी की आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है, मां की ममता को कैसे ठुकराया जा सकता है!'

मुझे लक्ष्मी भवन ने तो ठुकरा दिया है।'

'यह लक्ष्मी भवन का उपहार नहीं है, यह मां की ममता का छोटासा उपहार है। बहन के हृदय की उमंग उमड़कर अपनी भाभी के पास आयी है।'

'परन्तु पिताजी ने तो स्वाभिमान के साथ जीने का उपदेश दिया है। वे तो मुझे देखना भी नहीं चाहते, मैं भी उनकी कोई वस्तु देखना नहीं चाहता।'

'मां के वात्सल्य और बहन की ममता सेठजी के क्रोध से बहत ऊपर है। आप उनकी वस्तु को स्वीकार न करें, पर मां और बहन के प्यार को कैसे अस्वीकार कर देंगे? न सेठजी रोक सकते हैं और न आप ठुकरा सकते हैं। यह पार्वती जी ने चिट्ठी भी दी है, इसे आप पढ़ तो लें।' यह कहकर हेमू ने चिट्ठी जमाल अहमद के हाथ में दे दी।

जमाल ने चिट्ठी ले ली। चिलमन से झांकती नूरी बेचैन हो रही थी। उसकी अम्मा उसे इशारा कर रही थी कि वह कुछ बोले। इतना गुस्सा ठीक नहीं है, सौगात को कबूल कर लेना चाहिए। नूरी सोच रही थी कि कुछ बोलने पर उन्हें बुरा लग सकता है, थोड़ा और इन्तजार किया जाये। हेमू की गुफ्तगू गलत नहीं है, बहन के खत का भी असर पड़ सकता है, वे कुछ सोचेंगे और तब ही वह कुछ...।

जमाल चिट्ठी को पढ़ने लगा -'भैया! मां आपको और भाभी को आशीष दे रही हैं, भाभी को देखने के लिए हम दोनों विकल हैं, पिताजी निष्ठुर हैं, आप तो निष्ठुर नहीं हैं, आपका हृदय तो कोमल और मधुर है, तभी तो आपने नूरी भाभी को अपनाया है।

मां के हृदय की कोमलता की थाह आप-हम नहीं लगा सकते। हम दोनों की भावनाएं गंगा और यमुना की लहरें हैं। एक बार तो आप हमारी स्नेहपूर्ण भावनाओं की गंगा-यमुनी लहरों में डुबकी लगा लें। हमारे भीतर जो विकलता है, आप अवश्य ही समझ रहे होंगे, इस चिट्ठी से तो समझ जायेंगे।

जन्माष्टमी आयी, चुपचाप चली गयी। आप नहीं थे, धूमधाम नहीं हो सकी। भागवत कथा भी नहीं हुई। हम लोगों को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। हम अपने दुःख को कैसे समझायें?

ममता के उपहार को स्वीकार करें, यह लक्ष्मी भवन का नहीं, मां के हृदय का उपहार है। मुझे पूरा विश्वास है कि भाभी मां की भावना को आदर देंगी, मिठाइयों और कपड़ों के साथ गहनों को स्वीकार करेंगी। हमारे हृदय की पीड़ा को थोड़ा आराम पहुंचेगा, टूटता हुआ हृदय जुड़ने लगेगा, एक जगह जुड़ा है तो दूसरी जगह भी जुड़ जाए, ब्याह का गीत दो को जोड़ता है, तोड़ता तो नहीं।

मां यशोदा अपने कृष्ण कन्हैया को राधा के साथ देखकर फूली नहीं समाती, आपने तो यह कथा सुनी है।

आप दोनों मेरा प्रणाम स्वीकार करेंगे, रूठना छोड़कर आशीष देंगे, आशीष देंगे न

?'
आपकी बहन
पारो

चिट्ठी पढ़कर जमाल की आंखें बन्द हो गयीं। मां और बहन के प्यार की याद में बेसुध होने लगा। मां यशोदा श्रीकृष्ण और बावरी राधा...जन्माष्टमी के अवसर पर भागवत कथा नहीं हो सकी, मेरे कारण सभी दुःखी हैं। बहन कहती है कि ब्याह का गीत जोड़ता है, अलग नहीं करता। वह अलग हो गया, कृष्ण और राधा से भी अलग हो रहा है। नहीं, ऐसा नहीं मां और बहन की ममता से दूर नहीं होना है, भूल नहीं जाना है।

हेमू ने अनुभव किया कि चिट्ठी ने प्रभाव डाला है। मां के प्यार की स्मृति जगी है, बहन की ममता ने हृदय को सहला दिया है। इसी समय कुछ निवेदन करना चाहिए। यह सोचकर उसने मधुर स्वर में कहा-'चन्दन की मंजूषा भी है, चिट्ठी के साथ इसे भी स्वीकार करें।'

जमाल की सुधि लौट आयी। उसने मंजूषा को देखा, क्षण भर देखता रहा, पहचानने की कोशिश करता रहा फिर चिलमन की ओर देखा। नूरी की आंखों में अनुरोध था।

हेमू ने मन्द मुस्कान के साथ कहा- 'मुझे तो भाभी जी के हाथों में ही देने को कहा गया है, यदि आपकी आज्ञा हो तो...।'

हेमू भाई! मां और बहन के ममतामय आदेश को तो मानना ही पड़ेगा। नूरी, पर्दे से बाहर आओ, तुम्हीं को कबूल करना है।'

नूरी पर्दे से बाहर आयी। सोना का हृदय उछल रहा था, नूरी हौले-हौले सर झुकाये जमाल के पास आयी। हेमू ने मंजूषा सौंप दी. नूरी ने जमाल के इशारे पर मंजूषा को अपने हाथों में थाम लिया।

वातावरण मधुर हो उठा।

उन्नीस

नूरी ने सारे कामगारों को बख्शीश देने के लिए अपनी अम्मा से कहा। उसकी अम्मा ने शौहर-इलाहीबख्श से राय ली। सोना नूरी के पास आ गई थी, घर की दासी के रूप में परिचय दिया। मां जी और बहन जी की प्रशंसा करते हुए बताया -

'वे दोनों बहूजी को देखने के लिए बेचैन हैं।'

नूरी ने मन्द मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'यह मेरी खुशकिस्मती है, मैंने तो उन्हें तकलीफ ही पहुंचायी है। वे अपनी तकलीफ को भूलकर मुझे अपना रही हैं। मैं उनकी कदमबोसी के लिए बेकरार हूं, लेकिन बेबसी है।'

'पर रास्ता निकलेगा, बहूजी! बेटे को मां से अलग नहीं रहना है। मां बेटे से तो अलग रह ही नहीं सकती। सेठजी अपने पुरोहित जी से पूछताछ कर ही कोई काम करते हैं, इसीलिए वे दूर-दूर हैं। धर्मधर्म की दूरी भी है। खानपान और रहन-सहन का भी फरक है।' सोना ने कहा।

'मैं समझती हूं, सोना! अगर वह दूरी दूर हो जाती! कोशिश हो रही है, मेरी ओर से कोई दिक्कत नहीं होगी।'

'सबको एक ही गांव-शहर में रहना है, परदेसी बनकर नहीं रहना है। तब रहन-सहन और भाषा का इतना फरक नहीं रहना चाहिए।'

‘सोना! सही बात बोल रही हो। यही होना चाहिए, लेकिन ये मुल्ला-मौलवी तो हिन्दुस्तान में अरब का नजारा देखना चाहते हैं। इस मुश्किल को सूफी शायर और कबीरदास के चेले आसान करने की कोशिश कर रहे हैं, थोड़ा वक्त तो लगेगा ही।'

'अब आप इनके रहन-सहन को अपनायें और छोटे मालिक आपके रहन-सहन को। अपने आप दिक्कतें दूर होने लगेंगी।'

'अरे सोना! तू इतनी होशियार है!'

सोना खुश हो उठी। नूरी को लगा कि एक रास्ता मिल गया।

इलाहीबख्श और उसकी बीवी ने आपस में सलाह करके सबको बख्शीश दी। सभी खुश हो गए, सबने प्रणाम किये, इलाहीबख्श ने सबको रुखसत किया।

जमाल को हेमू अच्छा लगने लगा। उसके मन में हेमू के प्रति जो दुर्भाव था, वह दूर हो गया। वह उसके साथ ही घर से निकला, हुलास के साथ सभी आगे बढ़ गए। हेमू जमाल के साथ-साथ चलने लगा। उसने पूछने के लिए थोड़ा साहस किया--'मैं आपको क्या कहं— मोहनलाल या जमाल अहमद? मेरा मन तो मोहन लाल ही कहना चाहता है।'

'हेमू! मैं मोहन लाल हूं, मुझे जमाल अहमद बनने को विवश किया गया है। मुझे बन जाना पड़ा है, उधर से बहिष्कार है। इधर से दबाव है, दोनों ने मुझे मोहन से जमाल बना दिया। मेरी स्थिति क्या है-मैं क्या कहूं?'

'आप ठीक कह रहे हैं, मुझे तो यह सोचकर रोमांच हो रहा है। एक ओर आपने परम्परा से भिन्न विवाह करने का साहस किया। समाज की रूढ़ि को तोड़कर ब्याह रचाया, दूसरी ओर आपको अपने धर्म और परिवार से अलग हो जाना पड़ा है। आपने बहुत कुछ खोया है। खोकर ही कुछ पाया है, मन की स्थिति को शब्दों द्वारा बताया नहीं जा सकता। भीतर का

द्वन्द्व बड़ा भयावना है!

'कितनी बड़ी बात हो जाय, यदि आप दोनों अपने-अपने धर्म का पालन करें और आप अपने परिवार से जुड़ जाएं! न उधर से बहिष्कार हो, न इधर से दबाव हो।'

‘पर यह संभव नहीं लगता, कबीरपंथी द्वारा थोड़ा संभव हो सकता है। मैं यत्न करता रहूंगा।'

'मैं हृदय से आपकी भावना के साथ हूं। आपके साथ मां जी हैं, पार्वती जी हैं और मैं तो हर क्षण आपके साथ हूं। सेठ जी के क्रोध में भी अपनापन है, बेटे के खो जाने पर-अलग हो जाने पर किसे खुशी होगी?'

'उनकी पीड़ा को महसूस नहीं कर सका था, हेमू! पीड़ा के कारण ही उनका क्रोध' कुछ खो जाने पर मन की विकलता तुम ठीक कह रहे हो। पर वे तो क्रोध में देखना भी नहीं चाहते, उन्होंने स्वाभिमान के साथ जीने की बात कह दी है। मैंने गांठ बांध ली है, मैं स्वयं अपने श्रम से दो मुट्ठी अन्न लाऊंगा। साथ ही पूजा-पाठ की आजादी भी पाने का यत्न...।'

'अपनी रोटी और अपना धर्म-दोनों को स्वाभिमान एवं स्वाधीनता के साथ पा लेना मानव की सबसे बड़ी सफलता है, मेरी मंगल कामना स्वीकार करें। जब आप याद करेंगे, मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा।'

'तुम पिताजी को हर तरह से सहायता करते रहना, हेमू! हमारी भेंट होती रहेगी। ठीक है, जाओ, मैं भी चलता हूं।'

हेमू प्रणाम कर विदा हुआ, जमाल दूसरे रास्ते पर चल पड़ा। आज उसे लगा कि मां और बहन का संबल पाकर उसका खोया-खोया जीवन भरने लगा है। हेमचन्द्र (हेमू) भी विचार और व्यवहार में अच्छा लग रहा है, सन्त का पुत्र है न! इससे भी सहारा मिलेगा। यह पिताजी और व्यापार दोनों को संभाल लेगा।

हेमू सोचता हुआ लौट रहा था कि छोटे सेठ कैसे द्वन्द्व में पड़ गए हैं! मंझधार में किनारा दीख पड़ता है, और फिर छुप जाता है। इन्हें स्नेहपूर्ण सहयोग चाहिए। पुरोहित और परिवार दोनों द्वारा बहिष्कार के कारण उग्र प्रतिक्रिया हो सकती है।

अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति मलिक काफूर भी हिन्दू था। गुजरात पर हुए आक्रमण में पकड़ लाया गया था, उसका धर्म बदल गया। उस निम्नवर्णीय दरिद्र तरुण का तेज प्रकट हुआ, अपनी तेजस्विता से सल्तनत का सेनापति बन गया। उसने खिलजी सुल्तान के लिए सारे दक्षिण भारत को रौंद दिया। विध्वंस और लूट का क्रम चलता रहा।

ऐसा क्यों हो जाता है? धर्म बदलने पर हम अपने देश के विरुद्ध क्यों हो जाएंगे? हम गांव-नगर, मन्दिर-मठ और कलामूर्तियों का विनाश क्यों करेंगे? यह उग्र

प्रतिक्रिया है या कट्टर मजहबी बनने का भयानक प्रदर्शन है?

मोहनलाल में विवेक जगा हुआ है, मां और बहन-दोनों का स्नेह मिल रहा है। अब इनमें उग्र प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए, एक खतरा है। उधर से बहिष्कार है तो इधर के मुल्ला-मौलवी इन पर दबाव डालकर मलिक काफूर बना सकते हैं। इस स्थिति को टालना चाहिए, कबीरपंथी के पास पहुंचना शुभ है। कबीरदास की वाणी से कट्टरता नहीं आएगी। विध्वंसपूर्ण कट्टरता मजहब की भयानक सीमा है, इससे बचाना होगा।

लगता है कि नूरी भाभी बहुत भली हैं। उनमें मजहबी कट्टरता नहीं है, हो सकता है कि प्रेम-विवाह के कारण वे स्नेहपूर्ण और उदार हो गयी हों। सुन्दर तो हैं ही। पारो कम सुन्दर नहीं थी, पर उसे दुर्भाग्यवश खो बैठा। नहीं, अफगान सरदारों-अमीरों के उपद्रव के कारण खो बैठा। केकल भस्मी शेष है। सेठ जी की बेटी भी पारो कहलाती है। उसने उस दिन उनकी आंखों में पारो की झलक पायी थी।

हेमू लक्ष्मी भवन पहुंच गया। हुलास उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, हेम उसे लेकर दुर्गा कुंवर के पास आया। वहां सोना अपना अनुभव सुना रही थी, कह रही थी-'मां जी! बहू तो पारो बिटिया के समान सुन्दर है। सुभाव भी इन्हीं के समान मीठा है, पठान-तुरक है-बस, यही एक बात खटकने वाली है। और सब मन के लायक...।'

दुर्गा कुंवर ने हेमू की ओर प्रश्नभरी आंखों से देखा। सहसा हेमू बोल उठा—'सोना का कहना सच है, मां जी!'

पार्वती लजाकर अपने कक्ष में चली गयी।

हेमू ने अनुभव कर लिया कि जो नहीं बोलना चाहिए वह बोल गया। इसलिए क्षणभर के लिए सहम गया। संकोच के कारण वह इधर-उधर देखने लगा, दो क्षण के बाद उसने अनुमान किया कि उसका कहना किसी को बुरा नहीं लगा है। उसकी दृष्टि ने देखा कि अपनी कोठरी में छिपी पार्वती कुंवर झांक रही हैं। उसने अपने भीतर अनजान कम्पन का एहसास किया।

दुर्गा कुंवर पूछ रही थी–हेमू! कपड़ों और गहनों को बहू ने पसन्द किया न।'

'जब तक छोटे सेठ जी ने स्वीकार नहीं किया, तब तक बहू जी कुछ नहीं बोल सकी। विनम्रभाव से सबका सत्कार कर रही थीं। मोहन लाल जी को बार-बार मां की ममता का स्मरण दिलाया। चिट्ठी के शब्दों ने उनको पिघला दिया, उनका रोष धीरे-धीरे शान्त हुआ। और तब बहू जी ने मंजूषा को कबूल किया..' हेमू ने प्रसन्नभाव से बताया।

पार्वती कोठरी से बाहर आ गयी, मां के पीछे खड़ी हो गयी। यह जानकर उसे हर्ष हुआ कि उसकी चिट्ठी ने भैया को मना लिया। भैया ने सब स्वीकार कर लिया, पर सहसा उसे ख्याल आया, वह बोल उठी-'मां! ऐसे कपड़े और गहने तो पठानों-अफगानों के घरों में नहीं चलते हैं।' _हां, यह तो तुम ठीक कहती हो, पर मैं तो अपने घर के चलन के अनुसार ही।' यह कहकर दुर्गा कुंवर हेमू की ओर देखने लगी।

ऐसी कोई बात नहीं है, उन लोगों ने खुशी-खुशी सब कबूल किया है।' हेमू ने उत्तर दिया।

'तब तो ठीक है, पता नहीं, कब मैं उन कपड़ों और गहनों में बहू को देख सकूँगी?' दुर्गा कुवर ने ऊंची सांस लेकर कहा।

'वह समय आएगा, मां जी! मैं प्रयत्न कर रहा हूँ, आप मुझ पर भरोसा रखें।' हेमू ने आश्वासन दिया।

'तुम पर भरोसा हो गया है, बेटे! इस अभागन मां को भरोसा दिलाते रहना। इस सूने घर में राधावल्लभ जी का जन्म भी धूमधाम से नहीं मनाया गया। दशहरा आ रहा है। कैसे रामायण कथा होगी? पंडित गणेशी लाल मुंह फुलाये हुए हैं । राखी पर भी नहीं आ सके ।'

हेमू ने उनकी पीड़ा का अनुभव किया। सोचा कि सभी कहीं-न कहीं दुःखी हैं।

'सुना है, बेटे! तुम भी अपना दुःख छिपाये चलते हो।'

'पुरुष को दिन-रात किसी-न-किसी बात के लिए जूझना पड़ता है, मां जी! आंसू बहाने से जीवन का चक्का रुक जाता है।'

'सुनती हूं कि तुम नित्य प्रातःकाल भस्मी के आगे झुककर आंसू बहा लेते हो, क्या ब्याह हो गया था?'

'ब्याह होने वाला था, मां जी! मैंने उसे वसन्त के मेले में देखा था। देवी के समान सुन्दर थी, नाम भी उसका पारो ही था। पर ख्वास खां के उपद्रव से चिता की राख ही हाथ आ सकी । तुर्कों के राज्य में स्त्रियों को छिपकर रहना पड़ता है नहीं तो डूब मरो । क्या किया जाय?'

पार्वती 'पारो' शब्द को सुनकर धड़क उठी। शीश झुकाकर सुनती रही।

पर भस्मी के आगे आंसू बहाने से सारा जीवन कट नहीं सकेगा, बेटे! तुम्हारा हृदय बहुत कोमल है, पर तुम तो तलवार-भाला भी सीखते हो । कठोर भी हो।' दुर्गा कुंवर ने कहा ।

'जीने के लिए कोमल और कठोर दोनों ही होना पड़ता है, मां जी!'

'यह तो सही कहते हो, हेमू! अच्छा, अब जाओ। विश्राम कर लो।'

भोजन करके हेमू ने विश्राम किया। मुंशी चाचा के साथ सेठ सोहनलाल से मिलने चला । सोहनलाल सोच रहे थे-सन्त जी का बेटा तो अद्भुत है! इसने बादशाह से बातचीत कर ली। साहस के साथ राजकाज की बात की, बादशाह इस पर खुश हो गए। बड़ा होनहार लगता है

। काश, मोहन रहता तो दोनों मिलकर लक्ष्मी भवन की प्रतिष्ठा में चार चांद लगा देते। परन्तु बेटे ने तुरकन के चक्कर में मेरी नाक काट दी। मैं उसका चेहरा नहीं देखूगा, उसे एक पैसा भी नहीं दूंगा।'

मुंशी हरसुख के साथ हेमू आ पहुंचा। सोहन लाल ने हेमू को देखा, दो पल देखते रहे । और तब बैठने को कहा। मुंशी जी को यह व्यवहार अजीब लगा ।
सोहन लाल ने बड़े स्नेह से कहा-'हेमू! गल्ला तो समय पर पहुंच गया। अब किले में जाकर गल्ले का मूल्य लाना है, बुद्धिमानी से काम करना होगा । दफ्तर को खुश करना होगा।'
‘जी, हां! मुंशी जी के साथ चला जाऊंगा।'
'हां, मुंशी जी के साथ ही जाना है, तभी दफ्तर वालों से निपट सकोगे। और फिर गल्ले की खरीद के लिए निकलना है।'

'आप जो आदेश देंगे, उसे पूरा करूंगा। इसीलिए तो आगरा में आपकी सेवा में आया हूं।'

'हेमू बेटे! मैं तो सन्त जी की सेवा कर रहा हूं। वे भाग्यशाली हैं। मैं तो भाग्य का रोना रो रहा हूं।'

'सेठ जी! भगवान का नाम लेकर पार्वती बिटिया के लिए प्रसन्न रहें। हम सब आप की सेवा में है।' मुंशी जी ने समझाया।

सोहनलाल सर झुकाकर आह भरते रहे। सोचते रहे कि पंडित गणेशी लाल भरोसा नहीं दे पाते हैं। कहते हैं कि विधर्मी बेटे से दूर रहना है, कठोर व्रत-नियम का पालन करना है। जाति-बन्धु-सगे-सम्बन्धी सभी विधर्मी बने बेटे को लेकर छि:-छिः कर रहे हैं। फिर बेटी का ब्याह कैसे होगा?'

बीस

जमाल अपनी उंगली से अंगूठी निकाल रहा था। उसे स्मरण आ गया कि मां की पूजा के लिए माला गूंथ देने पर पिता जी ने पुरस्कार के रूप में यह अंगूठी दी थी। वह रुक गया, लक्ष्मी भवन की वाटिका.''फूलों के पौधे और लता फूलों से माला 'मां की पूजा वह सबसे दूर हो गया 'बहुत दूर कर दिया गया। नहीं, मां का प्यार दूर नहीं हुआ, केवल पिताजी के क्रोध की आग से उसका प्यार जल रहा है, प्यार दूर भाग रहा है। वह इस अंगूठी को बेच देगा, वह विवश है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है। वह बेचकर कपड़े को खरीदेगा। बाजार में द्वार-द्वार दौड़ेगा। वह दो रोटी पा लेगा।

वह कुछ क्षण अंगूठी को देखता रहा, और फिर आह भर कर अंगूठी निकाल ली। हथेली में

अंगूठी दबाकर गहने की दुकान में जाने लगा। पैर रुकते फिर बढ़ जाते, वह झटके से दुकान में चला गया। जौहरी को अंगूठी दे दी, वह बाहर देखता रहा, कुछ क्षणों के बाद उसकी हथेली पर चांदी के सिक्के आ गए। वह सम्हाल कर दुकान से नीचे उतर आया।

वह अंगूठी के बदले सिक्कों को सम्भाल कर बुनकरों की बस्ती की ओर मुड़ गया। तेजी से बढ़ता गया, वहां पहुंचकर ही रुका। शकील का घर दिखाई पड़ा, करघा चलने की आवाज आ रही थी। वह दरवाजे पर आया, शकील पैरों की आहट को सुनकर पीछे मुड़ा। जमाल को पहचान कर बुलाया, चटाई बिछाकर बैठने के लिए कहा। जमाल चटाई पर बैठ गया। परिवार का कुशल समा वार पूछा, और फिर कबीरपंथी साधु साईदास के बारे में अपनी राय दी-'उस दिन तो कबीरपंथी साधु सही बात बोल रहे थे, कबीरदास भी बुनकर ही थे न!'

'हां, बुनकर ही थे। उन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों को खूब फटकारा है। एक नया रास्ता निकाला है, कबीरदास ने गांव के गरीबों और छोटे लोगों के जीवन में एक नया विश्वास पैदा कर दिया है। इसीलिए अब बुनकर लोगों को धर्म बदलने की जरूरत नहीं रह गयी है। हम लोग जो हो गए, सो हो गये।

'पर मेरे सामने दो-दो समस्याएं हैं, शकील भाई! रोटी की समस्या और नये मजहब को हृदय से अपनाना। अजीव उलझनों में पड़ गया हूं। लेकिन इधर आ जाने से उलझनों के सुलझाने का रास्ता दिखायी पड़ने लगा है।'

'यह हमारी खुदकिस्मती है....बातें होंगी। पहले शर्बत पीजिए।' यह कहकर शकील उठने लगा।

'पहले मुझे बता दो कि करघा कैसे चलता है! करघा रुके नहीं...चलता रहे। धागे जुड़ते रहे, और कबीरदास की वाणी गूंजती रहे।'

शकील ने जमाल को साथ बैठा लिया, करघा चलाने का तरीका बताया। जमाल करघा चलाने लगा। शकील शर्बत लाने घर के भीतर चला गया। जमाल सावधानी से करघा चलाने लगा, साथ ही देख रहा था कि कैसे धागे जुड़ते हैं। करवे का खट-खट् होना और धागे का जुड़ना कितना सहज है! पर मानव का हाथ चलना जरूरी है। सब मनुष्य के माथे और हाथ का कमाल है, कबीरदास भी इसी तरह करघा चलाते होंगे। एक ओर धागों के जुड़ने से कपड़े बुनते होंगे, दूसरी ओर सबद से साधु-भक्तों के हृदय जोड़ते होंगे। उन्होंने एक तरफ पत्थर की मूर्ति की पूजा पर कठोर वचन कहा है तो दूसरी तरफ सुबह-दोपहर-शाम की अजान पर भी बहुत कुछ कहा है। बादशाह सिकन्दर लोदी से भी नहीं डरे, काशी के पंडितों से भी नहीं घबराये। उनका राम सबका राम है। उनका राम रहीम है, रहीम ही राम है, उनका कृष्ण करीम है, करीम ही कृष्ण है।

शकील शरबत लेकर आ गया था, जमाल का पुराना संस्कार क्षण भर के लिए सुगबुगाया। जुलाहे के घर का शर्बत पीना...! कबीर की वाणी की याद आ गयी, उसने अपने को संभाल लिया। उसने मन्द मुस्कान के साथ शर्बत का प्याला ले लिया। बड़ी तृप्ति के साथ पीने लगा।

शकील करघे को चलाने लगा, चलाते हुए पूछा-'रोटी के लिए मेहनत करना चाहते हो-बहुत अच्छी बात है। कपड़े ले जाओ और हाट-बाजार में बेचो। शुरू में खुदरा बैपार करो।'

'तैयार होकर आया हूं, शकील! रुपये लेकर आया हूं। जमाल ने खाली प्याले को जमीन पर रखते हुए कहा।

शकील नगद बिक्री की बात सुनकर खुश हुआ। उसने करघे को रोक दिया, अपने बुने हुए कपड़ों का भंडार दिखाया। पड़ोसी का भी दिखाया। सबका मोल बताते हुए बेचने का हिसाब भी समझा दिया। जमाल का उलझता हुआ मन थोड़ा सुलझने लगा, उसने शकील से ही विभिन्न प्रकार के कपड़ों को थोक के भाव में खरीदा। गट्ठर बंध गया, नगद मोल चुका दिया, और गट्ठर को अपने कन्धे पर उठा लिया। दो-चार कदम चला, भार को ढो नहीं सका। बैठ गया, हांफने लगा, शकील मुस्करा उठा, उसने एक कमकर ठीक कर दिया। कमकर गट्ठर को कन्धे पर उठाकर चल पड़ा। जमाल एक नयी उमंग के साथ हाट-बाजार की ओर चलने लगा। सिर पर तपता हुआ सूरज उसके रास्ते को रोक नहीं सका।

उसने हाट-बाजार में घुसते हुए सोचा कि कहां बैठकर एक-एक टकड़ा बेचेगा! इस समस्या पर तो सोचा ही नहीं था, लोग पहचानेंगे। व्यंग्य कसेंगे, नगर-सेठ का बेटा विधर्मी बना और अब धूल फांक रहा है। लेकिन मुस्लिम तो नहीं हंसेंगे, वे मदद करेंगे। वह उनकी हंसी बर्दाश्त करेगा, मुस्लिम भाइयों की मदद कबूल करेगा। पर दुकानदार तो हिन्दू ही हैं। उन्हीं के साथ चलना होगा, उनके साथ थोकभाव में कपड़े बेच दे तो ठीक रहेगा। एक-एक टुकड़े बेचने के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। उनके पास ही जाना चाहिए।

यह सोचकर उसने वस्त्र-विक्रेताओं से मिलना आरम्भ कर दिया। इस नये थोक-विक्रेता को देखकर वस्त्र-विक्रेता समझने-परखने लगे। जमाल थोड़ा परेशान हुआ, एकाध ने पहचान कर व्यंग्य भी किए। तिलमिलाकर रह गया, संध्या तक दौड़ता रहा, थोड़ी निराशा के साथ गट्ठर लिये लौटा।

इलाहीबख्श ने सोचा कि सेठ सोहन लाल के यहां से फिर कुछ सौगात आ गयी! उसे बड़ी खुशी हुई, वह बोल उठा-'जमाल! तुम्हारे वालिद बड़े मेहरबान हैं। आगरा शहर के बड़े सेठ हैं, होना ही चाहिए।'

'जी, नहीं! मैं अपने पांव पर खड़ा होने की कोशिश कर रहा हू।' जमाल ने स्वाभिमान के साथ उत्तर दिया।
'मतलब?'
'मैंने कपड़ों का व्यापार शुरू कर दिया है, मुझे किसी के भरोसे नहीं जीना। आपको भी अधिक तकलीफ नहीं दूंगा।'
‘ऐसी क्या बात है, बेटे! यह सब तुम्हारा ही है। तुम इसे छोड़ कर कहां जाओगे? अब तो रमजान का महीना आ रहा है। रोजा रहना निहायत जरूरी है, साथ रहने पर ही मुश्किलें आसान हो जायेंगी।'
'जी, हां! अभी तो रहना ही है।' यह कहकर जमाल ने कमकर को मजदूरी दी, कल फिर बुलाया। और घर के अन्दर चला गया।

सरवर अली घूमता-फिरता आ पहुंचा। इलाहीबख्श दीवट पर दीया जला रहा था। सरवर को देख खीझ उठा, पर कुछ बोला नहीं।

एक तरफ होकर गमछी बिछायी, पश्चिम की ओर मुंह कर नमाज पढ़ने लगा। सरवर ऊबने लगा, नमाज पूरा होने पर उसने इलाहीबख्श से कहा-'चचाजान! बड़ी-बड़ी सौगातें आ रही हैं, इसीलिए मछली फंसायी है। मुझे मिठाई नहीं मिली।'

'अपने घर जाकर पूछो, मुहल्ले में सब जगह शीरीनी बंट चुकी है। तुम तो शराब पीने अपने अड्डे पर गए होगे।'

'और शाम की सौगात में क्या है?'
'जमाल ने रोजगार की शुरुआत की है।'
'तो मुझे सेठ की दौलत का हिस्सा नहीं मिलने वाला है, और आपको भी नहीं-तब क्यों खुश हैं?'
'सरवर! अपने मजहब-अपने दीन की खिदमत सबसे बड़ी बात है। हिन्दू उसे तंग कर रहे हैं। तुम भी तंग करोगे?'
'चचाजान! याद रखें, वह न दौलत लाएगा और न मजहब पर टिक सकेगा। वह नूरी को लेकर कहीं उड़ जाएगा, लेकिन मैं उसे भागने नहीं दूंगा। मुझे भी दीन का ख्याल है।' 'शराब पीकर बकबक मत करो।'
सरवर गुर्राता हुआ चला गया, इलाहीबरश तस्वीह के मनकों पर उंगली फेरने लगा। लेकिन उसका जी इधर-उधर भटक रहा था।
नूरी दिन भर थके-मांदे जमाल की सेवा कर रही, रोजगार की शुरुआत को अच्छा माना, और कामयाबी...बरकत के लिए दुआ करने लगी। जमाल की थकान मिटने लगी।
दूसरे दिन नाश्ते के बाद जमाल ने देखा कि कमकर सरजू आ गया है। बहुत खुश हुआ, सरजू ने गठ्ठर को उठा लिया। जमाल हाट की ओर चल पड़ा, हर दुकान पर कपड़ों को दिखाकर समझाने लगा। एकाध जगह कामयाबी मिली। थोड़ी बिक्री हुई, लेकिन बहुत से जानपहचान हो गयी।

वह किले की तरफ जाने की सोचने लगा। तय कर लिया। नदी किनारे पहुंच गया, लेकिन रास्ते में उसे कुछ लोगों के बोल सुनने पड़े। औरत के लिए विधर्मी बन गया, कैसा कलियुग आ गया है! अब मारा-मारा फिर रहा है। अरे, तुरक बन जाने पर इसे क्या दिक्कत होगी! इनकी हुकू मत है!'

नाव खुलने वाली थी, नाव में बैठ गया। देखा कि नाव में मंशी चाचा और हेमू दोनों हैं। जमाल का हृदय धड़क उठा, उधर बोल सून चुका है। अब मुंशी चाचा का सुनना है, कहीं चैन नहीं है। ये दोनों क्या सोचेंगे? हेमू हंसेगा या मुंह फेर लेगा! दोनों से बचना चाहिए। पर ये तो सामने आ गए हैं, अब वह नाव से उतरकर जा भी नहीं सकता, लेकिन वह कब तक छिपा रहेगा! अपना काम-धन्धा करना है। स्वाभिमान के साथ करना है, इसमें घबराना क्या?

हेमू से नजर मिल गयी। हेमू ने सिर झुकाकर नमस्कार किया। उसने सिर हिला दिया, मुंशी चाचा की दृष्टि से बचने के लिए यमुना के बहते जल को देखने लगा, डांड़ के

जोर से बढ़ती हुई नाव को देखता रहा, यह डांड़ का जोर नहीं है। यह तो मल्लाह के हाथ की ताकत है, इस संसार में मानव के बाहुबल से ही सब कुछ...।

नाव पार पहुंच रही है, तट आ गया। सभी उतर रहे हैं, मुंशीजी ने जमाल को देखा। हृदय से आह निकल आयी, जमाल आगे बढ़ जाना चाहता था। परन्तु वे दोनों साथ हो गए, सरजू के कन्धे पर गट्ठर था। हेमू ने देखा और पूछ लिया। जमाल ने बता दिया, हेमू बोल उठा - 'आपको यह करने की क्या...?'
'मैंने सोचा ही नहीं है, हेमू! करना भी शुरू कर दिया है। अपने पसीने की कमाई बड़ी मीठी होती है।'
‘पर लक्ष्मी भवन...?'
'इसके बारे में पिताजी बतायेंगे।'
'वे सुनेंगे तो बहुत दुःखी होंगे, घर में दुःख की लहर उठकर हाहाकार करेगी।' मुंशी चाचा ने पीड़ाभरे स्वर में कहा।
'मुंशी चाचा! आप कुछ नहीं बतायें, मैं अब जमाल अहमद बजाज के रूप में ठीक हूं, ये मेरे पैर, मेरे हाथ और मेरा माथा...मेरे लिए सहारा! और..."और..."यह मुस्लिम जमाल का साथ... 'नफरत करने वाले मेरा क्या कर लेंगे?'

'हम सभी आपके साथ हैं। क्यों मुंशी चाचा?' हेमू ने स्नेहपूर्ण स्वर में कहा।

'हां, बेटे! हम अपने मोहन लाल को मनमोहन के रूप में प्यार करते हैं।' मुंशी चाचा ने उत्तर दिया।

'हमें सेवा करने का अवसर दीजिए। हम आपके कपड़ों को किले में भी पहुंचा देगे, आपको दिन-दोपहर मारा-मारा नहीं फिरना है।' हेमू ने अनुरोध किया।

'हेमू! अपनी जान-पहचान तो है ही, जमाल अहमद को और दिक्कत नहीं होगी। मुझे हाथ-पैर मारने दो, अपने पांवों पर खड़ा होना है।' जमाल ने जवाब दिया, और वह सरजू के साथ दूसरी तरफ बढ़ गया।

हेमू मुंशी चाचा के साथ किले के फाटक की तरफ जाने लगा। परन्तु उसके पैर चल नहीं पा रहे थे, वह बार-बार जमाल को अपने छोटे सेठ के रूप में देख रहा था। मुंशी चाचा के पैर चल तो रहे थे, पर सर झुका हुआ था। हेमू सोच रहा था अपनी बांहों से रोटी पाना....यह तो उचित है। रोटी मानव की पहली आवश्यकता है इसलिए उसे खुलकर साथ देना चाहिए। बिना पूछे सहयोग देना चाहिए। यदि उन्होंने किसी के साथ सच्चा अनुराग किया है, तो उनसे घृणा क्यों? प्रेम के बदले प्रेम ही होना चाहिए। घृणा होने पर प्रतिक्रिया होगी। एक तरफ से ठुकराये जाने पर दूसरी तरफ आदमी खिचता है, यदि यही चलता रहा और उधर मुल्लाओं ने अपनी सीख देनी शुरू कर दी तो मलिक काफूर और सिकन्दर लोदी का सिलसिला बढ़ता जाएगा। उसे रोमांच हो आया, उसके मन में आया कि वह अपने छोटे सेठ के साथ हो जाए। उसने मुड़कर देखा, किले के बाजार की भीड में कुछ दिखायी नहीं पड़ा।

मुंशी चाचा का मन कहता था--यह सब भाग्य का फेर है। पर कैसे भूला जाय! आंखों से

देखना और आंसू बहाना–यही अपने वश की बात है। तरुनाई की पहाड़ी नदी कैसे और किधर निकल पड़ेगीकोई बता नहीं सकता, चट्टान को चूर कर हरहाती हुई निकल जाती है। कोई रोक नहीं पाता है।

इक्कीस

हेमू मुंशी हरसूख लाल के साथ रसद के दफ्तर में पहुंचा। मंशीजी ने गल्ले के मोल का कागज मीर मुशी को दिया, मीर मुंशी ने सेठ सोहन लाल का हाल-समाचार पूछा, मुंशी जी ने बता दिया और तब मीर मुन्शी ने हरसुख लाल से हिसाब-किताब करने के लिए वक्त मांगा। इसका अर्थ समझ में आ गया, हेमू भी समझ गया, उसे स्मरण आया कि सेठजी ने आज्ञा दे दी है, मंशीजी ने हेम को संकेत दिया. पर वह रुका रहा। मीर मुंशी कभी कागज को देखता था और कभी मुन्शी हरसुख लाल को। मशी जी की आंखें हेम की आंखों को समझ रही थीं। उसी समय दीवाने अरीज की ओर से रसद दफ्तर में खबर आयी कि अगर हेमचन्दर आये तो भेज दिया जाए। इस खबर को पाकर सारा दफ्तर भौंचक्का हो उठा। सभी हेम को देखने लगे, हेमू ने मशी चाचा से कहा-'आप बैठकर हिसाब करा लें, मैं शीघ्र आ रहा हूं। क्यों मीर मुंशी साहब! हिसाब हो जाएगा न?'

'जरूर हो जाएगा।' मीर मुंशी ने जवाब दिया, साथ ही भुगतान की पर्ची बनाने को कह दिया।

हेमू मन्द मुस्कान के साथ दीवाने-अरीज के दफ्तर की तरफ जाने लगा। फौजी महकमे को दीवाने अरीज कहा जाता है, यह हेमू को मालूम था। वह वहां जा पहुंचा, इस महकमे का वजीर हेमू को देखकर बहुत खुश हुआ। साथ बैठे सल्तनत के सिपहसालार शादी खां को बताया कि यह नौजवान सेठ सोहन लाल का कारिन्दा है और नुमाइन्दा भी, लेकिन इसका दिमाग सियासी है। इसकी सलाह पर बादशाह से लेकर वजीर तक सभी ने गौर किया है।

शादी खां के रौबीले चेहरे का असर हेमू पर पड़ा, उसने झुककर सलाम किया। शादी खां ने उसकी पीठ थपथपा दी, तब उसने मुस्कराने की कोशिश की।

वजीर हेमू को लेकर शाही महल की ओर चला, हेमू समझ गया कि आज फिर बादशाह से भेंट होगी।

दीवानखाने में सभी वजीर मौजूद थे। शायर मंझन भी दिखायी पड़े, वह भी फौजी महकमे के वजीर के साथ पहुंचा। बादशाह सलीमशाह आये, अदब कायदे के साथ सभी उठकर खड़े हो गए। सबने कोनिश की, बादशाह कुर्सी पर बैठे, सभी बैठ गये। बादशाह की नजर अपने वजीरों पर दौड़ गयी, देख लिया कि सभी हाजिर हैं। शायर मंझन की आंखों में एक चमक दिखायी पड़ी। हेमू की आंखों में उत्कंठा तैर रही थी, पर वह पूरी विनम्रता से सर को थोड़ा झुकाकर बैठा हुआ था। एक बार उसका सर ऊपर उठा, बादशाह सलामत की आंखें

उसकी आंखों से मिल गयीं, उसका हृदय धड़क उठा। उसने बादशाह की आंखों को पढ़ने का प्रयास किया, लगा कि उनमें उसके प्रति प्रशंसा भाव है, वे कुछ बोलेंगे, वह उनके शब्दों की प्रतीक्षा करने लगा।

बादशाह सलीमशाह के शब्द गूंज उठे- 'आज हम सूफी शायर मंझन साहब की मसनवी के कुछ हिस्से सुनेंगे।'

सूफी शायर की आंखों की चमक बढ़ गयी। हेम की उत्कंठा शान्त हो गयी। शायर मंझन ने उठकर कहा -'जहांपनाह! आपकी इजाजत से मसनवी में आये सौन्दर्य का वर्णन यानी हुश्न का बयान आपके सामने रख रहा हूं, किस्सा यों है-

कनकगिरि के राजा सूरजभान को एक साधु की सेवा से पुत्र पैदा हुआ। पंडितों ने कुमार का नामकरण मनोहर किया। वह बारह साल तक पढ़ता रहा, फिर उसका राजतिलक हुआ। एक दिन अप्सराओं ने नींद में बेखबर मनोहर को देखा। महारस के राजा विक्रमराज की राजकुमारी मधुमालती के रूप से उसकी तुलना की, नींद में ही उसकी सेज को मधुमालती के पास पहुंचा दिया गया। जब मनोहर की नींद टूटी तो उसने पास में एक सुन्दरी को देखा। उसके हृदय में पूर्व जन्म की प्रीति जग गयी, वह उसके सौन्दर्य को निहारने लगा-

अति सुरंग रसभरे अमोला, जुग सोभित मुख मद्धि कपोला।
मतिहीनी किछु उकित न आई मधु कपोल बरनौं केहि लाई।
नहिं जानौं दहुं केइ तप सारा, जो बरसिहि यह निधि सयंसारा।
अस कपोल बिधि सिरे सोहाए, जे न जाहिं किछु उपमा लाए।
मानुस दहुं बपुरा केहि माहीं. देवता देखि कपोल नवाहीं।

सुर नर मुनि गंधर्व गन काहुं न रहेउ गिवान।
देखि कपोल नारि कै निहचै टरै महेस धियान॥

नींद टूटने पर मधुमालती ने पास में एक अनजान नौजवान को देखा, वह पूछ बैठी, राजकुमार मनोहर ने उत्तर दिया --

अबहीं नींदि गए उठि जागेउं, देखि रूप तबु जीवन खांगेउं।
पुब्ब पुन्नि आहेउ किछु मोरा, जेई मुख आनि देखाएउ तोरा।
कै करवत ओहिं जनम देवाएउं, ताहि पुन्नि तोहि दरसन पाएउं।
कै मन बंछित बरेहुं पयागा, कलपेउं सीस पुब्ब के भागा।
पाएउं पुब्ब तेहि तिरि फल तोही, धनि धनि पुब्ब पुन्नि जो मोही।

मंझन ने बादशाह की ओर देखा, उनसे इशारा पाकर और आगे का वर्णन पढ़ा जा सकता है।
बादशाह बहुत खुश नजर आ रहे थे, लेकिन उन्होंने आगे पढ़ने के लिए इशारा नहीं किया, वे बोल उठे-बहुत अच्छा बन पड़ा है, मंझन साहब! आपने हिन्द की जुबान में मसनवी लिखकर बड़ी कामयाबी हासिल की है। जायसी साहब के पास पहुंच गए हैं, और फिर कभी।'

शायर ने अपनी जगह ले ली, सारे वजीरों की आंखों में प्रशंसा का भाव झलक रहा था, सभी सर हिला रहे थे, शायर सन्तुष्ट लग रहे थे।

बादशाह की आवाज गूंजी-'हेमचन्दर!'
हेमू उठकर खड़ा हो गया।
'हमने तुम्हारी सलाह पर गौर किया है, सबसे मशवरा किया है, सबने तुम्हारी सलाह की ताईद की है और आज मैं उस सलाह के मुताबिक कार्रवाई करने का हुक्म दे रहा हूं।' हेमू ने सर झुकाकर अपनी विनम्रता प्रकट की, पर अन्तर की उत्कंटा शान्त होकर उल्लास में धीरे-धीरे प्रकट हो रही थी।

बादशाह फिर बोल उठे-'तुम अपना काम करते चलो, हेमचन्दर! सेठ के रोजगार को संभालते रहो, मैं जब-तब तुम्हें याद कर लूंगा। ईद के मौके पर दरबार में तुम्हें मैं इनाम भी दूंगा।

'आपने मेरे जैसे एक अदने सौदागर की सलाह पर ख्याल किया है, उसे मान देकर मुझे शाबासी दी है, मुझे तो बहुत बड़ा इनाम मिल गया, सुल्ताने हिन्द!'

बादशाह ने इशारे से बैठने को कहा और दीवाने वजारत, दीवाने अरीज और दीवाने वरीद के वजीरों को पंजाब में जल्द कार्रवाई करने का हुक्म दिया।

वकील ने कहा-'ईद के खुशगवार मौके पर बादशाह सलामत को कामयाबी की खुशखबरी जरूर मिल जाएगी।'

'मैं यही चाहता हूं और रमजान महीने की तैयारी मौलाना साहब की राय से हो। हर मुसलमान रोजा जरूर रखे, पाक जिन्दगी जिए, कहीं चोरी या बदमाशी न हो, कड़ी नजर रखी जाय, यह हुक्मनामा सरकार और परगने तक पहुंच जाना चाहिए, हर परगने का शिकदार हुक्म को अमल में लाए।'

वकील ने उठकर इस हुक्म को कबूल किया। दीवाने इंशा का मीर मुंशी इन बातों को लिख रहा था।

सिपहसालार शादी खां कुछ कहना चाह रहे थे। बादशाह ने इजाजत दी।

शादी खां ने कहा-'जब मुगल सरदार हुमायूं हिन्दुस्तान की सरहद के करीब आ गया है, तो फौज पर ख्याल करना होगा। अफगान अमीर तो नाराज होते जा रहे हैं, लेकिन हमारी फौज वफादार है, नयी भर्ती जरूरी है, लाहौर से सासाराम तक फौजी भर्ती और कवायद चालू हो जाएं, यह आपकी खिदमत में एक छोटी-सी सलाह है।'

दीवाने अरीज के वजीर ने सलाह की ताईद की।

बादशाह सलीमशाह ने कुछ देर तक गौर किया, फौजी भर्ती का हुक्म दे दिया।

सिपहसालार शादी खां को इस फैसले से तसल्ली हुई। हेमू को कुछ स्मरण आ गया, वह कुछ कहने के लिए उतावला होने लगा, पर उसे लगा कि यह उतावलापन ठीक नहीं है, वह चुप ही रहा।

बादशाह ने बैठक खत्म कर दी, वे उठकर जाने लगे, सभी खड़े हो गए थे, नफीरी बजने लगी थी, फौजी महकमे के वजीर और सिपहसालार भी साथ-साथ चल पड़े, हेमू भी पीछे-पीछे आ गया, शादी खां ने पूछा-

'क्या बात है, हेमचन्दर!'

बादशाह के कदम रुक गए, पीछे मुड़कर देखा, सभी हेमू के उतावपलेन से थोड़ा नाराज लग रहे थे, लेकिन बादशह ने इशारे से बुलाया।

हेमू निकट आकर बोल उठा-- 'एक बात जानकारी में आयी थी, वह हुजूर की खिदमत में पेश कर देना चाहता है।'

'बोलो, कौन-सी बात है?'

'सीकरी की तरफ गया था, जानकारी मिली कि वहां के सफी फकीर मुगलों को पसन्द करते हैं, शायद बाबर को मदद मिली थी। आज भी वहां हुमायूं का तरफदार मिल सकता है, वहां नजर रखी जा सकती है, ऐसी मेरी अर्ज है, वैसे जो मुनासिब हो, हुजूर हुक्म फरमायें।'

यह सुनकर बादशाह का चेहरा संजीदा हो गया। उन्हें याद आ गई कि बाबर को सीकरी के फकीर की दुआ मिली थी, लेकिन खानकाह पर नजर रखना मुनासिब तो नहीं होगा। उनके अन्दर कशमकश चलने लगी, कुछ फैसला नहीं कर सके, लेकिन वे बोल उठे-'ठीक है, हेमचन्दर! तुम्हारी बात पर गौर करूंगा, तुम्हें फिर शाबासी दे रहा हूं, मैं बहुत खुश हूं कि मुझे हिन्दुओं से मदद मिलने लगी, फौजी भर्ती में हिन्दुओं को भी लिया जाए, अगर वे चाहें तो।'

बादशाह ने हेमू को लौटने की इजाजत दी, वे खुद शाही रहम की ओर बढ़ गए।

हेमू शाही महल के दूसरे तल्ले से नीचे उतरने लगा। वह आज बहुत प्रसन्न था, उसे लगा कि उसका आगरा जाना सार्थक हो रहा है, वह ख्वास खां को दण्ड दिलवा सकेगा, पारो की मृत्यु का प्रतिशोध ले सकेगा और विदेशी मुगलों को भारत की सीमा से दूर रखने में वह अफगान बादशाह को कर सकेगा। अफगान अमीर अफगान बादशाह नाराज हो रहे हैं, हिन्दू राजा कुचल दिए गए हैं, शेष राजा बहुत

दूर-दूर हैं, पर इस देश की प्रजा को कुचल कर शान्ति से राज्य करता बहुत कठिन है। लगता है कि अफगान बादशाह हिन्दू प्रजा का सहयोग चाह रहे हैं। वह इस सहयोग-सम्बन्ध की नींव डाल सकता है। अवसर आ गया है, एक ओर हुमायूं के आक्रमण की शंका

है, दूसरी ओर अफगान अमीरों में असन्तोष है, कुछ अमीर दबा दिए गए हैं, कुछ-कुछ हैं। इस स्थिति में एक ही रास्ता है कि अफगान बादशाह हिन्दू प्रजा का सहयोग लें। वे हिन्दुओं को जजिया कर से मुक्त करें, फौजी भर्ती में हिन्दुओं को सम्मिलित करें, राजपूतों, जाटों और अहीरों को फौज में होना चाहिए। वह भी प्रयास करेगा।

वह रसद-दफ्तर मे आ पहुंचा। मुंशी चाचा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसे देखते ही कहा- 'बहुत समय लगा दिया, हेमू!'

'मुंशी चाचा! शाही हुक्म से गया था और शाही हुक्म से लौटा हूं, इसलिए विलम्ब हो गया, पर इस दफ्तर में तो विलम्ब नहीं होना चाहिए।'

'अब तुम्हें वजीर याद करने लगे हैं, हम तुम्हें क्यों तकलीफ देंगे, सिर्फ तुम्हारी दस्तखत बाकी है।' मीर मुंशी ने कहा।

हेमू ने भुगतान की पर्ची पर दस्तखत की, थैली में सिक्कों को गिनकर रखा और सलाम-बन्दगी कर मुंशी चाचा के साथ लौटने लगा। उसी समय मीर मुंशी ने व्यंग्य किया
— 'क्यों मुंशी जी! मोहन लाल के जमाल अहमद बन जाने पर हेमचन्दर साहब आए हैं? सेठ ने उसे घर से निकाल दिया है न?'

मुंशी जी ने चाहा कि कानों को हथेलियों से बन्द कर लें, हेमू भीतर से उफनने लगा। मीर मुंशी ने जहरीली मुस्कान के साथ कहा-'जमाल अहमद को तंग नहीं करना, हेमचन्दर साहब! अब वह हमारी बिरादरी में हैं।'

हेमू ने अपने को संभाला। मुंशीजी को देखा और उत्तर दिया'मोहन लाल कुछ भी बन जायें, वे हमारे छोटे सेठ हैं। हम तो प्यार करने वालों पर प्राण निछावर करते हैं, उनके प्यार की खुशबू से हम अभी तक होश में नहीं हैं।'

मीर मुंशी टकटकी लगाकर हेमू की ओर देखता रह गया। मुंशी चाचा ने हेमू को चल देने का इशारा कर दिया।

बाईस

सरवर को पता चल गया कि जमाल अहमद अभी बाजार से लौटा नहीं है, इलाहीबख्श भी नहीं है। वह शाम के धुंधलके में मकान के भीतर आ गया। इलाहीबख्श की बीवी ने उसे देखा, वह परेशान होने लगी, लेकिन सरवर ने इसकी फिक्र नहीं की, वह बोल उठा-'देखो, चाची! नूरी को न दौलत मिली और न ईमान बचा''घबराओ नहीं, कुछ समझाने आया हूं।'

नूरी दीये जलाती हुई आ पहुंची, दीये की रोशनी में सरवर को देखा। उसके दिल की धुकधुकी बढ़ने लगी, लेकिन उसने अपने को संभाला। उसने तीखे स्वर में कहा, 'दूसरे के मकान में कैसे घस आये? इस वक्त घर में कोई मर्द नहीं है, आप जल्द जाइये नहीं तो शोर मचाऊंगी।'

'मैं गैर कब से हो गया, नूरी! गैर अपना कैसे हो गया?' 'यह फैसला हो चुका।' 'लेकिन मैं दीनो-ईमान पर आंच नहीं आने दूंगा, नूरी! वह काफिर है, तुम उसके जाल में फंस गयी हो।'

जमाल लौट आया था। आवाज सुनकर दरवाजे के पास ही ठहर गया, उन दोनों की बातचीत सुनने लगा।

'सरवर भाई! अब तो उसी काफिर पर यह दम निकलेगा, अपने ईमान की फिक्र करो। मेरा ईमान बेदाग है।'

'तुमने अपने ईमान की तौहीन की है, नूरी! मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा।'

'हम भी तो तेरी जोर-जबर्दस्ती बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमारी जिंदगी
में कोई जहर नहीं घोल सकता, हमें कोई जुदा नहीं कर सकता, याद रखो।'

'भले ही अपने मजहब से जुदा हो जाओ। हम इसे देखते रहेंगे?'

'इन्होंने अपने धरम की कुरबानी दी है, सरवर! उनकी इस कुरबानी के बदले में मैं कुछ नहीं दे सकी हूं। सिर्फ इस जिन्दगी को कुरबान कर देना है।'

'इस रमजान में ही इस नये मुसलमान की जांच हो जाएगी। मेरी नजर घूरती रहेगी-चौबीस घंटे। इसे याद रखो।'

जमाल अपने गुस्से को रोक नहीं सका। वह उफन पड़ा, वह वेग से भीतर आया, सरवर जान नहीं सका। जमाल ने सरवर की गरदन में हाथ लगाया और उसे घर से बाहर कर दिया। सरवर को कछ बोलने या कुछ करने का मौका ही नहीं मिला। लगा कि पलक झपकते ही सब हो गया। गली से उसकी आवाज सुनायी पड़ी—'जमाल! याद रखना, इसका बदला लेकर रहूंगा, पठान से मुकाबला मजाक नहीं है।'

गुस्से से कांपता जमाल फिर उठा। नूरी ने रोक लिया और कहा—'उस बदमाश को आपने सजा दे दी। अब क्या परेशानी है? थक कर आए हैं, आराम तो करें।'

ये रोड़े-पत्थर केवल मेरे लिए हैं! मैं ठोकर खाकर गिर जाऊंगा, नूरी!'

'मैं जो साथ हूं, मेरे सरताज! सारे रोड़े अपने आप ढुलकते नजर आयेंगे। हाथ-मुह धोयें, नाश्ता करें, उसे भूल जाएं।'

'इस दुनिया की हरकतों को भूला नहीं जा सकता, नूरी। यह बहुत बेरहम है। सब कुछ लुटा देने वाले प्रेम की क्या यही कीमत है?'

'शायद यही दुनिया है, खुदगर्जी की वजह से दिलो-दिमाग में स्याही छा जाती है। मजहब भी जब-तब खुदगर्जी का पर्दा बन जाता है।'

'कोई काफिर समझकर घृणा करता है, कोई विधर्मी समझकर ताने मारता है। सरवर में खुदगर्जी और मजहबी जनून दोनों हैं। सब सह रहा हूं। नूरी! लगता है कि मैं न घर का रहा न घाट का!!'

नूरी पैरों पर झक आयी। सिसक कर कहा-'मुझसे कोई गलती गई हो तो माफ कर दें। मैं इन पांवों की खाक हूं, आप मुझे अपनी राधा मान लें।

जमाल ने उसे अपनी बांहों में उठाया। एक क्षण उसकी आंखों में देखता रहा और फिर कहा-'तुझसे कोई शिकायत नहीं है, नूरी! शिकायत तो इस दुनिया से है, इसीलिए कबीरदास ने जलाहा होकर भी बड़े साहस से इन पाखंडियों की डांट-डपट की है।'

लेकिन उन्हें कौन मान रहा है? मुसलमान तो उस जुलाहा फकीर से खफा हैं। शेख, सैयद और पठानों का कहना है कि एक तो वह जुलाहा है, उस पर कुफ्र की बातें, ईमान-एतबार की नहीं- यहां मज हब की नुक्ताचीनी कोई बर्दाश्त नहीं करता।'

'हिन्दू भी नाराज हैं, पंडित तो बहुत नाराज हैं, तो भी बहुत-से हिन्दू उन्हें मानने लगे हैं। उनकी बातों में इंसानियत की आवाज है, वे पाखंड पर चोट कर सबके दिल को मिलाना चाहते रहे हैं।'

नूरी सर हिला रही थी। अचानक उसे कुछ याद आया, वह झटके से उठी। कटोरे में पानी लेकर आयी, जमाल के पैरों को धोने लगी। जमाल स्वस्थ हुआ, नाश्ता आ गया, वह नाश्ता करने लगा। दो क्षण के बाद कुछ सोचकर कहा–'सुनो, नूरी! कबीरदास की वाणी-

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा-परजा जेहि रुचै, सीस देइ लेइ जाय।।

प्रेम को खेत में उपजाया नहीं जा सकता और न धन-दौलत से बाजार में खरीदा जा सकता है। यह तो हृदय की बात है, इसके लिए सिर देना होगा, कुरबानी देनी होगी, अपने अहंकार और स्वार्थ की बलि करनी होगी।'

सिर्फ राजा रतनसेन ही कुरबानी देंगे? पद्मिनी और राधा भी कुरबानी देंगा।' न री ने अपने उमड़ते हृदय के उद्गारों को उभारा।

जमाल सारे दुःख-दर्द को भूल गया। बिस्तर पर लेटकर आराम करने लगा। यमुना में नाव पर मुंशी चाचा और हेमू से मिलना बन्द आंखों के सामने झलक उठा। मंशी चाचा कितने दुःखी थे, वे कुछ कह नहीं पा रहे थे, हेमू ने ही उनके हृदय की बात कह दी, हेमू भला

इंसान है, दिमाग से बहुत ही तेज है, बादशाह तक जा पहुंचा है।

घर पर कहीं बात खुल जाएगी तो मां क्या समझेंगी? पारो क्या कहेगी? वे दोनों छटपटायेंगी। बरखा-फिर धूप और ठण्ड में दौडना -पसीना बहाना मां सहन नहीं कर सकेंगी, पिताजी क्रोध में उबल पड़ेंगे। और लोग तो ताने मार ही रहे हैं, पर यह गलत तो नहीं है, रोटी तो पसीने की होनी चाहिए। नूरी, सचमुच राधा है, अपने मोहन के लिए निछावर है, पर उसे मोहन के रूप में कौन अपनाएगा? पंडित गणेशी लाल उसका नाम सुनकर ही भड़क जाते होंगे। सुना है कि लक्ष्मी भवन में उनका आना-जाना कम हो गया है, वे विधर्मी के परिवार से दूर रहना चाहते हैं, अपने से किसी को दूर करने का यह ढंग मूर्खता है।

वह मोहन से जमाल बन चुका है, लेकिन सरवर अली की खुदगर्जी तंग कर रही है, लेकिन मुहल्ले के मुसलमान तो तंग नहीं करते। ये अपनी ओर दिन-रात खिच रहे हैं। वह उधर खींच रहा है, वे लोग दिन-रात अपने से दूर कर रहे हैं, वह दूर हो रहा है। जमाल को नींद आ गयी, नूरी ने आकर देखा तो उसने राहत की सांस ली।

इलाहीबख्श शहर से घूमते-फिरते लौट आया। बीवी ने सरवर की छेड़खानी की बात बता दी, वह गुस्से में आ गया, वह गुस्से में अपने घर में चक्कर काटता रहा। सोचता रहा कि क्या किया जाए। रमजान का महीना आ गया, अगर जमाल ईमानदारी से रोजा रखें तो मुहल्ले के पठान और मुल्ला सभी सरवर को डांट सकेंगे, वह रास्ते पर आ जाएगा। वह चाहता था कि नूरी की शादी सरवर से हा जाए, सरवर बेकरार था, लेकिन नरी नहीं चाहती थी। पता नहीं कैसे सेठ के छोकरे से इश्क कर बैठी? दोनों ने कसम खा ली, वह नूरी को समझाकर थक गया, उसकी बात माननी पडी, मोहन भी जमाल बनने को तैयार हो गया, लेकिन सरवर भूल नहीं पाता है। जवानी है। बचपन के दोस्त हैं, काफिरों से नफरत भी है। सबसे बड़ी बात उसका जवानी की खुदगर्जी है, वह दिन-रात पीछे पड़ा हआ है। अब जो है।

गया सो हो गया, वह बदल नहीं सकता, नूरो नहीं मान सकती। दोनों बड़े खुश हैं, यही खुशी तो सबसे बड़ी बात है, उसे तो यही ख्याल रखना है कि जमाल दीन का जमाल बन जाए।
सिर्फ नूरी का जमाल बन जाने से काम नहीं चलेगा। उस पर दबाव पड़ता रहे, पठानों और मुल्ला-मौलवियों की सोहबत और मुहब्बत भी मिले। वह अपने भीतर के मोहन को-अपनी तहजीब को भूल जाए और इस्लाम का तावेदार बन जाए।

सेठ की दौलत तो मिलने की उम्मीद नहीं रही। अब वह शहर की खाक छान रहा है, ठीक। इससे यह अपने वालिद से नाराज होकर दूर होता जाएगा। इस मकान की तहजीब से जुड़ता जाएगा, कुछ दिनों के बाद सेठ की दौलत कानून के मुताबिक हुकूमत की हो जाएगी। वह दौलत अपने आप मस्जिदों और खानकाहों में आ जाएगी, सिर्फ उसे नहीं मिलेगी- सरवर को नहीं मिल सकेगी। कोई हर्ज नहीं है।

रास्ते में एक रोड़ा है। कबीर मुसलमान होकर भी काफिरों के नजदीक पहुंच गया है। उस जुलाहे ने बार-बार इस्लाम पर चोट की है, बादशाह सिकन्दर ने कैसे बर्दाश्त किया? लोग कहते हैं कि वह जुलाहा फकीर था, साधु था, फरिश्ता था, उसने मुसलमानों

और हिन्दुओं दोनों की तंगदिली और बुराइयों का पर्दाफाश किया है। उसने एक नया रास्ता निकाल लिया है, उसके चेलों का असर पड़ रहा है, नये मुसलमानों-हिन्दी मुसलमानों पर असर पड़ रहा है। उस असर से भी जमाल को बचाना होगा।

अफगान बादशाह कबीर के चेलों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करते। बड़े मेहरबान बनते हैं, सोचते हैं कि हिन्दू राजाओं को दबा दिया। अब हिन्दू रिआया क्या कर सकेगी? जजिया वसूल कर ही खुश है। उधर वृन्दावन और गोकुल में राधा-किशन की भगति जोर पकड़ रही है। जहां-तहां कबीर की डफली बज रही है, लेकिन सूफी फकीर भी चुप नहीं हैं। वे भी घूम-घूम कर बड़ी मुहब्बत से यहीं की जुबान में अपने ईमान की बात दिलों तक पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं। जमाल सूफी फकीर के साथ रहे तो अच्छा रहेगा।

तेईस

हेमू मुंशी हरसुख लाल के साथ गल्ले का मूल्य लिये आ गया। सेठ सोहन लाल की आंखें द्वार की ओर लगी थीं। स्वास्थ्य कुछ अच्छा हो गया था, अब रोगशय्या पर शरीर पड़ा हुआ नहीं था। घरआंगन-वाटिका में चक्कर लग जाता था, पर अभी तो मन सोच रहा था कि हेमू पहली बार रुपये लेने गया है। बड़ी राशि है, परन्तु मुंशी जी साथ हैं, चिन्ता की बात नहीं है। पता नहीं, वह दफ्तर से भुगतान के लिए कितने व्यावहारिक ढंग से प्रयत्न कर सकेगा! बहुत विलंब हो रहा है, इतना विलंब नहीं होना चाहिए। संझाबाती हो रही है।

आहट पाते ही सेठ सोहन लाल चौकन्ने हो गए। लक्ष्मी भवन में दीप जलने लगे, हेमू ने मुंशी जी के साथ प्रवेश किया। सेठ की दृष्टि दोनों के चेहरे पर गयी, लगा कि वह उदास नहीं है। उनका मन आश्वस्त हुआ।

हेमू ने पर्ची के साथ रुपये की थैली आगे कर दी। मुंशी जी पर्ची को समझाने लगे।
कहीं कोई कटौती नहीं थी, कोई अतिरिक्त व्यय नहीं था। एक-एक दाम का लेखा ठीक था। सेठ सोहन लाल का रोम-रोम हर्षित हो उठा, आंखों में हेमू के लिए स्नेह उमड़ आया। हेमू गंभीर था, एक बार मुस्कराया। और उसने सेठ जी से अनुमति लेकर लक्ष्मीवाटिका की ओर पैर बढ़ा दिये। मुंशी जी को सेठ ने रोक लिया। बड़े स्निग्ध स्वर में विलम्ब का कारण पूछा, मुंशी हरसुख ने गंभीर स्वर में बताया- 'बादशाह ने हेमू को बुलाया था। पता नहीं, इसकी किस बात पर बादशाह और वजीर लट्ट हो गए हैं!'

'उस दिन इसने मेरे सामने राजनीति की बात की थी-बड़े विश्वास और साहस के साथ, मुंशी जी! मैं तो अचरज में पड़ गया था।'

'तो वही बात होगी, वह बात उन्हें सही लगी होगी।'

'ठीक है, इस सम्बन्ध से अपना व्यापार आगे ही बढ़ेगा। कोई बाधा नहीं आ सकेगी, इसमें किसी प्रकार का लोभ नहीं दिखायी पड़ता। सन्त पूरनदास का पुत्र अद्भुत है।'

'अद्भूत तो लगता है, सेठ जी! ऐसा न हो कि यह दरबारी कामकाज में ही खिंच जाय!' यदि इसका खिंचाव रहा तो ऐसा हो सकता है। पर ये पठानअफगान अमीर और सरदार किसी हिन्दू को इतना मान नहीं दे सकेंगे, इसलिए चिन्ता की बात नहीं है।'

उधर हेमू हाथ-पैर धोकर अपने बिछावन पर लेट गया। भूख लगी थी। गजराज सिंह के सुझाव पर वह पानी में चना फुला कर सुबह-शाम खाने लगा है। कटोरे में फूले हुए चनों को गुड़ के साथ खाने लगा। चिन्तन का प्रवाह भी आरम्भ हो गया, देवली- रेवाड़ी से उजड़ कर मथुरा-वृन्दावन से होते आगरा आ गया। अपनी धरती मां की पीड़ा और पारो की चिता के दाह से अशान्त होकर आ गया। पिता जी की आशीष मिली, उसकी इच्छा शक्ति और विश्वास ने शाही दीवानखाने तक पहुंचा दिया। उसकी राय को बादशाह सलीमशाह सूरी ने मान लिया, मुगलों के आक्रमण की आशंका ने उसके परामर्श को प्रभावी बना दिया है। फौज में भर्ती होने वाली है, हिन्दुओं को भी पहली बार स्थान मिलेगा। उसने एक विश्वास उत्पन्न कर दिया है, एक नयी बात का शुभारम्भ होगा। तो उसे भी कुछ करना चाहिए।

उसे सहसा ध्यान आया कि वह अंधेरे में पड़ा है, कौन दीप जलाये! कभी-कभी अंधेरा भी अच्छा लगता है। अंधेरे में ज्योति मिल जाती है, तो धर्मपाल और खेमराज को चिटठी लिख देनी चाहिए, वृन्दावन में विजयवाहन को भी यह संवाद मिले। ये अपने-अपने परगनों में अपने भाई-बन्धुओं को सेना में भर्ती के लिए उत्साहित कर सकते हैं, यह आवश्यक है।

वह उठ बैठा, उसने दीपक को जलाया। राधावल्लभ जी की प्रतिमा के आगे शीश झुकाया, भस्मी के डिब्बे की ओर देखता रहा। फिर कागज-कलम को सम्भाला, धर्मपाल को चिट्ठी लिखना शुरू किया। पहले चाचा जी को प्रणाम लिखा, योगी शिवनाथ की वन्दना की। कुशल समाचार के साथ अपना सुझाब देते हुए अनुरोध किया।

सोचा कि खेमराज को भी चिट्ठी लिखनी चाहिए। उसे भी लिखा और बाद में विजयवाहन को लिखना आरम्भ कर दिया।

मुंशी जी के आने की आहट सुनायी पड़ी। सरकंडे की कलम सक गयी, मंशी जी ने खिड़की से झांका। फिर कहा- 'हेम! विश्राम करो! दिन भर तो दौड़ते रहे हो।'

'जी, हां, मुंशी जी! विश्राम ही कर रहा था, पिताजी का स्मरण आ गया। चिट्ठी लिख रहा हूं।'
'यहां का सब कुशल समाचार लिख देना। सन्त जी को मेरा प्रणाम वोल देना।'

'जी, यही लिख रहा हूं।'
मुंशी जी अपनी कोठरी में चले गए। हेमू अधूरी चिट्ठी को पूरा करने लगा, अपने पिताश्री पूरनदास को प्रणाम लिख चुका था। अन्त में सोहन लाल तथा मुंशी हरसुख लाल की ओर से भी लिख दिया।
और विजयवाहन से फौजी भर्ती में सहयोग देने का निवेदन किया।
इन तीनों लिफाफेबन्द चिट्ठियों को डाक से भेजना होगा। इस राज्य के हरकारे इन चिट्ठियों को अपने-अपने स्थान पर पहुंचा देंगे। पर दो क्षेत्रों में ही ये संवाद जा सकेंगे। अन्य क्षेत्रों में किससे कहा जाय? उसे ध्यान में आ गया, प्रतिदिन प्रातःकाल गजराज सिंह से भेंट होती है। बुन्देलखंड की दिशा में भी प्रयत्न हो सकता है; प्रयत्न आवश्यक है। यह सोचकर वह प्रसन्न हो उठा। भोजन का समय हो गया था, भोजन कर प्रभात की प्रतीक्षा में सो गया।

रात बीत रही थी, आश्विन मास की रात में हरसिंगार फूल रहे थे। रात बीतते-बीतते वे उजले-उजले फूल धरती पर टपकने लगे। लक्ष्मी वाटिका की दोनों कोठरियों के आसपास की भूमि फूलों से भर गयी।

पंछियों के उपा-गीत से नींद टूटी। हेम् की कोठरी का द्वार खुला, सामने की भूमि पर हरसिंगार के फलों को बिछे देखकर उसके पांव थम गये। फूलों पर पैर नहीं रखना चाहिए। इतने सुन्दर, इतने कोमल और इतने निरीह-इन पर कठोर पांव नहीं! पर पारो तो कचल दी गयी! चित्तौर में महारानी पद्मिनी जल कर राख हो गयी! इन तुर्को-यवनों के राज्य में नारी का इतना अनादर -- और वह सहायक बन रहा है! नहीं, वह सहायक नहीं- पारो के उद्धार के लिए वह सब कु छ कर रहा है। उसे अपने ऊपर सन्तोष हुआ। वह फूलों से बच कर पैर रखता हुआ बाहर निकला।

गजराज सिंह आ गया। देखा कि आज हेमू खड्ग लेकर तैयार नहीं है। वह खाली हाथ है, पर प्रसन्न है। क्या बात है? वह उसके पास पहुंचा। हेमू उसे अपनी कोठरी के भीतर ले गया, साथ में बैठाया, मन्द स्वर में हुमायूं के आक्रमण की आशंका की चर्चा करते हुए बादशाह की इच्छा को बताया। इस फौजी भर्ती में बुन्देलखंड के सैनिक परिवारों के तरुणों को सम्मिलित होना चाहिए। इसके लिए उसे संवाद भेजना होगा या छट्री लेकर जाना होगा।

गजराज सिंह गंभीर मुद्रा में हेमू की ओर देखता रहा, यह गल्ले का व्यापार कर रहा है या राजनीति का खेल खेल रहा है? तभी इसमें शस्त्र शिक्षा की प्रबल इच्छा है। फिर एक क्षण सोचकर कहा-'हेमचन्द्र! तुम्हारा सुझाव ठीक है, पर दो बातें हैं।'

'वह क्या?'

'पहली बात है-- क्या सच मुच अफगान बादशाह फौजी भर्ती में हिन्दू सैनिकों को लेना चाहेंगे? और कितनी संख्या में? दूसरी बात है कि बुन्देलखंड के राजपूतों को समझना कि वे अफगान बादशाह की सेवा में आयेंगे या नहीं?'

थोड़ी संख्या में ही लेना चाहें तो-आरम्भ तो हो। वे भर्ती करेंगे- मुझे विश्वास

है, बुन्देलखंड के वीर योद्धाओं को समझाना है। तभी तो आपसे अनुरोध कर रहा हूँ।

'हां, हम कुछ लोग विवश होकर इधर आ गये हैं। यमुना जी की छावनी में पहरेदारी मिल गयी है, पर मन तो नहीं मानता है।'

'समय बदल रहा है। मन को मनाकर साथ आना है। इसके लिए समझाना है।

उन लोगों के कपड़ों का मोल चुका देता है। उन्हें विश्वास हो गया है उन्हें हमदर्दी तो है ही। इसलिए उसे उद्यम से जी नहीं चराना के लेकिन इधर सरवर तंग कर रहा है, उधर हिन्दू भाई घिना रहे हैं। वह क्या करे? मुहल्ले में मजहबी जलसा हो रहा है। वह जाएगा। सरवर की शैतानी पर शिकंजा कसना जरूरी है। उसे भी समझाया जाएगा। जमाल अहमद तो वह अब बन ही चुका है।

आज उसे किले की तरफ जाना है। शाही दफ्तर भी जाएगा। वहां कहने-सुनने से काम हो सकता है, वे पहचानते हैं। वह मोहनलाल के रूप में जाता रहा है। अब वह जमाल अहमद के रूप में जाएगा। वे उससे नजर नहीं फेर लेंगे। हिन्दू व्यापारी उसे देखकर नाक-भौं सिकोड़ते हैं, टालते हैं। जब-तब उसकी आंखें झुक जाती हैं। 'औरत के लिए धरम बदल लिया' सुन-सुनकर मन को धक्का लगता है। वह अपने पर क्रोध करे या उन पर! उनका ऐसा करना गलत नहीं है। उनके कुल-परिवार का एक युवक घर से हाथ से निकल जाएगा तो उन्हें कष्ट तो होगा ही। उन्हें क्रोध तो होगा ही। उनकी प्रतिक्रिया सही है, परन्तु वह भी गलत नहीं है। वह क्या करता है? उन्होंने अपने से दूर कर दिया। इन्होंने अपने नजदीक ला रखा। शकील बुनकर जैसे लोग भी अपनी हीनता से छुटकारा पाने के लिए इस मजहब का सहारा ले चुके हैं।

जमाल ने गट्ठर को सरजू के सिर पर लादा। नमूनों की गठरी को अपने कन्धे पर रखा और वह हाट के रास्ते पर निकल गया।

इलाहीबख्श दिन भर मुहल्ले वालों से मिलता रहा और शाम का इन्तजार करता रहा।

चौबीस

शाम हो गई, इमामबाड़े में दरी बिछी। मसनद लग गए। मुल्ला साहब के लिए एक छोटा-सा तख्त रखा गया। तख्त पर कालीन बिछाया गया। शमादान में मोमबत्तियां जलने लगीं।
मुहल्ले वाले इकट्ठे होने लगे। इलाहीबख्श सबका इस्तकबाल कर रहा था। सबका बैठा रहा था। मुल्ला आए, तख्त पर बैठे। सरवर आ गया। जमाल की राह देखी जाने लगी। इलाहीबख्श का दिल घबरा रहा था, ऐसा न हो कि वह नहीं आए, लेकिन उसे आना चाहिए। उसके अपने फायदे की बात है। इतना तंग हो रहा है, वह जरूर आएगा। जमाल आता दिखाई पड़ा, बड़ी खुशी हुई। जमाल आकर चुपचाप बैठ गया। झुकी निगाहों से सबको देखने

लगा। उसने देखा कुछ चेहरे तो नये हैं। कुछ को रोज देखता है, कुछ से सलाम-बन्दगी भी हो जाती है। बचपन से ये चेहरे तो अपने नहीं रहे हैं, बचपन और तरुणाई के वे जाने-पहचाने चेहरे तो दूर छूट गए। इनसे वह जुड़ रहा है। क्या वह इन नये चेहरों से जुड़ सकेगा? ये हिन्दी मुसलमान तो नहीं हैं! ये लोग इनके पुरखे सौ-दो सौ वर्षों में बाहर के देशों से आए। कुछ राज्य करने आए, कुछ फौजी बनकर आए। कुछ आकर रोजगार करने लगे, यहां बस गए। पर ये अपने को हिन्दुओं और हिन्दी मुसलमानों से बड़ा मानते हैं। शासक जाति के हैं। इनसे वह जुड़ रहा है, ये भी अपना रहे हैं। नूरी के कारण अपने रक्त से अलग हो जाना और दूसरों से मिलना हो रहा है, मिलना पड़ेगा। मनुष्य अकेला तो रह नहीं पाता। वह दस लोगों के साथ रहना चाहता है। दस लोगों के बीच में रहना चाहता है। अपने रक्त से, अपने कुल परिवार से अलग हो जाना बड़ा कष्टकारक है। पर वह विवश है। उसे अलग किया गया है, वह अलग होना नहीं चाहता था।

मुल्ला साहब की आवाज गूंज उठी-'पाक परवरदिगार अल्लाह ताला की मेहरबानी है कि रमजान का महीना आ पहुंचा है। हम सबको पूरी ईमानदारी से रोजा रखना है। पांच बार नमाज अदा करना है। इस रमजान महीने में अपने मजहब पर ईमान रखकर पाकसाफ जिन्दगी को जियें जिससे इस खल्क का मालिक हम पर खुशियां इनायत कर सके। रोजा, नमाज और अपनी-अपनी आमद के मुताबिक खरात-किसी देश से गफलत न हो। कोई गमराह न हो। अगर कोई गुमराह हो जाता है तो उसे खदा माफ नहीं करेंगे। कयामत के दिन जवाब देना होगा। ऊपर अल्लाह सब देख रहे हैं। नीचे हमारे शहंशाह देख रहे हैं। हुकूमत हमारी है। हमारे आईने के जरिए हिन्दोस्तान से तुर्किस्तान तक की दुनिया को चलना है। दुनिया चल रही है, करोड़ों सर सिजदा कर रहे हैं। इसी से इंसान को ऐशो-आराम मिल सकेगा अमन-चैन मिल सकेगा। इसीलिए तो हमारा काफिला जमना व गंगा के किनारे उतरा है।

मुझे बहुत खुशी है कि इलाहीबख्श के जरिए मोहनलाल जमान अहमद बनकर हमारे बीच हाजिर है। यह हमारी कामयाबी के इलाहीबख्श ने यह मौका दिया है कि जमाल अपनी जिन्दगी को संवार ले। जिन्दगी की सारी खुशी पा ले। इस्लाम की सारी बिरादरी उसे अपने में शामिल कर प्यार-मुहब्बत दे रही है। अब उसे गमराह नहीं होना है। वह पूरे कायदे-अदब के साथ इस दीन-दुनिया की राह से गुजरते हुए जन्नत की सारी खुशियों को हासिल कर ले।

सरवर अली अपने फर्ज को भूल गया था। यह उसकी नादानी थी। अब वह किसी तरह की शरारत नहीं करेगा। जमाल तो अपना बन गया। इसे हमसे हमदर्दी चाहिए; प्यार चाहिए।

मैं समझता हूं कि सरवर अली रमजान में सही राह पर चलेगा, यह मेरी हिदायत है।'

सरवर का सर झुका हुआ था। भीतर-ही-भीतर खीझ रहा था, सोचा कि रमजान में उसे चुप ही रहना चाहिए। लेकिन जमाल पर नजर रखनी है।

जमाल इस तकरीर को सुनकर थोड़ा घबराया। कहां दो दिलों का नेह-नाता! कहां मजहबी कामयाबी का ऐलान!! हिन्दुस्तान से तुर्किस्तान तक की हुकूमत का अभिमान!!! ये

तो बड़ी-बड़ी बातें हैं। उसने तो हृदय का संगीत सना है, नरो को सनाया है, दोनों मिले हैं। अब उसे स्वर्ग का स ख मिले या नरक का दुःख। उसे इस मजहबा फन्दे से क्या मतलब है? लेकिन इनका दबाव है। इनकी हुकूमत का भी दबाव है, वह स्वच्छन्द प्रेम को अपनाकर स्वच्छन्द नहीं रह सका। एक नये मजहब और समाज के दबाव में आ गया। रोजा, नमाज और खैरात यह रास्ता तो अनदेखा है, अनजाना है। नूरी से समझना- बूझना पड़ेगा, जिन्दगी के रास्ते में इतनी सख्त चट्टानें!

'अल्लाहो अकबर' के नारे गूंज उठे, वह चौंक उठा। सभी रुखसत हो रहे थे, वह भी उठकर खड़ा हो गया। मुल्ला साहब ने उसे नयी जिन्दगी की मुबारकबाद दी। वह मुस्करा उठा, उसने दोनों हाथ जोडकर प्रणाम किया। मुल्ला साहब बिदक गए, साथ में खड़े बुजर्गों को भी अच्छा नहीं लगा। उनमें एक ने बताया- 'ऐसे नहीं-सलामबन्दगी का तौर-तरीका यह है। थोड़ा अदब-कायदा सीखो, जमाल साहब!'

जमाल ने उसी तरीके से सलाम किया। सभी खुश हो गए। इलाहीबख्श ने उसे साथ ले लिया और फिर अपने दौलतखाने की ओर चल दिए।

घर पर नूरी इन्तजार कर रही थी। इलाहीबख्श के साथ जमाल पहुंच गया। नरी ने देखा कि चेहरे पर फिक्र की लकीरें हैं। वह बोल उठी- 'बात क्या है? आप फिक्र में डूबे नजर आते हैं!

इलाहीबख्श अपनी बीवी के सामने जलसे का बयान कर रहे थे। घर के भीतर के कमरे में जमाल कह रहा था-'नरी! प्यार के रास्ते में दिल की बातें नहीं हैं। किस्म-किस्म के दबाव हैं। वैसे तो सरवर साहब को शरारत नहीं करने की हिदायत मिल गई है। फिक्र थोड़ी कम हो गई है, लेकिन रोजा-नमाज का बंधन बढ़ गया है।'

'एक फन्दे से छुटकारा तो मिल गया, उसकी फिक्र ज्यादा थी!'

'लेकिन वह दिनभर भूखे-प्यासे रहकर दौड़-धूप कैसे कर सकेगा?' एक माह का दौर-दौरा है। बिना अभ्यास के वह क्या कर सकेगा?'

'यह सवाल तो खडा हो गया है। परे महीने किसी मस्लिम मकान में रोजे के वक्त खाना नहीं मिलेगा, न सराय में भटियारे रोटी दे सकेंगे और न बाजार में नानबाई और हलवाई कुछ बना सकेंगे। सिर्फ शाम को रोजा तोड़ने के वक्त वे अपनी दुकानें खोल सकते हैं।'

'मैंने तो देखा ही है।'

'शेख और मुल्लाओं की सख्त हिदायत रहती है। हुकूमत की ओर से कड़ी नजर रहती है।'

'हिन्दुओं के व्रत-त्यौहार में ऐसी कड़ाई नहीं होती, नूरी! वहां ती पूजा-पाठ, व्रत और त्यौहार में आजादी रहती है। अपने शरीर की शक्ति और मन की इच्छा के अनुसार सभी व्रत करते हैं। कोई दबाव नहीं होता।'

यहां तो सख्ती है, तो भी आप न घबरायें। रास्ता निकल आएगा, मैं ख्याल रख रही हूं।'

'तुम्हारे लिए जो-जो करना पड़े, करना है, नूरी! लेकिन इतनी पाबन्दी अजीब लगती है।'

'हिन्दुओं में भी जांत-पांत की पाबन्दी ज्यादा है। परेशानी है। सचमुच इतनी पाबन्दी नहीं रहनी चाहिए। आपको प्यार दिया है तो थोड़ी आजादी भी दिलाऊंगी।'

'तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर...!'

'पहले आप तो घी-शक्कर खाइए....चलिए।'

पच्चीस

हेमू कलेवा कर सेठ सोहनलाल से मिलने आया। सोहनलाल ने सहर्ष पास बैठाया, और पूछा-'कलेवा कर लिया?'

'जी, हां!'
'बहुत परिश्रम करते हो, हेमू! भोजन में संकोच नहीं करना। अब इस लक्ष्मी भवन का कलश तुम्हारी बांहों पर टिक गया है।
‘ऐसा न कहें, मैं तो आपके संकेत पर सब कर रहा हूं। सब आपके आशीर्वाद से हो रहा है।'
'सब मेरे संकेत पर नहीं हो रहा है, हेमू! मोहन जमाल बन गया, मैं कुछ नहीं कर सका। तुम कपड़े और मिठाई पहुंचा आए । मैं जान नहीं सका, बाद में मालूम हुआ।' मां की ममता नहीं मान सकी। मैंने आपसे पूछा नहीं...अपराधी हूँ।'

'तुम्हारा दोष नहीं है । तुम्हारे कारण तो खाट से उठ सका हूं। पर एक चिन्ता हो रही है। बेटा तो हाथ से निकल गया, अब संत जी का पुत्र न हाथ से निकल जाए।' ‘जी, मैंने समझा नहीं।'
'बात नीति की है, हेमू! नीति कहती है कि राजा कब प्रसन्न होगा और कब अप्रसन्न– कहा नहीं जा सकता। इन शाहों-सुल्तानों का दिमाग कब कैसा रहेगा--कौन बताएगा? इनसे सावधान रहना और दूर रहना ही अच्छा है।'
'आपकी आशीष से इनका दिमाग समझ में आने लगा है। इस मेलजोल से लाभ ही होगा। दफ्तर के मुंशी और हाकिम मुझे पहचान गए हैं।'
हां, यह तो ठीक है, मैं रोक नहीं रहा हूं। पर सतर्क रहना चाहिए। सिर्फ अपने काम से मिलना इनकी राजनीति में दखल नहीं.. ये हमसे सलाह क्यों लेगे! हम तो काफिर हैं; गुलाम हैं!!'

‘ऐसी हालत बन रही है कि ये हमसे सलाह लेंगे और सहायता की--आप देखते रहें। मुझे विश्वास हो गया है कि मेरा या लक्ष्मी भवन का नुकसान नहीं होगा। आप भरोसा रखें।'
'उनके गुस्से से कोई नुकसान न हो-यही चाहता हूं, और हां, आज हाट से अपने लिए कपड़े खरीद लो। सब जगह आना-जाना है। ये रुपये लो।

हेमू ने एक क्षण सोहनलाल की आंखों में झांका। भाव अच्छा लगा, सोहनलाल ने रुपये बढ़ा दिए। उसने रुपये ले लिये। कपड़े की जरूरत थी, संकोच से कह नहीं पा रहा था। वह रुपये लेकर लक्ष्मी भवन से बाहर निकला, सोचा कि छोटे सेठ से मिलना है। साथ ही किले की तरफ भी जाना है, आज यह काम हो जाय।

वह आगे बढ़ा। लक्ष्मी भवन के बाद साह हरखलाल का 'श्री विलास था। आगे जाकर दाहिनी तरफ मुड़ना था। खिड़की के पास स होकर जा रहा था। कुछ बातचीत सुनाई पड़ी।
वह रुक गया। सड़क पर खड़ा रहा, खिड़की से होकर शब्द आ रहे थे।

पंडित जी! इस बार आप पड़ोस में भागवत कथा सनाने नहीं आए। बात क्या है?'—यह हरखलाल की कुटिल जिज्ञासा थी।

'उन्होंने बुलाया ही नहीं। मैं क्यों जाऊं?' पंडित गणेशीलाल शर्मा ने उत्तर दिया।
'बेचारे भाई साहब बेटे के विधर्मी बन जाने के शोक में गल रहे हैं। आप शांति-पाठ कर देते।'
'यह उनकी इच्छा पर निर्भर है, हरखलाल जी! यह कलियुग है। तुरक राज्य है। पुत्र हो या कन्या-दोनों को बड़े संयम-नियम से रखना है। नहीं तो ऐसी ही गति होगी।'

'यह तो सच है, पंडित जी! सुना है कि मोहन यानि जमाल अहमद साहब कभी-कभी आ जाते हैं।'

'तब तो पूरे परिवार से बचना होगा, इस लक्ष्मी भवन का जलग्रहण करना भी अधर्म होगा।'
'जब आप परित्याग कर देगे तो जाति पंचायत भी कुछ सोचने को विवश होगी। इन्हें बेटी का ब्याह भी करना है।'

'ग्रह अच्छे नहीं लग रहे हैं।'

हेमू यह सुनकर सहम उठा, सोचा कि अभी पंडित जी से मिलकर बातचीत करे। वृन्दावन के भक्तिलोक में यह कड़ाई नहीं है, ऐसा निषेध नहीं है, सबको अपनाने की उमंग है। राधा वल्लभ जी के सामने प्रेम-श्रद्धा में विभोर हो जाने का उत्साह है। पंडित-पुरोहित केवल निषेध की बात कर रहे हैं, दोनों में कितना अन्तर है! क्या मोहनलाल जी के लिए कोई रास्ता नहीं निकलेगा? अपने अंग को काटकर अपंग क्यों बना जाय?

हेमू आगे बढ़ गया। छोटे सेठ ने तो चाहा कि पहले अपनी रोटी का अर्जन हो, फिर अपने

राम को 'पर ये अपने राम को क्या अपनाने देंगे? ये तो दुत्कार देंगे, हरखलाल तो सेठ सोहनलाल के विरुद्ध कान भर रहे थे। ऐसा क्यों? यह धर्मभाव नहीं हो सकता, यह तो द्वष है। परिवार और व्यापार-दोनों का विद्वेष। यह तो भयानक स्वार्थपरता है, स्वार्थ ने ही विद्वेषी बनाया है। यह उचित नहीं है, पर वह क्या कर सकता है? मानव अपनी ओछी वृत्ति से विवश है।

ऐसा सोचता हुआ वह सिकन्दराबाद तक जा पहुंचा। इलाहीबख्श का मकान दिखाई पड़ने लगा। उसे रोमांच हो आया, मोहनलाल और नूरी- दोनों कैसे मिले होंगे! कैसे एक-दूसरे की चाहत में विकल हुए होंगे!! मोहनलाल ने अद्भुत साहस किया और इतना त्याग कर दिखाया।

जमाल बाहर आता दिखाई पड़ा। कमकर के सिर पर गट्ठर लाद कर वह सड़क पर आ गया, हाट की ओर बढ़ चला। हेमू तेजी से चलकर साथ हो गया। जमाल खुश हुआ, हेमू ने मन्द मुस्कान से अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

जमाल ने पूछा- 'क्या समाचार है, हेमू!'

'सब कुशल है, आपसे मिलने ही चला आया हूं। सब मंगलमय है न?' हेम ने उत्तर दिया।

'सब ठीक तो है, पर मेरी परेशानी बढ़ गई है।'
'आपकी परेशानी...?'
'अरे, भाई! यहां त्रिकोण प्रेम का चक्कर था। इलाहीबख्श साहब के भतीजे सरवर अली साहब नूरी के आशिक बने हुए थे। पर वे सफल नहीं हो सके। इसलिए मुझे तंग करने लगे। रमजान के मौके पर उन्हें चेतावनी मिल गई है, और मुझे रोजा-नमाज की सलाह। उपवास रहना और दिनभर दौड़ना, यही परेशानी है!'

'रोजा में योदय के पूर्व और सूर्यास्त के बाद भोजन की बात तो है।'

'सूर्योदय के पहले खाया नहीं जाता। जब भूख लगती है तो हिदायत सुनाई पड़ती है, पूरे माह का फेरा है।'

'यह तो परेशानी है, परन्तु घर पर भी आप व्रत करते ही होंगे।'

'उस अभ्यास से काम नहीं चलेगा, हेमू महाशय! और भी बातें हैं। अपनी भाषा को भूल जाओ, अपना पहनावा बदल दो, रहन-सहन का ढंग बदल दो, तुर्की-अरबी की वेशभूषा अपनाओ। सूफी कवि ऐसा नहीं चाहते। वे अपने दर्शन और उपासना के बाद इस देश की मिट्टी से जुड़ना चाहते हैं, लेकिन मुल्ला-मौलवी ऐसा नहीं चाहते।'

'यह तो गम्भीर बात है। ये मुल्ला-मौलवी और पीर-औलिया नये बने मुसलमान को इस धरती, प्रकृति और संस्कृति से पूरा काट देना चाहते हैं। सूफी कवि और कबीर पंथी प्रयत्न कर रहे हैं कि बीच का रास्ता निकल सके।'

'बीच का रास्ता निकलना ही चाहिए। नये मुसलमान-हिन्दी मुसलमान अपनी धरती, संस्कृति और परम्परा से अलग क्यों किए जायें? बीच के रास्ते के लिए नूरी सहयोग दे सकती है, पर पठानअफगान नहीं मान सकते। मुल्ला साहब नहीं मान सकते।'

'यदि अफगान शासन थोड़ा उदार हो जाय, समझदार हो जाय।'

'सूफी शायरों की वाणी से, तो बीच का रास्ता निकालने में मदद मिल सकती है। यदि कबीर की वाणी पर ये ध्यान दें तो कुछ हो सकता है।'

‘पर सम्भव नहीं दिखता, हेमू! वहां मजहबी हिदायत बहुत सख्त है। बीच का रास्ता कुफ्र-सा है। परन्तु बीच के रास्ते की चर्चा बढ़ गई है। थोड़ा असर तो पड़ रहा है।'
'असर तो पड़ेगा ही।'
'मेरे लिए एक और समस्या आ रही है।'
'वह क्या?
'किले में चाचा हरखलाल से भेंट हो गई, थोक कपड़े के व्यापारी हैं। मुझे देखकर उन्हें लगा कि मैं उनके व्यापार में अड़चन डाल रहा हं। वे ईर्ष्या-द्वष के शिकार हो गए हैं।'
'मुझे भी लगा है।'
'सोचता हूं कि दूसरे नगरों में चला जाऊं।'
'जी, हां! जाना ठीक रहेगा, आज मुझे कपड़े दिलवा दीजिए। मुझे नये कपड़े के लिए रुपये मिले हैं।'
'चलो, मेरे साथ!'
दोनों हाट में आ गए थे। इत्र-तेल, किराना और गहनों की दुकानों के बाद कपड़े की दुकानें लगी हुई थीं। दोनों एक बड़ी दुकान पर जा पहुंचे। जमाल ने हेमू के लिए किफायत दर पर कपड़े खरीद दिए। फिर अपने कपड़ों की बातचीत शुरू की। गट्ठर खुला, जमाल ने एक धोती और एक गमछी अपनी ओर से हेमू के हाथों में थमाकर कहा-'मेरी ओर से इन्हें स्वीकार करो।'

हेमू ने देखा कि मोहनलाल-जमाल अहमद की आंखों में स्नेहपर्ण आग्रह है। उसने विनम्रतापूर्वक ग्रहण किया। लगा कि दोनों के हृदय के भाव का आदान-प्रदान हो रहा है। दो क्षण दोनों एक-दूसरे की ओर देखते रहे। जमाल ने सस्नेह विदा किया। हेमू नदी की ओर चल दिया।

सोचा कि छावनी में गजराज सिंह से मिला जाय, पर उधर जाने में देर हो जाएगी। लौटकर मिला जाएगा।

नाव से जमना जी को पार किया, किले की तरफ चला, उसे इजाजत मिल गई। वह दीवाने-बरीद की ओर जाने लगा। दफ्तर खुला था, वह दरवाजे पर पहुंचा, उसे रोका गया, भीतर वजीर साहब मौजूद थे। वजीर ने उसे पहचाना, इजाजत पाकर भीतर गया, वजीर ने पास में बैठाया, और बोल उठा–'हेमचन्दर! कमाल के आदमी हो। तुम्हारी सलाह के मुताबिक काम हो रहा है। पंजाब में जासूस जा चुके हैं। कामयाबी की उम्मीद है, बहुत अच्छे!'

'यह आपकी कृपा है, आपने मुझे इस लायक समझा है कि मेरी सलाह पर...।
'बेशक अक्लमन्द और दानिशमन्द हो। सल्तनत शुक्रगुजार है, हेमचन्दर!
'मैंने सीकरी की ओर भी इशारा किया था, हुजूर!'
'अरे, तुम फकीरों पर क्यों नाराज हो? उधर भी एक को भेज दिया है।'
'बहुत ठीक हुआ, अफगान की सल्तनत की मजबूती से मुगलों के कदम रुक सकेंगे। मार-काट, खून-खराबी से प्रजा की जान बच सकेगी, राज्य की रक्षा ही सबकी रक्षा है।' 'जब हिन्दू ऐसा सोचेंगे तो अफगानों को कौन हिला सकता है!'

'हुजूर, याद रखें...सही सियासत, अच्छा सलूक, फौलादी फौज और प्रजा की दुआओं से ही सल्तनत ऊपर उठती है।'

‘बिलकुल ठीक, हेमचन्दर!' यह कहकर वजीर ने अपनी खुशी जाहिर की।

और सोचने लगा कि यह काफिर हेमचन्दर ऊंचे ख्याल का है। सल्तनत का खैरख्वाह है। तभी तो इसकी सलाह काबिले-गौर मानी जा रही है। एक काफिर की कद्र इतनी हो रही है।

छब्बीस

आज हेमू को गल्ला खरीदने के लिए आगरा से पूर्व के गांव की ओर जाना था। वह तैयार हो रहा था। गजराजसिंह शास्त्राभ्यास कराकर लौट गये, वह राधावल्लभ जी की पूजा भी कर चुका। अब वह भस्मी के डिब्बे को फूलों से सजाने लगा। वसन्त के मेला का दश्य झलक उठा, उसकी पलकें बन्द हो गयीं। पारो का मुखड़ा झिलमिलाने लगा, व्यथा उभरती-उभरती थम गयी, क्षण-भर के बाद वह मुखड़ा पार्वती कुंवर का मुखड़ा बनने लगा। उसने आंखें खोल दी। ऐसा क्यों हो रहा है? क्या वह आकर्षित हो रहा है? अपनी पारो की कल्पना इस पारो में कर रहा है? ऐसा कैसे हो जायगा?

मुंशी हरसुखलाल के शब्द सुनायी पड़े, वह उठ बैठा। मुंशी हरसुख लाल के साथ सेठ सोहनलाल से मिलने गया, मिलकर गल्ला खरीद के सम्बन्ध में बातचीत कर ली और तब खा- पीकर दोनों चल पड़े। यमुना को पार कर इक्के पर सवार हुए, घोड़े की टापों पर चक्के घूमने लगे। राजधानी की चारदीवारी और छावनी को पारकर बढ़ते गये। पक्की सड़क पर इक्का चल रहा था। इक्कावान कभी पुचकार कर और कभी चाबुक चलाकर घोड़े को चला रहा था। सड़क की दोनों तरफ पेड़ थे। खेतों में दूर-दूर तक हरियाली थी। ग्रामीण बस्तियां दिखायी पड़ने लगीं। सड़क के किनारे लोगों का आना-जाना हो रहा था। इक्का चलता रहा। एक सराय के पास इक्का रुका। दोनों उतरे, किराया चुकाया तथा थोड़ा विश्राम कर और कुएं का शीतल जल पीकर दोनों ने पगडंडी से सामने के गांव की ओर कदम बढ़ाये।

रास्ते में एक किसान ने मुंशी हरसुखलाल को पहचाना। मुंशीजी ने भी पहचाना। साथ-साथ बातचीत करते हए सभी ने गांव में प्रवेश किया। किसान अपने घर पहुंचा। दोनों का स्वागत किया। गल्ला -खरीद की बातचीत होने लगी। मालूम हुआ कि गांव का अधिकांश गल्ला बिक चुका है, थोड़ा ही मिल सकता है। दोनों ने आगे के गांव में जाना चाहा, किसान ने रोक लिया। रात में 'आल्हागीत' होना था। रात में रुककर आल्हा सुनने का आग्रह किया, दोनों ठहर गये।

रात में गांव के लोग एक पुराने मन्दिर के आगन में इकट्ठे हुए। लगा कि सारा गांव उमड़ आया। आल्हा गाने वाले दो दल थे। वे चौकी पर बैठाये गये। आंगन के द्वार पर एक मशाल जलने लगी। ढोलक पर थाप पड़ी। आल्हा में युद्ध का वर्णन होने लगा, ढोलक और झाल के संगीत के साथ ओजस्वी आल्हा का स्वर चढ़ने लगा। वीररस का प्रवाह बह चला, घोड़ों की टापों से धरती दरकन लगी। तलवारों की टकराहट से बिजली चमकने लगी, रक्त की धार से पृथ्वी नहा उठी। बाह रे आल्हा-ऊदल!

हेमू ने देखा कि कुछ अधेड़ और नौजवानों का एक समूह अपने किशोर बालकों के साथ आ गया, वे सबसे पीछे बैठकर सुनने लगे। सभी वीररस में बहने लगे। पर वे सबसे थोड़ा हटकर बैठे हैं। चेहरे और पहनावे से अछूत मालूम नहीं पड़ते थे। लम्बे-तगड़े हैं, बलिष्ठ लग रहे हैं। ये कौन हो सकते हैं? इन्हें रोका तो नहीं गया है, तो भी ये अलग-थलग बैठे हैं, पर आंखों में ओजपूर्ण उल्लास झलक रहा है। ये कौन हैं? क्या जाति से बहिष्कृत लोग हैं? हो सकता है, पूछा जाये।

हेमू ने देखा कि मुंशी चाचा मग्न हैं। सचमुच मग्न होना ही है। यह आगरा में सम्भव नहीं, आगरा तो अफगान बादशाह की राजधानी है। वहां फारसी की शेरो-शायरी है। सूफी शायर की मसनवी है, कहींकहीं कबीर के सबद सुनायी पड़ जाते हैं। कहीं-कहीं हित हरिवंशजी और सूरदास के पद गंज उटते हैं, पर आल्हा के गीत नहीं गूंजते।

इस वीररस के गीत के मूल में क्या है? दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान और महोबा के राजा परमाल का युद्ध है, दो राजाओं का आपसी द्वष है। आल्हा-ऊदल दो भाइयों का रोमांचकारी युद्ध है। इससे दिल्ली की शक्ति का ह्रास हुआ और उसके बाद मुहम्मद गोरी का आक्रमण..।

गायन समाप्त हो गया, गायन की प्रशंसा करते हुए ग्रामीण लौट रहे थे। सबकी चाल-ढाल और बोल-चाल से वीरत्व के भाव प्रकट हो रहे थे। आल्हा और ऊदल की वीरता की चर्चा होने लगी थी। मुंशीजी अलग-थलग बैठे हुए अधेड़ से बातचीत करने लगे। हेमू बड़े उत्साह से पास पहुंच गया। मशाल की रोशनी में देखने लगा। मुंशीजी ने परिचय कराया—'यह रेवाड़ी का हेमचन्द्र है-संत पूरनदास जी का पुत्र। सेठजी के यहां काम कर रहा है, बड़ा होनहार है।'

हेमू ने नमस्कार किया।

'और ये बहादुर खां हैं, इसी गांव के राजपूत कुल के हैं। ये कुछ वर्षों से खेती में लग गये हैं, इनके पास गल्ला है। कल भोर में तौल हो जायगा।' मुंशीजी ने

बताया।

हेमू सिर हिलाकर सोचने लगा कि यह क्या रहस्य है? उसे समझ में नहीं आया, वह पूछ नहीं सका, वह देखता रह गया। मुंशीजी लौटने लगे, वह भी साथ हो गया, अपने को रोक नहीं सका, वह पूछ बैठा-'मुंशी चाचा! यह क्या रहस्य है? नाम बहादुर खां और परिवार राजपूत था?'

'हां, रहस्य है। तीस-बत्तीस वर्ष पहले सिकन्दर लोदी का दमनचक्र चला था, इधर के गांव पीस दिए गए थे। ये लोग युद्ध में हार जाने के बाद कैद कर लिये गए, बलात बहादुर खां और बब्बर खां बना दिए गए।'

'गांव के पुरोहित जी ने भी आंखें फेर ली होंगी?'

'हां, आंखें फेर लीं, मन्दिर में जाना मना कर दिया। गांव के लोगों को विवश होकर भोज-भात में सम्मिलित होना रोकना पड़ा, पर किसी का हृदय दूर नहीं हो सका। ये भी अपनी नीति-रीति और परम्परा को छोड़ नहीं सके हैं, आहार-विहार में कोई अन्तर नहीं। परिवार साथ है, इसलिए इन्हें अधिक कष्ट नहीं होता।'

मतलब यह है कि ये नाम के बहादुर खां हैं लोदी के अत्याचार के कारण, शेष हिन्दू- राजपूत जैसे ही हैं।

'हां! ये कुछ कर भी नहीं सकते, उनकी हुकूमत है। इधर पंडितपुरोहितों का बहिष्कार निषेध है। मन मारकर बहादुर खां बने हुए हैं।'

'आगरा-दिल्ली का दबाव तो...!'
'दूर का गांव है, इसलिए दबाव कम है।
दोनों अपने परिचित किसान के घर आ गये। भोजन कर सो गये।
दूसरे दिन प्रभात में दोनों बहादुर खां के टोले में पहुंचे। प्रतीक्षा हो रही थी, बहादुर खां ने दोनों का स्वागत किया। पूछकर कटोरी में माखन-मिश्री ला दी। मुंशीजी हेमू की ओर देख रहे थे, हेमू सहर्ष खाने लगा। उसे वृन्दावन का स्मरण आ गया। मुंशी चाचा ने भी राधाकृष्ण का नाम लेकर खाना शुरू किया। बहादुर खां को दोनों के व्यवहार का फर्क समझ में आ गया, पर विवशता थी। आह भरने के सिवा कुछ शेष नहीं था....उसने कलेवा कराने के बाद गल्ले का भंडार दिखाया, भाव की बातचीत हुई। तौल हुआ, मोल लगा। मुंशीजी ने अग्रिम राशि दी। बहादुर खां का मन सतुष्ट हुआ, पर हेमू कुछ और वार्तालाप के लिए आकुल हो रहा था।

रुपये-पैसे की लेन-देन के बाद वह धीरे से बोल उठा—'आप कैसा अनुभव कर रहे हैं बहादुर खां के रूप में?'
'हेमचन्द्र! सिकन्दर लोधी की जंजीर गले में पड़ी है, इसे निकाल कर कोई हमें मुक्त कर नहीं पाता, हमारे पंडितजी अपनी लाचारी बताते हैं...इसलिए मान लिया है।'

'मुल्ला-मौलवियों का दबाव तो होगा ही।'

'थोड़ा है क्योंकि दूर का गांव है और सारे परिवार के बीच में रहना है, गांव का दबाव तो नहीं है। इसलिए बहादुर खां का यह रूप खटकता नहीं है। अपनी सारी रीतियां-परिपाटियां घर में निभ जाती हैं, हम भूलना भी नहीं चाहते। अपनी भाषा, अपना पहनावा, अपना खान-पान और रीति-रिवाज कैसे भूले जा सकते हैं?'

'तब तो मन आहत नहीं होता होगा!'

'पंडितजी के बहिष्कार, मन्दिर-निषेध तथा खानपान पर रोक के कारण मन जब-तब आहत होता है। कभी-कभी बाहर से आये मुल्ला की हिदायत और पाबन्दी से भी मन कुढ़ता है, लेकिन सामान्य रूप से हम अपने परिवार और परम्परा से जुड़े हुए हैं, इसलिए मन बहुत अधिक पीड़ा नहीं पाता।'

'पंडित-पुरोहित कालचक्र को समझकर व्यवहार नहीं कर रहे हैं, पर मथुरा-वृन्दावन-गोकुल में भक्ति के आचार्य और सन्त समय गति को पहचान गए हैं। वे सबको साथ लेकर चल रहे हैं...आप तो निर्दोष हैं और आप अपनी रीति-परम्परा के अनुसार जी रहे हैं फिर बहिष्कार क्यों?

'यह तो पुरोहितजी को समझना है, हम अपने बच्चों को कैसे संस्कार दिलायें? थोड़ा- बहुत तो घर में मिल जाता है। कभी-कभी मुल्ला साहब सवार हो जाते हैं तो भी घर के संस्कार प्रबल सिद्ध हो रहे हैं।'

'सेना-फौज में सैनिक बनना हो तो...!'
'इच्छा नहीं है, अनाचारी शाहों-सुलतानों की सेवा नहीं की जायगो।'
'यदि अपने संस्कारों के साथ इस गांव के युवक आपके युवक अफगान फौज में भर्ती हों तो बादशाह पर अपना प्रभाव जम सकता है। अफगान बादशाह ने तो खिलजी और लोदी सुलतानों के जुल्म को बहुत कुछ बन्द कर दिया है।'
'यह तो है।'
'तो आप विचार करें, फौजी भर्ती होने वाली है। पहली बार हिन्दुओं को अवसर मिल रहा है, लोग भर्ती हों, आगे के लिए ठीक रहेगा। अत्याचार पर भी अंकुश रह सकेगा।'
'बात तो दूर की कह रहे हो, हेमचन्द्र! बड़े विचारशील हो। राजनीति पर ध्यान है— काश, राणा सांगा सफल हो जाते!'
'देश का दुर्भाग्य है कि वे असफल हो गये। हम उनसे प्रेरणा ले सकते हैं। एक बात हो सकती है कि अफगान बादशाह को प्रजा के और अनुकूल बनाया जा सकता है, मुगलों को रावी और यमुना की लहरों से दर रखा जा सकता है।'
'यह कैसे हो सकता है?
'अफगान बादशाह प्रजा के पास आयें, प्रजा उनके पास पहुंचे। आप लोग इस धरती की भावना के साथ फौज में आ जायें। मेरी ओर से कोशिश हो रही है। बादशाह समझने लगे हैं।'
‘पर तुम तो व्यापार में लगे हुए हो।'
‘पर मेरी दृष्टि इस समस्या पर लग चुकी है। बादशाह और वजीरों तक पहुंच रहा हूं, आप मुझे सहायता करें।'
'तब तो मैं अवश्य सोचूंगा, हेमचन्द्र!'

सत्ताईस

रमजान के दस रोज बीत चुके थे। इलाहीबख्श जमाल के व्यवहार से संतुष्ट था, जमाल ने रोजा रखने में कोई घबराहट नहीं दिखायी। उसने अपने घर पर भी व्रत-उपवास किया था, पर इस रोजा-उपवास में प्रतिदिन हाट-बाजार में दौड़-धूप से थोड़ी परेशानी होती थी। कंठ सूख जाता था, इसलिए बाजार मे छिपकर पानी पी लेता था। कमकर सरजू प्रबन्ध कर देता था।

उस दिन रात में नूरी ने सलाह दी कि रोजगार के सिलसिले में दूसरे शहर में चले जाएं तो रोजा की परेशानी से थोड़ी राहत मिल जाएगी। जमाल ने इस सलाह को कबूल किया, और कुछ निर्णय कर लिया। दूसरे दिन वह बाजार में नहीं निकला बाहर, जाने की तैयारी करने लगा।

इलाहीबख्श पूछ बैठा-'जमाल बेटे! रोजा में कुछ तकलीफ हो रही होगी। अच्छा है कि यहीं रहकर योड़ा आराम करो।'
'जी, नहीं! कोई खास तकलीफ नहीं हो रही है, इधर कपड़ों की मांग नहीं हो रही है। सोचता हूं कि दूसरे हाट-बाजारों में जाया जाए।
'ईद के बाद जाना ठीक रहेगा। जरूर जाना - इससे तजुर्बा बढ़ेगा और रोजगार भी।'

हो सकता है कि दूसरे शहर में ईद के समय ही कपड़ों की मांग हो! कल जाना चाहता हूं।'
'लेकिन दूसरी जगह रोजा रखने में दिक्कत होगी।'
'बिलकुल नहीं...! मेरा निश्चय पक्का होता है, मैं ईद के पहले लौट आऊंगा।' 'मुहल्ले के बुजुर्ग और नौजवान क्या कहेंगे?'
'आप समझाने की तकलीफ करेंगे, विश्वास करना पड़ता है और विश्वास कराना पड़ता है।'
'वो तो ठीक है, रोजा और नमाज छूटना नहीं चाहिए।'
'आप भरोसा रखें।'
इलाहीबख्श ने भरोसा कर लिया। लेकिन उसके दिल में आ रहा था कि कहीं रोजा तोड़ न दे, लेकिन कितना दबाव डाले! सरवर तंग कर सकता है।

जमाल ने नूरी से कल बाहर जाने की बात कही। नूरी उदास हो गयी। अपने जमाल से जुदा होना तकलीफदेह लगा, उसने ही सलाह दी थी जिससे थोड़ी राहत मिले। लेकिन राहत दिलाने के साथ जुदाई की हालत आ गयी। उसका दिल घबरा उठा, वह बोल उठी-'आप जुदा होना चाहते हैं, लगता है मुझसे ऊब गए हैं।'

'नूरी! इंसान अपनी जिन्दगी से जल्दी नहीं ऊबता। सौदागर बनने पर जहां-तहां जाना ही पड़ेगा, यादों के सहारे सफर कटेगा, और -फिर उछाह के साथ पैर लौटने लगेंगे।'

'यहां तो ख्वाबों और ख्यालों में जीना बड़ा दुशवार लग रहा है।'

'कभी-कभी ख्वाबों और ख्यालों में जीना अच्छा लगता है, नूरी! चांद का छिपना और उग आना बुरा तो नहीं लगता।'
'तो आप सब्र का इन्तहान लेना चाहते हैं?'
'हम दोनों का इम्तहान तो हर कदम पर हो रहा है। तुम खुशीखुशी विदा दो।' 'खुशी-खुशी रुखसत करूंगी, लेकिन जुदा नहीं हो सकूँगी।'
'इसका क्या मतलब है, नूरी?'
'मतलब यह है कि तसव्वुर में आपकी तस्वीर झलकती रहेगी। उससे जुदा नहीं हो सकूगी।'
'यह तो मैं कहना चाह रहा था, मेरी बात तुमने छीन ली।'
दोनों मुस्करा उठे।
दूसरे दिन जमाल ने बैलगाड़ी पर कपड़ों को लादा, सरजू को साथ ले लिया। खुद भी बैठ गया, गाड़ी मथुरा की ओर चल पड़ी। सरवर अली ने दूर से ही देख लिया।

सरवर ने सोचा कि जमाल हफ्ते भर के लिए दूसरे शहर में जा रहा है। वह गैरहाजिर रहेगा, उधर हेमचन्द्र भी बाहर गया हुआ है। माकूल वक्त है, वह कुछ कर सकेगा। वैसे रमजान में चुप रहना चाहिए। सबकी नाराजगी हो सकती है, लेकिन ऐसा मौका बार-बार नहीं आएगा। अब नूरी को छेड़ना बेकार है, लेकिन जमाल याने मोहनलाल से बदला लेना है। इसे छोड़ना नहीं है। हेमचन्द्र के आने पर दिक्कत हो जाएगी। आज रात में उधर जाना है और फिर देहली की ओर निकल जाना है। जमाल गुस्से में हाथ-पैर पटकता रह जाएगा। शानदार बदला होगा, बदला और दीन की खिदमत एक साथ। वाह, जनाब सरवर अली के आला दिमाग का ही ऐसा ख्याल हो सकता है! वह अपने साथियों से मिलने शराब की दुकान को ओर चल पड़ा।

रात आ गयी, हेमू मुंशो हरसुख लाल के साथ लौट आया। थक गया था। गाढ़ी नींद में सो गया।

सरवर अधरी रात में चुपके से अपने तीन साथियों के साथ बाग से टप कर भीतर आ गया। कोई आवाज नहीं हुई। सरवर निश्चिन्त था कि हेमू और मुंशी जी गैरहाजिर हैं। इसलिए वह लक्ष्मीभवन के पिछवाड़े से घुसा, भवन के आंगन में पहुंच गया। पैरों की आवाज सन्नाटे में फैल गयी। सोहनलाल की नींद टूट गयी, पैरों की आहट बढ़ी। आंखें खुल गयीं, पास की कोठरी से दुर्गा कवर के साथ पार्वती सोयी थी। सरवर खिड़की के पास पहुंचा, सोहनलाल मोमबत्ती जलाने की कोशिश कर रहे थे। सरवर कुछ क्षणों के लिए अकचकाया। सोहन लाल हुलास और हेमचन्द्र को पुकारने लगे। द्वार भी खोल दिया, सरवर का एक साथी कमरे में घुस आया। सोहनलाल के मुंह को बन्द करने की कोशिश की, उधर दुर्गा कुंवर की नींद टूट गयी। खिड़की से झांका, काली लम्बी छायाओं को देख ‘चोर-चोर' बोल उठी। सरवर अपने साथी के साथ दुर्गा कुंवर के कमरे में आ गया।

लक्ष्मी वाटिका के कक्ष में सोये हेमू को प्यास लगी। वह पानी पीने उठा, आवाज सूनी! वह तलवार उठाकर चल पड़ा। वह लक्ष्मीभवन के भीतर पहंच गया। सेठ जी के कक्ष की ओर बढ़ा। सरवर का साथी तलवारधारी को देख उल्टे पैरों भागा। हेमू झपटा। पास

के कक्ष से चीखने की आवाज आयी। सरवर पार्वती को पकड़ कर कमरे से बाहर आ गया। ओसारे से आंगन की ओर बढ़ा। हुलास ने भी भवन के पिछवाड़े मोमबत्ती जला दी थी। हल्का-हल्का प्रकाश आने लगा। हेमू ने सरवर को ललकारा। उसका एक साथी तो बाग की ओर भाग चुका था। सरवर के हाथ में लाठी थी, कमर में खंजर था। दूसरे के पास भाला था। दोनों हेमू से मुकाबला करने के लिए आगे आए। हेमू के प्रहार से पार्वती सरवर के बन्धन से मुक्त हो गयी। वह कांपती हुई अपनी मां के पास आयी। सोहनलाल भी उसके पास आ गये। हेमू दोनों से मुकाबला कर रहा था। उसके प्रहार से लाठी और भाले टुकड़े-टुकड़े हो गए थे। उसका साथी भागने लगा, हेमू ने सरवर को पकड़ लिया।

'चोर-चोर' की आवाज से वस्ती के लोग जग गए थे। वे लाठीभाले लेकर आ गये। मुंशी हरसुख लाल ने गश्ती करते सिपाहियों को खबर दी, सिपाही भी पहुंच गए। सिर्फ पड़ोस के शाह हरखलाल की नींद नहीं टूट सकी थी।

लोगों ने सरवर के एक साथी को पकड़ लिया। इधर हेमू ने सरवर को सिपाहियों के हवाले कर दिया, पर क्रोध में उफनता रहा। अंधेरी रात में सिपाही कैदियों को ले जा रहे थे। हेमू का क्रोध धीरे-धीरे शान्त होने लगा। बस्ती के लोगों ने हेमू को बधाई दी कि उसके कारण चोरी नहीं हो सकी। हेमू इस कांड के सूत्र को समझने की कोशिश कर रहा था।

सोहन लाल और दुर्गा कुंवर दोनों श्रीकृष्ण का नाम ले रहे थे। उन्हें लगा कि भगवान ने ही हेमू को रक्षा के लिए भेज दिया है। उनके मन में हेमू के प्रति प्यार उमड़ आया। पार्वती का कांपना भी धीरे-धीरे बन्द हो गया था। वह मोमबत्ती के हल्के-हल्के प्रकाश में खड्गधारी हेमचन्द्र को देख रही थी। और सोच रही थी कि उस बार ये पारो को बचा नहीं सके थे, इस बार तो इन्होंने पारो को बचा लिया है।

हेमू ने एक बार सबको देखा, सबको विश्राम करने का परामर्श दिया, और फिर अपनी तलवार संभाले वाटिका की ओर चला गया। किसी की इच्छा नहीं थी कि वह आंखों के सामने से दूर जाय। पर वह दूर हो रहा था, विश्राम की बात तो ठीक ही है।

हेमू सोचता हुआ अपने कक्ष में आया कि वह उस बार पारो को बचा नहीं सका था। देर से संवाद मिला था। जब सब कुछ समाप्त हो चुका था, तब वह दौड़कर गया था केवल राख पा सका था। इस बार चूक नहीं हुई। समय पर पहुंच गया, हाथ में तलवार भी थी। योगी शिवनाथ की प्रेरणा थी, इस बार पार्वती (पारो) को बचा लिया। तो यह सरवर मोहनलाल से बदला लेने आया था! मोहनलाल की बहन के अपहरण से बदला लेना चाहता था। सोच कर चला होगा कि हेमू बाहर गया है, पर वह संयोग से आ गया था। सरवर को नूरी नहीं मिली तो पार्वती को चुराने आया। नूरी का बदला....! उसके रहते कैसे हो सकता था? वह भस्मी के डब्बे के पास झुक आया।

अट्ठाईस

दूसरे दिन आगरा शहर में सेठ सोहन लाल के घर चोरी होने का रोमांचकारी संवाद फैल गया। किशनपुरा के चौराहे पर लोग बातचीत कर रहे थे-'हेमचन्द्र ने बड़ी वीरता से चोरों से मुकाबला किया, और चोरों को सिपाहियों के हवाले कर दिया। सेठ जी के सारे स्वर्णाभूषण और चांदी के सिक्के बच गए। चोर तो बड़ी चतुराई से गया था। अंधेरी रात, मुंशी जी और हेमचन्द्र का बाहर होना खूब सोच-समझ कर वे फुलवाड़ी के पीछे से घुस गए थे, लेकिन हेमचन्द लौट आया था। चोरों की सारी चतुराई निकल गयी। हेमचन्द्र की तलवार से वे बच नहीं सके। कमाल तो यह है कि न कोई मारा गया और न घायल हुआ। कुछ भाग गये, कुछ पकड़ में आ गये।'

अपने कोठे पर बैठे-बैठे हरखलाल को बातचीत सुनायी पड रही थी। बातचीत अच्छी नहीं लग रही थी, अचरज हो रहा था कि हेमचन्द्र ने कैसे सब बचा लिया!

सिकन्दराबाद के चौराहे पर लोग कह रहे थे – रमजान के महीने में चोरी! यह बहुत ही बुरी बात है, अफगान बादशाह माफ नहीं करेगे। काजी जी माफ नहीं कर सकेंगे, कोई भी हो, सजा तो मिलेगी ही। यही इंसाफ भी है, सरवर अली पकड़ा गया है। यह चोरी करने क्यों गया? अमीर नहीं है, गरीब भी नहीं है। दौलत की भूख...! जमाल से दुश्मनी है क्या? मोहनलाल मुस्लिम बिरादरी में आ गया है। फिर उससे दुश्मनी क्यों? उसके वालिद के दौलतखाने में यह हरकत...। इसे दौलत चाहिए...इस रमजान में! या अल्लाह!

मस्जिद में बैठे कुछ लोगों के बीच मुल्ला साहब भी गुस्सा जाहिर कर रहे थे। लेकिन एकाध लोग सरवर को बचाने के लिए अर्ज करने लगे। नहीं तो बड़ी फजीहत होगी। मुल्ला का गुस्सा ठण्डा हो गया। दिमाग में यह बात आ गयी कि सिफारिश होनी चाहिए, किशनपुरा के लोगों में फजीहत न हो।

उधर इत्रफरोश इलाहीबख्श भी सोचकर परेशान हो रहा था। उसे लगा कि सरवर ने जमाल से बदला लेने के लिए ऐसा किया होगा। हो सकता है कि उसकी बहन को गायब करने के ख्याल से गया हो। सरवर को तो दौलत चाहिए, औरत चाहिए और चाहिए शराब। यह गुनहगार है- रमजान में ही गुनाह की राह पर दौड़ पड़ा। इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा, लेकिन उसे चुप रहना है। घर के भीतर नूरी को भी यह खबर मिल गई। वह गुस्से में बिफर रही थी, उसे बात समझ में आ गई थी कि वह बदला लेने के लिए चोर करने गया था। पता नहीं- दौलत पर हाथ फेरने गया था या इनकी बहन पर हाथ डालने। उसकी अम्मा ने शान्त करने की कोशिश की। उसने कहा'जरा ख्याल करो, अम्मा! इन्होंने मजहब बदल लिया, वे सब कुछ छोड़कर अपनी रोजी-रोटी के लिए खाक छान रहे हैं, और यह गुनाहगार उनके घर पर चोरी करने गया, जरूर इनकी बहन को गायब करने गया होगा।'

'खुदा भी उसके गुनाह को माफ नहीं करेंगे, बेटी!'

'वे लौटकर आयेंगे, सब सुनेंगे, तब वे क्या सोचेंगे? ये सब लोग क्या जवाब देंगे?

उन्होंने नूरी को बरबाद नहीं किया है, अपने को बरबाद कर अपनाया है।'

'नूरी! सरवर पहले से ही बिगड़ा हुआ है, बिगड़ता जा रहा है। तुझसे शादी नहीं होने के कारण पागल-सा हो गया है। अब वह कंदखाने में ही आदमी से इंसान बन सकेगा' मेहमान को तो समझाना ही पड़ेगा। मुहल्ले के बुजुर्ग और मुल्ला साहब दिल को दिलासा दे सकेंगे।

नूरी चुप रही, वह भीतर-ही-भीतर रो रही थी। वह चाह रही थी कि वह किशनपुरा जाकर सबसे मिले। उनकी तकलीफ व परेशानी में शामिल हो जाय। मुश्किल है, वह जा नहीं सकेगी। यह कितना गलत है, यह कैसा मजहब है जो दो के बीच में दीवार की शक्ल में मौजूद है!

तीसरे दिन सदर काजी के इजलास में सरवर अपने साथी के साथ हाजिर किया गया। हेमचन्द्र ने इलजाम लगाया। मुंशी हरसुखलाल ने गवाही दी। बस्ती के और लोगों ने भी गवाहियां दीं। कोतवाल ने अपनी तहकीकात पेश की, गश्ती के सिपाहियों ने अपने बयान दिए। पैरवीकार पेशकार के जरिए पैरवी पहुंचाने लगे। मुल्ला ने भी मिलकर इशारा किया।

बादशाह सलीमशाह सूरी तक यह खबर पहुंच चुकी थी। वे नाराज थे कि दारुल सल्तनत में उनके सामने रमजान में चोरी होने लगी। यह किसकी गफलत है? माफी नहीं मिलनी चाहिए। सूफी शायर मंझन ने भी यही सलाह दी कि दीनो-ईमान का तकाजा है कि कसूरवार को सजा मिलनी चाहिए। बादशाह के पास भी माफी की पैरवी पहुंचने लगी। आपसी अदावत की बात कही गई। साथ ही यह भी कहा गया कि रोजा-नमाज के पाबन्द मुसलमान को माफी मिलनी चाहिए।

बादशाह और काजी- दोनों की मुलाकात हुई। दोनों ने इंसाफ के नुख्ते को रिआया के सामने पूरी दयानतदारी के साथ पेश करना तय किया। इंसाफ की तराजू नहीं झुके। नहीं तो अफगान बादशाहत की बदनामी हो जाएगी। इंसाफ खुदापरस्ती है। इंसाफ ही ईमान है। यह ठीक है कि इस्लामी हुकूमत है। काफिरों और मुसलमानों में फर्क है, लेकिन काफिर अपनी हिफाजत के लिए जो जजिया देते हैं। चुनांचे जजिया वसूलने वाली हुकूमत का काफिरों की हिफाजत करना फर्ज है। इंसाफ पर ही हुकूमत की बुनियाद है यह खिलजी और लोदी की हुकूमत नहीं है।

इजलास में सरवर की पेशी हुई। सिकन्दराबाद के बहुत-से लोग बूढ़े और नौजवान भी मदद में पहुंचे। सफाई में कुछ कहना चाहा। इजाजत मिलने पर आपसी अदावत की बात कही गई, झूठे इलजाम में फंसाने का किस्सा भी कहा गया। सदर काजी ने हालात पर गौर करते हुए सालभर की कैद की सजा सुना दी, सिर्फ सजा में सख्ती की बात नहीं थी।

किशनपुरा के लोग हेमू के साथ खड़े थे। सबने आभार प्रकट किया। काजी साहब व बादशाह सलामत के प्रति अपनी आदर भावना को प्रकट कर दिया। सिकन्दराबाद के पठानों के सर झुके हुए थे, कटघरे में खडे सरवर की आंखों में खन खौल रहा था।

सिपाही दोनों को कैदखाने ले जाने लगे, सड़क पर भीड़ लग गई। उसी समय जमाल अहमद शहर में प्रवेश कर रहा था। उसे यह समाचार मिल गया कि आज सदर काजी ने सरवर को चोरी के इलजाम में कैद की सजा दी है। वह हथकड़ी में बंधकर कैदखाने जा रहा है। आगे सड़क पर इस नजारे को देखने के लिए भीड़ लग गई है। उसकी बैलगाड़ी रुक गई, गाड़ी में सरजू बैठा रहा। जमाल उतरकर भीड़ की ओर बढ़ गया। सिपाहियों के घेरे में सरवर जा रहा था। कभी उसकी आंखें झुक जाती थीं और कभी वह तन जाता था। जमाल ने चाहा कि उसकी आंखें मिल जाएं और तब उसका मन शान्त हो। पर वह आगे बढ़ चुका था। सिर्फ उसकी पीठ दिखाई दी, वह अधिक आगे नहीं जा सका।

जमाल मुड़ गया, सामने हेमू और सूफी शायर मंझन दिखाई पड़े। हेमू सामने आ गया, तीनों भीड़ से अलग सड़क के किनारे खड़े हो गए। जमाल पूछ बैठा-'यह सरवर कैसे पकड़ में आ गया? इसने चोरी की हेमचन्द्र ने बहादुरी से पकड़ा है, लक्ष्मी भवन के आंगन में पकड़ा है, आपको नहीं मालूम?' मंझन ने उत्तर देते हुए प्रश्न भी कर दिया।

'मैं तो मथुरा से लौट रहा हूं, मंझन साहब!'
'जमाल मोहन!...'
यह सम्बोधन सुनकर दोनों चकित हो देखने लगे।
'अचरज क्यों? फारसी और संस्कृत – दोनों पास-पड़ोस की भाषाएं हैं। दोनों मिलकर चलें तो हर्ज क्या है? जमाल अहमद जमाल मोहन भी हैं। पहले से मोहन हैं, अब जमाल हैं, दोनों साथ-साथ रहें।' शायर ने मुस्कराते हुए बताया।
दोनों मुस्करा उठे, शायर मंझन का विचार दोनों को अच्छा लगा।

'हां, तो मैं कह रहा था कि सरवर ने लक्ष्मी भवन में चोरी करने की कोशिश की थी। हेमचन्द्र ने पकड़ लिया। काजी साहब ने इंसाफ किया, अब सारे शहर में हलचल है।'

'इसने कैसे हिम्मत की?'

'उसने सोचा कि हेमचन्द्र बाहर गया है, दौलतखाना सूना है। जमाल अहमद के वालिद को तंग किया जाय।' मंझन साहब ने स्पष्ट किया।

हेम ने चोरी के वास्तविक रूप को बताना उचित नहीं समझा, वह चुप रहा, केवल शीश हिलाया।
'मैं मथुरा से लौट रहा हूं, मैं भी बाहर ही गया था। हथकड़ी में सरवर को देख लिया, मन को संतोष हो गया। इसकी शैतानी पर रोक लग गई।' जमाल ने कहा।

'अब आप जायें, आराम करें। फिर भेंट होगी एक बार मां जी से आकर अवश्य मिलें।' 'जरूर, मां मां हैं। मजहब बदलने से मां नहीं बदल जाएंगी। अपनी धरती मां नहीं बदल जाएगी।' शायर मंझन ने अपना विचार रखा।
'आपके समान सभी क्यों नहीं सोच पाते, मंझन साहब?' जमाल ने पूछा।
सिर्फ सूफी ही दिलोदिमाग के दायरे को बढ़ाने के लिए सोच पाते हैं, और इसलिए दकियानूस नाराज रहते हैं। हम फिर मिलेंगे तो सूफी ख्यालात पर बातचीत करेंगे।

कोई इंतजार कर रहा होगा।' मंझन ने विनोद भी कर दिया।

सभी मुस्करा उठे। जमाल को ख्याल आया कि बैलगाड़ी रास्ते में खड़ी होगी। वह उसी तरफ चल पड़ा, आगे बढ़कर देखा कि बैलगाड़ी धीरे-धीरे आ रही थी। वह चौराहे पर साथ होकर सिकन्दराबाद के बाजार में मुड़ गया।

'नूरी ने जमाल की आवाज सुनी, उसका हृदय धड़क उठा। जमाल घर के भीतर आया, उसने देखा कि नूरी उसके पैरों पर झुक रही है। वह गद्गद् हो उठा, उसने नूरी को उठाया, नूरी की पलकें झुकी हुई थीं। दो क्षण के बाद उसने जमाल को आराम करने के लिए कहा। जमाल तो सफर की सारी थकान भूल चुका था।

शाम हो रही थी। रोजा तोड़ने का वक्त आ गया, जमाल खाट पर लेटकर याद करने लगा कि मथुरा में उसने सरजू को समझा दिया था। वह सूरजमल के रूप में धर्मशाला में ठहरा। सूरजमल के रूप में हाट में मिलने लगा। कपड़ों की बिक्री होने लगी। परन्तु एक व्यवसायी को मोहनलाल के विवाह और धर्म-परिवर्तन की बात मालूम थी। उसके भाइयों ने सेठ सोहनलाल के बेटे मोहनलाल के प्रेम-विवाह की चर्चा की। उसने 'हां में हां' मिला दिया। संयोग से वह व्यवसायी दिल्ली की तरफ गया था। वह पहचाना नहीं जा सका, लेकिन उसे आगरे से आया जानकर मोहनलाल के बारे में लोग पूछते रहे। वह इधर-उधर की बातें कहकर टाल देता था।

किसी ने कहा कि सेठ सोहनलाल की कन्या का विवाह कैसे होगा?

दूसरे ने कहा कि मोहनलाल मुसलमान बनकर ससुराल में रहता है। सोहनलाल का घर शुद्ध है, पवित्र है।

तीसरे ने मुंह बनाकर कह डाला था कि सोहनलाल का वंश डूब गया। यह सब सुनकर उसका हृदय आहत हो उठता था। वह कुछ सोचने के लिए विवश हो जाता था, वह क्या करे? क्या वह प्रायश्चित करे? क्या प्रायश्चित का विधान है? पंडित गणेशीलाल की पोथी में विधान लिखा हुआ है?

सहसा मालूम हुआ कि वह व्यक्ति दिल्ली से लौट रहा है जो उसे पहचानता था। वह वहां से चल पड़ा। और यहां सरवर की हरकतें... कहों भी चैन नहीं है। कहीं उसके भाई-बन्धु उसे भ्रष्ट मानकर अपने से दूर भगा रहे हैं। कहीं सरवर जैसे लोग उस पर बार-बार चोट कर रहे हैं। वह कहां जाय! क्या करे?

नूरी पास में आ गई थी। वह धीरे-धीरे बोल रही थी-'आप सो गए हैं?'

'अभी तो जगा हुआ हूं।'

उनतीस

'एक बार हम लोगों को घर पर मां से मिलने जाना चाहिए। वहां सभी बाल-बाल बच गए हैं-- हेमचन्द्र की जवांमर्दी से।'

'क्या कह रही हो? सरवर सबको मारने गया था?'

'नहीं, उसकी नजर पार्वती पर रही होगी। वह सिर्फ दौलत के लिए नहीं गया होगा, यह मेरा अन्दाज है।'
यह सुनकर जमाल को धक्का लगा, वह खाट से उठकर बैठ गया। आंखों में क्रोध उबलने लगा।
'खुदा ने हिफाजत की है-हेमचन्द्र के जरिए। हम लोगों को चलना चाहिए।'
'जरूर चलो। पर तुम कैसे चलोगी?' 'जैसे भी हो। इस हालत में मिलने जाना फर्ज है।' जमाल को लगा कि नूरी ठीक कह रही है। दोनों जाने के लिए तैयार हो गए। कोई रोक नहीं सका, रात हो गई थी। वे दोनों गलियों से होते हुए लक्ष्मीभवन के पिछवाड़े पहुंच गए। आवाज दी। मुंशीजी ने द्वार खोला, दोनों को देख गद्गद हो उठे। कमरे में सादर बैठाया। भीतर संवाद भेजा।

दुर्गा कुंवर और पार्वती–दोनों अपने दुःख को भूलकर आ गईं। जमाल और नूरी-दोनों मां के पैरों पर झुक गए। मां की आंखों में आंसू आ गए। पार्वती भैया-भाभी को देख बेसुध हो रही थी।

जमाल ने चोरी के बारे में पूछा। मां ने सब कह सुनाया। उसका रक्त उबाल खाने लगा।

हेमू के साहस का प्रसंग आया, उसे सन्तोष हुआ।

‘बेटे! तू तो अब जमाल कहाता है। मैं तो मोहन कहती रही हूं। मैं कैसे बदल जाऊं?' दुर्गा ने व्यथा के स्वर में पूछा।
'आप वही कहें, मां!' नूरी की शीरी जुबान सुनाई पड़ी।
'हां, मां! आज सूफी शायर मंझन साहब ने मुझे जमाल मोहन कहा है। आप तो मोहन ही कहें, आप चाहें तो पण्डित गणेशीलाल जी से प्रायश्चित का विधान पूछ लें।' जमाल ने अनुरोध किया।
‘जरूर पूछंगी।"
कल शाम को चांद दिखाई पड़ गया था। आगरा के सिकन्दराबाद मुहल्ले में खुशी की लहर दौड़ गई।
ईद की सुबह आयी, घर-घर में बूढ़े-बच्चे नहा-धोकर नये कपड़े पहनने लगे। लोग ईदगाह जाने की तैयारी में लग गये। इलाहीबख्श ने इस त्यौहार के लिए अपनी तरफ से जमाल के कपड़े बनवाये थे। जमाल नहाकर कमरे में आया, दरवाजे पर इलाहीबख्श ने खुशी- खुशी पायजामा, मिरजई और दुपलिया टोपी जमाल की ओर बढ़ायी। वह इन्हें देखता रह गया। दो क्षण के बाद बोला- 'क्या ये जरूरी हैं? मैंने इन्हें कभी पहना नहीं है।'

'अपना त्यौहार है, बेटे! जमाल के बदन पर यही लिबास फबेगा!'

'अपने हिन्दुस्तान में दूसरे देश के लिबास की क्या जरूरत है?' 'जैसे रोजा को निभा लिया, वैसे आज भी निभा लो।'

'लेकिन मजहब पायजामा और मिरजई में तो नहीं है। क्या खुदा इसी कपड़े को पसन्द करते हैं?'

'बहस नहीं, जमाल! मुसलमान हो तो मुसलमानी कपड़े पहनो। ईदगाह भी चलना है।'

नूरी का सर झुका हुआ था, जमाल ने मन मारकर इन कपड़ों को पहना, और नूरी से इजाजत ले इलाहीबख्श के साथ ईदगाह की ओर चल पड़ा। दल के दल लोग जा रहे थे। बूढ़े-बच्चे- जवान उमंग में बढ़े चल रहे थे। लग रहा था कि सिकन्दराबाद के जर्रे-जर्रे में त्यौहार की मस्ती छा गई है।

ईदगाह के मैदान में सैकड़ों सर पश्चिम की तरफ झुक रहे थे। सिजदा कर रहे थे। जमात में नमाज अदा की जा रही थी। नजारा बड़ा ही खुशगवार था।

नमाज के बाद इमाम ने ईद के मौके पर तकरीर देते हुए सबको मुबारकबाद दी। इसके बाद ही सब एक-दूसरे को मुबारकबाद देने लगे। गले मिलने लगे। 'ईद मुबारक' के शब्द गूंज उठे। सिकन्दराबाद के जाने-पहचाने बुजुर्ग और हमउम्र लोग जमाल को इस लिबास में देख मुस्कराकर बधाई देने लगे। उसने होंठों पर हंसी लाकर बधाई को कबूल किया। उनका मुस्कराना उसे अच्छा नही लगा, पर ईदगाह का नजारा उसे अच्छा लगा।

वह अकेला ही लौट आया। नूरी ने इत्र के फाहे और मन्द मुस्कानों के साथ मुबारकबाद दी। और फिर रकाबी में मीठी सेवईं का तोहफा सामने आ गया। उसके चेहरे पर उल्लास झलक उठा, वह सेवईं खाने लगा। नूरी पंखा झलने लगी।

शाही किले के भीतर ईद की नमाज और मुबारकबाद के बाद शाही दरबार की तैयारी हो रही थी। तीसरे पहर दरबार होने वाला था, वक्त नजदीक आ रहा था, इसलिए चहल-पहल बढ़ गई थी। दरबार की आलीशान इमारत सूरज की रोशनी में चमक रही थी।

नौबतखाने में नौबत बजना शुरू हो गया। दरबारी आने लगे। अफगान अमीर, सरदार, जागीरदार और महकमों के वजीर अपनीअपनी जगह लेने लगे। नफीरी की आवाज में ईद मुबारक का तराना कानों में रस घोलने लगा। सभी बादशाह सलामत का इन्तजार करने लगे। हेमू को तलब किया गया था, वह भी मफी शायर मंझन के साथ आ गया। शहनाई के मधर संगीत के मध्य सजे-धजे दरबार में उसने प्रवेश पा लिया। उसे पीछे जगह बता दी गई, वह बैठ गया। मंझन साहब को आगे जगह मिली, हेमू बड़ी उत्सुकता से दरबार की शानशौकत को देखने लगा। दीवार, छत और खंभों की सुन्दर पच्चीकारी मन को मोह रही थी, ऊपर चारों तरफ शीशे और बिल्लौर के कंवल, कन्दीलें, झाड़, फानूस और कुमकुम इमारत की शोभा बढ़ा रहे थे। आगे ऊंचे चबूतरे पर जरीदार मखमल की चादर पर सोने और

चांदी से बना अठपहल तख्त मौजूद था। उसके ऊपर जरदोजी का जड़ाऊ छत्र फैला हुआ था। झालरों में जवाहरात झिलमिला रहे थे। रोशनी के लिए शमादान की कोई जरूरत नहीं थी। छत्र के ऊपर पीछे की दीवार पर मखमली पर्दे में दो तलवारों के बीच गरजता शेर सब पर रौब डाल रहा था, यह अफगान सल्तनत का निशान था। शमशीर और नेजे लिए खास फरमाबरदार खड़े थे।

नक्कारे पर चोट पड़ी। नौबत की आवाज ऊंची हो गई, बादशाह सुनहले तामझाम पर आ रहे थे। आगे-आगे हाथी और घोड़ों पर झंडे और अलम फहरा रहे थे। ईरानी वाद्य बज रहा था, पैदल फौज की खास टुकड़ी अपने रंगीन लिबास और रौबदार चेहरे के साथ चल रही थी।
बादशाह सलीमगाह सिपहसालार शादी खां, वजीरे आजम और शाही इमाम के साथ अपने तामझाम में दरबार की ओर बढ़ रहे थे।

दरबार के दरवाजे पर वजीरों ने कोर्निश करते हुए बादशाह का इस्तकबाल किया।
बादशाह शहनाई की मीठी धुन के साथ दरबार के बीच से होकर तख्त पर पहुंचे।
तख्तनशीन हुए। बाहर ईरानी साजों की विशेष धुनें बजने लगीं। कुछ लमहों के बाद सब शान्त हो गया। दरबार की कार्रवाई शुरू हुई।

सबसे पहले शाही इमाम ने कुरान शरीफ की आयतों का पाठ किया। शहंशाहे हिन्द सलीमशाह सूरी को ईद की मुबारकबाद दी। फारसी के एक शायर ने बादशाह सलामत की खिदमत में ईदी पेश की। सूफी शायर मंझन ने भी देशी भाषा अवधी में बधाई गीत सुनाया।

बादशाह ने तख्त से उठकर अपने दरबार के सारे सरदारों और अपनी सारी रिआया को ईद के मौके पर मुबारकबाद दी। दरबार के सारे सरदारों तथा वजीरों ने उठकर इसे कबूल किया।

वकील (मुख्य सचिव) के इशारे पर सदर मुहतसिब ने उठकर बताया कि ईद के मौके पर सल्तनत के सभी मदरसों, मस्जिदों और खानकाहों को सरकारी खजाने से खैरात दे दी गयी है।

बादशाह ने कागज पर नजर डाली। अपनी खुशी जाहिर की, दीवाने-वरीद (जासूसी महकमा) के वजीर ने उठकर कहा कि पंजाब में हमारे जासूसों ने ख्वास खां और हैवत खां नियाजी को जुदा कर दिया है। सूबेदार हैवत खां ने ख्वास खां को अपने पास से हटा दिया है, वह कश्मीर की ओर भाग रहा है। ईद के मौके पर कामयाबी का तोहफा कबूल हो।

सारे दरबार में खुशी का आलम छा गया। हेमू का हृदय नाच उठा, मन में ही बुदबुदाया-'पारो! मैंने तेरी मौत का बदला ले लिया। तेरी आत्मा को शान्ति मिले। काश, वह कश्मीर घाटी में दबोच लिया जाता।'

दीवाने अरीज का वजीर उठा। सिपहसालार शादी खां से नजरें मिलीं, शादी खां का सर हिला। उसने अफगानी फौज का हाल बयान किया कि हर फौजी छावनी चुस्त और चौकस है। सब जगह कवायद जोर-शोर से चलने लगी है। फौजी भर्ती का काम शुरू है कि वे कमसे-कम

सैकड़ों में भर्ती हो जायें। लेकिन अभी शुरुआत है, तादाद कम हो सकती है। कुछ हिन्दी मुसलमानों ने भी भर्ती होने का जोश दिखाया है। हर तरह से जांच कर हम उन्हें ले रहे हैं। हम हिन्दुस्तान की जमीन पर मुगलों के पैर नहीं बढ़ने देंगे।

हेमू प्रपन्न हुआ। यह तो अच्छा लक्षण है। गजराज सिंह, बहादुर खां, विजयवाहन, चौधरी खेमराज और धर्मपाल शर्मा को कहने-सुनने से बात बन गयी। रास्ता खुल गया।

बादशाह ने सिपहसालार शादी खां की ओर देखा, शादी खां ने झुक कर बधाई दी। बादशाह ने शाबासी दी।

आखीर में बादशाह कुछ ऐलान करने के लिए उठे। सारे दरबार में सन्नाटा छा गया, सभी चौकन्ने हो गए। सभी किसी नये ऐलान का इन्तजार करने लगे, सबकी नजरें बादशाह पर थीं। दिल सबके हाथों में था।

बादशाह सलीम शाह सूरी की आवाज गूंजी-'आज ईद के मौके पर हम बहुत खुश हैं। पंजाब की कामयाबी हेमचन्द्र की सलाह की वजह से मिली है, मैंने इनाम देने का वादा किया था। आज वह वक्त आ गया है, मैं बड़े फख्न से हेमचन्द्र को नगर सेठ के नुमाइन्दे की हैसियत से दरबार में जगह देता हूं, उसे जब-तब जरूरत के मुताबिक दीवाने खास में भी बुलाया जा सकता है। मैं चाहूंगा कि हेमचन्द्र मेरे हाथों से खिलअत और सनद कबूल कर ले।'

नफीरी बजने लगी।

मंझन ने हेमचन्द्र को बधाई देते हुए तख्त की ओर भेजा। हेमचन्द्र बादशाह के पास पहुंच गया, तीन बार झुक कर सलाम किया। बादशाह के हाथों खिलअत और सनद को कबूल कर फिर से कोनिश की। और धीरे-धीरे पीछे हट गया।

दरबार में नारे लगे-शहंशाह का इकबाल बुलन्द हो! बादशाह सलामत जिन्दाबाद! अफगान हुकूमत जिन्दाबाद!

दरबार की कार्रवाई बन्द हुई। पूरे अदब-कायदे के साथ बादशाह शाही महल की ओर तामझाम में साथ चल पड़े। आसमान में झण्डे लहरा रहे थे। बाजे बज रहे थे।

सारे शहर में बादशाह के इस ऐलान पर बातचीत शुरू हो गयी। हरेक होंठों पर हेमचन्द्र का नाम आ रहा था। किशनपुरा में तो वह आश्चर्य, हर्ष और आदर का पात्र बन गया, लगा कि वह सारे हिन्दुओं का अगुआ बन गया है उसके जरिए अफगान बादशाह ने हिन्दुओं के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है।

हरखलाल को यह चर्चा अच्छी नहीं लगी। वह अपने श्रीविलास के कक्ष में चक्कर लगाता हुआ बुदबुदाने लगा कि इससे क्या हो जाएगा। इससे भाई सोहनलाल की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ जाएगी। अब न पंडित गणेशो लालजी लक्ष्मीभवन में जायेंगे और

न जातिबन्धु। इनकी प्रतिष्ठा तो कौड़ी के मोल बिकेगी। पर इनका प्रभाव तो बढ़ जाएगा। हेमचन्द्र यानी हेम् को दरबार में स्थान मिल गया, इसने कौन-सा जादू कर दिया! लक्ष्मीभवन के द्वार पर बधाई देने वालों की भीड़ लग रही है। वह क्यों जाय ? सोहनलाल के नौकर को बधाई देने जाएगा? नहीं! कभी नहीं।

तीस

सिकन्दराबाद में यह खबर सड़क-सड़क और गली-गली फैल गयी। जमाल ने सुना, बहुत खुश हुआ। क्षणभर के लिए लगा कि उसे ही सम्मान मिला है। सहसा उसके भीतर कुछ कौंधा। वह सोचने लगा कि क्या यही भाग्य-लेख है? सेठ सोहन लाल का पुत्र वह है। पर नगर सेठ का सम्मान हेमचन्द्र को मिला, लक्ष्मीभवन के एक कर्मचारी को यह ओहदा मिल गया। यह भाग्य का कैसा चक्कर है! उसने हिन्दू के रूप में सम्मान पा लिया। वह जमाल अहमद बन कर भी घुट रहा है। मथुरा में उसके कुल-परिवार का स्मरण कर लोग अशुभ बोल बोल रहे थे। उसकी निंदा कर रहे थे, वह पहचान के डर से चला आया। और यहां उसके घर पर उसकी बहन पर सरवर ने हाथ डाला। लगता है कि वह न घर का रहा न घाट का, यह तो संयोग की बात थी कि हेमू ने साहस से सरवर को पकड़ लिया। सदर काजी ने इंसाफ कर दिया। नहीं तो सरवर और उपद्रव कर सकता था, आगे भी कर सकता है-कैदखाने से रिहा होकर।

कुछ लोगों ने सरवर के लिए पैरवी की थी। यह पक्षपात था." हेमचन्द्र के सम्मान पर भी ये खुश नहीं हैं क्योंकि वह काफिर-हिन्दू है। ओह अजीब दिल-दिमाग है। चूंकि वह जमाल अहमद बन गया है, इसलिए उसे प्यार दिया जाता है। यह मजहबी प्यार है, पर नूरी का प्यार हृदय से प्रकट हुआ है।

हेमू बुद्धिमान है, साहसी है, शस्त्रधारी भी है। उसने बादशाह को सही सलाह देने की कोशिश की। बादशाह ने माना, कामयाबी मिली। इसीलिए उसे सम्मान मिला, वह बेकार ईर्ष्या कर रहा है। ईर्ष्या उचित नहीं है, यह जरूर है कि हेमू सेठ सोहनलाल के जरिए बादशाह तक पहुंच सका है। सेठ का पुत्र तो भटक रहा है, यह बुद्धि की करामात है या भाग्य की? कुछ भी हो, हेमू को बधाई मिलनी ही चाहिए।

अचानक नूरी ने आकर पूछा-'हुजूर! उधर गुलों ने चादरे-शबनम में मुंह लपेट लिया है, इधर लबों पर कलियों की मुस्कराहट सो गई है। बात क्या है?'

'आओ, नूरी! बात यह है कि उषा की लाली देख कर ही कंवल मुस्कराता है।'

'आंखों में तो फिक्र की लकीरें झलक रही हैं।'

'अरे भई! हेमचन्द्र को शाही दरबार में जगह मिल गयी है। मैं सोच रहा हूं कि

लक्ष्मीभवन के नौकर की किस्मत से डाह करूं या उसे बधाई दूं।'

'उसे मुबारकबाद दें...."डाह क्यों? मेरी ओर से भी...।'

'दूर एक गांव से आया हुआ आदमी इतना आगे निकल गया... और मैं आंखें फाड़कर देख रहा हूं।'

'यह तो फल की बात है कि सेठ जी के नुमाइन्दे को दरबार में जगह मिली है। आपको बधाई देने जाना है।'

'कहती हो तो जरूर जाऊंगा।'

सुबह जमाल किशनपुरा जाने के लिए तैयार होने लगा। वह नूरी से मिलकर चल पड़ा, गलियों से होता वाटिका के द्वार पर आ पहुंचा। हेमू गजराज सिंह के साथ शस्त्राभ्यास कर रहा था। मुंशी हरसुख लाल का पूजापाठ चल रहा था। उसने द्वार पर आवाज दी, द्वार तो खुला ही था। वह भीतर आ गया, हेमू के शस्त्राभ्यास को देखा। उसे थोड़ा अचरज-सा हुआ। बाद में समझ गया कि हेमू योद्धा कैसे बन गया! इतना साहसी कैसे हो गया! वह देखता रहा, थोड़ी देर के बाद शस्त्राभ्यास पूरा हुआ। पसीने से लथपथ हेमू ने जमाल अहमद को देखकर प्रणाम किया। जमाल ने उसके जुड़े हुए हाथों को अपनी हथेलियों से थामकर कहा- 'हेमचन्द्र! मेरी बधाई स्वीकार करो। नूरी ने भी मुबारकबाद दी है।'

'यह तो आप दोनों की मंगल कामना का फल है।' हेमू ने उत्तर दिया।

'हेमचन्द्र! तुमने मेरी बहन की रक्षा की है। मैं तो कुछ नहीं कर सका। मन को बड़ी चोट लगी है, मैं तुम्हारा कृतज्ञ हैं। और तुमने पहली बार अफगान हुकूमत में हिन्दू के रूप में सम्मान पाया है। यह बहुत बड़ी बात है, मैं तो जमाल अहमद बन गया हूं। पर खून तो वही है। खून और खून के सम्बन्ध को तोड़ा नहीं जा सकता। इसे तोड़ना मनुष्यता के विरुद्ध होगा।'

'आप सही ढंग से सोच रहे हैं। सभी हिन्दी मुसलमानों को इसी ढंग से सोचना चाहिए। लोग चाहें तो कबीर की वाणी से प्रकाश मिल सकता है। राम-रहीम और कृष्ण-करीम का पथ दिखाई पड़ सकता है।'

'यह रास्ता मिल जाय तो चैन मिले।'

'हिन्दी मुसलमानों के लिए यही रास्ता सही है।'

'इस रास्ते पर चलने के लिए रोटी का प्रबन्ध हो जाना चाहिए। कर रहा हूं।'

'वह आप संकल्प और परिश्रम से कर लेंगे। और फिर निर्भीकता के साथ अपने घर में बसें।'

'बहिष्कार और दबाव--दोनों से बचने के लिए यही करना पड़ेगा।'

'आपकी शंका उचित है। बहिष्कार करने वाले पंडित-पुरोहित सोचते हैं कि बाहर से आया हआ मजहब हमलावरों के साथ आया है। ये हमलावर रक्तपात करते हैं। गुरुकुलों, मन्दिरों और मठों का विध्वंस करते हैं। ये जुल्मी बनकर शासन करते हैं, इस नये मजहब वालों का खान-पान और रहन-सहन हमसे अलग हैं। हमारे आदर्शों से भिन्न हैं। इसलिए इनसे दूर रहो, जो कोई इनके निकट पहुंच जाता है, उसका बहिष्कार कर दिया जाता है। वैसे भी पडित-पुरोहित -सबको अनगिनत नियमों-रूढ़ियों में बांधे चलते हैं।'

'इन मुल्लाओं का दबाव क्यों है?'

'एक नये मजहब का जोश है। यह सामूहिक उपासना का मजहब है, एक पैगम्बर साहब और एक पवित्र ग्रंथ के आदेशों का मजहब है। ये सारी दुनिया से कुफ्र को मिटाने और अपने मजहब को फैलाने निकले हैं। अतः ये किसी से समझौता नहीं करते, दबाव से काम लेते हैं।'

'सूफी तो दबाव नहीं डालते।'

'हां, सूफी सन्त और कबीरपंथी साधु बीच का रास्ता निकाल रहे हैं। वे समझते हैं कि सैकड़ों वर्षों से साथ-साथ रहने के बाद इतनी दूरी क्यों रहे? तालमेल जैसे मार्ग को ढूंढ़ना चाहिए। राम और रहीम की एकात्मता तथा एकता का एहसास होना चाहिए।'

'इनका सोचना तो सही है।'

'जी, हां!' यह कहकर हेमू ने घर के भीतर संवाद भेजना चाहा। पर जमाल ने रोक दिया। वह बधाई देकर निकल गया। हेमू देखता रह गया।

गजराज सिंह इन दोनों की बातें सुन रहा था। जमाल चला गया, पर वह सोचता रहा। कलेवा आया, दोनों कलेवा करने लगे। गजराज सिंह ने कहा-'हेमचन्द्र! आप बहुत दूर तक सोचते हैं। सही सोचते हैं।'

'आपकी मंगलकामना है।'

'मेरी शुभकामना है कि आप प्रजा की ओर से आगे बढ़ते जायें। मेरी तलवार आपके साथ रहेगी।'

'नहीं, गजराजसिंह! हम सबकी तलवारें इस धरती मां के लिए हैं। हिन्दू योद्धा इस सत्य को सर्वदा स्मरण रखें। अफगान बादशाह को प्रजा के पास आना है, और दोनों को मिलकर मुगलों से जूझना है।'

'यह संदेश हरेक योद्धा के पास पहुंचेगा। आप दरबार में रहकर बादशाह और प्रजा को अनुकूल बनाएं।'

'यही होना है, इतिहास बदलेगा।'

लक्ष्मीभवन के अपने कक्ष में सोहन लाल सोच रहे हैं कि हेमू तो गेहूं-चना-ज्वार-बाजरा बेचते बादशाह तक जा पहुंचा। दरबार में स्थान पा लिया, सबका सिरमौर बन गया। कल संध्या में बधाई देने वालों का तांता लग गया था। ऐसा लग रहा था कि उन्हें ही बधाई मिल रही है। पर पड़ोसी चचेरे भाई साहब हरखलाल नहीं आये। जलते रहे हैं, जलते ही रहेंगे। नीचा दिखाने की कोशिश करते रहे हैं, मोहन के जमाल बन जाने पर इनको अवसर मिल गया। पंडितजी के कान भरते रहे हैं। अब वे संभलकर कुछ करेंगे, हेमचन्द्र की बुद्धिमत्ता और निर्भीकता से प्रतिष्ठा बढ़ी है। हरखलाल पर प्रभाव पड़ा होगा। पंडितजी को संवाद भेजा है, उन्हें आना चाहिए, नहीं आयेंगे तो वे स्वयं उनके पास जायेंगे। हेमू ही जाएगा अब हेमचन्द साधारण व्यक्ति नहीं है, उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती।

बाहर से पैरों की आहट आयी। द्वार पर खट-खट् के शब्द हुए। पंडित गणेशीलाल शर्मा के आगमन का अनुमान हुआ। वे उधर उन्मुख हुए, हुलास ने द्वार खोला। पंडित गणेशी लाल को कक्ष में पहुंचाया। सोहनलाल ने सादर बैठने के लिए अनुरोध किया। हुलास ने दुर्गा कुंवर को सूचना दे दी। वे फौरन शीश झुकाए आ गयीं। पंडितजी ने सबको आशीष दी। दोनों के शीश झुके, पंडित गणेशीलाल गम्भीर बने रहे। कई क्षणों तक चुप्पी छायी रही। क्या कहा जाय, कैसे कहा जाय!

दुर्गा कुंवर ने अपने पति की ओर देखा। सेठ सोहनलाल ने आंखों से ही संकेत किया कि वे ही कुछ बोलें। दुर्गा कुंवर ने हाथ जोड़कर कहा-पंडित जी! दशहरा आ रहा है, रामायण की कथा होती रही है। आप से विनती है कि आप...।'

'अवश्य होनी चाहिए। पर आपका पुत्र धर्म-भ्रष्ट हो चुका है। समाज से पतित हो चुका है, वह धर्म-भ्रष्ट और पतित यहां आता रहा है। अब यह लक्ष्मीभवन अशुद्ध है, अनुष्ठान कैसे सम्भव है?' 'पंडित गणेशीलाल ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया।

'पंडित जी! यह तो कलि का प्रभाव है और हमारा दुर्भाग्य है, हम बहुत दुःखी हैं। भगवान राम तो निषाद से गले मिलते हैं, शबरी के जूठे बेर खाते हैं, वे अपने भक्तों को बिसार नहीं देते।'

'मैं भगवान नहीं हूं, शास्त्र के अनुसार चलने और चलाने वाला पुरोहित हूं। निषाद भ्रष्ट नहीं था, केवल निम्न वर्ण का था। भगवान की दृष्टि में ऊंच-नीच का मोल नहीं है। उनके लिए सभी समान हैं। इसलिए उन्होंने अपनाया।'

'अजामिल और गणिका को उन्होंने तार दिया था। मोहन का भी उद्धार करेंगे, वह प्रायश्चित करने को तैयार है, पंडित जी!'

'इस प्रायश्चित का विधान मेरे पास नहीं है, सेठानी!'
'तब फिर हम क्या करें?' सोहनलाल ने हताश होकर कहा।
'आप दोनों को पहले प्रायश्चित करना होगा और तब इस भवन में कथा पूजा हो सकेगी। आगे दीपावली की पूजा भी हो सकेगी।'
'बच्चे को दुत्कार कैसे दें! वह तो धर्म और समाज की गोद में में आना चाहता है।' 'तुरकन से ब्याह और धर्म दोनों साथ नहीं चलेंगे, सेठजी!'
'सुना है, पंडितजी! कि चाणक्य पंडित ने चन्द्रगुप्त का ब्याह तुरकन या यवनी से कराया था। शास्त्र में तो अवश्य विधान होगा।'
वे समर्थ थे। मैं उतना समर्थ नहीं हूं, आपको प्रायश्चित करना है। भ्रष्ट पुत्र के साथ उठना-बैठना और खान-पान नहीं होना चाहिए। नहीं तो कन्या का विवाह भी नहीं हो सकेगा। यह ध्यान में रहे, शाह हरखलाल बोल रहे थे।'
'वे तो जलते हैं। ईर्ष्या-द्वष से ऐसा बोल रहे हैं।'
'ईर्ष्या हो सकती है। पर बात तो सही है, भ्रष्ट परिवार की कन्या से कोई कैसे विवाह करेगा?'
'मेरी बेटी ने कोई अधर्म नहीं किया है। आपको तो सोचना चाहिए।' दुर्गा कुंवर ने सिसकते स्वर में कहा।
'एक व्यक्ति की समस्या नहीं है। कुल-परिवार और समाज की मर्यादा की समस्या है।' ‘एक की त्रुटि सबकी त्रुटि नहीं हो जाती। आप विचार करेंगे।'
'यह त्रुटि नहीं है। यह तो धर्म भ्रष्ट होकर समाज से अलग हो जाना है। आप लोग कन्या के विवाह तक उससे दूर रहें। पतित पुत्र से क्या मोह-माया?'
'आप हरखलाल को समझा दें, वे ईष्यविश उपद्रव खड़ा न करें।'
'मैं समझा दूंगा, आप प्रायश्चित करने को तैयार हों तो मैं आ जाऊं।'

'जैसी आपकी आज्ञा हो।' पति-पत्नी एक साथ बोल उठे।

पंडित गणेशीलाल शर्मा गंभीर मुद्रा में मंगल कामना करते हुए चले गये। इन दोनों के मन का भार कुछ कम हुआ, पर वे जो चाह रहे थे, वह तो नहीं हो सका, बेटी के लिए यह सब करना पड़ेगा।

इसी चिंता में संध्या आ गयी। आसपास से संवाद मिला कि हरखलाल जाति बंधुओं के साथ विचार-विमर्श कर रहा है।

सोहनलाल की चिंता बढ़ने लगी। घंटे भर के बाद विचार-विमर्श का विवरण भी मिल गया।
'यदि सोहनलाल विधिवत् प्रायश्चित् नहीं करते और सबसे क्षमा नहीं मांगते, तब तक कोई इनके यहां भोजन नहीं करेगा। विवाह की बातचीत भी नहीं चल सकेगी।

यह भी पता चला कि दो-चार लोगों ने इस निर्णय का विरोध किया है। वे सेठ सोहनलाल और शाही दरबार से सम्मानित हेमचन्द्र को आदर दे रहे थे, पर निर्णय होकर रहा।

सोहनलाल चिंता और क्रोध में कुछ बोल नहीं सके। वे छत और दीवार को देखते रहे, आलोकपात्र में जलती बत्ती पर पतंगे उड़ रहे थे। कुछ जल रहे थे, इच्छा हुई कि

बत्ती को बुझा दें और पतंगों को भगा दें।

यह सब हरखलाल की कुटिलता है। प्रायश्चित तो होना ही है। कथा-पूजा के बाद देखा जायगा।

इकत्तीस

लक्ष्मी भवन की दासी सोना कोठरी, ओसारा, आंगन, पूजा-घर हुलास की मदद से धो-पोंछ रही थी। प्रायश्चित और पूजन होने वाला था। पार्वती कुंवर मां की पूजा के लिए फूल लाने वाटिका में पहुंच गयी। उसका हृदय धड़कने लगा, वह सामने नहीं, नीचे देखती जा रही थी। कभी-कभी सामने भी देख लेती थी। हेमू गजराजसिंह को विदा कर द्वार से लौट रहा था।

गजराजसिंह छुट्टी लेकर घर जाने वाला था। वह अपने गांव के आसपास के क्षेत्र में फौजी भर्ती के लिए हिन्दू सैनिक परिवारों (राजपत परिवारों) से अनुरोध करेगा, उसे संवाद भी मिला था कि उसका चचेरा भाई गजेन्द्रसिंह बाजीगरों और नटों के पीछे-पीछे कहीं चला गया है, उसका पता नहीं चल रहा है।

पार्वती हेमू के कक्ष तक आ गयी। हेम् दिखायी पड़ गया, उसके पैर ठिठक गये। वह साहस बटोरकर बोल उठी। 'नगर सेठ को बधाई हो।'
'जी...! आपकी बधाई स्वीकार है।' हेमू ने ठिठककर उत्तर दिया, पर वह रुककर बातचीत करने का साहस जुटा न सका। वह धीरे-धीरे अपनी कोठरी में चला गया।
पार्वती फूल तोड़ती रही, कभी-कभी कोठरी की ओर देख लेती, धीरे-धीरे डलिया में फूल लिये लौट आई।

सोहनलाल और दुर्गा कुंवर प्रायश्चित के लिए पंडित गणेशीलाल शर्मा के सामने आ गए। पार्वती ने थाली में फूल, अक्षत, रोली, जल और धूप की व्यवस्था कर दी। संकल्प के साथ आठ घड़ी का पूर्ण उपवास होना था, समापन के साथ पंचगव्य का सेवन और पूजन होगा। इसके बाद ही रामायण की कथा हो सकेगी। पार्वती संकल्प के कर्मकाण्ड को देख रही थी। यन्त्रवत् सहयोग दे रही थी, पर उसका मन वाटिका में घूम रहा था।

संकल्प का कर्मकाण्ड समाप्त हुआ, अब वे दोनों अलग-अलग कंबल पर बैठकर उपवास करेंगे, साथ ही भागवत का पारायण करेंगे। पार्वती ने सोना की मदद से सारी व्यवस्था कर दी, वह अपने कक्ष में लेट गयी, पलकें बन्द हो गयीं। पर आंखों के सामने झलकने लगी-वाटिका की पुष्पगंधमयी क्यारियां और वह कोठरी। कोठरी के भीतर भस्मी का डिब्बा और डिब्बे के आगे झुका सहृदय पुरुष...हेमचन्द्र....। सुनहली धूप में तलवार का अभ्यास करता और उस रात में अपनी तलवार से उसकी
रक्षा करता। चीखती पार्वती को भरोसा दिलाता' 'हेमचन्द्र।

वह बुदबुदा उठी, कमल के समान कोमल हृदय वज्र के समान कठोर बांहें। बादशाह ने नगर सेठ का ओहदा दे दिया, वे दरबार के लिए नगर सेठ हैं। पारो के लिए हृदयदेव - प्रेमदेवता। उस पारो के लिए और इस पारो के लिए भी। पर वे मानेंगे? उसने तो मान लिया है। पार्वती ने शंकर के लिए तप किया था। यह पार्वती भी शंकर (हेमचन्द्र) के लिए तप करेगी। कोई उसे रोक नहीं सकेगा।

सोना उसके कक्ष के पास आ गयी, मन्द स्वर में शब्द सुनायी पड़ रहे थे, वह सुनने लगी।

पार्वती बोल रही थी, 'पारो की भस्मी के आगे झुका हुआ हृदय क्या उसके पास आ सकेगा? वह भी पारो है। उसी भाव से ले आयेगी, वे बहुत दूर नहीं हैं। उन्होंने उस दिन सोना की बात का समर्थन कर कुछ कह दिया था। भाभी की सुन्दरता की तुलना उससे हो रही थी, और वे लजा गये थे, वह भी लजा गयी थी। लगता है कि उनके हृदय में वह स्थान पा गयी है। उसके हृदय में तो वे आ ही चुके हैं। लोग क्या कहेंगे. अपने लक्ष्मी भवन के एक कर्मचारी के प्रति ऐसा भाव? मन पर वश नहीं रहा, भैया भी अपने मन पर वश नहीं रख सके।'

सोना ने यह सब सुना, मन की बात समझ गयी। मन-ही-मन मुस्कराती चली गयी।

दूसरे दिन आठ घड़ी का उपवास पूरा हुआ। स्नान-पूजन के बाद पं० गणेशीलाल के मंत्रोच्चारण के साथ सोहनलाल और दुर्गा कुंवर ने पंचगव्य लिया। प्रायश्चित का विधान समाप्त हुआ, पितरों को तर्पण भी दिया गया।

उल्लास के साथ पूर्णकलश पर स्थापित प्रज्वलित दीप के समक्ष पंडित गणेशीलाल जी ने रामायण कथा आरम्भ कर दी। शंखध्वनि गूंज उठी, यजमान दम्पति मनोयोग से मूलकथा के साथ भाष्य सुनने लगे। पार्वती भी साथ में बैठ गयी।

श्रीविलास के शाह हरखलाल की इच्छा थी कि पं० गणेशीलाल प्रायश्चित न कराएं। सोहनलाल के लक्ष्मीभवन में रामायण कथा न हो, और न कोई भोजन के लिए जाये, और वह ठठाकर हंसे। हेमचन्द्र नगरसेठ बनकर भी कुछ न कर सके। परिवार का सामाजिक-धार्मिक बहिष्कार हो जाय। पर यह सब नहीं हो सका, प्रायश्चित हो गया। कथा शुरू हो गयी, शंखध्वनि उसकी छाती पर चोट करने लगी। ऐसा लगा कि सेठ सोहनलाल उस पर हंस रहे हैं।

अपराह्न में विश्राम के समय दुर्गा कुंवर ने सुख-शांति की सांस ली। भगवान को धन्यवाद देती हुई बोल उठी-'सोना! कैसा भाग्यचक्र है। बेटे के कारण लक्ष्मी भवन अशुद्ध हो गया था। मन ने ऐसा नहीं माना। पंडितजी के हठ के कारण प्रायश्चित करना पड़ा।

'पंडित जी बहुत कठोर हैं।' सोना ने कहा।

'धरम-करम चलाने के लिए कठोर होना पड़ता है। पर हमने कोई अधरम नहीं किया है तो भी मान लेना पड़ा। ये पुरोहितजी बेटा का प्रायश्चित नहीं करा सकेंगे? यह तो अधूरा धर्मशास्त्र है। अधूरा क्यों रहा?'

इसी अधूरेपन से तो लोग तुरक बन रहे हैं! धरमशास्त्र केवल डांटता है। डांटकर भगा देता है। भागे हुए को बुला नहीं सकता।'

'बेटी के ब्याह के लिए डांट सुननी है। क्या करें। उधर पड़ोसी शाह जी कूटचाल चल रहे हैं।'

'बिटिया दीदी के ब्याह के लिए इतनी क्यों घबरा रहीं है!'
'घबराएं नहीं! कैसी बात करती है, सोना!'
'कथा हो रही है। पूजा हो रही है, शंख बज रहा है, ब्याह का बाजा भी बजेगा।' 'ब्याह का बाजा बजना इतना सहज नहीं है, री!'
'सब सहज हो जायेगा, सेठानी जी!' यह कहकर सोना मन्द-मन्द मुस्कराने लगी।
'क्या बात है री? मुस्करा क्यों रही है?'
'जी...क्या कहूं!'
'बोल, कुछ तो है।'
'पारो दीदी हेमचन्द्र जी को मन से मानने लगी हैं।'

दुर्गा कुंवर देखती रह गयी और फिर आंखें बन्द कर कुछ सोचने लगी, कुछ देर के बाद बोल उठी—'सोना! सेठजी को मेरा संवाद दो।'

सोना घबरायी, वह समझ नहीं सकी कि उसकी बात का क्या फल होगा? वह झटके से उठी, सेठजी को बुला लायी। सोहनलाल भी घबराए हुए आए, देखा कि पत्नी गंभीर मुद्रा में है। पास में बैठते हुए पूछा- 'क्यों, क्या बात है?'

'पार्वती हेमू को मन-ही-मन मानने लगी। यह लोग इस घर में...क्या सोचते हैं?

सोहनलाल के मुख पर गंभीरता छा गयी और फिर चिन्ता की रेखाओं ने मुख को घेर लिया। आंखें ऊपर उठीं, छत की कड़ियों को देखने लगीं। ये प्रेम-रोग कैसे हो जाता है? सेठ की बेटी, उधर संतजी का धनहीन पुत्र लक्ष्मीभवन का कर्मचारी नौकर! पर इसने बेटी की रक्षा की है, यह तो उसका कर्म था। वह राजधानी में सबका सिरमौर बन गया है। दरबार में स्थान पा गया है। अब वह साधारण नहीं रहा। पर है तो वह नौकर, अब वह नौकर नहीं रहा। पारो उसे मानने लगी है। इसे डांटकर मन के भाव को मिटा दिया जाय? क्या यह संभव है? उसे डांटा जाय? वह तो भस्मी के डब्बे के सामने झुका रहता है। मन से बड़ा कोमल है। प्रेम मन को कोमल बना देता है। क्या वह भी पारो को मानने लगा है? क्या यह उचित है? सुखी तो हो सकते हैं, बेटी का सुखी होना बड़ी बात है। दरबार में सम्मानित हेमू पर कोई उंगली नहीं उठा सकता, पर कैसे?

'सुनिए! आप हेमचन्द्र के हृदय को टटोलें।'

'हां, दुर्गा! मैं बेटी को सुखी देखना चाहता हूं। पहले लोग हंसते थे। अब कोई नहीं हंसेगा। हरखलाल के षड्यन्त्र का भी उत्तर देना चाहता हूं। उसे अपने कुरूप चेहरे को छिपाना पड़ेगा।'

संध्या के सूर्य की किरणों ने सिन्दूरी रंग बिखेर दिया। घोंसले की ओर लौटते हुए पंछी आकाश में उड़ान भर रहे थे। किशनपुरा के लक्ष्मीभवन में सोहनलाल ने केवड़े से सुवासित कर शर्करोदक तैयार कराया और हेमू को बुला भेजा। थोड़ी देर के बाद हेमू आया। सोहनलाल ने बड़े स्नेह से बैठाया। शर्करोदक पीने के लिए अनुरोध किया। स्वयं भी लिया, मधुर स्वाद से तृप्त होकर कहा- 'क्यों हेमचन्द्र! कैसा बना है?

'शीतल और मधुर!'
'राधावल्लभ जी की कृपा से सब मधुर होता जा रहा है, हेमू!'
'जी, हां!'
'एक बात और है।'
'जी, वह क्या?'
'तुम बड़े भावुक जीव हो। स्वर्गवासी पारो की स्मृति के साथ जीना सच्ची भावुकता है, प्रेमभावना है।'
'जी, मन की भावना है!'
‘परन्तु जीवन लम्बा है, हेमचन्द्र! किसी के साथ जीवन के पथ पर चलना पड़ेगा। मेरी बेटी तेरे लिए तप कर रही है। तुम उसे पारो मान लो, वह पारो की स्मृति को जगाये रखेगी।'
'यह आप क्या कह रहे हैं? कहां आप...कहां मैं?'
'हां, मैं कह रहा हूं। संतजी का पुत्र संत है, सूरमा है और अब हम सबका सिरमौर है। सबसे ऊपर पार्वती का महादेव बन गया है। दोनों के बीच में मैं बाधक नहीं बनूंगा।'
यह कहकर सोहनलाल ने हेमू का हाथ थाम लिया। आंखों में अनुरोध का भाव छलक उठा।

हेमू ने अनुरोध के भाव को पढ़ा। उसका शीश झुक गया। पार्वती के व्यवहार को समझने लगा था। अपने बढ़ते आकर्षण को महसूस कर रहा था। उसकी आंखें ऊपर उठीं। सेठ जी की आंखों में आंसू की बूंदें दिखायी पड़ी।

हेमू बोल उठा-'सेठ जी! आपने मुझे इतना ऊपर उठाया है। आपका इतना स्नेह मुझे मिल रहा है। मैं ठुकराने का साहस नहीं कर सकता, आपकी आज्ञा सिर आंखों पर'..!' सोहनलाल ने उसे हृदय से लगा लिया, और कहा- 'दशहरे के दिन पूर्णाहुति के बाद संस्कार सम्पन्न हो जाय। जितना सम्भव हो.. वृन्दावन, रेवाड़ी और इस नगर के प्रमुख लोगों को निमन्त्रण देना है। पड़ोस के गांवों के किसानों को निमन्त्रण मिलना चाहिए। यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा यज्ञ होगा।'

हेमू ने शीश झुकाकर आदेश को स्वीकार किया। और उसका मन पार्वती की बधाई के शब्दों के माधुर्य का आस्वादन करने लगा। आस्वादन करता हुआ वह अपने कक्ष में लौट गया।

कक्ष में भस्मी का डिब्बा दिखाई पड़ा, वह डिब्बे के पास पहुंचा। उसे हृदय से लगा लिया। पलकें बन्द हो गईं। बन्द पलकों में पारो झलक उठी। वह बुदबुदाया- 'मैं तुझे भूल नहीं सकता, हृदय से दूर नहीं कर सकता।

पारो की झलक पार्वती में बदल गई। उसने सुना-'मैं भी पारो हूं। मुझे आप पारो ही समझें।'
'वह तो चिता की राख बन गई थी। मैं ऐसा नहीं कर सका था। हेमू बुदबुदा रहा था।

'मैं नाम से...भाव से पारोही हूं।...आपने तो मेरी रक्षा की थी।'

'क्या यह मेरा आकर्षण ही है या केवल धर्म-कर्म...जिससे मैंने रक्षा की?

'मेरे हृदय के भाव ने आप तक पहुंचने का प्रयत्न किया है।'

'लगता है कि आकर्षण भाव बन चुका है। वचन भी दे दिया है। पर पारो ही समझूंगा।'

बत्तीस

हरखलाल ने सुना कि पार्वती का विवाह निश्चित हो गया है। सोहनलाल को कहीं दौड़ना नहीं पड़ा। उसके आगे झुकना नहीं पड़ा। पं० गणेशीलाल कथा सुना रहे हैं। उनके शंख की ध्वनि तेज हो गई है। वे ही विवाह-संस्कार करायेंगे, वह तिलमिला कर रह गया। पं० गणेशीलाल को रोक नहीं सका। जाति-बन्धुओं को भड़का कर भी कुछ नहीं कर सका। इनका सब काम होता चला जा रहा है। वह भ्रष्ट-पतित मोहन...जमाल उसके व्यापार को भी चोट पहुंचा रहा है। वह क्या करे...क्या नहीं करे! लगा कि उसका हृदय बैठ रहा है।

लक्ष्मी भवन में सेठ सोहनलाल, पत्नी दुर्गा कुंवर और मुंशी हरसुखलाल से विचार-विमर्श कर विवाह समारोह की तैयारी में लग गए। शरीर और मन-दोनों स्वस्थ हो चले हैं। पंडित गणेशोलाल प्रातःकाल पूजन के साथ कथा सुनाते और फिर समारोह की तैयारी में अपना परामर्श देते। सोहनलाल ने इसी क्रम में पूछा-'पंडितजी! हेमचन्द्र तो शाही दरबार से जुड़ गया है। उधर भी निमन्त्रण जाएगा, कुछ दरबारी सरदार और वजीर भी आ सकते हैं।'

'अवश्य आयें, सबका स्वागत-सत्कार हो।'

‘पर वे तो तुरक-अफगान हैं।'

'वे केवल मंडप में नहीं बैठेगे। घर के भीतर भोज नहीं होगा, बाहर सब प्रबन्ध हो।' 'जी, हां! आपसे पूछ लेना उचित था।'

'आपका मोहन...जमाल भी आ सकता है। वह भी मंडप में नहीं बैठ सकेगा, यह ध्यान में रहे।'
'वृन्दावन और गोवर्धन में आचार्य और सन्त सबको भक्ति का अधिकार दे रहे हैं। कुछ मुसलमान भी भक्ति में लीन हैं।'
'वे कर सकते हैं। मैं तो शास्त्र के नियमों से बंधा हूं, मैं उन नियमों में परिवर्तन नहीं कर सकता।'
'ठीक है, जैसा आप चाहें!'
दुर्गा कुंवर ने हेमचन्द्र को बुलाकर कहा–'हेमचन्द्र! सबको न्यौता जा रहा है? ‘जी, हां! वृन्दावन और रेवाड़ी तो भेज चुका हूं। पड़ोस के गांवों में भी जा रहा है। अब इस नगर में भेजना है।'
'बेटे! मोहन से मिलकर अपनी ओर से न्योता देना और मां की
ओर से विनती कर देना। पंडित जी ने मंडप में बैठने से मना कर दिया है, वे मंडप के सामने की कोठरी में बैठेंगे। उनकी आंखों के सामने मंडप रहे..भले ही वे आंगन-ओसारे में न रहें।

'अवश्य अनुरोध करूंगा, आज ही जाऊंगा। ये पंडित पुरोहित एक ओर अपने कठोर नियमों से लोगों को संभाल रहे हैं। दूसरी ओर जांत-पांत और बहिष्कार नीति से लोगों को दुत्कार भी रहे हैं। बड़ा अहित हो रहा है, शूद्र लोग दु:खी हैं। वे एक किनारे उपेक्षित जीवन बिता रहे हैं। कुछ लोग नये मजहब को अपनाकर दूर जा रहे हैं। एक खाई पैदा हो रही है।'

'इधर बहिष्कार है, उधर दबाव है। या तो घुट-घुटकर जीओ या कदर बन जाओ। क्या होगा मेरे मोहन का?'

'घुट-घुट कर जीना है।'
'मैं ही अभागन हूं, बेटा!'
संध्या में हेमू सिकन्दराबाद के लिए निकल पड़ा। इलाहीबख्श के दौलतखाने पर पहुंचा। इलाहीबख्श ने नगर सेठ को मुबारकबाद दी। इत्र में रचा-बसा एक फाहा भेंट किया, आदर युक्त व्यवहार और सुगन्ध से उसका रोम-रोम तृप्त होने लगा।

इलाहीबख्श ने अवसर पाकर कहा-'हेमचन्द्र! जमाल अहमद साहब को यहां कोई तकलीफ नहीं है, लेकिन वह दूसरे मकान में जा रहे हैं। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं। अच्छी बात है, लेकिन यहां रहें। मैं तो मदद ही करूंगा...उन्हें जरा समझा दो।'

उसी समय जमाल अहमद आ गया। हेमू को देखा, घर के भीतर ले गया। नूरी पर्दे में चली गई, नाश्ते का इन्तजाम करने लगी। हेमू ने सिर झुकाकर विनम्र स्वर में कहा-'आज मैं मां जी का संवाद लेकर आया हूं, उनकी एक विनती है।'

'मां की विनती है!'
'जी, हां! पार्वती जी का विवाह समारोह...।'
'अरे, वाह!.. कहां!! कब!!!...'नूरी, सुनना जी।'
'दशहरे के दिन प्रातःकाल ही आप दोनों को आ जाना है।'
'वर कौन है? कहां का है? इतना शीघ्र कैसे कुछ?'
'जी...सबकी इच्छा रही। इस कृपा को स्वीकार कर लिया।' सिर जीचा कर हेमू ने उत्तर दिया।
एक क्षण के लिए जमाल चुप रहा, और फिर उल्लास के साथ वह बोल उठा---'तुम मेरी पारो के दूल्हे राजा हो! लक्ष्मी भवन से लेकर बादशाह के दीवाने खास तक तुमने कुछ तंत्र-मंत्र कर दिया है! मेरी मंगलकामना है, हेमचन्द्र!'

'आप दोनों को लक्ष्मी भवन आना है। आंगन के पास के कक्ष में बैठना है जिससे आप विवाह संस्कार देख सकें, आशीर्वाद दे सकें।'

'तो यह पंडित गणेशीलाल की व्यवस्था है?'

'पंडित जी की व्यवस्था तो भवन के बाहर जनवासा में है, जहां दरबार के अमीर-उमरा बैठेंगे, वह मां की व्यवस्था है। शाह हरखलाल के विरोध के बाद भी सब ठीक है।'

पर उस दिन तो मैं संध्या में अपने नये घर में जाऊंगा। सिकन्दराबाद के मोड़ के पास है, तुमको आना है।'
दोनों कार्य पूरे होंगे...मैं अवश्य आऊंगा।'

जमाल और नूरी ने आदर के साथ हेमू को विदा किया। दोनों उसे देखते रह गए—आश्चर्य और उल्लास के साथ। हेमू के पैर लक्ष्मी भवन की ओर बढ़ते गए।

लक्ष्मी भवन में रामायण कथा चलती रही। षष्ठी, सप्तमी और अष्टमी कथावार्ता और पूजा-हवन के साथ बीतती रही। विवाह संस्कार और भोज की तैयारी में सभी व्यस्त रहे। संध्या में ढोलक की थाप के साथ मंगल-गीत आरम्भ हो गया। नवमी की संध्या में संत पूरनदास, संत परमानंद, चौधरी नरवाहन और विजयवाहन के साथ गो० हितहरिवंश जी के पुत्र वनचन्द्र जी आ पहुंचे।

विजयादशमी नयी किरण और नीलकंठ दर्शन के साथ आ गयी। शहनाई का मधुर संगीत गूंजने लगा। रामकथा की पूर्णाहुति हवन के साथ हुई। शंखध्वनि आकाश तक जा पहुंची। आरती के बाद विवाह संस्कार का शुभारंभ हुआ। मंडप में हेमचन्द्र वर के रूप में सज-धज कर विराजमान हुआ। पार्वती वधू रूप में मंगलगीत की धुन पर बायीं तरफ आई। अक्षताशीष के साथ विवाह मन्त्र मुखरित हो उठा। हेमचन्द्र सोच रहा था कि रेवाड़ी से सबको आ जाना चाहिए।

शाही दरबार के वजीर और सरदार बादशाह की सौगात लेकर आए। बाहर जनवासे में उनका स्वागत-सत्कार होने लगा। नगर के प्रमुख व्यापारी और गांवों के किसान आ पहुंचे।
सबका स्वागत हुआ, अन्त में रेवाड़ी से चाचा करणमल, पंडित धर्म पालशर्मा और

चौधरी खेमराज, योगी शिवनाथ के साथ आ गए। शाह हरखलाल के मना करने के बाद भी जातिबन्धु आ गए थे।

जमाल नूरी के साथ प्रातःकाल ही आ गया था। मंडप के सामने वाले कक्ष में उसका आसन लग गया था। नूरी साथ ही बैठकर खिड़की से विवाह विधि देख रही थी। इन दोनों को देख कुछ स्त्रियां प्रसन्न थीं, कुछ अचरज कर रही थीं। धीरे-धीरे बात फैल गई, एकाध जातिबन्धु उठकर चले गए। हरखलाल अपनी छत से कुछ बोलने लगा। पर वृन्दावन के संतों, रेवाड़ी के योगी शिवनाथ और दरबार के सरदारों को देख अधिक बोल नहीं सका, बाधा पैदा नहीं कर सका। गणेशीलाल भी त्रुप रह गए, संतों और योगी के सामने आपत्ति नहीं कर सके।

नूरी बड़ी उत्कंठा से विवाह-समारोह को देख रही थी। मंगलगीत, मंडप की सजावट, वर-वधू का साथ बैठना और विवाह-कर्म-सब उसे रोचक लग रहा था। वर-वधू की प्रतिज्ञाएं और अग्नि के चतुर्दिक सप्तपदी-उसे बड़ी अच्छी लगी। गीत के साथ मांग में सिंदूर देते देखकर वह रोमांचित हो उठी। इस विवाह विधि में स्त्री की प्रतिष्ठा को देखकर वह बहुत खुश हुई।

विवाह विधि पूरी हुई। वर-वधू ने झुककर प्रणाम किए। आशीष के अक्षत शंखध्वनि के साथ बरस पड़े। उसी समय बादशाह की सौगात को हेमचन्द्र ने सहर्ष ग्रहण किया।

हेमचन्द्र सबको प्रणाम करता और आशीष पाता जमाल के पास आया, चरणों में झुका।
जमाल ने हृदय से लगा लिया। नूरी पार्वती से गले मिली, सब भेदभाव विलीन हो गया।
पंडित गणेशीलाल कुछ बोल नहीं सके।

और फिर भोजन-सत्कार शुरू हुआ।

सारे नगर में इस विवाह-समारोह की चर्चा रही। इसी चर्चा के साथ संध्या आ गई।
लोगों ने देखा कि सिकन्दराबाद के मोड़ पर, जहां से किशनपुरा शुरू होता है, पूता- रंगा घर शहनाई के मधुर संगीत से गूंज रहा है। फूल-मालाओं से द्वार सजा हुआ है।
द्वार पर संत पूरनदास, नवलदास, राजा परमानंद, धर्मपाल शर्मा और खेमराज के साथ योगी शिवनाथ उपस्थित हैं। सरजू थाली में अक्षत-फूल लिये खड़ा है। बुन कर शकील इत्र-फाहों के साथ मौजूद है। कुछ लमहों के बाद शहनाई वादकों की टोली के साथ जमाल नूरी के साथ आता दिखाई पड़ा। नूरी रंगीन बुरके में पीछे-पीछे चल रही थी। इलाहीबख्श, शायद मंझन मुल्ला और हेमचन्द्र साथ में थे। इस नजारे को देखने के लिए भीड़ इकट्ठी हो गई। कबीरपंथी साईंदास भी आ गए।

द्वार पर जमाल आ पहुंचा, योगी शिवनाथ ने फल-अक्षत बिखेर कर स्वागत किया। मुल्ला को अच्छा नहीं लगा, वह तीखी नजर से देखकर चुप रह गया, और वह शकील को इत्रफाहों से इस्तकबाल करते देखकर खुश हुआ।

जमाल ने नूरी के साथ घर में प्रवेश किया। जमीन पर झुका। फूल अर्पित किया।
इलाहीबख्श मुल्ला की ओर देख रहा था, मुल्ला की आंखों में नाराजगी थी। दो लमहों

के बाद अपनी नाराजगी को भूलकर मुल्ला ने अगरबत्ती जलाकर इबादत शुरू की। सभी उसके पीछे कायदे से बैठ गए, और फिर उसने कुरान शरीफ की आयतों का पाठ किया। दोनों को दुआएं दीं, और तब शर्बत से सबका स्वागतसत्कार हुआ।

शायर मंझन ने साईंदास को संकेत दिया। वे भजन गाने लगे। मुल्ला के कदम घर के बाहर हो गए। इलाहीबख्श मन मारकर बैठा रहा। शकील बुनकर को तो भजन अच्छा लग रहा था। साईंदास ने आशीष दी। मंझन ने भी अवधी में वन्दना करते हुए दुआएं दी, और कहा- 'जमाल मोहन! अल्लाह और ईश्वर दो नहीं हैं। अलग-अलग देश की अलग-अलग भाषाओं के शब्द हैं। वह तो एक है, हम उस एक को पहचानें। उसे प्यार करें, उसकी सन्तानों को प्यार करें तभी वह खश होगा...उसकी मेहरबानी से तुम आगे बढ़ जाओगे।'

योगी शिवनाथ ने संयमपूर्ण गृहस्थ जीवन बीताने का उपदेश दिया।
नये घर के भीतर दीप जलने लगे।

तैंतीस

संत पूरनदास ने सोहनलाल से अनुरोध किया कि हेमू को वधू के साथ वृन्दावन और गोकुल जाकर दर्शन-पूजन करना चाहिए। रेवाड़ी भी जाना आवश्यक है।

संत नवलदास ने इसका समर्थन किया।

सोहनलाल ने एक क्षण सोचकर कहा–'अब तो हेमू हेमचन्द्र है...हिन्दुओं का सिरमौर है। हम सभी हेमचन्द्र ही कहेंगे, उसे विवाह के बाद आराध्य देवता के चरणों में आशीष के लिए झुकना ही चाहिए। आपके आदेश से वह जरूर जाएगा।'

'सेठ सोहनलाल जी! हम बचपन में प्यार से हेमू कहते आए हैं। हेमचन्द्र तो है ही, ऐसा हो कि वह हम लोगों के साथ चले। अकेले जाना उचित नहीं होगा, लगे कि परिवार के साथ वर-वधू धूमधाम से देवदर्शन के लिए जा रहे हैं। बारात वापस लौट रही है।' संत राजा परमानन्द के ये शब्द थे।

'आपने मेरे मुंह की बात छीन ली।' चौधरी नरवाहन ने मुस्कराते हुए कहा।

'बारात के बुजुर्गों की हर बात को मानना मेरा धर्म है, मुंशीजी! आप बारात की विदाई की व्यवस्था करें।' सोहनलाल ने उत्तर दिया, और मुंशी जी को संकेत किया।
सभी मन्द-मन्द मुस्कराने लगे।

हेमचन्द्र योगी शिवनाथ, धर्मपाल शर्मा और खेमराज के साथ गपशप कर रहा था। मुंशी चाचा के संकेत पर वह योगी जी से अनुमति लेकर सन्तों के पास जा पहुंचा।

पूरनदास ने कहा- 'बेटे! तुम्हें वधू के साथ वृन्दावन चलन है। हम लोगों के साथ दर्शन-पूजन हो। अपने चाचा के साथ रेवाड़ी भी हो आओ। गांव, कुल और कुल-देवता को भूलना नहीं चाहिए।'

‘जो आज्ञा।' हेमचन्द्र ने उत्तर दिया।

'मुंशी जी यात्रा की तैयारी कर रहे हैं।' सोहनलाल ने बताया।

'मैं बादशाह से मिल लेना चाहता हूं। मालूम हुआ है कि वे थोड़ा बीमार हैं।'

'आज मिल आओ। सोहनलाल ने आग्रह के स्वर में कहा।

हेमचन्द्र अपराह्न में बादशाह सलामत से मिलने किले के द्वार पर जा पहुंचा। आदर के साथ प्रवेश मिला, वह शाही हरम की ओर बढ़ा। सिपहसालार शादी खां, वकील और हकीम एक साथ लौट रहे थे। उसने अदब से बन्दगी की। शादी खां ने मुबारकबाद दी, और बताया कि बादशाह सलामत थोड़ा बीमार हैं। लेकिन कोई फिक्र की बात नहीं है।

वह उनसे रुखसत होकर शाही हरम के दरवाजे पर आया। हथियारबन्द पहरेदार अपने सालार के साथ तैनात थे। खबर भेजी गई। इजाजत मिली, वह सालार के साथ हरम के बाहरी कमरे में पहुंचा। यहां भी हथियारबन्द पहरेदार थे। बादियों का आना-जाना हो रहा था।
हरम की बेगमें पर्दे में चली गईं। हेमचन्द्र नजर झुकाए बादशाह के पास आया।
झुककर सलामी दी। सलीमशाह बादशाह ने लेटे-लेटे उसकी सलामी को कबूल किया। साथ ही शादी के लिए बधाई दी।

हेमचन्द्र ने कहा-'शाही सौगात को पाकर सभी फूले नहीं समाए, आपकी बड़ी इनायत है। सबने एहसास किया कि आप मौजूद हैं। बाद में मालूम हुआ कि आप...। मैं रुक नहीं सका।'

'कोई खास बात नहीं है, हेमचन्द्र! हकीम साहब आए थे। लेकिन हकमत और सियासत की बातें ही खास-खास हैं। इनसे छुटकारा नहीं है।'

'अभी आप फिक्र न करें, आराम करें।'

'रिश्तेदारों का रंग-ढंग अच्छा नहीं लग रहा है। बेटा फिरोज बहुत छोटा है।'

'इन रिश्तेदारों पर कड़ी नजर रखी जाय।'

'क्या करूं? हमारे अफगान सरदार भी तो नाखुश ही हैं। उनकी मनमानी बहुत कुछ बन्द कर दी है।' बादशाह सलीमशाह ने कहा।

'आपने तो सबको काबू में रखा है। मुगलों को तो हिम्मत भो नहीं है कि वे इधर कदम बढ़ायें।'

'बस! इतना तो हो सका है।'
'आपके इकबाल से सब ठीक होता जाएगा। आपकी इजाजत हो तो कुछ दिनों के लिए वृन्दावन होता हुआ गांव जाऊं! सबकी राय है कि विवाह के बाद दर्शन-पूजन जरूरी है।'
'जरूर जाओ, लेकिन जल्द लौट आना। यहां तुम्हारी जरूरत है।' बादशाह सलीमशाह सूरी ने उसे खुशी-खुशी इजाजत दे दी।
वह बाअदब रुखसत हो यमुना के पार हुआ। सिकन्दराबाद में जमाल अहमद से भेंट हो गई, कुशल-मंगल पूछा। जमाल ने अपने घर में स्वतन्त्र जीवन पर बड़ा सन्तोष प्रकट किया।
'नूरी भाभी को कैसा लग रहा है?'
'उसे विवाह की विधि अच्छी लगी। नये घर में प्रवेश का समारोह भी पसन्द किया। फूल-माला, अक्षत और दीप को बुरा नहीं माना। साईंदास का भजन सुनकर बहुत खुश थी, लेकिन मुल्ला साहब खुश नहीं हैं।'
'उनका दबाव तो बढ़ सकता है, पर चिन्ता न करें। ऐसा हो कि आप हिन्दी-मुसलमानों से मेलजोल बढ़ावें। उनको अपनी धरती, अपनी 'परम्परा और अपनी भाषा से जोड़े रखने की कोशिश करें। आपको भी थोड़ा बल मिलेगा।'
'बिल्कुल सही सुझाव है, हेमचन्द्र! इस सुझाव के अनुसार करना है। मैंने अनुभव किया है कि ये अरबी, ईरानी और अफगान हिन्दी मुसलमानों को अपने से छोटा मानते हैं। ये समझते हैं कि हिन्दी मुसलमान पक्के मुसलमान नहीं हैं, ये तो कबीरपंथी साधु से मिलते रहते हैं। हिन्दी मुसलमान चाहते हैं कि वे मुसलमान बनने के बाद भी अपनी धरती, अपने पुरखों और अपनी रीतिनीति से जुड़े रहें। ये मुल्लामौलवी इन्हें अरबी-ईरानी रंग में रंग देना चाहते हैं, यह एक उथल-पुथल है।'

इसलिए इन्हें आपस में जोड़ना चाहिए, और इन्हें कबीरपंथ की ओर मोड़ना चाहिए जिससे इनमें मजहबी कट्टरता पैदा न हो।'

'लेकिन मुल्ला-मौलवी कबीर पंथ को भी कुफ्र समझने लगे हैं। ये तो सूफी शायरों को भी पसन्द नहीं करते।'

'सूफी फकीर तो मुल्लाओं के मुताबिक चलते हैं।'

'सूफी शायर थोड़ा आजाद मिजाज के हैं। वे सूफी विचार को इस देश की धरती से जोड़ देना चाहते हैं।'

‘मंझन साहब की भावना और भाषा इसके प्रमाण हैं।'

'उनसे बार-बार मिलने की इच्छा होती है, हेमचन्द्र!'

'वे प्रयाग की ओर जाने की बात कह रहे थे, पर अभी रहेंगे। भेंट होगी।'

'उनसे मिल कर मन को बड़ी शान्ति मिलती है।'
'वैसे भी वे रमता जोगी हैं, हमेशा मिलना कठिन है। एक अनुरोध है।' 'वह क्या?'

'आप प्रातः आएं। सबसे भेंट हो जाएगी। कल सभी एक साथ ही...विदा होंगे।'
'अवश्य आऊंगा, हेमचन्द्र! पर चाचा हरखलाल की दृष्टि बड़ी पैनी है। मेरे ऐसे भ्रष्ट पर वे नाराज रहते हैं।'
'उनका स्वार्थ प्रबल है, द्वोष प्रबलतम है। कोई चिन्ता नहीं...आपको आना ही है।' दोनों एक-दूसरे से विदा हुए।

हेमचन्द्र सोचता हुआ किशनपुरा की ओर बढ़ा कि योगी शिवनाथ को आगरा में रहने के लिए अनुरोध होना चाहिए। वे यहां रहेंगे तो उनका सहारा रहेगा। विजय और खेमराज तो अपने क्षेत्र के किसान नौजवानों के साथ सेना में भर्ती हो चुके हैं। उधर गजराज सिंह के समझाने पर सैनिक परिवार के लोग भी हो सकेंगे। इस सैनिक बल से आतंक धीरे-धीरे कम होगा। अफगान शासक प्रजा के निकट आएगा, विदेशी मुगलों को दूर रखा जा सकेगा।

लक्ष्मीभवन में सन्त नवलदास और पूरनदास का सत्संग चल रहा था। सारे आमन्त्रित लोग उपस्थित थे। योगी शिवनाथ तो योगमार्गी थे; भक्तिमार्गी नहीं थे। वे गुरु गोरखनाथ की वाणी का स्मरण करते हुए भक्ति के पद सुन रहे थे। सोच रहे थे कि योग में मन की वृत्तियों का नियमन किया जाता है। शरीर, मन और प्राणवायु पर नियन्त्रण कर एक बिन्दु पर ध्यान लगाना पड़ता है। कठोर साधना है, इससे शरीर और मन की नियन्त्रित एवं केन्द्रित शक्ति आत्मोन्मुख होती है। पर भक्ति में मन की वृत्तियों को सांसारिक सम्बन्धों की ओर से हटा कर निर्गुण या सगुण ब्रह्म की ओर लगाना है। मन का प्रेमभाव कृष्ण या राम के प्रति निवेदित हो! सांसारिक सम्बन्ध इष्टदेव के प्रति बन जाये --यही भक्तियोग है। आज यही भक्ति लोकप्रिय हो रही है। यह सबके लिए सहज है। कबीरदास ने योग को भक्ति में मिला दिया है, उनके राम निर्गुण हैं। उस निर्गुण में सगुण प्रेमभाव''अद्भुत है। बुनकर होने के कारण ब्राह्मण कबीर को ऊंचा स्थान नहीं देते। उधर मुल्ला-मौलवी भी उन्हें नहीं मान रहे हैं। कबीरदास ने किसी की चिन्ता नहीं की, किसी को नहीं छोड़ा, नाथयोगी को भी नहीं छोड़ा।

हेमचन्द्र ने आगरा में रहने के लिए अनुरोध किया है। रहा जा सकता है, पर रेवाड़ी से होकर ही यहां रहना सम्भव है। योगी गृहस्थों के साथ हाट-बस्ती में तो नहीं रहेगा। बस्ती से हटकर कुछ प्रबन्ध करना होगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल हेमचन्द्र अपनी नववधू के साथ वृन्दावन की ओर प्रस्थान कर रहा था। जमाल और मंझन दोनों साथ-साथ आ गये। दोनों ने मंगलकामना के साथ विदाई दी। सन्त पूरनदास, सन्त नवलदास, चौधरी नरवाहन, विजयवाहन, धर्मपाल शर्मा, खेमराज और योगी शिवनाथ ने सोहनलाल से विदा मांगी। सोहनलाल प्रसन्न थे, सबको नये वस्त्रों के साथ विदा करने लगे। मुंशी हरसुखलाल ने विदाई में मिठाइयों का टोकरा भी रख दिया। साथ ही रास्ते की सुरक्षा के लिए भी थोड़ा प्रबन्ध किया। वैसे भी चौधरी नरवाहन, विजयवाहन और खेमराज सशस्त्र थे। पार्वती के साथ दासी सोना भी जा रही थी।

शाह हरखलाल से विवाह समारोह देखा नहीं जा सका। प्रयत्नों के बाद भी विघ्न पैदा

नहीं हो सका। कुछ लोगों को इशारा किया कि पाहुन तो घर में ही रह रहा था। उसी पर पर्दा डाला जा रहा है। एकाध ने सर हिलाये, एकाध तो हेमचन्द्र के आचरण को जान रहे थे। उन्हें यह भी मालूम था कि हेमचन्द्र लक्ष्मीवाटिका में मुंशी हरसुखलाल के साथ रहता था इसलिए उन पर प्रभाव नहीं पड़ा। और अब हरखलाल बिछावन पर पड़ा-पड़ा अपने भाग्य को कोस रहा था।

सोहनलाल को लग रहा था कि बेटी की विदाई हो रही है। अब घर सूना हो जाएगा। घर भरा तो नहीं, पर घर सूना हो गया। वे कभी अपने मोहन-जमाल को देखते और कभी बेटी पार्वती की ओर: सबने साथ छोड़ दिया, वे अकेले हो गए। क्या यही संसार है?

दुर्गा कुंवर की आंखों में आंसू थे। वह बार-बार पार्वती को गले से लगा रही थीं। दासी सोना को बेटी को संभलाने के लिए समझा रही थीं। मुंशी चाचा का मन गद्गद था, पर गम्भीरता छायी हुई थी। जमाल सोच रहा था कि हेमू और पार्वती को लौट कर यहीं आना है। फिर आंखों में आंसू क्यों? मां-पिताजी दोनों इतने विकल क्यों हैं?

चौंतीस

गजराज सिंह महोबा के पास के गांव का था। वह यह सोचता हुआ गांव पहुंच रहा था कि गजेन्द्र को कहां ढूंढा जाय! घर में किसी से झगड़ा हो गया? लेकिन वह बाजीगरों- नटों के साथ कहां चला जाएगा?

हेमचन्द्र ने सुझाव दिया है कि अफगान सेना में सैनिक परिवारों के नौजवान भर्ती हों, वह तो दरिद्री में अफगान बादशाह की सेवा कर रहा है। कुछ राजपूत परिवार खेती में लग गए हैं। कुछ भटक रहे हैं, पर अफगानों की सेवा करने को तैयार नहीं हैं। विदेशी-विधर्मी की सेवा स्वाभिमान के विरुद्ध है, शेरशाह ने कालिंजर के किले को घेरा था। वह जीत कर भी हार गया, अपनी बारूद से खुद जलकर मर गया। पर उसके बेटे सलीमशाह ने बारूद का क्रोध कालिंजर के राजा पर उतारा। इसने राजा और राजपरिवार मार डाले, सारा कालिंजर शोक में डूब गया। महोबा हाय-हाय करता रहा, भीतर ही भीतर रोष उभरता है। पर अफगान बादशाह की ताकत के सामने लोग दबे हैं। ये कैसे अफगान सेना में भर्ती होंगे?

हेमचन्द्र का सोचना भी सही लगता है। यदि प्रजा और सैनिकों का दबाव बढ़ जाय तो अफगान बादशाह जजिया कर भी वसूल नहीं कर सकता। ये मुट्ठी भर तुर्क-अफगान करोड़ों पर राज्य कर रहे हैं। जैसा चाहें, वैसा कर लेते हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में कोई तलवार उठाता...है वह कुचल दिया जाता है। हेम चन्द्र ने इस जंगली हाथी पर अंकुश लगाने के लिए एक यही रास्ता निकाला है।

उसने गांव में प्रवेश किया। लोगों ने पहचाना। बड़े-छोटों से यथायोग्य प्रणाम-

आशीर्वाद आरम्भ हो गया। कुछ लोग साथ हो गए। वह घर के द्वार पर पहुंचा। पड़ोसी इकट्ठे होने लगे। कुछ नहीं भी आये, उन्हें अफगानों की सेवा अच्छी नहीं लगती थी। उनकी दृष्टि में स्वाभिमान का पतन है। रोटी के लिए यह झुकना है, गिरना है पर अधिकांश ने गजराज सिंह का स्वागत किया। उसने सबसे कुशलक्षेम पूछा। किसी ने खाट पर चादर बिछायी, कोई लोटा में पानी लाया। कुछ तो बादशाह के खिदमतगार के चेहरे को पढ़ रहे थे। घर में त्यौहार-सा आनन्द छा गया। उसने अपनी मां और पिता के चरणों का स्पर्श कर आशीष पा ली। धूल से भरा उसका मुखड़ा मां को बड़ा मोहक लगा, दो-दो बच्चे उसके पास आकर उछलने लगे। उनके कपोलों पर अपना प्यार जड़ दिया। दरवाजे के पास चूंघट में पत्नी का मुख झलका। और फिर उसने देखा कि वह उसके पैरों पर झुक रही है।

स्नान-भोजन के बाद वह विश्राम करने लगा। दोनों बच्चे अगलबगल लेट गए, उन्हें लग रहा था कि उन्होंने बहुत दिनों के बाद अपने बापू को पा लिया है। अब उन्हें छोड़ना नहीं है। गजराज उनकी उमंग को समझ रहा था। प्यार कर रहा था। पत्नी पैरों में तेल लगाने लगी। उसने पूछा-'गजेन्द्र कहां चला गया है? छोटे चचेरे भाई को किसी ने कुछ कह दिया है क्या?'

'उन्हें तो सबसे प्यार मिल रहा था। उनका ब्याह भी ठीक हो रहा था, पर...।'
'क्या बात हो गयी?'
'बरस भर से उनका इधर-उधर घूमना-फिरना हो रहा था। कहीं बाजीगर का खेल देखने चले गए, कहीं कथा हो रही है तो उधर ही ठहर गए। इधर कई माह से पता नहीं है।'
‘पता लगाना चाहिए था। ढूंढ़ना नहीं हुआ क्या?'
'सब हुआ है, पर वे तो बाजीगर के साथ चले गए हैं।'
'बाजीगरी का तमाशा देखते-देखते लापता हो गया!'
'बात यह है कि बाजीगर के साथ एक नाचने वाली है, उसी के पीछे-पीछे वे।'

यह सुनकर गजराज सिंह का क्रोध उफनने लगा। पर वह सोच नहीं सका कि किस पर क्रोध किया जाय! गजेन्द्र तो यहां नहीं था। उसने आंखें बन्द कर लीं। यह कैसा उन्माद है! कैसी मस्ती है! आगरा में मोहनलाल और यहां गजेन्द्र।

पत्नी उसके थके पैरों में तेल लगाती हुई जवाब दे रही थी। उसने देखा कि उन्हें नींद आ गयी है।

दूसरे दिन से गजराज सिंह ने गजेन्द्र को ढूंढ़ना आरम्भ कर दिया। वह प्रातःकाल निकल जाता और संध्या तक खाली हाथ लौट आता। बच्चे प्रतीक्षा करते रहते। पत्नी कोठरी की छोटी खिड़की से रास्ता देखती रहती। गजेन्द्र की विधवा मां को भरोसा हो गया था कि गजेन्द्र लौट कर आ जाएगा। गजराज ढंढ़ लाएगा।

दशहरा निकट आ गया। परन्तु गजेन्द्र का पता नहीं चला। वह निराश हो गया।

दशहरे के दिन वह शस्त्रपूजन आधे मन से ही कर सका। देवीपूजन का ढोल बजता रहा, लोग शस्त्रों का प्रदर्शन करते रहे। उसने भी लोगों के अनुरोध पर कुछ दिखा दिया। पर

मन नहीं लगा, पास के गांव में तांत्रिक अपनी साधना में लगा हुआ था। गांव में उसी की चर्चा फैल रही थी, पर वह घर में आकर गजेन्द्र की मां को समझाने लगा। मन में मोहनलाल और हेमचन्द्र की यादें उभर आयीं। हेमचन्द्र का विचार भी स्मरण हो आया। पर वह क्या करे?

उसने संध्या में कुछ नौजवानों से अफगान फौज में भर्ती होने के लिए अनुरोध किया। लोगों ने प्रश्न किये, बड़े-बूढ़ों को समझाने का प्रयत्न किया। कुछ लोग सहमत हुए, कुछ असहमति में चुप रहे। एकाध ने अपनी असहमति को रूखे शब्दों में प्रकट कर दिया। गजराज सिंह आशा-निराशा की धुंधली स्थिति को समझता रहा।

घर में गजेन्द्र की खोज के लिए बातें उठीं। वह बेचैन हो उठा, वह दूसरे दिन पश्चिम की तरफ निकल पड़ा। आगे बढ़ने पर मालूम हुआ कि उधर कोई बाजीगर आया हुआ है। वह उधर जा पहुंचा। बाजीगर अपना खेमा उखाड़ कर आगे बढ़ गया था। वह भूखे- प्यासे दूसरे गांव तक पहुंच गया। बाजीगर खुदादीन खेल की तैयारी कर रहा था। गजेन्द्र वेश बदल कर खेमे में पड़ा हुआ था, उसने दूर से देख लिया था कि भैया आ रहे हैं। वह घबरा गया, उसने खुदादीन को इशारा कर दिया। वह खेमें में घुस आया। चन्दा ने वेश बदलने की सलाह दी। वह खुद भोजन पकाने लगी। बाहर खुदादीन ने ढोलक बजाकर दर्शकों को बुलाना शुरू कर दिया। लोग इकट्ठे होने लगे। बच्चे उछलते हुए आ चुके थे। गजराज सिंह सतर्क आंखों से देखने लगा। रस्से पर खेल शुरू हुआ, एक नौजवान नट रस्से पर सन्तुलन के साथ चल रहा था। छोटी-सी छड़ी ने सन्तुलन कायम रखा था, लेकिन गजराज सिंह का सन्तुलन नहीं रह गया था। वह खेमे की ओर चला गया। उधर भी झांक-झांक कर देखा, मैले-कुचैले कपड़े में एक लड़की खाना पका रही थी। और कोई नहीं था, वह नाचने वाली नहीं लगी। चेहरे और चाल में ऐसी कोई बात नहीं थी। गजेन्द्र का पता नहीं था, वह नट का खेल देखने लगा। उससे रहा नहीं गया। वह खुदादीन से पूछ बैठा—'गजेन्द्र नामक नौजवान खेल देखने आता है। तुम्हारे साथ रहता है, वह कहां है?

खुदादीन ने अपने कान पकड़ कर कहा- 'जी नहीं, मालिक! गांव के लोग खेल देखते हैं और अपने घर लौट जाते हैं। कोई साथ क्यों आएगा? इस गरीब के पास क्या है?

'तुम्हारे पास खेल-तमाशे हैं। नाचने वाली लड़की है।'
'आपके सामने सब हैं, हुजूर! मैं किसी को छिपा कर क्यों रखूगा! यह गलती नहीं हो सकती। वे कहीं चले गए होंगे।'
गजराज सिंह चुप हो गया। खेल के अन्त में नाचने वाली लड़की आयी। मुखड़े पर चूंघट डाले साधारण ढंग से नाचती हुई बांसुरी बजाने का अभिनय करने लगी।

खुदादीन ने ढोलक बजाते-बजाते अपनी मांग रख दी। सबके -सामने हाथ पसार दिया। बिछी हुई चादर पर कोई पैसा फेंकने लगा, कोई अनाज देने लगा। और बाजीगर का खेल खत्म हो गया।

गजराज सिंह ने फिर से एक बार चारों तरफ देखा। उदास भाव से लौट चला। उसने सोचा कि घर में कोई बात हुई है। उसी से रूठ कहीं चला गया है। इन नटों पर सन्देह करना

व्यर्थ है। वह आगरा की ओर लौटेगा तो पास के गांव में पूछता हुआ जाएगा। फौजी भर्ती के लिए थोड़ी और बातचीत कर लेगा। कुछ लोग तो तैयार हुए हैं,
लोगों में विशेष उत्साह नहीं है। गजेन्द्र के कारण उसका उत्साह भी मारा गया है, पर कुछ तो प्रयत्न करना है।

इधर खुदादीन ने सोचा कि यहां से जल्द ही आगे बढ़ जाना चाहिए। यहां रुकने पर परेशानी बढ़ जाएगी। इसलिए उसने सबको खा-पीकर आगे बढ़ने का हुक्म दे दिया। खेमे में वेश बदलकर छिपे हुए गजेन्द्र को यह हुक्म अच्छा लगा, लेकिन उसे खेमे से बाहर निकलने का साहस नहीं हो रहा था। चन्दा सबको खिलाने का इन्तजाम कर रही थी। वह खेमे के भीतर ही खाना लेकर गयी। गजेन्द्र उठ बैठा, वह चुपचाप खाने लगा। चन्दा ने कहा-'आज तो आप पकड़ में आ जाते। बच गये।'

'बाजीगरों के साथ रह कर भी पकड़ में आ जाता तो यह अजीब बात होती।' गजेन्द्र ने उत्तर दिया।

'बाजीगरी कब तक आपको बचाएगी?'

'खुदादीन मियां की बाजीगरी से ऊपर भी चन्दा की कला है। वह कला किस दिन काम में आती?'

'चन्दा की कला सूरज के ताप के सामने फीकी पड़ जाती, हाथी सिंह जी!

'मैं हाथी हूं! हाथी के समान मोटा-सोटा हूं!'

'आप ही तो कह रहे थे कि गजेन्द्र का मतलब इन्द्र का हाथी होता है।'

'इसलिए मैं हाथी हो गया! और तुम दूर-दूर रहकर चमकने वाली चन्दा हो?'

'हां, जब-तब अंधेरे में छिप जाने वाली चन्दा हूं।'

'बात क्या है, चन्दा! ऐसी-ऐसी बातें क्यों बोलती हो और कभी उदास हो जाती हो?'

'आप पकड़ में आ जाते तो मन उदास नहीं होता?'
'तुम दूर-दूर चली जाती। मैं गांव में रहकर राह देखता रहता।'
'फिर आपका विवाह हो जाता। चन्दा की याद भी नहीं आती।'
'ऐसा मत कहो, चन्दा! चन्दा और लोरिक की कहानी गांवों में सुनायी पड़ती है।

एक और चन्दा और गजेन्द्र की कहानी बन जाती।'

'कहानी तो बन रही है, अब आप इसी वेश में चलने को तैयार हो जाइए।'

खेमा उखड़ गया, टट्टुओं पर सामान लद गया। दस लोगों का जत्था आगे बढ़ गया। गांव

के बच्चे बड़ी उत्सुकता से इन्हें देख रहे थे। एकाध पूछ रहे थे कि वे क्यों जा रहे हैं? उन्हें तो ठहरना चाहिए। खेल दिखाना चाहिए।

खुदादीन ने मुस्कराकर बच्चों को समझाया कि दूसरे गांव से बुलावा आया है। जाना जरूरी है, इधर फिर आना है। यही तो कामधन्धा है, धूमते रहना है।

गजेन्द्र ने मुड़कर पीछे देखा। गांव पीछे छूट रहा था। भैया का भय नहीं रहा। वे तो कुछ दिनों में आगरा लौट जायेंगे, वह निश्चिन्त होकर चन्दा के साथ गांव-गांव चलता जाएगा। पर गांव में मां रो रही होंगी, वह क्षण भर के लिए ठिठक गया। पीछे मुड़कर देखा, गांव बहुत दूर छूट गया, वह सब छोड़कर आगे....।

खुदादीन ने टोका–‘रुकना नहीं है। आगे बढ़ना है, नहीं तो परेशानी बढ़ जाएगी।'

गजेन्द्र के कदम आगे बढ़ते गये।

पैंतीस

गजेन्द्र को स्मरण आया कि उसकी बांसुरी उसके पास नहीं है। वह टट्टओं को देखने लगा जिन पर सामान लदा था। बांसुरी दिखायी नहीं पड़ी। उसकी दृष्टि चन्दा पर गयी। वह मुस्करा रही थी, बांसुरी उसी के पास थी। वह बांसुरी को लेकर चल रही थी, चन्दा कितना ध्यान रखती है! पर बांसुरी बजाना सीख नहीं सकी है। थोड़ा सीख
सकी है, इसी बांसुरी ने उसे निकट ला दिया है। बाजीगर का खेल देख रहा था, अन्त में चन्दा आयी थी। चूंघट में नाच रही थी, वह चूंघट में छिपे उसके भोले-भाले मुखड़े को देख रहा था। उसे अचरज हुआ था, बाजीगर के खेल-तमाशे में ऐसी लड़की कहां से आ गयी। बाजीगर की बेटी तो नहीं लगती। कोई खेल भी दिखा नहीं पाती। नाचना भी अच्छी तरह नहीं जानती। पर उसका भोलापन अच्छा लगा, वह प्रतिदिन खेल-तमाशे देखने पहुंच जाता। पहले पहुंच जाता, आसपास बैठकर बांसुरी बजाता रहता। खेल आरम्भ होने पर आसन जमा देता। ऐसा एक सप्ताह तक चलता रहा, खेमा उखड़ गया। ये लोग आगे बढ़ गए, वह भी पहुंच गया। वहां उसकी बांसुरी बजती रही।

चन्दा ने बांसुरी के स्वर को पहचान लिया था, उसने खुदादीन को कहा था। खुदादीन ने उसे बुलाया था। उसे बांसुरी बजाने को कहा गया। उसका अन्तर खिल उठा था, वह पलकें बन्द कर बजाता रहा! सभी 'वाह-वाह कर उठे थे। उसकी पलकें खुली थीं। उसने देखा कि चन्दा उसे देख रही है। उसके होंठ थरथरा रहे हैं। वह कुछ बोलना चाहती है, पर बोल नहीं पा रही है। वह बुन्देली लोकगीत की धुन बजा रहा था, लगा कि कड़ी टूट जाएगी। पर उसने कड़ी को टूटने नहीं दिया। चरम बिन्दु तक पूरा किया, सबका मन झंकृत हो उठा। चन्दा कहीं खो गयी थी। यही बेसुधी कला की सफलता है। हर कलाकार चाहता है कि जैसे वह बेसुध हो जाता है, वैसे ही सभी बेसुध हो जायें। धरती और

आकाश को भूल जायें, काल की गति को भूल जायें। उसने कला द्वारा चन्दा को बेसुध कर दिया है, अपनी ओर आकृष्ट किया है। उसका अन्तर प्रफुल्लित हो उठा।

उसे याद है कि खुदादीन ने उससे नाम-धाम पूछा था। वह छिपा नहीं सका था, उसने सब कुछ बता दिया था। पर वह कुछ पूछ नहीं सका था। चाहता था कि वह चन्दा के बारे में पूछे लेकिन पूछना ठीक नहीं था। खुदादीन की बीवी ने पूछा था—'क्या वह उनके साथ रहना चाहता है?

उसने उत्तर दिया था—'उसकी इच्छा तो है।'

'तुम्हारे घरवाले ढूढेंगे, पकड़े जाने पर हम लोगों की भी मारडांट हो सकती है।'

'बाजीगरी किसलिए है? छिप जाऊंगा। कोई पहचान नहीं सकेगा।'

'लेकिन तुम क्यों भटक रहे हो? हमारे पीछे क्यों आ रहे हो? हम लोग तो नट-बाजीगर हैं। तुम तो क्षत्री राजपूत हो।'

'मैं बाजीगरी सीखना चाहता हूँ। मैं बांसुरी सिखा दूंगा, साथ रहने दो। तुम लोगों की रखवाली भी हो जाएगी।'

खुदादीन ने आपस में बातचीत की, हो सकता है कि चन्दा से भी पूछताछ हुई हो। उसके साथ रहने का फैसला हो गया। उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। वह चन्दा के निकट रह सकेगा। उसे समझने का अवसर मिलेगा। उसने अपनी बांसुरी को हृदय से लगा लिया, अपने गांव में भी लोग बांसुरी सुनने को घेरे रहते थे। कुछ लोग जलते भी थे।

वह बाजीगर दल के साथ-साथ चला, चन्दा कभी भोर और रात में बांसुरी बजाने को कह देती है। वह अपना हृदय उड़ेल देता, और वह निकट आता गया। खुदादीन ने बुरा नहीं माना। ऐसा लगा कि वह अच्छा महसूस कर रहा है। धीरे-धीरे पता चल गया कि चन्दा उसकी बेटी नहीं है, इन लोगों ने इसे गुण्डों से बचाया था। वह फिर अपने घर लौट नहीं सकी। शायद कोई खोजने वाला भी नहीं था। घर छोड़ी लड़की को कौन स्वीकार करे। इसीलिए खुदादीन उसे बेटी के समान रख रहा था। यह भी बड़ी बात थी। उसे एक कलाकार समझकर रख लिया, पर अभी उसकी परीक्षा ली जा रही है। वह टिकता है या भागता है!

चन्दा अपने बारे में पूरा पता नहीं बताती है। वह मुस्कराकर टाल देती है। कभी- कभी वह उदास होकर आकाश की ओर देखती रहती है। शायद मां की याद आती होगी, यह स्वाभाविक है।

चन्दा बांसुरी को हाथों में थामकर चल रही थी। वह मैना काकी के साथ थी, उसे याद आ रही थी कि इसी बांसुरी के कारण गजेन्द्रसिंह से मिलना हो सका। वह प्रत्येक दिन बांसुरी सुनती रही है, उसका अन्तर खिंचता रहा है, वह कौन है? उसकी बांसुरी कोयल से भी मीठी तान सुनाती है।

काका ने बांसुरी वाले को बुलाया था। उसने बाजीगर के साथ रहने की इच्छा बतायी थी, उसने उसके खिचाव का अनुभव कर लिया था। वह भी तो उसकी बांसुरी पर रीझ उठी थी। उसका अन्तर खिंचता चला गया। वह आठ-नौ वर्षों से इन बाजीगरों के साथ है। वह किशोरी थी, आज वह युवती है। उसे तो एक प्रकार से बाजीगर के हाथों में सौंप दिया गया। ये कुछ भी कर सकते थे। उसे सड़कों पर नचा सकते थे, पर खुदादीन काका ने ऐसा नहीं किया। बेटी के समान रखा, जहां-तहां तुर्क-अफगान हाकिमों की नजर पड़ जाती, खुदादीन काका परेशान हो जाते। हर बार बचाया है, बचाना कठिन हो रहा था। शायद इसीलिए एक राजपूत यूवक साथ में रख लिया, पर यह केवल रखवाला नहीं है। वह सर्वस्व बन रहा है। वह बांसुरी के साथ तलवार भी चमका देता है, और तलवार को रखकर बांसुरी से चमत्कृत कर देता है। यदि वह पकड़ में आ जाता तो वह आंसू बहाती रह जाती। समझ जाती कि ईश्वर ने उसे भाग्य की कंटीली झाड़ी में फेंक दिया। वह लहूलुहान होकर भटक रही है। पचासों के सामने नाचने जाती है। नाच नहीं पाती, पर वह नाचती है। लोकलज्जा कहां बची है।

वह बार-बार उससे पूछता है, उसकी जीवन-कथा जानना चाहता है। उसकी व्यथा बढ़ जाती है। एक कहानी गढ़ ली गयी है। वह उसे दुहरा देती है, उसे इस कहानी पर पूरा विश्वास नहीं हो पाता, पर इससे अधिक क्या कहा जाय! वह उसके सिसकते जीवन के पास आया है। वह टिक जाय, पर बाजीगरों के साथ टिक जाना एक समस्या है। खेल-तमाशा दिखाना, हाथ पसारना और गांव-गांव खेमा गाड़ना- उसे अच्छा लगेगा? लेकिन वह टिकेगा। एक खिचाव से वह चन्दा ही है। उसे टिकना है, इस राज्य में उसका सबकुछ नष्ट हो चुका है। बांसुरी उसके शून्य जीवन में कुछ भर रही है।

उसने कई बार यमदेवता का आवाहन किया, जी कर क्या लेना था! गड्ढे में गिरकर जीना व्यर्थ लगा। लगा कि कोई पंछी बाज से घायल होकर किसी झाड़ी में गिर गया है और फिर बहेलिया के हाथ में पड़ गया है, पर नहीं, खुदादीन काका ने उसकी पीड़ा को समझने का प्रयत्न किया।' वह कई माह रोती रही। माथे को फोड़ने की चेष्टा की, एक बार एक छुरी मिल गयी। उसने उसी से यमदेवता को बुला लेना चाहा। मगर काकी के कारण वह बच गयी।

अब लगता है कि बांसुरी के कारण जी लेगी। नाम, धाम और कुल को छिपाकर वह जी लेगी। हाथीसिंह ने नाम, धाम और कुल को नहीं छिपाया है। एक बड़ी बात है। इनसे सहारा मिल जायेगा। इनकी आंखों में कांटें नहीं हैं। इनकी सासों में विष नहीं है। बोल में कपट नहीं है। मन की बात बांसुरी कह देती है, वह समझने लगी थी, तभी तो खेमे के बाहर बजती हुई बांसुरी के लिए चाह जगने लगी। वह प्रतीक्षा करने लगी, बांसुरी के स्वर का अर्थ लगाकर शीश हिला, भीतर कहीं कुछ कंपन-सा अनुभव हुआ। वह कंपन नख से शिख तक फैला, अपने घर-द्वार को भूलकर उसके आस-पास बांसुरी बजाता रहा। बांसुरी बजती रही, उसके स्वर उसके पास आते रहे।

पुरुष कभी अपनी शक्ति से अधिकार करना चाहता है। पुरुष कभी अपने गुण से किसी को आकृष्ट करना चाहता है। कभी अपने अन्तर के अमृत को बरसाकर किसी को तृप्त कर देता है। हाथीसिंह ने अन्तर के अमृत को बरसाना चाहा है। तलवार दिखाने की चेष्टा नहीं की।

वह बांसुरी उसके हाथों में है! हाथों में नहीं, हृदय के पास है। उसने इधर देखा है, इन हाथों में थमी हुई बांसुरी को देखा है। मन को आश्वासन मिल गया, जीने की यही भूमि है, अभी तक भूमि नहीं मिली। काका-काकी के कारण सांसें बन्द नहीं हो रही थीं। अब जीने के लिए सांस ले सकेगी।

यह ठीक है कि उसकी भटकन विवशता है। सांसों का भार ढोना पड़ा है, पर बांसुरी वाले की भटकन अनुराग के कारण है। यह अनुराग उसके प्रति है। अब दोनों की भटकन अनुराग की भूमि पर है, कांटों में फूल उगे हैं। मानो कांटें ही फूल बन रहे हैं। पिछले जीवन को भूल जाना है।

चन्दा क्षण भर के लिए थरथरा उठी और फिर आंखों की कोर में आंसू की बूंदें ढलक उठीं, उन्हें हाथों से मिटाने की इच्छा नहीं हुई। उसने पलकें बन्द कर कहा-'हाथों में बांसुरी रहे और आंखों में आंसू की बंदें, ये दोनों ही अपने हैं।'

पलकों को बन्द करते ही आंसू की बूंदें धरती पर गिर पड़ी। उसके पैर थम गये, उसने नीचे देखा, उन बूंदों से धरती के कण भीग गये थे। इन पर पैर नहीं पड़ना चाहिए। उसने बचकर पैर बढ़ाये और चलती रही।

छत्तीस

सड़क की दोनों तरफ किशनपुरा के बाल, किशोर, तरुण और अधेड़ लोग उत्साह और उल्लास के साथ हेमचन्द्र और पार्वती को विदा कर रहे थे। सड़क पर भीड़ लग गयी।
हेमचन्द्र वृन्दावन के संत पूरनदास का पुत्र है। वह हिन्दुओं की ओर से अफगान दरबार में स्थान पा चुका है। वह केवल सेठ सोहनलाल का नहीं, सबका पाहुना है। सबके स्नेह और आदर का पात्र है इसलिए उस पर फूल और अक्षत बिखेरे जा रहे थे। उधर श्रीविलास में शाह हरखलाल ने खिड़कियों को बन्द कर मुंह छिपा लिया।

सबने महसूस किया कि विवाह के बाद बारात लौट रही है। वृन्दावन की ओर बढ़ती हुई टोली बारात बन गयी थी। लोग सहर्ष अभिनन्दन कर रहे थे, आगरा नगर बधाई दे रहा था।

आगरा नगर से बाहर निकलते ही चौधरी नरवाहन ने संत पूरनदास से अनुरोध किया—'इस बार हम जमनाजी को पारकर गोकुलगोवर्धन की ओर चलें।'

'बात क्या है, नरवाहन जी। भैगांव चलने का विचार है क्या?' मुस्कराते हुए संत पूरनदास ने पूछा।

'विचार तो है, गोवर्धन में भगवान श्रीनाथ के दर्शन हों। मेरे भैगांव में

स्वागत-सत्कार हो और फिर वृन्दावन।'

आपका विचार उत्तम है, नरवाहन जी! मेरी सहमति है।' संत नवलदास ने मधर स्वर में समर्थन किया।

'जब आप लोगों को सहमति हो गयी, तब मैं क्या कहूं!' पूरनदास ने विजय वाहन को यमुना तट की ओर इशारा किया।

विजयवाहन ने रास्ता बदल लिया। सभी यमुनातट पर पहुंचे, नाव से नदी पार की। सभी गोकुल की ओर बढ़ चले, बारात श्रीनाथजी के दर्शन-पूजन के लिए बढ़ती गयी। पश्चिम की ओर यमुना बह रही थी। जहां-तहां कदम्ब के पेड़ों के झुरमुट थे। उनमें फल लगे हुए थे। गोचारण के लिए निकले गोपबालक कदम्ब तोड़ रहे थे। कोई कदम्ब पर चढ़कर बांसुरी बजा रहा था। कहीं तमाल कुंज दिखायी पड़ रहा था, पूरब की ओर थोड़ी-थोड़ी दूर पर छोटे-छोटे गांव दिखायी पड़ने लगे। गांव के आस-पास आम, जामुन, गूलर, कदम्ब, नीम और पीपल के उपवन थे। लग रहा था कि प्रत्येक गांव उपवन के बीच बसा हुआ है। चारों ओर खेतों में हरियाली थी। गायें चर रही थीं।

सोना ने पार्वती को गांव का दृश्य देखने के लिए अनुरोध किया। पालकी में बैठी पार्वती गांव का यह दृश्य देख लेती। कभी यमुना जी की ओर देखने लगती। वह अपने पिताजी-मां जी के साथ एक बार वृन्दावन जा चुकी है। उसे गांव और उपवन के दृश्य बड़े अच्छे लगे थे, पर जहां-तहां गरीब बच्चों-बूढ़ों को देखकर उसका हृदय सिहर गया था।

इस बार गोवर्धन की यात्रा है। आज वह बहू है, मन ने जिसे चाहा, उसे पा लिया। वे साथ-साथ हैं, वह अपने सौभाग्य के लिए भगवान श्रीनाथ से विनती करेगी, लोग तो गोवर्धन की परिक्रमा करते हैं। वह नहीं कर सकेगी, फिर कभी अवसर मिलेगा, वह इनके साथ परिक्रमा करेगी। ये उसे पारो समझकर अपने हृदय का पूरा प्यार देंगे। ऐसा तो न होगा कि पारो की याद में उसे पूरा स्नेह न मिले! ऐसा नहीं होगा, वह दोनों संध्या बड़ी बहन पारो की भस्मी के आगे शीश झुकायेगी, पांच फूल भस्मी के डब्बे पर चढ़ाकर पांच फूल इनकी अंजुरी पर अर्पित करेगी, अपने हृदय का सम्पूर्ण स्नेह उड़ेल देगी। सम्पूर्ण समर्पण से इनका स्नेह पा लेगी, यही तो सौभाग्य है!

सोना ने दिखाया कि गोप बालक गेंद खेल रहे हैं। एक बालक गेंद से दूसरे को छू लेने के लिए गेंद को फेंक रहा है। दूसरा अगलबगल हट रहा है। गेंद छू गयी। अब वह गेंद उठाकर उस पर फेंक रहा है। गेंद को छूते ही हर्ष के शब्द गूंज उठे।

पार्वती गेंद के खेल को देखने लगी। पालकी बढ़ती जा रही थी। करील की झाड़ी की आड़ हो गयी। खेल का दृश्य छिप गया। बालकों की आवाज आती रही। उसका मन प्रसन्न हो उठा। उसने भी इन्हें लक्ष्य बना कर छू लिया है। इन्होंने भी छू लिया, तभी तो आज साथसाथ गोकुल की ओर जाना हो रहा है। पर ये जब-तब याद में खो जाते हैं। वह भी साथसाथ उस याद में खोयेगी, और फिर ये पारो समझ कर हृदय से लगा लेंगे।

रास्ते में भोजन-विश्राम करते हुए यह दल गोकुल की ओर चलता रहा।

कच्ची सड़क की दोनों तरफ करील की झाड़ियां दिखायी पड़ी। साथ ही कांस के उजले फूल भी मुस्कराते हुए झलकने लगे। गोकुल के पास पहुंचते हुए सबने देखा कि मैदान में चौगान का खेल चल रहा है। गेंद को मुड़े हुए डंडे (हेंगुरि) से मारकर दूसरे दल के हाल की ओर ले जाया जा रहा था। दूसरा दल अपनी हेंगुरि से हाल में पहुंचने से बचा रहा था।

विजयवाहन ने चाहा कि सभी कुछ क्षण रुककर बटा-चौगान के खेल को देखकर आनन्द प्राप्त करें। वह रुक गया, सभी रुक गए। झाड़ियां नहीं थीं। खेल का दृश्य दिखाई पड़ रहा था, खिलाड़ी बड़े सतर्क थे। उत्साह एवं नियम से खेल रहे थे। हेंगुरि की एक चोट से गेंद हाल में पहुंच गई। विजयी दल उमंग में उछलने लगा। दूसरे दल ने भी जीत को कबूल कर लिया।

विजय गोकुल से होते हुए गोवर्धन की ओर मुड़ा। चौधरी नरवाहन क्षेत्र का परिचय कराते बढ़ रहे थे। संत पूरनदास और नवलदास में भी श्रद्धायुक्त उत्कंठा थी। वे वृन्दावन में रम रहे थे। इधर नहीं आ सके थे, नरवाहन जी के गांव में भी नहीं जा सके थे। इस बार यात्रा पूरी हो जाएगी, और पुष्टि सम्प्रदाय के गोस्वामी विट्ठलनाथ और भक्त कवि सूरदास जी के भी दर्शन हो जाएंगे। सूरदास का कवित्व तो सबको आकृष्ट कर रहा है। सूरदास की वाणी से पुष्टि सम्प्रदाय लोकप्रिय हो रहा है।

अपने राधावल्लभ सम्प्रदाय में शृगार ही मुख्य है, पर वल्लभाचार्य के पुष्टि सम्प्रदाय में वात्सल्य की प्रधानता रही है। गुरु गोस्वामी कह रहे थे कि गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रभाव से आचार्य वल्लभ ने प्रियाजी को श्रीकृष्ण के वामभाग में स्थान दिया है। माधुर्य भाव को अपनाया है, पर गुरु गोस्वामी ने राधावल्लभ सम्प्रदाय को स्वतन्त्र सिद्धान्त के आधार पर खड़ा किया है। राधा जी का स्वरूप गोस्वामी हितहरिवंश जी की साधना की देन है। वृन्दावन में भी कवियों का समूह एकत्र हो रहा है। अपने गुरु देव भी रससिद्ध कवि हैं।

नाथपंथी योगी शिवनाथ योग की साधना से भिन्न भक्ति-साधना को देखने-समझने के लिए उत्कंठित हो रहे थे। वे विचार कर रहे थे कि हेमचन्द्र ने आगरा में रहने को कहा है, अवश्य ही रहा जाय। राजधानी में रहने से योग का प्रभाव फैल सकता है। हेमचन्द्र की सहायता की जा सकती है, तेजस्वी शिष्य है। पता नहीं, वह व्यापार करेगा या राजकाज में लग जाएगा। देवली में तो वह बहुत कुछ सोचता रहा है। यहां वह अफगान बादशाह तक पहुंच चका है। ऐसा न हो कि वह बादशाह का मुसाहिब बन जाय। दरबार की चकाचौंध में वह खो जाय। राग-रंग में डूब जाय। आतंक के शासन, जजिया के शासन और मुगलों के आक्रमण को भूल जाय। यह स्मरण दिलाने के लिए आगरा में रहना चाहिए।

धर्मपाल और खेमराज हेमचन्द्र के साथ चल रहे थे। उनका विनोद चल रहा था, वे अपने नव-विवाहित मित्र के साथ विनोद के अवसर को छोड़ना नहीं चाहते थे। हेमचन्द्र भी मुस्करा कर विनोद का रस ले रहा था, स्वयं भी विनोद कर लेता था।

धर्मपाल ने कहा-'हेमू भाई! रासो के युद्ध वर्णन पढ़ते-पढ़ते शशिव्रता और संयोगिता की मधुयामिनी तक आ पहुंचे।'

खेमराज ने टोका-पंडित धर्मपाल जी! अफगान राजदरबार के सभासद हेमचन्द्र हैं, हेमू नहीं। इन्हें सुहाग की मधु रात्रि का संयोग मिल गया, क्यों छोड़ दें।'

'हां, भाई! पार्वती में पारो की झलक मिली। मन में द्वन्द्व रहा, उधर सेठ सोहनलाल की समस्या थी, उनकी बात को मान लेना पड़ा।'

'आपने आगरे के सेठ का उद्धार किया है या अपने मन का या दोनों का परिणाम अच्छा ही रहा है। हम लोगों ने मन भर भोजन किया है। इसलिए हमने बधाई दी है।' धर्मपाल ने मुस्कराते हुए कहा।

'सच है, हेमचन्द्र जी! वधू में पारो की झलक है। आपने पक्का ध्यान लगाया है।
पार्वती-पारो नाम की धारणा भी ठीक रही है।' खेमराज ने चुटकी ली।

'अरे खेमराज! ये तो योग को छोड़कर संयोग के चक्कर में पड़ गए। उधर योगिराज इन्हें अपना शिष्य मानते हैं।' धर्मपाल ने विनोद किया।

'धर्मपाल! पढ़-लिखकर मूरख बनते हो!' खेमराज बोला।
'क्या मूर्खता हो गई?' धर्मपाल ने पूछा।

'योग का अर्थ जोड़ना है। इसलिए मेरे सखा की गांठ सेठ की पुत्री से जुड़ गई। कहां गलत हुआ?' खेमराज ने प्रहार कर दिया।

'भाई खेमराज! तूने तो एकदम ठीक कहा है। योगी जी को बधाई है।' धर्मपाल और खेमराज ने हेमचन्द्र की ओर देखा।

'आप सबकी हार्दिक बधाई स्वीकार है। अब आप लोग गोवर्धन के पास पहुंच रहे हैं। श्रीकृष्ण का ध्यान लगाइए, हेम-पार्वती पर ध्यान लगाने से कुछ लाभ नहीं होगा।' हेमचन्द्र ने विनोद किया।

'सर्वथा अनुचित, हेमचन्द्र! धर्म-परम्परा से पार्वती-हेमचन्द्र का जोड़ा बनता है, हेम-पार्वती का नहीं जैसे गौरी-शंकर, राधा-कृष्ण और...।' यह धर्मपाल की मधुर चेतावनी थी।

'यदि आपने दरबारो शान में इस परम्परा को तोड़ा तो हम भाभी से झगड़ा करा देंगे।'- खेमराज ने सरस चुनौती दी।

"मित्रो! अपनी त्रुटि को कान पकड़कर मानता हूं।'

मन्द-मन्द हास का हरसिंगार बरस पड़ा। पास की पालकी में पार्वती खेतों-उपवनों को देखना भूल गई। प्रिय के मित्रों के विनोद को सुनना-समझना चाहा, पर वह सुन नहीं सकी।

श्रीनाथ जी का मन्दिर दिखाई पड़ने लगा। विजयवाहन ठहर गया, सभी के पैर रुक गए। मानसी गंगा के तट पर कदम्ब की छांह में ठहरने और विश्राम का प्रबन्ध हुआ। सभी मानसी गंगा में हाथ-मुंह-पैर धोकर पवित्र हुए। फिर श्रीनाथ जी के मन्दिर के द्वार पर आ पहुंचे। सन्त पूरनदास, नवलदास, योगी शिवनाथ और चौधरी नरवाहन आगेआगे थे। हेमचन्द्र के साथ विजय, धर्मपाल और खेमराज थे। सोना के साथ पार्वती थी, और सबके पीछे रक्षक और भारवाहक थे।

गोस्वामी विट्ठलनाथ को जानकारी मिल गई कि राधावल्लभ सम्प्रदाय के पूरनदास जी अपने पुत्र का विवाह सम्पन्न कराकर दर्शन के लिए आ रहे हैं। साथ में संत नवलदास, संत राजा परमानन्द, रेवाड़ी के योगी शिवनाथ और भैगांव के चौधरी नरवाहन हैं। मन प्रसन्न हुआ, उन्होंने अधिकारी कृष्णदास को सबका स्वागत करने का निर्देश दिया। अधिकारी कृष्णदास ने मन्दिर के प्रांगण में सबका स्वागत किया।

सभी अधिकारी कृष्णदास के साथ श्रीनाथ जी की प्रतिमा के समक्ष आए। सबके शीश झुक गए, गोस्वामी विट्ठलनाथ ने सबको मंगलाशीष दी। सभी बैठे, संत पूरनदास ने देखा कि श्रीकृष्ण के वामभाग में श्री राधाजी विद्यमान हैं। उनके नयन चकोर बन गए। नवलदास तथा परमानन्द की दृष्टि भी टिक गई। सबने देखा कि शरद् के फूलों से शृंगार हुआ है, शोभा अनुपम है। योगी शिवनाथ राधाकृष्ण की छवि को देखते रह गए।

गोस्वामी विट्ठलनाथ कह रहे थे-आचार्य वल्लभ देव ने 'कृष्णाश्रय' में लिखा है- देश म्लेच्छाक्रान्त है। गंगादि तीर्थ दुष्टों द्वारा भ्रष्ट हो रहे हैं। अशिक्षा और अज्ञान के कारण धर्म नष्ट हो रहा है। ऐसी स्थिति में एकमात्र कृष्णाश्रय में ही जीवन का कल्याण है। धर्म और जीवन के पतन की विषम अवस्था में प्रेम रूप श्रीकृष्ण के अनुग्रह से भक्ति ही सर्वस्व है। हमारे हृदय के भाव-वात्सल्य, राख्य, माधुर्य भाव श्रीनाथ जी के प्रति अर्पित होकर दिव्य बन जाएं। हम दिव्य भाव में उनके नित्य विहार में सम्मिलित हों। मुक्ति नहीं, केवल भक्ति.. भगवान के विग्रह की सेवाभक्ति! भक्त शिरोमणि सूरदास की वाणी क्या कहती है हम सुनें!

सूरदास ने शीश झुकाकर पद सुनाना आरम्भ किया -

प्रीतिबस स्याम है रावरंक कोउ, पुरुष के नारि नहिं भेदकारी।
प्रीतिबस देवकी गर्भ लीन्हो बास, प्रीति के हेत ब्रज वेष कीन्हौ।
प्रीति के हेतु जसुमति-पयपान कियौ, प्रीति के हेतु अवतार लीन्हौं।
प्रीति के हेतु बन धेनु चरावत कान्ह, प्रीति के हेतु नन्द-सुवन नामा।
प्रीति के हेतु सूरज प्रभुहिं पाइए, प्रीति के हेतु दोउ स्याम-स्यामा।

इसी प्रीति की अनन्यता की अभिव्यक्ति शरद् रास में हुई है। शरत पूनो की चांदनी

में श्रीकृष्ण ने प्रीतिवश मुरली बजाई। सभी गोपियां बेसुध हो दौड़ पड़ीं।
गोपियों के मध्य श्रीकृष्ण राधाजी के साथ मरली की ध्वनि पर नत्य करने लगे।
सबने समझा कि श्री श्याम उन्हीं के साथ हैं।

यमुन पुलिन मल्लिका मनोहर सरद सुहाई यामिनी।
सुन्दर ससि गुण रूप राग निधि, अंग-अंग अभिरामिनी।।
रच्यौ रास मिलि रसिक राइसों, मुदित भई ब्रजभामिनी।
रूप निधान स्याम सुन्दर घन-आनन्द मन विस्रामिनी॥

सभी मन्त्र मुग्ध-से हो गए। लग रहा था कि सूर की अमृतवाणी उनके प्राणों में गूंज रही है, और आंखों के सामने शरद चन्द्रिका में रास का अलौकिक दृश्य है। यह रास नृत्य वृन्दावन में हुआ था। रास कुंज उसी तट पर है, पर इधर सूर ने अपनी वाणी से रास कुंज की रचना कर दी है। श्याम सब जगह हैं। सबके साथ हैं। प्रेम के वश हैं। हेमचन्द्र ने पार्वती की ओर देखा। पार्वती ने मन्द मुस्कान के साथ पलकें बन्द कर लीं, और फिर श्रीनाथ जी के सामने सिर झुका दिया।

अधिकारी कृष्णदास के संकेत पर सबको प्रसाद मिला। गोस्वामी विट्ठलनाथ ने रात्रि विश्राम का अनुरोध किया। संत पूरनदास ने विनम्रतापूर्वक अनुरोध को मान लिया।

रात में हेमचन्द्र विजय से बातचीत कर रहा था। विजय बता रहा था कि इधर के जाट बन्धु फौज में भर्ती हुए हैं। बहुत समझाना पड़ा है। लोग तैयार नहीं हो रहे थे। कहते थे कि तुर्क-अफगानों की सेवा क्यों करें? इनकी फौज में शामिल होकर अपने ही भाई-बन्धु को दबाएं? धीरे-धीरे बात समझने लगे हैं, और भी भर्ती होंगे।
दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान-दर्शन कर सभी ने चौधरी नरवाहन के गांव भैगांव के लिए प्रस्थान कर दिया।

सैंतीस

कल शाम में खदादीन बाजीगर का खेमा तलैया किनारे लग गया था। तलैया के उस पार गांव था। इधर पथरीले टीले फैले हुए थे। छोटी-सी पहाड़ी भी चुपचाप खड़ी थी, तलैया के चारों तरफ गाछवृक्ष थे।

सूर्योदय के पहले चन्दा उठी। हवा में हल्की ठंडक थी, अंधेरे-उजाले के संगम पर उसने स्नान किया। सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगी। उधर टीले पर से बांसुरी की ध्वनि सुनायी पड़ी। वह क्षण-भर के लिए चंचल हो उठी, पूर्व दिशा में लालिमा दिखायी पड़ी। उसने चंचल मन को साधा, उसके अन्तर से कुछ शब्द होंठों पर तैरने लगे।

वह तलैया से निकलकर ऊपर आयी, उसे स्मरण हो आया कि मां भी भवन के उपवन में स्थित

सरोवर में स्नान कर कार्तिक माह में सूर्य को अर्घ्य देती थीं, तुलसो के सामने दीप जलाती थीं, उन दिनों उनका आहार-विहार बड़ा संयम-नियम से होता था। दान-पुण्य के लिए खले हाथ से सब किया, पर इन सबसे क्या मिला? उनका दु:खद अन्त हुआ, और उसका कष्टमय जीवन चल रहा है। भगवान की इस निष्ठुरता पर मन खीझ उठता है। सब व्यर्थ है, पर इस कष्ट में मन ऊपर वाले की दया के लिए विकल हो जाता है। मन का खीझना और फिर उसके आगे झुकना कैसी विवशता है, यही दुर्बलता है।

उसने देखा कि मैना काकी उसके स्नान और पूजा को बड़े स्नेह से देख रही है। उन्हें अच्छा लग रहा है। उन्हें जरूर लगता होगा कि काश, वे भी ऐसा कर पातीं। काका ने बाजीगरी सीखने के लिए अपने उस्ताद की शर्त को मान लिया था। देवीदीन से खुदादीन बन गये थे। नट के बदले बाजीगर कहलाने लगे, खेल-तमाशे दिखाकर जीवन चलाने लगे और कोई फर्क नहीं आया-न ये बड़े बन गये और न छोटे हो गये, जहां के तहां रह गये। अपनी जाति से जरूर कट गये, पर घुमक्कड़ों के लिए क्या परेशानी! गांव-गांव घूम रहे हैं। परिवार साथ में है। कोई चिन्ता नहीं है। काकी को कभी-कभी लगता है कि वह कुछ खो चुकी है।

चन्दा ने मिट्टी के एक बड़े सकोरे में मिट्टी भर ली थी। उसमें तुलसी का बिरवा लगा लिया था। उसने तुलसी में जल दिया, हाथ जोड़ा, दीप नहीं जला सकी थी, पर उसने भावना की कि एक नन्हा दीप जल रहा है। चारों तरफ अक्षत और फूल हैं, और वह झुकी हुई है, ऊपर से बांसुरी की ध्वनि आ रही है। मन को टिकाना कठिन है। उसने एक बार टीले की ओर देखा, वह तो आंखें बंद कर बांसुरी बजा रहा है। हृदय का संगीत सुना रहा है, उसे भी स्नान कर पूजा करनी चाहिए, पर वह तो उसकी पूजा के बाद ही स्नान करेगा। पूजा के समय तक बांसुरी बजायेगा, मानो उसके संगीत की लय पर ही उसके शब्द देवता तक पहुंचेंगे, उसे भी अच्छा लगता है, संगीत की लय पर ही उसके शब्द तुलसी को अर्पित हों। वृन्दा और विष्णु को निवेदित हों, यह तो अद्भुत है—विष्णु तुलसी के साथ ही किसी की पूजा को स्वीकार करते हैं, कैसी मनोहर कथा है। कितना दिव्य भाव है।

चन्दा स्नान-पूजाकर मैना काकी के पास आयी। काकी के सामने झुकी, काकी पीठ पर हाथ फेरकर आशीष देने लगी, वह मुस्करा उठी। खुदादीन काका भी आ गये, उन्होंने भी आशीष दी। वह बोल उठी'काका! आप खुदादीन होकर भी मेरी पूजा को अच्छा समझ रहे हैं?'

'हां, बेटी! बुरा क्यों समझूं?'

'खुदा का बन्दा तो देवपूजा को कुफ्र मानता है। इस कुफ्र को मिटाना फर्ज समझता है, काफिरों को कष्ट देना पुण्य मानता है और काफिरों की बेटियां उनके लिए।

'बस करो, बेटी! तुम्हारी बात सही हैं। तुमने बहुत तकलीफ पायी है, लेकिन मैंने बाजीगरी के शौक से उस्ताद की शर्त मानी है। देवीदीन से खुदादीन बन गया हूं। उनके उन्माद और जुनून को तो नहीं अपनाया है....वह तो अधरम है।'

पर यह तो मजहब का आदेश है। सारे तुर्क कमोबेश ऐसा करते हैं, हम भुगत रहे हैं।'

'मैं अरबी या तुर्की नहीं हूं, बेटी! मैं इसी मिट्टी-पानी का हूं। इस मिट्टी- पानी का हुक्म है कि सबको अपने मन के मुताबिक पूजापाठ का पूरा हक है। किसी को तकलीफ न दो। बेटी-बहू को मां-बहन मानो और मेहनत की रोटी खाओ, यही दीन-धरम है। मैं इसी दीनधरम का पालन कर रहा हूं।'

'तब तो आप आधे-अधूरे हैं। कोई मुल्ला आपको पूरा नहीं।'

'न माने, मैंने भगवान की इबादत का एक खास ढंग अपनाया है। अपने माटी-पानी के स्वभाव को नहीं बदला है। अपने पुरखों को भी नहीं बदला है। इसलिए तुमको बेटी के समान माना है, तुम्हारा मान बचाया है। तुलसी के बिरवे को देख खुश हो जाता हूं और बांसुरी वाले को।'

चन्दा की पल के झुक गयीं, काका ठीक कह रहे हैं। ये हिन्दी मुसलमान हैं; अरबी- ईरानी नहीं, इनके संस्कार नहीं बदले हैं।

गजेन्द्रसिंह टीले से उतरकर तलैया में स्नान करने जा रहा था। चन्दा दो क्षण देखती रही। काकी कलेवा के लिए रोटी बनाने लगी। चन्दा साथ देने पहुंच गयी। खुदादीन अपनी बाजीगरी का अभ्यास कराने लगा।

गजेन्द्र ने देखा कि तलैया के उस पार गांव वाले स्नान करने आ गये हैं, वह इस पार है, शाम में इन गांव वालों को खेल-तमाशे दिखाये जायेंगे। चन्दा ने बांसुरी बजा ना आरम्भ कर दिया है। यदि वह बांसुरी बजाये और चन्दा नाचने के बदले केवल उसके पास आकर खड़ी रहे राधा के समान तो एक आकर्षक दृश्य रच जायेगा। कितना सुन्दर लगेगा, चन्दा का नाचना नहीं, केवल बायीं तरफ राधा बनकर खड़ा हो जाना और उसकी बांसुरी का बजते रहना, यदि वह उससे बांसुरी छीनकर बजा ले....कितना मनभावन होगा! वह कहेगा, इस दृश्य की रचना करेगा, काका मानेंगे? जरूर मानेंगे!

सूर्य का लाल गोला सामने आ गया। गजेन्द्र स्नान कर अर्घ्य देने लगा, पलकें बन्द कर लीं। उसके सामने कृष्ण-राधा का दृश्य झलक उठा और वह दृश्य सूर्य के अरुण बिम्ब में बदल गया। एक क्षण के बाद वही दृश्य सामने आ गया। राधा ने बांसुरी छीन ली है। वह लेकर तमाल कुंज में छिप रही है और वह पास जाकर विनती कर रहा है। पलकें खोल लीं। हाथ में खाली लोटा था, वह मन-ही-मन मुस्कराया और फिर लोटे में जल भरकर तलैया के ऊपर आया। तुलसी के बिरवे में जल डाला, पर फूल नहीं हैं। वह तो भूल गया। उस तरफ से लेता आता, चन्दा ने भी बिना फूल के ही पूजा की है। गेंदे के फूल तो खिलने लगे हैं। हल्दी रंग के सुनहले फूल मधुर गंध वाले।

चन्दा गर्म-गर्म रोटियां लायी, आंवले की चटनी भी साथ थी। गजेन्द्र ने रूठने का अभिनय किया। चन्दा यह रूठना समझ नहीं सकी। वह बोल उठी- 'श्रीमान् हाथीसिंह जी, मान जाइये, रोटियां कम तो नहीं हैं।

'मैं हाथीसिंह नहीं हूं। न हाथी हूं, न सिंह, गजेन्द्र बांसुरी वाला हूं।' 'अरे, कोई रूठने के समय बोलता भी है?' चन्दा मुस्करा रही थी।

'तुमने ठीक कहा, रूठने के समय बोलना नहीं चाहिए, क्षमा कर दो।'

'पहले रोटी खा लो तो क्षमा कर दूंगी।'
'पर मेरे रूठने का क्या होगा?'
'बांसुरी से रूठना प्रकट कर देना और मधुर हो जायगा।'

'अरे, तुममें तो कलाकार की आत्मा है, तब तो तुम मेरी बात समझ जाओगी।'
'बोलिए, कौन-सी बात समझने लायक है।'
'चन्दा! बाजीगरी के खेल-तमाशे में तुम्हारा नाचना अच्छा नहीं लगता। मैं जब बांसुरी बजाऊं तुम राधा के समान पास में खड़ी हो जाना। लगे कि तुम बांसुरी पर मुग्ध हो, बस, इतना ही।'
'बड़ा सुन्दर दृश्य हो सकता है, पर काका से पूछना।'
'पूछ लिया जायगा, तुम बांसुरी छीनकर बजा लो। मैं मुग्ध हो जाऊं। देखने वाले बेसुध हो जायें, और हम अपनी बेसुधी में उन्हें भूल जाये।'
'काका तो मान जायेंगे न!' चन्दा कुछ सोचती हुई बोली। वह उस दृश्य की कल्पना कर रही थी।
'काका की झोली में रुपये बरसेंगे, दाम-छदाम नहीं।'
'राधा-कृष्ण का शुद्ध भाव भी हृदय में रहे, रुपये पर ही न बिक जाय।'
'चन्दा! भाव शुद्ध रहें-मैं पूरी चेष्टा करूंगा।' 'पहले यह शुद्ध रोटी तो ग्रहण करो।' चन्दा ने अनुरोध किया।

गजेन्द्र इस अनुरोध को मान गया, वह रोटी खाने लगा। चन्दा बांसुरी लाने चली गयी। गजेन्द्र को स्मरण हो आया कि गांव में अपने घर में मां कलेवा के लिए अनुरोध करती थी। भाभी अनुरोध करती थी। भाभी विनोद भी करती थी। मां मुस्करा उठती थी, आज वह यहां है, यहां भी चन्दा का अनुरोध है। यही तो जीवन है, ऐसा न हो तो जीवन कैसे चले। केवल रोटी नहीं, अपने हाथों से अजित रोटी...किसी स्नेहपूर्ण अनुरोध के साथ रोटो। तभी जीवन जीवन है, वह कुछ बने, कुछ करे। पर वह क्या कुछ करेगा? बाजीगरी? खेती, अफगान राज में नौकरी या किसी अपने राजा के यहां? बांसुरी बजाकर जीवन नहीं चलेगा? यह कला रोटी नहीं दे सकेगी, मानव को रोटी और प्रतिष्ठा दोनों चाहिए। केवल प्रतिष्ठा से पेट नहीं भरेगा, केवल रोटी से मन नहीं भरेगा। भैया तो कहेंगे कि सेना में भर्ती हो जाओ। खून दो और खून लो। उसका मन नहीं मान सका। खेती भी नहीं कर सका, वह तो बांसुरी सीखता रहा। गांव में एक साधुजी आये, उन्होंने बड़े स्नेह से बांसुरी सिखा दी। वह अभ्यास करता रहा, वह अपने प्राणों के स्वर पर मुग्ध होने लगा और यह चन्दा दिखायी पड़ गयी। इसकी आंखों में पीड़ा का संसार दीख पड़ा। उसने अपने को सिहरते पाया, उसने सोचा कि बांसूरी के संगीत से उसकी पोड़ा को सहलायेगा, और उसकी बांसुरी बजने लगी। दूर-दूर तक बजती रही, उसकी पीड़ा को शान्ति मिली। उसने मेरी बांसुरी को चाहा, और वह यहां है। मन को तृप्ति मिली...रोटी और आंवले की चटनी से।

चन्दा बांसुरी नेकर आ गयी थी, उसने बांसुरी देते हुए कहा-'थोड़ा अभ्यास कर लो।'

गजेन्द्र ने कहा- पहले तुमको अभ्यास करना है।'
'किस तरह....?'
'राधा की तरह।'
फिर बांसुरी की ध्वनि गूंजने लगी।

अड़तीस

सुबह-सुबह सरजू जमाल अहमद के दरवाजे पर पहुंच गया, दस्तक दी। नूरी ने दरवाजा खोला, सरजू दिखायी पड़ा।

वह बोल उठी—'आओ, सरजू! इतनी सुबह! बात क्या है?' 'आप लोगों को नहीं मालूम है। इतनी बड़ी बात हो गयी!'

'मैं तो घोड़ा बेचकर सो रही थी, बात क्या है? जमुना जी में बाढ़ आ गयी क्या?'

'ऐसी बाढ़ आयी है कि शाही महल में ही नहीं, सारे राज्य में उथल-पुथल हो जायगो।' सरजू ने बैठते हुए कहा।

'तो तुम भी शाही महल तक पहुंच गये! कुछ बताओ भी, पहेली ‘मत बुझाओ।'

'रात बादशाह सलीमशाह खुदा के प्यारे हो गये। सारे शहर में सन्नाटा है। लोग गुपचुप बातें कर रहे हैं। सिपाहियों की गश्त बढ़ गयी है।' सरजू ने बता दिया।

'खुदा के प्यारे हो गये! शाहजादा फीरोज तो नाबालिग है!' नूरी ने कहा।

'शाहजादा फीरोज नाबालिग तो है ही, बादशाह शेरशाह के रिश्तेदार सिर उठा सकते हैं।' जमाल ने उत्तर दिया।

'आज तो हाट-बाजार बन्द रहेगा।' सरज ने संकेत दिया।

'हां, बन्द तो रहना चाहिए, पर तुम कहां जाओगे? आज यहीं खाना खाकर आराम करो।' नूरी ने समझाया।

'हम लोग किले की तरफ चलेगे, सरजू! शहंशाहे हिन्द का जनाजा निकलेगा। हजारों लोग रहेंगे, और फिर शाही शान के साथ कब्रगाह में दफन।' जमाल ने कहा।

'आप लोग कहां भीड़-भाड़ में जायेंगे?' नूरी ने टोका।
'बादशाह के जनाजे में शामिल होना चाहिए, नूरी!'
'वह तो ठीक है, लेकिन शाहीमहल और दरबार की भीड़ में धक्का खाना?
'रिआया भी जायेगी ही, जरा घूमते-फिरते हो आना चाहिए।'
'हमेशा तो आप घमते-फिरते रहते हैं।'
'पंछी घोंसला में अण्डा सेता रहे।'
'पंछी आसमान में उड़ान भरता रहे तो।'

सरजू सिर झुकाकर मुस्करा रहा था, जमाल जवाब के लिए सर खुजला रहा था।

'लगता है कि बालों में जुएं आ गयी हैं, कंघी ला दूं?' नूरी ने मंद मुस्कान के साथ चोट कर दी।

'सगति का फल तो मिलता है, नूरी! जुल्फों से चलती-चलती जुएं इधर आकर परेशान करने लगी हैं।' जमाल का विनोद जोरदार था।

सरजू अपनी हंसी रोक नहीं पा रहा था। नूरी लाजवाब हो गयी, जमाल अपनी जीन पर सर हिला रहा था।

‘इन्हें जाने दीजिए....अधिक देर नहीं रुकेंगे।' सरजू ने अनुरोध किया।

'तो तुम भी मिल गए, सरजू! खिलाना-पिलाना बेकार गया।" नूरी बोल उठी।

जमाल नूरी के संकेत से तैयार होने लगा, नूरी नाश्ते का इंतजाम करने लगी।

कुछ देर के बाद जमाल सरजू के साथ घर से निकला, देखा कि चौराहे पर भीड़ है, लोग आपस में बातचीत कर रहे हैं। गश्त करती हुई टुकड़ी आयी, भीड़ सड़क के किनारे से हट गयी। कुछ लोग जमनाजी की तरफ जा रहे थे। वे दोनों उधर ही चल पड़े। लोगों के चेहरे और बातचीत से अंदाज मिल गया कि लोग गमगीन हैं, फिक्र-- मंद भी हैं। फिक्र करना सही है, इतना बड़ा राज्य, बादशाह की मौत, शाहजादा नाबालिग, रिश्तेदार क्या- क्या सोच रहे होंगे? सारा बाजार बन्द है। लोग किले की तरफ देख लेते हैं। अल्लाह से दुआएं मांगते हैं, कुछ लोग उस तरफ चल पड़ते हैं।

नदी तट पर सिपाहियों की गश्ती बहुत अधिक थी। गजराजसिंह अपनी टुकड़ी के साथ मौजूद था। हर जाने वाले की जांच हो रही थी, शायद सबको इजाजत नहीं मिल रही थी।

जमाल सरजू के साथ पहुंचा, गजराजसिंह ने पहचाना। उसने इशारा किया, वह रुक गया।
गजराजसिंह ने बताया, 'उस पार जाना बेकार है, अभी तो किले में वजीर और सिपहसालार राय सलाह कर रहे हैं। बड़ा सख्त पहरा है।'

'क्या कुछ गड़बड़ी है?' जमाल ने पूछा।
'शाहीमहल में थोड़ी परेशानी है। अपने ही रिश्तेदारों से डर है।'

'तो यह बात है!'
'इसलिए कह रहा हूं, लौट जाना ठीक रहेगा।'
सरजू जमाल की तरफ देखने लगा। उसे भी लौट जाना ठीक लगने लगा।
'और अपने घर-द्वार का क्या समाचार है, गजराज सिंह! अपने घर गए थे न!' 'घर पर तो वैसे सब ठीक है, पर छोटा भाई एक जादूगरनी के चक्कर में पड़कर लापता है। खोजकर थक गया हूं, थककर लौट आया हूं।'
'जादूगरनी!'
'बस, वही समझ लीजिए।' जमाल की बात समझ में आने लगी। अधिक पूछताछ नहीं कर सका। 'अभी हेमचन्द्र का लौटना तो नहीं हो सका है न!' गजराजसिंह ने पूछा।
'अभी तक तो कोई संवाद नहीं है, पर अब लौटना चाहिए।' जमाल ने बताया।
वह सरजू के साथ लौटने लगा। कबीरदास का पद स्मरण आने लगा-रहना नहिं देस बिराना है। यह संसार कागज की पुड़िया, बूंद पड़े घुलि जाना है। क्षणभंगुर संसार कुछ वर्षों का जीवन....उसके लिए इतना आंधी-तूफान कभी शान्ति नहीं...अफगान सरदार को अफगान से डर है, मुगलों से डर है हिन्दी मुसलमान से नहीं शायद हिन्दुओं से थोड़ा-थोड़ा डर हो, यह तो जानवर की जिन्दगी है।

'एक बात कहूं?' सरजू ने पूछा।

'कहो...क्या कहना चाहते हो?' जमाल ने उत्तर दिया।

'हमारे ऐसे भार-बोझा ढोने वाले जन-मजदूर शाहों के जीने-मरने की क्या चिन्ता करें? हम शूदर हैं। इस देह से बोझा उठाते हैं, सेवा करते हैं। पेट को पालने के लिए रोटी मिल जाती है। जब बूढ़े से बच्चे तक की देह से पसीने की बूंदें टपकने लगती हैं तभी घर भर के लिए दो मुट्ठी ज्वार-बाजरा मिल पाता है। हम ऊपर वाले का नाम लेकर रोटी खा लेते हैं, ठण्डा पानी पी लेते हैं। बादशाहों के बदलने से क्या फरक पड़ता है?' ठण्डी सांस लेकर सरज ने अपनी बात कह दी।

'बात तो ठीक कह रहे हो, सरजू!....पर राजा और राजा में फर्क होता है। बादशाह और बादशाह में फर्क होता है। रोटी को पाने के लिए, शान्ति से रात में आराम करने के लिए और राम-रहीम का नाम लेने के लिए सुराज (अच्छे राज) की चाह होती है। अच्छे राजा के राज्य में प्रजा को तकलीफ नहीं होती।'

'पर जन-मजदूर के लिए बहुत फरक नहीं पड़ता।'

'विक्रम राजा का नाम आज भी है। राजा हर्षवर्धन का भी नाम है। आज हम शेरशाह का भी नाम ले रहे हैं। फर्क पड़ता है तभी तो हम नाम लेते हैं।'
'हां, वे लोग अच्छे थे, लोग उन्हें भूल नहीं पाते।'

जमाल को थोड़ा सन्तोष हुआ। वह अपने घर के पास पहुंच रहा था, मालूम हुआ कि सिकन्दराबाद के मुस्लिम बिरादर जन्नत नशीन बादशाह सलीमशाह की रूह के सूकन के लिए मस्जिद में इकटठ हो रहे हैं। वह सरज के साथ अपने घर पहुंचा। नूरी खुश हो गई। इस खुशी में भूल गई कि जमाल अहमद को भी फातिहा पढ़ने के लिए मस्जिद में जाना है।

वह तो किले की खबर बताने लगा। नूरी उसी में खो गई, मानो वह शाही महल के अन्दर चलने वाली साजिश का नजारा देख रही है।

उसी समय कबीर पंथी साईंदास का आगमन हुआ। सरजू ने बड़े आदर से बैठाया। जमाल और नूरी की उदासी भी दूर हुई। साईंदास ने इस संसार की नश्वरता की चर्चा करते हुए इस मानव जीवन को पाक-साफ रखकर जीने का संकेत दिया। इंसान को इंसान समझना ऊंच-नीच और अमीर-गरीब का ख्याल नहीं रखना ही इंसानियत है।

नूरी ने जमाल की ओर देखा। जमाल ने सिर हिलाया, सरजू तो आत्मतोष में बेसुध हो रहा था।

दूसरे दिन सुबह इलाहीबख्श तशरीफ लाये। नूरी और जमाल ने सलाम-बन्दगी कर इज्जत के साथ बैठाया। इलाहीबख्श का दिल बाग-बाग हो गया। दो क्षण के बाद घर की दीवारों पर नजर गई। देखा कि एक तरफ मक्का शरीफ की तस्वीर है। दूसरी तरफ ओंकार की लकीरें भी उभर उठी हैं, और तीसरी तरफ कबीर की साखी भी है। यह सब देखकर इलाहीबख्श का गुस्सा सुगबुगाने लगा। उसकी आवाज गंज उठी—'क्यों जमाल! कल फातिहाख्वानी में शामिल नहीं हुए?'

'मैं उस वक्त किले की तरफ जा रहा था।'
'जनाजे में शामिल हो गए थे?'
'नहीं, रोक थी। उल्टे पैरों लौट आना पड़ा।'
'यह सब कबीर पंथी फकीर का असर है। गुनहगार मत बनो, जमाल! कोई बर्दाश्त नहीं करेगा। सबकी नजर है।'
'वह फकीर तो खुदा और ईश्वर के, राम और रहीम के बारे में ही बताता है। इंसानियत की बात करता है।'
'नूरी! तुम्हारे रहते कुफ्र की घुसपैठ क्यों?'। 'मेरी पूरी कोशिश है, आप इत्मीनान रखें।'
'मुझे इत्मीनान नहीं है। तुम दोनों को हर हफ्ते जुमे की नमाज के बाद मेरे पास आना है।'
'आपका हुक्म सर आंखों पर....हम जरूर आयेंगे।' नूरी और जमाल ने एक साथ ही कहा। इलाहीबख्श का गुस्सा ठण्डा हुआ, और फिर घर-मुहल्ले की बातचीत होती रही। इस सिलसिले में यही बात भी आ गई कि नये बादशाह की ताजपोशी के मौके पर कैदियों को माफी मिलेगी।

‘सरवर भी रिहा हो सकता है।' नूरी ने सहमते हुए पूछा।

'हो सकता है, लेकिन वह अब अपना चेहरा क्या दिखाएगा? फिक्र क्या करना?'

उन्तालीस

फीरोजशाह की ताजपोशी के तीन दिन बीत रहे थे। वजीर और फौजी सालार हकमत को सम्भालने की कोशिश कर रहे थे। सूबे सरकार और परगनों के हाकिमों के पास आम दरबार की खबर जा चुकी थी। सिपाहियों की गश्ती दिन-रात चल रही थी। दारुल सल्तनत (राजधानी) और आसपास की फौजी छावनियों में नये सिपाहियों की कवायद शुरू हो गयी थी। लग रहा था कि आगरा के किले से लेकर दूर-दूर तक की छावनियों तक बादशाह फीरोजशाह के लिए वफादारी का माहौल बन चुका था। कहीं कोई साजिश नहीं है, कहीं बगावत की बू नहीं है। जासूस ढाका से लेकर अटक तक के लिए निकल पड़े थे।

चौथे दिन सुबह शकील बुनकर जमाल से मिलने आ रहा था। रास्ते में सरजू मिल गया, दोनों सिकन्दराबाद के चौराहे के पास पहुंचे। लोग गुपचुप बात करते मिले, अचानक नंगी तलवार लिये फौजी अरबी घोड़ों पर सवार सरपट दौड़ लगाने लगे। चौराहा सूना हो गया। शकील और सरजू छिपते-छिपते जमाल के दरवाजे पर पहुंचे। दरवाजा बन्द था, वे आवाज देने लगे। भीतर जमाल मुंशी हरसुखलाल से बातचीत कर रहा था। दोनों चौंक गए, सहमकर दरवाजे को खोला गया। शकील और सरजू दिखायी पड़े, दोनों को देखकर घबराहट मिटी। दोनों भीतर आये, दरवाजे को बन्द कर दिया गया।

रात के तीसरे पहर फीरोजशाह का कत्ल हो गया। चचेरे भाई का मामा मुबारिग खां ने फौजी सालार सरमस्त खां की मदद से तख्तोताज पर कब्जा कर लिया। मुंशी काका की इस खबर से सभी परेशान-से हो गए। पर मुंशी जी की परेशानी दूसरी थी। मुंशी जी ने कहा-'सेठ जी अस्वस्थ हैं। भीतर से बेचैन हैं, 'मोहन! तुम्हें चलना चाहिए। मां ने बुलाया है।'

'हेमचन्द्र अभी तक लौट कर नहीं आया?'
'कहां लौटा है! अब लौटना चाहिए, पर तुम क्या सोच रहे हो?
यह सोचने का समय नहीं है, मोहन!'
'नहीं, चाचाजी! इस समय क्या सोचना! अवश्य चलूंगा।'
शकील अपने बुने हुए कपड़ों के बारे में बातचीत करने आया था। यहां तो मौत और बीमारी की बातें हो रही थीं। उधर हुकमत बदल गयी, नंगी तलवारें कौंध रही हैं। सरदार-जागीरदार और हाकिमहुक्काम रिआया की गरदन झुकाकर रखना चाहते हैं। और खुद गीध की तरह तख्तोताज पर झपटते रहते हैं। न इन्हें इंसान के खून का ख्याल है और न मेहनतकशों का, जीना मुश्किल है। पता नहीं, इस सूरी खानदान की हुकूमत में अब क्या-क्या होगा? शेरशाह और सलीम शाह तो चले गए, अब ये....!

मुंशी हरसुखलाल ने जमाल को किशनपुरा चलने के लिए तैयार कर लिया। जमाल ने सरजू को घर पर ही रहने को कहा। उसने सर हिलाकर कबूल किया! शकील को एक हफ्ते के बाद कपड़ों को भेज देने को कह दिया। शकील खुश हो गया, लेकिन वह और भी कुछ रायमशविरा करना चाहता था। हिन्दी मुसलमानों की हालत पर बातें करना चाह रहा था। अरबों, ईरानियों और अफगानों के सामने हिन्दी मुसलमान छोटे समझे जा रहे हैं। वे हुकूमत

करने वाले हैं, और हिन्दी मुसलमान सिर्फ रिआया हैं। इतना जरूर है कि हिन्दुओं का जजिया और जुल्म को बर्दाश्त नहीं करना है। मस्जिद में साथ-साथ बैठना तो है ही। लेकिन बुनकरों की हालत में कोई बदल नहीं आ सकी है। पहले छोटी जाति के थे, आज भी लगभग छोटे ही हैं। हालत बेहतर नहीं हो सकी है, कुछ तो कहने लगे हैं कि धरम बदलना बेकार गया। लेकिन अभी जमाल साहब से क्या बातें हों? रोकना ठीक नहीं है। धरम बदलने से वालिद तो नहीं बदल जायेंगे, जाना ही चाहिए, बूढ़े सेठ बीमार हैं, अकेले हैं।

जमाल ने मुंशी काका के साथ किशनपुरा के लिए निकलना चाहा। दरवाजे को खोला, सड़क से फौज की एक टुकड़ी जा रही थी। कुछ लोग गिरफ्तार हो चुके थे। वह ठिठक गया, मुंशी जी ने दरवाजे को बन्द कर दिया। फौज की टुकड़ी आगे निकल गयी।

दोनों घर से निकले। गली में घुस गए, गलियों से होते हुए लक्ष्मी भवन के पिछवाड़े पहुंचे। हुलास ने द्वार को खोला, मुंशी जी के साथ छोटे सेठ को देखा। झुक कर प्रणाम किया, दोनों सेठ जी के कक्ष में आये। वैद्य जी उपस्थित थे, दुर्गा कुंवर वैद्यजी की बातों को समझना चाहती थी। साथ ही मोहन की प्रतीक्षा भी कर रही थी, पर वे दोनों तो वाटिका से होकर आए। जमाल ने पैर छकर प्रणाम किया।

वैद्य जी कह रहे थे— 'थोड़ी दुर्बलता है। पर सेठ जी सोचते अधिक हैं। इसीलिए इतनी विकलता है। चिन्ता की कोई बात नहीं है।'

दुर्गा कुंवर को थोड़ी शान्ति मिली। जमाल ओषधि और अनुपान को समझ रहा था। मुशी वैद्य जी का संकेत समझ कर मधु की व्यवस्था कर रहे थे।

उसी समय द्वार पर कड़क आवाज सुनायी पड़ी। मुंशीजी ने द्वार को खोला। सिपाही के साथ शाही हरकारा था, सरकारी फरमान लेकर आया था। फरमान देता हुआ बोला-'तीसरे पहर दरबार होने वाला है। हेम चन्द्र को हाजिर होना है, गैरहाजिर होने पर सख्त कार्रवाई होगी।'

'लेकिन वे तो शादी के बाद अपने गांव गए हैं। यहां नहीं हैं।' मुंशीजी ने बताया।

'जल्द बुलाइये, हाजिर होना है। नगर सेठ हैं, काफिरों के नुमाइन्दे हैं। मजाक नहीं है।'
'आते ही वे जरूर हाजिर होंगे। गांव दूर है, दूर से आना है। आप थोड़ा ख्याल रखेंगे।' मुंशी जी ने हाथ जोड़कर समझाया।

शाही हरकारा सिपाही के साथ चला गया। मुंशी हरसुखलाल, वैद्यजी और जमाल-तीनों के चेहरे पर चिन्ता फैल गयी। सोहनलाल को भी जानकारी मिल गयी, बेचैनी बढ़ गयी। पड़ोस में हरखलाल ने सोचा कि ठीक समय आ गया है। हेम् रेवाड़ी गया है। अभी क्या लौटेगा? वह दरबार में हाजिर नहीं हो सकेगा। उसके खिलाफ कान भरा जा सकेगा, किले में आना-जाना है ही। नजराना देने का मौका मिल जाएगा। नये बादशाह को नजराना देना

है। नये बादशाह खुश हो जायेंगे, और तब ससुर-जमाई को देख लिया जाएगा। पंख अपने आप उखड़ जायेंगे, आसमान के बदले जमीन दिखायी पड़ने लगेगी। सोहनलाल खाट पर है, वैद्य जी दौड़ने लगे हैं। एक दरबारी झटके की जरूरत है। पासा पलट जाएगा, अपना भी भाग्य चमकेगा। ऐसा सोचकर हरखलाल ने नजराना देने के लिए सोने के सिक्कों को गिनना आरम्भ किया, स्वर्णाभूषण की भी इच्छा हो गयी।

हरखलाल ने अनुभव किया कि समय रुक-रुककर चल रहा है। तीसरे पहर के आने में विलम्ब है। सूरज का रथ रुक गया है, कभी ओसारा और कभी छत पर चक्कर लगाते और कुछ सोचते दोपहर बीतने लगी। हरखलाल ने दरबार के लिए रेशमी कपड़ों को निकाला। पहन कर पगड़ी संभाल ली। हाथ में छड़ी ली, नौकर के हाथों में नजराने की सन्दूकची थी। कुलदेवता की मनौती की, पत्नी ने दही खिलाकर विदा किया। श्री विलास का द्वार खुला, हर्ष और अभिमान के मिलेजुले भाव आंखों के साथ पैरों की गति में भी झलकने लगे। द्वार से बाहर आए। दृष्टि पड़ोस के लक्ष्मीभवन पर पड़ी। मन ने कहा-'यह कब तक चिढ़ाता रहेगा!' और स्वयं ही उत्तर दिया-'बस, कुछ घंटे और!'

हरखलाल के पैर बढ़ चले। गश्ती के कारण सारे शहर में आतंक था। सन्नाटा-सा छाया हुआ था, कुछ लोग आ-जा रहे थे। कुछ लोग किले के दरवाजे पर पहुंचने के लिए नदी तट की ओर बढ़ रहे थे।

हरखलाल का मन खीझ उठा क्योंकि लोगों की दृष्टि उन पर नहीं जा रही थी। लगभग सभी तो अपने-अपने घरों में बन्द थे, कुछ लोग खिड़कियों से झांक लेते थे। मुंशी हरसुखलाल ने दूर से देख लिया था। तब तक हरखलाल के कदम बढ़ चुके थे।

मुंशी हरसुख ने चर्चा की—'मोहन! ये शाह जी रेशमी कपड़ों में सज-धज कर जा रहे हैं। लगता है कि ये भी दरबार में जा रहे हैं।'
'हो सकता है, चाचा! किले से व्यापार जो चलता है।'
'व्यापार तो हमारा भी है। परन्तु इस तरह सज-धज कर नौकर-
चाकर के साथ...दाल में कुछ काला...।'

'कहीं सोचा हो कि हेमचन्द्र नहीं है। दरबारियों से मिलकर नजराना दे दें, और कोशिश कर सकते हैं खुद नगर सेठ बनने का तिड़कम भी..।'

'तुम्हारा सोचना ठीक रहा है, मोहन! शाह जी का हृदय ईर्ष्याद्वेष से जलता रहा है।' सोहनलाल बोल पड़े।

'आप शान्ति से विश्राम करें। यह सब मत सोचें।'

'अब यहां शान्ति नहीं है, मोहन! तुझसे रुष्ट रहा हूं। तू ने सब नष्ट कर दिया। पाया कुछ भी नहीं। अब यहां शान्ति नहीं, बेटी का ब्याह हो गया। बस इतना ही संतोष है।'
'आप मोहन को क्षमा कर दें। मन को शान्ति मिलेगी।' मशी ने अनुरोध के स्वर में कहा।

'जमाल बन जाने के लिए...? कन्धे पर कपड़े उठाकर हाट-हाट घूमने के लिए क्षमा कर दूं? पर अब क्या रोष करूं? क्षमा करके ही जाऊंगा।'
'ऐसा न कहें, पिताजी!'
'किसी के कहने से प्राण पंछी रुक नहीं जाता। पिंजरे में बड़ा कष्ट पाता है। इसलिए अपने असली घोंसले की ओर इसे उड़ जाना ही है।'

इस प्रकार संध्या हो गयी। घर में दीपक जलने लगे। मशी जी ने जमाल को अपने घर जाने के लिए संकेत दिया। कल फिर आ जाना। जमाल निर्णय नहीं कर पा रहा था कि वह रहे या जाये। पिताजी के पास रहना चाहिए। उधर नूरी अकेली है, मां दुर्गा कुंवर ने भी आधे मन से जाने की आज्ञा दी। वह उठकर खड़ा हुआ, पिता सोहनलाल ने आंखें बन्द कर लीं। वह पैर छूकर द्वार से बाहर निकला। पैरों में गति नहीं थी, धीरे-धीरे सिकन्दराबाद के चौराहे पर पहुंचा। हरख लाल को लौटते देखा। पर वह रुका नहीं।

एक घड़ी रात जाते ही हेमचन्द्र योगी शिवनाथ और धर्मपाल के साथ लौट आया! सोना पार्वती को लिये द्वार पर आयी। किशनपुरा के लोग गश्ती के आतंक को भूल गये। हेमचन्द्र के अभिनन्दन के लिए उमड आये। हेमचन्द्र ने हाथ जोड़कर सबके अभिनन्दन को स्वीकार किया। लक्ष्मीभवन में प्रसन्नता छा गयी। पर हेमचन्द्र गम्भीर था, रास्ते में राजधानी की उथल-पुथल की जानकारी मिल गयी थी। यह परिवर्तन कल्पना से बाहर था।

घर में प्रवेश करते सोहनलाल की रोगशय्या दिखायी पड़ी। उसकी चिन्ता बढ़ गयी। वह चरण स्पर्श कर बैठ गया, सोहनलाल ने अधखुली आंखों से आशीष दी। मुंशीजी की ओर संकेत किया। मशी जी ने शाही फरमान को थमा दिया। हेमचन्द्र ने देख लिया। चिन्ता बढ़ती गयी, और फिर शाह हरखलाल के दरबार में जाने की बात भी सामने आयी। थका-मांदा हेमचन्द्र सर पर हाथ धर कर बैठ गया। वह क्या करे क्या नहीं करे, निर्णय बड़ा कठिन था! काल-चक्र की गति को मोड़ना बहुत कठिन था। पर उसका संकल्प....इस क्षण में क्या करना है?

चालीस

हरखलाल को नींद नहीं आ रही थी। भीतर बड़ी विकलता थी, सोच-सोचकर विकल हो रहा था। मुबारिज खां मुहम्मद आदिलशाह के नाम से गद्दीनशीन हुए, यह देखने का अवसर मिल गया। बादशाह ने नजराना कबूल कर लिया। मन प्रसन्न हो गया था, पर वे तो पूछने लगे कि हेमचन्द्र रेवाड़ी से कब तक लौटेगा? उसने तो बता दिया कि वह शायद ही लौटे। और उसने विनम्रता से हेमू के स्थान पर सेवा करने का इशारा किया तो बादशाह मुस्कराने लगे। नजर भी हटा ली। वजीर ने उसे पीछे जाकर बैठ जाने का आदेश दे दिया। उस समय लगा कि किसी ने अचानक चोट पहुंचा दी है। वह जमीन पर गिरकर छटपटा रहा है, पीछे जाकर बैठ जाना पड़ा। इच्छा तो हुई कि उठकर चल दिया जाए। लेकिन यह

दरबार के अदब-कायदे के खिलाफ हो जाता। मन मारकर रुकना पड़ा। सशस्त्र सैनिकों के पहरे में दरबार का रंग देख लिया। संध्या में सबकी दृष्टि बचाकर लौटा। मुंशी हरसुखलाल को पता चल गया होगा, हेमू आ गया है। ये लोग बातें कर रहे होंगे। हंस रहे होंगे।

हरखलाल ने करवट बदल-बदल नींद को बुलाने की कोशिश की। पर नींद नहीं आ रही थी। कभी बादशाह की हंसी और कभी मुंशी हरसुख की मुस्कान झलक उठती थी।

लक्ष्मीभवन में हेमचन्द्र अपने शयन-कक्ष में लेटा हुआ सोच रहा था-यह बादशाह तो कपटी और हत्यारा है। इसकी क्या नीति होगी? क्या इसे सभी अफगान सरदारों का सहयोग मिलेगा? सबका सहयोग नहीं मिल सकेगा, तब क्या होगा? यह अफगान राज्य बिखर सकता है। वैसे मथुरा, दिल्ली, रेवाड़ी और इधर कोइल, महोबा की छावनियों में नये सैनिकों का अभ्यास चल रहा है। विजय और खेमराज ने फौजी भर्ती में प्रयत्न किया है। गजराजसिंह का प्रयत्न भी सफल होगा, और बहादुर खां ने भी सहयोग देने का वचन दिया है। पर अफगान सरदारों के आपसी झगड़े से राज्य दुर्बल होगा। मुगलों के पैर बढ़ाने का अवसर मिल सकता है। यह तो बहुत बुरा होगा।

पार्वती गर्म दूध लेकर आ गयी। देखा कि इनका शीश हथेली पर टिका है। आंखों में चिन्ता है, वह बोल उठी-'यह दूध पी लें, और विश्राम करें। चिन्ता क्यों कर रहे हैं ? नये बादशाह ने स्मरण किया है तो कल उपहार के साथ जाइएगा। इसके लिए चिन्ता क्यों?'

हेमचन्द्र ने दूध पी लिया, और धीरे से कहा- 'पार्वती! तुम इस चिन्ता को धीरे- धीरे समझोगी।'
'आप मुझे पारो ही कहें।'
'पारो!' यह सम्बोधन कर हेम चन्द्र ने निहारा। एक क्षण के बाद लगा कि पार्वती की आंखों में 'पारो' झांक रही है। उसका हृदय भर आया, पार्वती समझ गयी। उसने स्नेह भरे स्वर में विश्राम करने का आग्रह किया।
दूसरे दिन प्रभात में ठंडक सुनहली धूप में अपने को गरमा रही थी। हेमचन्द्र योगी शिवनाथ और धर्मपाल से मिला, योगी के सामने अपनी समस्या रखी।
योगी ने आंखें बन्द कर विचार किया, और फिर गम्भीर स्वर में कहा-'हेमचन्द्र! तुम्हारा अनुमान ठीक लग रहा है। इस उथल-पुथल के कारण अफगानों का राज्य दुर्बल होता जाएगा। मुगलों का आक्रमण हो सकता है।'
'तब क्या हो?'
'नये बादशाह को सहयोग दिया जाय। प्रजा में तुम्हारे प्रति उत्साह जग गया है। प्रजा तुम्हें अपना समझने लगी है। नये बादशाह को तुम्हारे जरिए प्रजा की ओर झुकना है। तभी उसे शक्ति मिल सकती है।'
‘पर यह बादशाह तो कपटी और कातिल है, इस बदनाम को सहयोग...?'
'बादशाह प्रजा पर अत्याचार करने से बदनाम होते हैं। गद्दी के लिए ये अपनों को मार ही देते हैं। इसे सहयोग देने से हेमचन्द्र की-प्रजा की शक्ति बढ़ेगी। और विदेशी मुगलों के कदम रुक सकेंगे।'
'यह तो ठीक लगता है।'

'तब हेमू...अरे हेमचन्द्र! अब संकल्प कर लो।'
'तुम्हें हेमू कहने का अधिकार है, धर्मपाल! तुम संकल्प भी करा सकते हो।' 'हेमचन्द्र! अपने अन्तर से अपनी बुद्धि से संकल्प कर लेना है।' 'यही होगा!' हेमचन्द्र की दृष्टि योगी शिवनाथ और धर्मपाल से होती हुई प्रभात-पवन में झूमते पौधों पर गयी। फिर वह दृष्टि आकाश की ओर लग गयी। चहकते हुए पंछी उड़ान भर रहे थे। दूर तक उड़ान भरते जा रहे थे। धुनी हुई रूई के समान बादल के उजले-उजले टुकड़े उनकी उड़ान का स्वागत कर रहे थे।

उसका मन प्रफुल्लित हो उठा। उसने कुछ कहना चाहा। पर उसने स्वर को मन्द किया। बहुत धीरे कहा-'धर्मपाल! तुम्हें राजधानी में चक्कर लगाना है। प्रत्येक बातचीत प्रत्येक रहस्य को संजो लेना है।'

‘एवमस्तु!' धर्मपाल ने उत्साह में उत्तर दिया।

योगी शिवनाथ मुस्करा उठे। और कहा- 'अब धर्मपाल की कुंडलिनी जग जाएगी। इसे उचित कार्य मिला है।'

'आपकी आशीष से यह कार्य अवश्य ही पूरा होगा।' धर्मपाल ने जवाब दिया।

उसी समय वाटिका के द्वार पर आवाज हुई, सभी सहम गए। द्वार खुला, जमाल अहमद था। हेमचन्द्र ने नमस्कार किया, जमाल ने योगिराज को प्रणाम कर हेमचन्द्र को हृदय से लगा लिया। और बड़े स्नेह से पूछा--'तुम्हारी यात्रा तो निर्विघ्न पूरी हो गयी न! सभी सकुशल लौटे आये!

'जी, हां! हम सभी सकुल लौट आये हैं।'
'पर यहां पिताजी अस्वस्थ हैं।' जमाल ने दुःखी मन से कहा।
'हम दोनों उनकी सेवा करेंगे।' हेमचन्द्र ने जवाब दिया।
'कल वे मुझे क्षमा कर देने की बात बोल रहे थे।'
'पिता का हृदय है, आप मिलते रहें। एक बात और है।'
'वह क्या...?'
'आप हिन्दी मुसलमानों से सम्बन्ध बढ़ाते रहें। उनमें अपने देश के लिए भाव जगाते रहें। वे समझें कि आप उनके लिए चिन्ता कर रहे हैं। यह बहुत आवश्यक है क्योंकि मुगलों के घोड़े इस देश को रौंदने के लिए उतावले हो रहे हैं। और अफगान कमजोर हो रहे हैं।'
जमाल दो क्षण हेमचन्द्र को देखता रहा, फिर बोल उठा- 'तुम्हारी सूझ-बूझ को चूम लेने की इच्छा हो रही है, हेमचन्द्र!'
'यह आपका अधिकार है, मोहनलाल याने जमाल मोहन साहब!' यह धर्मपाल के विहंसते शब्द थे।

सभी मुस्करा उठे।

योगी शिवनाथ ने नगर से बाहर अपनी कुरिया के लिए आग्रह किया। धर्मपाल और जमाल ने

समर्थन किया। हेमचन्द्र ने इस आग्रह को स्वीकार किया। सभी एक साथ सेठ सोहनलाल से मिलने के लिए लताकुंज को पार कर आगे बढ़े।

सोहनलाल स्वस्थ लग रहे थे। उन्होंने हेमचन्द्र को नये अफगान बादशाह आदिलशाह से मिलने और नजराना भेंट करने के लिए आग्रह किया।

एक घड़ी के बाद हेमचन्द्र मुंशी हरसुखलाल के साथ किले की तरफ चल पड़ा। दुर्गा कुंवर और पार्वती ने मंगल कामना की। योगी शिवनाथ ने आशीष दी। हेमचन्द्र ने रास्ते में गजराज सिंह से मिलने के लिए सोच लिया। नदी-तट पर गजराज सिंह का ही पहरा था, मिलना था ही, दोनों उधर बढ़ते गए।

यमुना-तट पर गजराज सिंह दिखाई पड़ा, लग रहा था कि वह हेमचन्द्र की प्रतीक्षा कर रहा है। हेमचन्द्र बड़ी उमंग से मिला। गजराज सिंह ने अपने इलाके का समाचार सुना दिया। गजेन्द्र सिंह के लापता होने की बात भी बता दी। हेमचन्द्र और मुंशी हरसुखलाल को गजराज की व्यथा का अनुमान हो गया। दो क्षण चुप्पी रही। कुछ क्षणों के बाद मन्द स्वर में हेमचन्द्र ने पूछा, 'इधर की क्या स्थिति है?"

'मुवारिज खां मुहम्मद आदिल खां के नाम से सिंहासन पर बैठ गए हैं। फौज की मदद से हुकूमत काबू में लग रही है।'
'और कुछ...!'
'कैदी रिहा हुए हैं। सरवर अली भी रिहा होकर अपने घर आ गया है।
'ध्यान रखना है, जो आवश्यक संवाद-सूचना हो।'
'ठीक है।...अब आप नाव से निकल जायें।'
दोनों नाव से पार हुए, पहरा चौकस था। किले की तरफ दोनों बढ़े। रास्ते में सिपहसालार शादी खां का मकान था। हेमचन्द्र ने मिल लेना अच्छा समझा। दोनों दरवाजे पर पहुंच गए, खबर मिलने और पहचान होने पर दरवाजा खुला। सिपहसालार शादी खां लेटे हुए थे। हेमचन्द्र को अपने पास बैठाया, मुंशी जी भी साथ बैठे। हेमचन्द्र ने देखा कि सूरी सल्तनत का प्रधान सेनापति उदास पड़ा हुआ है, उसे अचरज हुआ।

'हेमचन्द्र! बुढ़ापा आ चुका है, बीमार रहता हूं। इस हालत में क्या-क्या करूं! सरमस्त खां, हाजी खां, सईदी खां और दौलत खां मिलकर संभाल रहे हैं।'

'लेकिन आपके बगैर यह सल्तनत कैसे चलेगी? यह ताजपोशी तो फौज के जोर से...।

'सिर्फ अफगान सल्तनत के नाम पर साथ दे रहा हूं, हेमचन्द्र! दिल में ख्वाहिश नहीं रह गई है। नये बादशाह को पता भी नहीं है कि जन्नतनशीन फीरोजशाह की अम्मी हुजूर जुबेदा खातून किले से निकल गई हैं। इधर तो बड़े दरबारों की तैयारी चल रही है। नाच-गाने का इन्तजाम हो रहा है। कौन समझाए? तुम्हारी खोज हो रही है। देखो, कोशिश करो।
'आप मुझे रास्ता दिखाएं तो मैं कुछ करूं, नहीं तो मुगलों को मौका मिल जाएगा। 'पहले बादशाह को रास्ता दिखाना है। तुमने सलीमशाह को दिखाया था।'

‘मैं क्या हूं! मैं एक मामूली हिन्दू व्यापारी हूं!'
'नहीं, हेमचन्द्र! तुम दानिशमंद हो। शहर तुम्हारे साथ है। तुम्हारे दिलो-दिमाग पर मुझे ऐतबार है। जाओ, मिल आओ।'
हेमचन्द्र मुशी जी के साथ शाहीमहल के दरवाजे पर आ गया। जगह-जगह उसकी जांच होती रही। वह कुछ देर तक दरवाजे पर खड़ा रहा। बादशाह आदिलशाह ख्वाबगाह में आराम फरमा रहे थे। कुछ देर में वे दीवानखाने में आयेंगे। तभी भेंट हो सकेगी, वह रुका रहा।
नफीरी बजने लगी। बादशाह दीवानखाने में आ रहे थे। हेमचन्द्र सतर्क हो गया। उसे इजाजत मिली। दीवानखाने में पहुंचा, बादशाह तख्त पर नगीन थे। उसने तीन बार कोर्निश की, मुंशी जी ने भी साथ-साथ कोर्निश की।
'कहां थे, हेमचन्द्र? इतनी देर से आये! क्या चाहते हो? मुझे हुक्म बरदार चाहिए।'
'मैं शादी के बाद अपने गांव गया था, जहांपनाह! इसीलिए थोड़ी देर हो गई। माफी चाहता हूं...मैंने सूरी सल्तनत की खिदमत की प्रतिज्ञा की है, कोई कोर-कसर न होगी।'
'मैं हुक्म उदूली या गद्दारी बर्दाश्त नहीं करूंगा।'
‘एक हिन्दू व्यापारी गद्दारी क्यों करेगा? हम अफगान सल्तनत के साथ हैं। यह नजराना कबूल करें।'- यह कहकर मुंशी जी से हेमचन्द्र ने ग्यारह अशफियां और हीरे की अंगूठी लेकर भेंट की, बादशाह ने कबूल किया। हेमचन्द्र को अंदाज मिल गया कि नये बादशाह अंगूरी जाम से शौक रखते हैं।
बादशाह के इशारे पर दोनों बैठ गए। बादशाह ने कहा—'हेमचन्द्र! आम दरबार की चर्चा चल रही है। सल्तनत के सारे सरदार और जागीरदार आयेंगे...तुम्हें रहना है।'

'सारे अफगान सरदारों को मिलाकर रखना जरूरी है, हुजूर! सुना है कि बेगमसाहिबा किले से बाहर चली गई हैं। वे कुछ सरदारों को फोड़ सकती हैं।'
'यह जानकारी तो अभी मिली है।' आदिलशाह के चेहरे में परेशानी थी।
'अगर अफगान सरदार उनसे मिलकर बगावत कर दें तो मुगल सरहद पर उछलने लगेंगे।'
तो फिर क्या होगा?–बेचैन स्वर में बादशाह ने पूछा!
'शाही महल और किले पर पूरी चौकसी रहे। राजधानी में हर कदम पर सिपाही हों....जासूस हों। सरदारों को खुश रखना है, और फौज के जोर पर ही हुकूमत चलती है। इसलिए सिपहसालार शादी खां से भी राय-सलाह होती रहे।'
'शादी खां तो बीमार चल रहे हैं।'
'उनकी सलाह और मदद निहायत जरूरी है। फौज में नयी भर्ती हुई है, हिन्दू भी पहली बार शामिल हुए हैं। उन्हें वक्त पर तलब मिले, उनकी कद्र हो। प्रजा पर ख्याल रखें तो प्रजा भी साथ देगी।'

'इसी राय-मशविरे के लिए तुझे खोज रहा था। हरखलाल से यह उम्मीद नहीं की जा सकती। शादी खां को खबर देता हूं। तुम सारे शहर का ख्याल रखो, हिन्दू रिआया साथ दे। नगर सेठ से यही उम्मीद रखता हूं। क्योंकि सारे अफगान साथ नहीं दे सकेंगे।'

'आप कोशिश करें, हाकिम प्रजा पर जुल्म न होने दें। बस, सब ठीक-ठाक...।'

हेमचन्द्र को लगा कि दीवार के पास से पायल और घंघरुओं की आवाजें आ रही हैं। ये रंगीन मिजाजी हैं। पर इन्हें तो हर लमहा सावधान रहना है। देखा कि बादशाह तख्त से उठ चले हैं।

इकतालीस

'चन्दा! अब तो तुम्हें बांसुरी बजाना आ गया।' खुदादीन ने प्रसन्न भाव से कहा।

'हां, काका! थोड़ा-थोड़ा आ गया है।' चन्दा ने उत्तर दिया।

'आज के तमाशे में गजेन्दर ने बहुत अच्छी बांसुरी बजाई और तुमने भी पास आकर बांसुरी बजा दी। राधाकिशन का रूप खड़ा हो गया, लोगों ने बहुत पसन्द किया।

'मैं यही चाहता था, काका! आपने मेरी बात मान ली, चन्दा भी मान गई। आज का खेल सबसे अच्छा बन गया। लोगों ने दाम उड़ेल दिए।' गजेन्द्र ने कहा।

'मैं मान गया, गजेन्दर! तुम कलाकार हो, वीर बहादुर हो।'

'चन्दा का सबके सामने नाचना अच्छा नहीं लगता था। नाच एक कला है, पर उसे आती नहीं। सड़कों-चौराहों पर हाथ-पैर उछालना भद्दा लगता था।' गजेन्द्र ने बताया।

'मजबूरी रही है, गजेन्दर! बाजीगरों-नटों के बीच चन्दा का रहना और गांव-गांव भटकना-नाचना किस्मत की मार है।'

'किसी के जुल्म से इसे नाचना पड़ा है! आप मजबूर रहे हैं! और फिर आपने दया भी की है!'

'जो समझ लो। इससे अधिक कुछ कहा नहीं जा सकता। मैं देवीदीन रहा....खुदादीन हूं...एक गरीब नट। सबका दुःख-सुख समझता रहा। तुम्हारी काकी का हृदय बड़ा कोमल है। इससे चन्दा पर जलुम नहीं हुए। इसे बेटी मानकर ध्यान रखता रहा।'' यह पाप तो नहीं हुआ?'

'यह सबसे बड़ा पुण्य हुआ, काका! आप बहुत अच्छे हैं।'

दोनों ने देखा कि चन्दा उठकर खेमे में चली गई है, मैना के साथ खाना परोसने में हाथ बंटा रही है। दोनों खाने के लिए बैठ गए। पास में आग सुलगने लगी, रात की ठंड बढ़ रही थी।

भोजन के बाद खुदादीन और गजेन्द्र आस-पास सोने की कोशिश करने लगे। गजेन्द्र ने

लेटे-लेटे कहा- 'काका! किधर जाने को सोचा है?'

'आगरे की तरफ चलोगे?' शहर राजधानी से हटकर पास के गांवों में ही खेल-तमाशे दिखाए जायें।'

'आगरा राजधानी है, काका! वहां बड़े-बड़े तमाशे हैं, बड़े-बड़े लोग हैं। उधर नहीं जाना, मुझे भैया का भी डर है।'

'आगे दिल्ली भी राजधानी रही है, बड़ा शहर है। उधर भी नहीं जाना है। बीच के इलाके में घूमना है, रोटी तो मिल जाएगी।'
'हम नये-नये खेल बनाते रहेंगे, काका!' 'तो क्या तुम बाजीगर बनकर गांव-गांव भटकते रहोगे?'
‘आपको वचन दिया है। याद है न!'
'मेरी तो इच्छा है कि..।'
'वह क्या...काका!'
'तुम पर पूरा विश्वास हो गया है, गजेन्दर! सोच रहा हूं। सो जाओ।'
दोनों सो गए।

शीतकाल का सूरज देर से आता दिखाई पड़ा। लग रहा था कि उसने शीत के कारण कम्बल में अपने को छिपा लिया है। परन्तु गजेन्द्र की बांसुरी बज रही थी। पंछी भी गा रहे थे, सबकी नींद टूट गई। एक खंडहर के पास इनके खेमे थे। खंडहर झाड़-झुरमुटों में छिपा था, उत्तर में किसानों का गांव था, दक्खिन में वणिकों और शिल्पियों का गांव बसा हुआ था। दूर-दूर तक खेत फैले थे। कुछ दूर पर सड़क थी जो ग्वालियर आगरा को जोड़ रही थी।

सहसा दक्खिन के गांव में संवाद फैला कि ग्वालियर की तरफ से अफगान सरदार आगरा की तरफ जाने के लिए निकला है। आगरा में नये अफगान बादशाह का दरबार है। घोड़ों की टापों से धूल उड़ रही है, सरदार लाव-लश्कर के साथ आगरा जा रहा है। आसमान धूल से भर उठा है। गांव वालों ने स्त्री-बच्चों को घरों में छिपा दिया। सबके द्वार बन्द हो गए, पर खेत की हरियाली को कहां छिपाया जाय!
उसकी रक्षा धरती मां करें या सूरज भगवान!

खुदादीन को यह संवाद मिल गया, वह भी सतर्क हो गया। उसने गजेन्द्र को बुलाया, बांसुरी की ध्वनि बीच में ही बन्द हो गई। चन्दा पूजा कर रही थी, क्षण भर के लिए उसकी पूजा भी रुक गई। बांसुरी बन्द क्यों हो गई? बात क्या है? वे काका के पास जा रहे हैं। उसने पूजा पूरी की—पहले शंकर की और फिर शालिग्राम की।
उधर खुदादीन का आदेश गूंज रहा था-'मैना और चन्दा खंडहर में छिप जायें। आध घड़ी की बात है, और सभी खेमे में पड़े रहेंगे।'

'मैं भी खेमे में ही, काका!' गजेन्द्र ने पूछा।

'नहीं, तुम अपनी तलवार संभालकर पीपल की चोटी पर बैठे रहना, पर आंखें खंडहर पर

रहेंगी।'

'यह बात हुई न।'

धूल उड़ती नजर आने लगी। खुदादीन ने सबको इशारा कर दिया, सभी खेमे में छिप गए। गजेन्द्र तलवार लेकर पीपल की ऊंची डाल पर पहुंच गया। मैना चन्दा को लिये खंडहर में आ गई, चमगादड़ पंख फड़फड़ाने लगे। चन्दा डर-सी गई। मकड़े के जाल ने खंडहर को बांध रखा था। पास में सूखे ताल के पास भग्न शिवालय था।

चन्दा ने खंडहर की ऊंची दीवार को देखा। दीवार की मिटती हुई नक्काशी को देखा। उसने ऊंची सांस ली, ऊंची दीवार...अटारी...ऊपर का कलश"मन्दिर में घंटों की टन-टन। फलों की क्यारियां पायल की रुनझुन के साथ क्यारियों में विचरण...खिले फूलों की माला 'मां के साथ पूजा शंखध्वनि....चांदी की थाली में नैवेद्य और चारों तरफ सशस्त्र सैनिकों के चमकते चेहरे गौरव का जीवन सब नष्ट-भ्रष्ट. वह सड़क पर इस खंडहर में क्या उसने पाप किया है? कोई अपराध किया है? उसके पिताजी ने अपराध किया पिछले जन्म में, कैसे समझा जाय? यह कष्ट तो किसी अपराध का दंड है! मां की गोद और आंगन अटारी में खेलना-फुदकना ही बचपन रहा है। किसी को सताया नहीं। फिर उसे क्यों सताया जा रहा है? ये तुर्क-अफगान सताने में क्यों सुख पाते हैं? वह काफिर है, हिन्दू है। इसलिए उसे कष्ट पाना है! काका देवीदीन से खुदादीन हो गएक्या सुख पा रहे हैं? दबाव में ही खुदादीन होना पड़ा, पर पर्व-त्यौहार पर काकी सिसकी भर लेती हैं।

मैना ने मकड़े के जाल को साफ करते हुए चन्दा को एक कमरे में छिपा दिया। उसी समय घोड़ों की टापों से इस बियाबान का सन्नाटा टूट गया। पास की सड़क से अफगान सरदार का काफिला जा रहा था, कुछ इधर आ गये। खण्डहर देखकर लौटने लगे।

इन आवाजों से चन्दा का हृदय धक से हो गया, वह अकेला बांसुरी वाला क्या कर लेता? मारकाट हो जाती, खण्डहर में खून बह जाता, इस बार उसका भी खून बहता। जीवन खंडहर खून खंडहर की धूल में और प्राण ऊपर की ओर चले जाते। यही होता, यदि प्राणों के साथ प्रतिष्ठा नहीं रहे। मनुष्य पशु नहीं है। तुर्कों के शासन में नारी की प्रतिष्ठा एक समस्या बन गयी है। तभी तो घर में धूंघट में छिपाकर रखा जा रहा है, विवाह-बारात भी शस्त्रों के साथ और प्रतिष्ठा के लिए बाल-विवाह का चलन, यह कैसी व्यवस्था है? 'चन्दा! वे लोग चले गये, अब हम बाहर चल सकते हैं।' मैना काकी बोल उठी।

चन्दा काकी की ओर देखने लगी, काकी की आंखों में अनुरोध था। वह उठकर खड़ी हो गयी, कपड़ों से गन्दगी को साफ किया। काकी के साथ बाहर आयी, गजेन्द्र भी पीपल से उतर पड़ा।

लगा कि कोई दूसरा काफिला निकट आ गया है। गजेन्द्र ने देखा रेशमी बुरके में कोई औरत खंडहर में जा रही थी। उसके साथ और भी औरतें थीं, बाहर हथियारबन्द सिपाही थे। वह समझ नहीं सका, उसने खुदादीन को बताया। खुदादीन ने कहा—'औरतों का काफिला

है। कोई परेशानी की बात नहीं है, हम लोग खंडहर के बाहर अपने खेमे में रह सकते हैं।'

'अपने खेल-तमाशे से ये खुश हो सकती हैं।' मैना ने कहा।
'कहीं मेरी बांसुरी पर रीझ गयीं तो?' गजेन्द्र ने पूछा।
'तो कोई रूठ भी तो सकता है।' मैना ने जवाब दिया।'
चन्दा धरती की ओर देखने लगी, सबके होंठों पर मन्द मुस्कान खेल गयी, उसी समय पैरों की धमक सुनायी पड़ी, सभी सहम उठे। तीखा स्वर सुनायी पड़ा- 'खेमे उखाड़ो, और अपना रास्ता नापो।'
गजेन्द्र ने देखा कि अफगान सिपाही हैं, निडर होकर कहा-'हम अपने खेमे में हैं, हम कहां जायें?'
'जबान मत लडाओ, जबान तराश दी जायगी।'
खदादीन ने खेमे से बाहर आकर कहा-'हम बाजीगर हैं. हुजूर! हम खेल-तमाशे दिखाते हैं। आपका दिल बहल जायेगा।'
'यहां बाजीगर और जादूगर की जरूरत नहीं। बेगम साहिबा आराम फरमा रही हैं, जल्दी भागो।'
खुदादीन ने गजेन्द्र को इशारा कर रोका। खेमे को उठा लेने को कह दिया, टट्टू हिनहिना उठे, अफगान सिपाही लौट गये।

खंडहर में जन्नतनशीन सलीमशाह की बेगम छिपकर आराम कर रही थीं। सिपाहियों ने बाजीगरों के चले जाने की खबर कर दी। उन्होंने खुश होकर कहा- 'खान! उन्हें मालूम न हो, कुछ दिन यहां रह लेना है। हम ग्वालियर के रास्ते पर हैं। ताज खां आगरा से लौटेगा, उससे बातचीत की जायगी, वह मददगार बन सकता है।'

बयालीस

बादशाह मुहम्मद आदिलशाह ने दरबार की कामयाबी के लिए शादी खां की देख-रेख में सरमस्त खां और सईदी खां-दो फौजी सालारों, इब्राहीम खां और अहमद खां--दो रिश्तेदारों और हेमचन्द्र की एक मजलिस बना दी, वजारत इनकी सलाह से काम करने लगी; हिजरी सन् ७० याने ईस्वी सन् १५५४ की शुरुआत थी।

दरबार का दिन आ पहुंचा, लगभग सभी सरदार और जागीरदार आगरे में आ गए। हेमचन्द्र को धर्मपाल द्वारा शहर और सरदारों का समाचार मिलने लगा। यह भी जानकारी मिल गयी कि मुगल सरदार हुमायं पेशावर के पास फौज को इकट्ठा कर रहा है। इधर अफगानी सरदारों में मतभेद उभर रहा था। कुछ सरदार सलीमशाह के खिलाफ आदिलशाह के समर्थक थे। फीरोजशाह के कत्ल की वजह से कछ आदिलशाह से खफा थे और फिर अफगानों-पठानों की जातिगत शाखाओं में स्वार्थमूलक विद्वष बढ़ रहा था। जहां-तहां छोटी-छोटी झड़पों की खबर मिल जाती थी, इसलिए सरमस्त खां, सईदी खां आर इब्राहीम खां आतंक

पैदा करने के लिए कोशिश कर रहे थे। हिफाजत के लिए मुकम्मल इन्तजाम किया जा रहा था। हेम चन्द्र अपनी प्रखर बुद्धि की छाप डाल रहा था।

आदिलशाह एतबार के लायक सरदारों और अपने रिश्तेदारों को आगे बढ़ाना चाहते थे, शादीखां, हेमचन्द्र और वकील ने बादशाह के इस खयाल की ताईद की। ये वजारत, सूबेदार सरकार के सरदारों और जागीरदारों के लिए सही सलाह दे रहे थे। हेमचन्द्र के कारण फौज की हिन्दू टुकड़ी को बल मिल रहा था। मथुरा, रेवाड़ी, कोइल, कन्नौज और महोबा के जाट और राजपूत अफगान फौज में शामिल हुए थे। बहादुर खां के साथ हिन्दी मुसलमान भी फौज में आ गये थे, इन्हें भी हेमचन्द्र से प्रेरणा मिल रही थी।

सरमस्त खां और हेमचन्द्र की राय से दरबार को नये ढंग से सजाया गया, बाहर से आये सरदारों और जागीरदारों के लिए रावटियों,
झरोखा, गुलालबार, बारगाह, खरगाह और हरमसरा का नया शहर बसा दिया गया। किले के बाहर के मैदान में इस नये शहर का इन्तजाम हुआ था। किले के भीतर दरबार, शाहीमहल और शाही फौज की शानोशौकत थी। किले के भीतर और बाहर शाही फौज की कवायद सुबहो-शाम चलने लगी।

सुनहली धूप में शाहीमहल से बादशाह आदिलशाह की सवारी निकली। झण्डे और अलम को फहराते हाथी आगे-आगे चल रहे थे। डंके और दमामे की आवाज पर घुड़सवार घोड़ों को ऐड़ लगा रहे थे। ईरानी, तूरानी और हिन्दी साजों की टोलियां अपने संगीत से उत्साह और आनन्द की लहरें उत्पन्न कर रही थीं। पैदल सिपाहियों की नंगी तलवारें और भालों को नोके धूप में चकाचौंध ला रही थीं। शहनाई की लय पर बादशाह का गंगा- जमुनी तामझाम किले का चक्कर लगाकर दरबार के बड़े दरवाजे पर आ पहुंचा। सिपहसालार और वजीरों ने बादशाह का इस्तकबाल किया। नौबत बज रही थी। 'शहंशाहे हिन्द जिन्दाबाद' के नारे लग रहे थे। झुके हुए सरों के बीच बादशाह दरबार में दाखिल हुए। लगा कि जमीन पर जन्नत उतर आई है। सबके सर झुके, बादशाह तख्तनशीन हुए। सारे सरदार, जागीरदार, मनसबदार और वजीर अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये, दाहिनी तरफ का रेशमी परदा हिल रहा था। अचानक शहनाई का संगीत मधुर स्वर में बजने लगा, सभी उस स्वर में बहने लगे। संगीत समाप्त हुआ। शाही इमाम ने कुरान शरीफ की आयतों का पाठ किया, दुआएं दीं और बादशाह आदिलशाह के सर पर ताज रखते हुए फूल बरसा दिए। परदे के भीतर मृदंग और बांसुरी की धुन थिरकने लगी।

नजराना देने की शुरुआत हुई, ओहदे और हैसियत के मुताबिक सभी मनसबदार, सरदार, जागीरदार और हाकिम बादशाह के सामने तीन बार झुककर नजराना देने लगे।

बादशाह की ओर से सरदारों को खिलअत और सनद मिलने लगी, रेशमी परदे से हल्का-हल्का संगीत चलता रहा। वजीर, जासूस और हेमचन्द्र चौकस थे। सभी सरदारों पर दृष्टि थी, लगा कि सब कुछ ठीक-ठाक से चल रहा है।

बादशाह आदिल शाह ने खिलअत और सनद देने के वक्त अफगान हुकूमत को मजबूत करने और मुगलों से मुकाबला करने के लिए सबसे इसरार किया, जन्नतनशीन बादशाह शेरशाह के

काम को आगे बढ़ाने में सबसे मदद मांगी, साथ ही अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा'इस मुल्क के हिन्दू अपने बुजुर्ग शेरशाह द्वारा कायम अफगान हुकूमत का साथ देने को तैयार हो गए हैं, इसलिए हेमचन्द्र वजीरों में शामिल किया जाता है। वह वजीरेमाल की हैसियत से सल्तनत की माली हालत पर गौर करेगा। सिपहसालार शादी खां साहब की देख-रेख में इब्राहीम खां, सरमस्त खां, हाजी. खां और गजराज सिंह फौज को संभालेंगे, जिससे मुगलों के कदम हिन्दुस्तान की जमीन की ओर नहीं बढ़ सकें।

'हमारे जागीरदार हुकूमत के मजबूत पाये हैं। वे थोड़े से हेरफेर के साथ अपनी जागीरदारी को संभालेंगे। फख्न के साथ सल्तनत को चमकायेंगे जैसे हुजूर बादशाह के वक्त से चमका रहे थे। थोड़े से अदलबदल को नजर-अंदाज कर बाखुशी हमारे हाथों को मजबूत करेंगे।

'सरमस्त खां सेरवानी को कन्नौज की जागीर दी जाती है। कन्नौज के जागीरदार मुहम्मद फरमाली महोबा के पास की जागीर का इन्तजाम करेंगे।'

इस फेर-बदल को सुनकर मुहम्मद फरमाली और उसका रिश्तेदार ग्वालियर का ताज खां करसानी दोनों भीतर ही भीतर उबलने लगे। फरमाली का बेटा सिकन्दर मुखालफत के लिए उतावला होने लगा। फरमाली ने समझाने की कोशिश की, पर वह शांत नहीं हो रहा था। हेमचन्द्र ने स्थिति को देख लिया, उसने बादशाह और शादी खां को इशारा कर दिया, बाकी ऐलान को रोक दिया गया।

रेशमी परदे के भीतर से लखनऊ के गायक रामदास का गायन आरम्भ हुआ, परदा धीरे-धीरे खिसकने लगा। सब लोग रामदास के संगीत की ओर उन्मुख हुए, लेकिन मोहम्मद फरमाली, सिकन्दर पारमाली और ताज खां आपस में इशारे से बातचीत कर रहे थे।

सरमस्त खां होशियार हो गया, उसका बेटा पास में आ गया था।

संगीत समाप्त हुआ, दरबार को मुल्तवी करने का ऐलान हुआ। बादशाह तख्त से उठे, सारे सरदार सर झुकाकर खड़े हो गए, लेकिन सिकन्दर फरमाली ने जागीर के फेर-बदल को बेइंसाफी कहकर विरोध प्रकट कर दिया। सर मस्त खां ने मिठास से कहा- 'शाही दरबार में ऐसे नहीं बोलना चाहिए। सभी अफगान सरदार बराबर हैं। यह हुकूमत उनकी है।'

सिकन्दर ने गुर्राते हुए जवाब दिया- 'अब यह हुकूमत खुदगर्जी और कातिलों की है।'

'अपनी अफगानी हुकूमत पर फख्र करो, सिकन्दर! और अदब सीखो।'

दरबार से सभी बाहर निकल रहे थे। बादशाह तामजाम पर बैठ चुके थे, जुलूस सज चुका था, लेकिन दरबार के बाहर दरवाजे पर ही सिकन्दर फरमाली ने सर मस्त खां पर तलवार चला दी। सरमस्त खां का सर कट गया। धड़ जमीन पर गिर पड़ा। उसी क्षण सरमस्त खां के बेटे ने मोहम्मद फरमाली और सिकन्दर फरमाली पर हमला कर दिया। वे दोनों मारे गए, ताज खां बादशाह की ओर चला। हेमचन्द्र गजराजसिंह, विजयवाहन और बहादुर खां के साथ आ गया। ताज खां को धीरे-धीरे पीछे हटना पड़ा।

बादशाह आदिलशाह फौज की हिफाजती में शाही महल गए। शादी खां के हुक्म से बादशाह का बहनोई इब्राहीम खां फौज लेकर ताज खां के पीछे चल पड़ा। ताज खां अपनी फौज के साथ आग रे से निकल गया। इब्राहीम खां ने अपनी जीत मान ली। वह लौट आया।

दूसरे दिन बादशाह ने सरदारों और जागीरदारों को शाहीमहल में दावत दी, सबके साथ एक ही दस्तरखान पर खाना खाया और फिर नाच-गाने की महफिल जमी। सभी बादशाह से खुश नजर आ रहे थे। सभी तारीफ कर रहे थे। बादशाह कभी नाच पर खुश हो जाते थे और कभी अपने सरदारों की तारीफों पर। हेमचन्द्र महफिल में दिखायी नहीं पड़ा। वह तो धर्मपाल से बातचेत कर रहा था। बादशाह ने महफिल में खोजा, फिर नृत्य की अदा और गीत के बोल पर सब भूल गये।

महफिल के बाद सभी दीवानखाने में बैठे। सबने अपनी वफादारी की कसमें खायौं। फिर सभी रुखसत हुए। शादी खां और इब्राहिम खां रुक गए। हेमचन्द्र को बुलाया गया, उसने कहा-'कल एक छोटी-सी बात ने सब चौपट कर दिया। बाहर से आए सरदारों पर अच्छा असर नहीं पड़ा।'

'तुम सही कहते हो, हेमचन्द्र! ताज खां को कुचल देना चाहिए था।' शादी खां ने अपनी राय दी।

'ताज खां करसानी फरमाली के साथ-साथ बागी बन चुका है। वह ग्वालियर जाकर बगावत करेगा। उस पर कड़ी नजर रखनी पड़ेगी।' हेमचन्द्र ने अपना विचार रखा।

'हां, हेमचन्द्र! फरमाली और करसानी ने बगावत कर दी। 'फरमाली मारा गया। पर यह तो निकल गया।' शादी खां ने हेमचन्द्र की ताईद की।

एक तरह से वह कुचल दिया गया है। उसे शाही फौज के सामने दुम दबाकर भागना पड़ा है।
मैं उसे आगरा से बाहर करके ही लौटा हूं।' इब्राहिम ने समझाया।

'बागी को जिन्दा छोड़ना गलत है, इब्राहिम खां! हम इसे आगे देख लेंगे। बागी सिपाही या सरदार, उन्हें जिन्दा नहीं छोड़ना है।' बादशाह ने अपने ख्याल को रखा।

इब्राहिम खां थोड़ा खीझ उठा। उसने देखा कि सबकी नजर उसी पर है। वह बादशाह का बहनोई होने के कारण सिपहसालार बन गया। लेकिन वह जवांमर्दी नहीं दिखा सका, शायद ये लोग यही सोच रहे हैं। उसने ताज खां को भगाया है, इसकी तारीफ नहीं हो रही है। नुकता-चीनी हो रही है, क्या उसे नीचा दिखाने की कोशिश हो रही है? वह अपनी जवांमर्दी से अपने को खड़ा करेगा।

तैंतालीस

सरवर अली कैदखाने से रिहा होकर अपने मकान में छिपा रहा। उसे लग रहा था कि वह चेहरा दिखाने लायक नहीं रहा। वह शाम को चकले की ओर चला जाता। ऐयाशी और शराब में अपने को डुबोकर गम भुलाने की कोशिश करता। पर वह बेखबर नहीं होता। वहां उसे अपने शहर और दारुल सल्तनत की खबरें मिल जातीं। वह कुछ सोचने लगता। उसे जानकारी मिली कि नये बादशाह नाचगान के शौकीन हैं। दरबार के बाद लाहौर के रक्कासा की महफिल जमी थी। वह मुस्करा उठा।

उसे मालूम हुआ कि हेमचन्द्र वजीर बन गया है। उसे अजीब लगा, एक काफिर को ओहदा मिला! पहली बार यह रुतबा मिला! बादशाह को क्या हो गया है! और यह जमाल अहमद कबीरपंथी बन रहा है। सूफी शायरमंझन उसे जमाल मोहन कहते हैं। तो इलाहीबख्श उसे दीन की राह पर ला नहीं सके। वह खुदमुख्तार हो चुका है, उसका शक सही निकला।

सरवर ने सुबहोशाम मुहल्ले का रंग-ढंग देख कर अंदाज किया कि लोग उसे बुरा नहीं मानते। वे उसकी कैद को भूल गए हैं। वह बेकार में अपना चेहरा छिपा रहा है। उसके हमउम्र साथी उसके साथ मिल बैठने के लिए बेकरार हैं। अब उसे चकले में वक्त नहीं गुजारना चाहिए। कुछ और करना चाहिए, वह बहुत कुछ कर सकता है। मजहब सियासत के साथ चलता रहा है। सियासत मजहब के हुक्म से दौड़ लगाती रही है। इस्लामी सियासत ने ही तुर्की से हिन्दुस्तान तक को अपनी लपेट में लिया है। वह सिर्फ औरत और दौलत के बारे में ख्याल करता रहा है। सियासत से दूर रहा है, अगर वह सियासत की राह अपना लेता तो दोनों चीजें मिल सकती हैं। कदमों पर लुढ़क सकती हैं। खतरा तो है, जिन्दगी में कदम-कदम पर खतरा है। हम हमेशा आग उगलने वाले पहाड़ पर बैठे हैं। जल-जला की फिक्र करने से जिन्दगी चलेगी क्या? सर पर कफन बांधकर चलना पड़ता है।

साथ में होशियारी भी चाहिए।

जब एक काफिर अपनी होशियारी से अफगान सल्तनत में ओहदा पा सकता है तो फिर वह अफगान-पठान है, वह क्यों नहीं पा सकता? इन गलियों को छोड़ना पड़ेगा। शाही सड़क पर चलना होगा।

सरवर शाम को चकले की ओर नहीं गया। वह मुल्ला साहेब से मिला, उसने बताया - 'आपके रहते जमाल अहमद कबीरपंथी बन रहा है। जमाल मोहन कहलाता है, चाचा इलाहीबख्श लाचार हैं। उसे कसना चाहिए। हाथ से नहीं निकल जाय।'

'सरवर! तुम ठीक कहते हो। जमाल पर दबाव तो है, लेकिन हिन्दी मुसलमानों की यही हालत है। आहिस्ता-आहिस्ता उन पर रंग चढ़ेगा। दो पीढ़ियों के बाद वे खुद ही अरबी-ईरानी कहलाने में फख्य करेंगे। अलाउद्दीन खिलजी के सिपहसालार मलिक काफूर और लोदी खानदान के सिकन्दर शाह लोदी-ये दो बेजोड़ मिसाल हैं। इन दोनों ने

काफिरों को सबक सिखाया है। काफूर तो काफिर ही था जो मुसलमान बन गया था।
सिकन्दरशाह हिन्दू औरत का बेटा था।' मुल्ला साहेब ने समझाया।

'लेकिन ये मलिक काफूर बन नहीं पायेंगे।' सरवर ने कहा।

'कबीर की वजह से हिन्दी मुसलमान काफूर नहीं बन रहा है। कुछ ढिलाई आ रही है।'

'इस तरह ढील देने से तो वे खिसक सकते हैं। बेईमानी कर सकते हैं।'

'वे खिसक कर कहां जायेंगे? उन्हें कौन कबूल करेगा? उन्हें तो मजबूरन साथ रहना ही है। अपनी हुकूमत का दबदबा है, जजिया का भी दबाव है।'
'अगर काफिर और हिन्दी मुसलमान हुकूमत में आ जायेंगे तो और ढिलाईं आ सकती है, देख लीजिए, हेमू बक्काल वजीर बन गया है। वह जजिया हड़प सकता है।'

'अफगान बादशाह ऐसा नहीं होने देंगे। वजीरों को भी इसी कायदे के मुताबिक चलना पड़ेगा। नहीं तो जेहाद का ऐलान हो जाएगा।'

'लेकिन हेमू बहुत चालाक है। उस पर निगाह रखना जरूरी है।'

'सरवर! तुम कोशिश करो। यह बदलाव का वक्त है, नये बादशाह तख्त पर आए हैं। वजीरों और दरबारियों से मेलजोल बढ़ाओ।'

'आपका इशारा काफी है।'

सरवर मुल्ला साहेब से रुखसत होकर कुछ सोचता हुआ घर लौटा और फिर चकले की ओर चला गया।

किशनपुरा में हरखलाल हेमचन्द्र के वजीर बन जाने से डर गया। पहले तो विश्वास नहीं हुआ कि वह वजीर बन सकता है परन्तु उसने देख लिया कि वह वजीर की हैसियत से सिपाहियों के साथ आता है। किशनपुरा स्वागत करता है, वह भुन गया। सर ठोक कर बुदबुदाया कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। चुप रहना है, अपना व्यापार करना है। नहीं तो, वह उसके व्यापार को बन्द भी कर सकता है। उसके हाथ में राजशक्ति है। किस गांव से भटकता हुआ आया और यहां सबका सिरमौर बन गया। सोहनलाल की मान-मर्यादा बढ़ गयी, अचरज की बात है कि मोहन से भी हेमचन्द्र की खटपट नहीं हो सकी। पर सम्पत्ति के लिए खटपट करायी जा सकती है। मोहन याने जमाल से मिलना पड़ेगा। उससे मिलना कठिन है, उस विधर्मी के घर कैसे जाया जाये? लोग क्या कहेंगे? रास्ते में जब-तब दीख जाता है। आंखें फेर लेता है। कान भरे जा सकते हैं, अपनी सम्पत्ति की चाह तो उसमें हो ही सकती है। चाह पैदा की जा सकती है, वह कैसे सह रहा है? हेमचन्द्र उसकी सम्पत्ति पर कुंडली मारकर बैठा है। और वह हिन्दुओं का अगआ बन गया है। सरकार का वजीर भी हो गया। वह तो योगीजी का चमत्कार लग रहा है। योगी जी के कारण ही वह इतना बढ़ रहा है। ग्रह अनुकूल हो गए हैं, योगी चमत्कार की शक्ति से सब कर रहा है। उसे भी किसी तांत्रिक के पास जाना चाहिए। तन्त्र के आगे हेमचन्द्र

नहीं टिक सकेगा।

शाह हरखलाल ने यह विचार कर तांत्रिक से मिलने का निश्चय किया। आगरा नगर से दक्षिण में नदी किनारे के एक गांव में किसी तांत्रिक के निवास का पता लगाया। वह नदी किनारे मसान जगात है, उसने सिद्धि पा ली है। पहले उसने अपने मुनीम को पूरा पता लगाने को भेजा।

सुबह-सुबह हेमचन्द्र योगी शिवनाथ के पास पहुंचा। योगी की कुटिया नगर से बाहर उत्तर दिशा में एक उपवन में थी। धर्मपाल का निवास भी वहीं था, वह गुप्तचरी के लिए साधु वेश में निकलता था। उसने धीरे-धीरे राजधानी के हर क्षेत्र का परिचय पा लिया था। वह विश्राम कर रहा था कि हेमचन्द्र पहुंचा। धर्मपाल उठ बैठा, दोनों योगी शिवनाथ के निकट आए। योगी के चरणों में झुके।

'सर्वमंगलमय हो।' योगी ने आशीष दी।
'आपकी कृपा से मंगलमय है, परन्तु....।' हेमचन्द्र के शब्द निकल पड़े।
'परन्तु तो लगा रहेगा, हेमचन्द्र! मेरुदंड सीधा रहे। दृष्टि एकाग्र रहे, आदिनाथ का स्मरण होता रहे तो परन्तु-किन्तु की स्थिति बदल सकती है।'
'सेठ जी स्वस्थ हो जाते हैं, फिर अस्वस्थता झलक उठती है। चिन्ता बढ़ जाती है। उधर वजीर बन जाने के बाद लग रहा है कि राजनीति में कांटे ही कांटे हैं। कांटों से उलझते रहना है।'
'शीत में बुढ़ापा कष्टदायक हो जाता है। उनकी देखभाल होती रहे, वे चिन्ता से भी मुक्त नहीं हो पाते। इकलौता बेटा जमाल बन कर दूर हो गया....इस पीड़ा से उन्हें छुटकारा नहीं मिल पाता।'
'यही लगता है, शरीर और मन दोनों कष्ट में हैं। सोच रहा हूं कि व्यापार का काम जमाल मोहन को ही सौंप दूं। उन्हीं के द्वारा अन्न और वस्त्र की पूर्ति किले में हो। मैं राजकाज को संभालने में पूरी शक्ति लगा दूं, राज की स्थिति को सम्हालकर अनुकूल बनाया जाय।'
ठीक सोचा है, हेमचन्द्र! यही हो। पूरा समय देना ही पड़ेगा, यह पद केवल प्रतिष्ठा नहीं बने। यह अपने देश का कर्म बने, अपने कर्म से इसे प्रजा के लिए बना देना है, तुम पर...यहां की प्रजा पर यह राज्य आकर टिक जाए। पर इसके लिए आचरण शुद्ध व सन्तुलित रहे।'

'इसके लिए आपका नित्य मार्गदर्शन मिलता रहे। धर्मपाल इसे अनूकुल बनाने में सहायता करता रहे।'

'धर्मपाल तो आगरा में नया है, कार्य कठिन है। पर संकल्प के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। क्यों धर्मपाल...!'

धर्मपाल सिर झुकाकर सुन रहा था। योगी के निर्देश पर उसने सिर उठाया, और कहा–'आपने मुझे शिव का गण बना दिया है। पर त्रिशूल को छिपाकर शूलों पर चल रहा हूं। परन्तु आनन्द आ रहा है।'

'शिवजी का गण आनन्दी जीव होता ही है, धर्मपाल! पत्थरोंचट्टानों पर उछलता चलता है। जहां कहीं रत्न मिल जाता है, वह निरासक्त भाव से अपनी झोली में डाल लेता है।' योगी ने संकेत भाषा मे समझाया।

'रत्न मिले हैं, ताज खां ने मृत बादशाह की बेगम को साथ ले लिया है। ग्वालियर की ओर बढ़ गया है।' धर्मपाल ने बताया।

'कुछ इधर की सूचनाएं भी...।' हेमचन्द्र ने पूछा।

'सरवर रिहा होकर ऐयाशी में डूबा हुआ है। वह मुल्ला से भी मिल रहा है, उस पर मेरी दृष्टि है।

'वह मुल्ला के द्वारा वजीरों तक पहुंच सकता है। वह आदमी बहुत बुरा है, उस पर ध्यान रखना होगा।' हेमचन्द्र ने कहा।

'हेमचन्द्र! बादशाह भी भला-मानुष नहीं है। तुमको चतुराई से इसे अपने विश्वास में रखना होगा। उसकी दुर्बलताओं को समझकर अपने अनुकूल बनाना होगा। योगी ने सकेत दिया।

'नहीं तो...इसे साथ देने का प्रयोजन है! मुझे तो आपके मार्गदर्शन में अपने देश और अपनी प्रजा के लिए यह सब करना है।'

'यह सत्य सर्वदा आंखों के सामने रहे, और आक्रमण, विध्वंस और अत्याचार का इतिहास भी स्मरण रहे।

'जी, हां! अपने प्रण के साथ स्मरण रखना है।'

चौवालीस

धर्मपाल वैष्णवसाधु के वेश में कुटिया से निकला। किशनपुरा में आ पहुंचा, देखा कि हरखलाल अपने मुनीम के साथ कहीं जा रहा है। रास्ता सिकन्दराबाद की ओर मुड़ रहा था। वह पीछे हो लिया, किशनपुरा और सिकन्दराबाद के चौराहे पर जमाल का घर दिखायी पड़ा। लगा कि हरखलाल के पैर रुक गये हैं। पर मुनीम के इशारे पर वे पर आगे बढ गए। सिकन्दराबाद की सड़क पर वे दोनों चलने लगे थे। वह सड़क नदी की ओर मुड़ गयी थी। वह भी उसी की ओर चला, पीछे से आवाज आयी, शब्द थोड़े परिचित लगे। उसने गति को धीमा किया, वे दो थे। निकट आ गए, उसने तिरछे होकर देखने की चेष्टा की। सरवर के साथ मुल्ला साहब थे, वे दोनों बढ़े आ रहे थे। तो ये दोनों नदी पार जायेंगे। किले

की तरफ जायेंगे, किसी वजीर या किसी हाकिम से जान-पहचान की बात हो सकती है। तो अब सरवर मियां किले में घुसने की कोशिश करेगा! राजकाज में हाथ डालेगा। हेमचन्द्र के रास्ते में कांटे बिछा सकता है। पैरों में बड़ी तेजी है, वह शाह हरखलाल से आगे निकल गया। गश्त लगाने वाले घोड़े सवार आ गए। सबको बगल में होना पड़ा, सरवर की गति धीमी हो गयी। उधर से कुछ लोग लौट रहे हैं। उन्हें भी बगल में हटना पडा। ये लोग दूसरे घाट पर स्नान क्यों नहीं करते! यह मुख्य मार्ग है। इस पर तो कठिनाई होगी ही।

नदी तट आ गया। नाव में मूल्ला और सरवर सवार हो गए। धर्मपाल निर्णय नहीं कर सका कि वह किधर जाय। उसने देखा कि शाह हरखलाल की नाव दक्षिण की ओर जाने वाली है। उस नाव में वे ही दोनों हैं, वह उस नाव के पास जा पहुंचा। केवट से साथ लेने के लिए अनुरोध किया। केवट ने शाह जी की तरफ देखा। शाह जी ने मुनीम की ओर देखा, वैष्णव साधु होने के कारण दोनों ने अनुमति दे दी। केवट ने बुलाकर बैठा लिया, नाव चल पड़ी। वह कभी सूर, कभी हित हरिवंश और कभी कबीर के पद गुनगुनाने लगा। वे दोनों चुप थे। कभी नाव की चाल देखते, कभी नदी पार का दृश्य देखते। कभी आकाश की ओर देखने लगते। केवट डांड चलाते लोकगीत गुनगुनाने लगा। धर्मपाल ने गुनगुनाना बन्द कर दिया, आंखों में प्रशसा का भाव लिये केवट की ओर देखने लगा।

आगरा नगर दूर हो रहा था। किले के बुर्ज और गुम्बज भी धूमिल होते जा रहे थे। नाव दूर निकल गयी, गांव दिखायी पड़ने लगा। घाट पास में ही था, नाव घाट के निकट लगने लगी। सभी उतरने को उतावले हो गए। मुनीम हरखलाल को इशारा कर रहा था, घाट से कुछ दूर एक मठिया थी। केवट ने भी सर हिलाया, धर्मपाल को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह संकेत को समझने का यत्न कर रहा था।

नाव घाट से लग गयी। केवट ने रस्से को एक खूटे से बांध दिया, नाव हिलने-डुलने लगी। गति रुक गयी, तीनों बारी-बारी से उतर गए। हरखलाल मुनीम के साथ चल पड़ा। पीछे-पीछे कुछ दूरी रखते हुए धर्मपाल भी चला। मठिया के पास वे आ गए। तांत्रिक दिखायी पड़ा, धर्मपाल सूर का पद गुनगुनाने लगा। तांत्रिक खीझ उठा, उसने प्रश्न कर दिया-'इस वैष्णव साधु को आप लोगों ने साथ क्यों रखा है? इसे क्यों लाया?'

'नाव पर साथ आ गया है। हम लोगों ने नहीं लाया है, घुमक्कड़ है। गांव की तरफ जाएगा, आप चिन्ता न करें।' मुनीम ने उत्तर दिया।

'बढ़ जाओ, साधु! यहां भजन-कीर्तन नहीं...तंत्र-मन्त्र चलता है।' तांत्रिक ने धर्मपाल से कहा।

'श्रीकृष्ण की भक्ति का मन्त्र ले लो, ओझा जी! उनके अनुग्रह से सब कल्याण होगा।
एक पद सुन लें।' धर्मपाल ने हाथ जोड़कर अनुरोध किया।

'यह सिक्के लो, साधु बाबा! और गांव के लोगों को भजन सुनाओ। लौटकर आना हो, आ जाना, साथ चलेंगे।' हरखलाल ने बड़े आदर से सिक्का देते हुए कहा।

तांत्रिक ने मठिया की दीवार पर बने भूत-प्रेत के भयानक आकार और पास में पड़े नरकपाल को दिखाकर दूर जाने को कहा। धर्मपाल भजन गाता गांव की ओर चला गया। तांत्रिक ने देख लिया कि वह आंखों से दूर हो गया। उसने बातचीत आरम्भ की—'क्यों, शाहजी! क्या कष्ट है?

'पड़ोसी सोहनलाल नगर सेठ बनकर कष्ट दे रहा है।'
'आप तो श्रीमन्त हैं। चाहते क्या हैं?' 'सोहनलाल और हेमचन्द्र का पतन।'
'हो सकता है। 'यदि आपकी कृपा हो तो आकाश भी झुक सकता है।'
'धरती और आकाश दोनों मुट्ठी में हैं। तंत्र साधना में इतनी बड़ी शक्ति है।
'आप मेरे लिए कुछ करें. आप जो चाहेंगे, वह जरूर।'
'आप अपने घर पर क्या कर रहे हैं?'
'केवल कुढ़ता रहता हूं।'
'आपको भी कुछ करना पड़ेगा।'
'करूंगा।'
'शत्रु के शत्र से मेल कीजिए।'
'उसका कोई शत्रु दिखायी नहीं पड़ता।'
'ऐसा क्यों...? आप तो हैं!'
'शत्रु का शत्रु चाहिए न!'
'हिन्दू या तुरक-किसी में।'
'ढूंढ़ना पड़ेगा।
'मिल जाएगा। तुरक में मिलेगा, मैं यहां अपनी साधना से प्रेतशक्ति को जगाऊंगा जो आपके लिए...।'
'यही तो विनती है। क्या व्यय होगा?'
'मुनीम जी से कह दें! आप क्यों चिन्ता करते हैं? शहर से मदिरा का प्रबन्ध करना होगा।'
'मुनीम जी सब कर देंगे।'

'वही तो कह रहा हूं।' तांत्रिक मुस्कराने लगा, उसका मुस्कराना भी भयानक लगा। क्षणभर के लिए हरखलाल का हृदय कांप उठा।

उधर धर्मपाल गांव से होता लौटता हुआ मठिया के पास आ पहुंचा। दो-चार शब्दों को सुना, समझता हुआ घाट पर चला गया। केवट विश्राम कर रहा था, वह भी विश्राम करने लगा। कुछ देर बाद हरखलाल और मुनीम आगे आ गए। देखा कि वैष्णव साधु विराजमान है। यह किधर से आ गया! कुछ सुन लिया है? पर इससे क्या भय?

नाव खुल गई, केवट ने नाव को चला दिया। अपनी गति से नाव चलती रही। नगर निकट आता रहा, घाट आ गया। हरखलाल और मुनीम नाव से उतर कर चले गए। धर्मपाल नदी तट पर हाथ जोड़कर भजन गाता रहा। थोड़ी देर के बाद वह चला, धीरे-धीरे वह जमाल के घर के पास आ गया। देखा कि जमाल घर से निकलकर किशनपुरा की ओर जा रहा है, वह भी पीछे-पीछे हो गया।

दोनों पिछवाड़े से लक्ष्मी भवन में आ गए। सेठ सोहनलाल खाट पर पड़े थे, बेचैनी

बढ़ गई थी। वद्य जी ने ओषधि दी, कुछ क्षणों के बाद थोड़ी शान्ति मिली। मौका पाकर हेमचन्द्र ने धीरे-से जमाल से कहा–'अब आपको यह व्यापार संभालना है, मुझे समय नहीं मिल पा रहा है।

'हां, मोहन...जमाल मोहन। अब यह करना है। हेमचन्द्र को समय चाहिए।' मुंशी काका ने अनुरोध किया।

'अब मैं जा रहा हूं, दुर्गा! दोनों पर ध्यान रखना।' आंखें बन्द किए सोहनलाल ने कहा।

'ऐसा न कहें।' मुंशी जी के स्वर में व्यथा थी।

दुर्गा कुवर चरणों में झुककर सिसकने लगी। पार्वती पिताजी के पास आ बैठी।
सोहनलाल ने उसके शीश पर हाथ रख दिया, और मन्द स्वर में कहा- 'बेटी! अपने विधर्मी भैया को मत भूलना। मेरी इच्छा है कि आचार्य गुरु प्रायश्चित करा दें, और सम्पत्ति में आधा भाग मिल जायें।

'भैया को मिलना ही है। प्रायश्चित के लिए आचार्य गुरु से भी बार-बार कहा जाएगा।'-हेमचन्द्र के ये शब्द थे। पार्वती शीश हिला रही थी, आंखों में आंसू झलकने लगे थे।

'आपने अपने पास बुला लिया, क्षमा दे दी, यही बहुत है। ज्यादा का अधिकारी मैं नहीं हूं।'-सिसकते हुए जमाल ने कहा।

'मां-बाप का प्यार असीम होता है, बेटे!' सोहनलाल ने यह कहकर बेटे और जमाई को निकट आने का संकेत दिया।

धर्मपाल वेश बदलकर योगी शिवनाथ के पास चला गया। सोना नूरी को बुलाने जाने लगी, मुंशी हरसुखलाल ते सम्पत्ति के उत्तराधिकार का कागज तैयार कर लिया। कागज में बेटे और जमाई-दोनों को आधी-आधी सम्पत्ति देने का निर्णय अंकित था। व्यापार साथ में चलेगा, मुंशी जी ने कागज पढ़कर सुना दिया। वैद्य जी ने निर्णय की प्रशंसा की। जमाल मौन था, अपने पिताजी को एकटक देख रहा था। कागज पर सेठ सोहनलाल और दुर्गा कुंवर ने हस्ताक्षर कर दिए। वैद्य जी और मुंशी जी साक्षी के रूप में थे, उनके भी हस्ताक्षर हुए।

सोहनलाल की स्थिति बिगड़ने लगी। वैद्य जी ने पुनः ओषधि दी, पर कोई लाभ न दिखाई पड़ा। मुख में गंगा और यमुना जी का जल डाला गया। लक्ष्मी भवन का यह संवाद किशनपुरा में फैल गया। पड़ोसी इकट्ठे होने लगे, योगी शिवनाथ आ पहुंचे। पुरोहित गणेशीलाल शर्मा भी आ गए। उन्होंने गोदान करा लिया।

कुछ देर के बाद नूरी आ गई, भीतर के कमरे से सब देख रही थी, झटके से पास आई। पैरों को छूकर हट गई। पडित गणेशीलाल कुछ बोल नहीं सके, विष्णु सहस्र नाम का पाठ करते

रहे। सेठ जी की पलकें ख लीं, सामने श्रीकृष्ण का चित्र देखा। देखते रह गए, सर लटक गया।

लक्ष्मी भवन में शोक का सागर लहरा गया। पड़ोस में हरखलाल ने मुनीम जी से कहा-'तांत्रिक तो शक्तिशाली मालूम पड़ता है। वे जो कहें, वह सब उन्हें मिलना चाहिए।'

पैंतालीस

'आपने व्यापार से मुंह मोड़ लिया, यह उचित नहीं हुआ। राजकाज, बादशाह वजीर के झमेले में पड़ना अच्छा लगता है क्या?' पार्वती ने हेमचन्द्र से कहा।

हां, पारो! झमेला तो अवश्य है। मुझे दो में से एक को चुनना था, एक को चुन लिया। सोच-समझकर चुना है।' हेमचन्द्र ने उत्तर दिया।

क्या आपको शान्ति मिल सकेगी? तलवार की धार पर चलने में क्या सुख है?'

तलवार की धार पर चलने में सुख है, पारो! यदि लक्ष्य अपना देश हो तो...यदि विदेशी बर्बरों की पराधीनता स्वीकार न हो, गांवघर के विध्वंस को देखना न हो और पद्मिनी-पारो को राख बनने से बचाना हो तो अशांत होना पड़ेगा, हर कदम पर रक्त टपकेगा, फिर भी मुस्कराना होगा।'

यह सुनकर पार्वती हेमचन्द्र की ओर देखती रह गई। उसे अनुभव हुआ कि वह रोमांच से भर उठी है। इस पुरुष को पूरी तरह समझ नहीं सकी। यह केवल प्रेम की पीड़ा नहीं है। वह पीड़ा सारे देश की पीड़ा में बदल गई है। ये हर क्षण अशांत हैं। इसलिए तराजू नहीं तलवार...! जो भी हो!

'पारो! तुम अचरज मत करो। क्रान्ति का जीवन जीने को तैयार हो जाओ।

'जी, हां! अनुभव हो रहा है। लगता है कि किसी के जीवन में शान्ति नहीं है। पिताजी का अन्तिम संस्कार आपके द्वारा हुआ क्योंकि भैया विधर्मी बन गए हैं। अपना अधिकार खो चुके हैं, उनकी अशांति का भी अनुभव किया है।'

'यह देश इसी अशान्ति से जी रहा है। गुरु रामानन्द, कबीरदास, नानकदेव और वल्लभाचार्य-सभी इसी अशांति और अनास्था में एक नया विश्वास जगा रहे हैं। मैं भी चाहता हूं कि नये विश्वास को बल मिले।'

‘पर ये अफगान-पठान आपको अवसर देंगे? आपके बढ़ते कदम को बर्दाश्त करेंगे?'

'अफगान कमजोर हो रहे हैं, दरवाजे पर मुगल मौके की ताक में हैं। इसलिए अफगानों को इस देश की प्रजा के अनुसार चलना है। मैंने बता दिया है, वे मुझे बर्दाश्त करने लगे हैं। नहीं तो प्रजा जगेगी।'

'जात-पांत के कारण प्रजा एक साथ मिलकर कुछ कर सकेगीविश्वास नहीं होता। हर जाति अपने-अपने घरौंदे में बन्द है। कोई बहत बड़ा है, कोई सावारण बड़ा है, कोई छोटा है, कोई बहुत छोटा है...मिलना तो कठिन लगता है।'

'सच्चाई तो यही है, पारो! इधर कुछ वर्षों से भक्ति के आचार्यों
और सन्तों के कारण लोग एक साथ बैठने लगे हैं। समानता होने लगी है, थोड़ा समय और लग सकता है, अब विदा दो।'

पार्वती से विदा लेकर हेमचन्द्र घोड़े पर आरूढ़ हुआ। साथ में घोड़सवार सिपाही थे, सड़क घोड़े की टापों से धमक उठी।

हरखलाल ने खिड़की को बन्द कर दिया, और बुदबुदाया- 'बहुत दिनों तक छाती पर दाल न दल सकोगे, हेमचन्द्र!'

फिर सोचने लगा कि मोहन और हेमचन्द्र में सम्पत्ति को लेकर अनबन नहीं हो सकी। वह अवसर हाथ से निकल गया, पर वह पठान हाथ में आ गया है। सरवर अली से भेंट हो गई, वह जाल रच सकेगा। यह उस जाल में फंसकर तड़पेगा। उधर तांत्रिक की साधना आरम्भ हो गई है। सोहनलाल तो ठिकाने लग गया, अब यह बचा है।

हेमचन्द्र सोचता हुआ जा रहा था कि पार्वती...पारो ठीक ही कहती है कि सभी अपने घरौंदे में बन्द हैं। अपने घरौंदे में रहकर रोटी पा लेना, राम या कृष्ण या शिव का नाम ले लेना और हुकूमत के आतंक से आधी नींद सो लेना-यही तो जीवन है। जजिया के बारे में भी सभी एक साथ कहां सोच पाते हैं! पर सोचेगे। एक साथ बैठेंगे, पर वह तो अफगान बादशाह का दरबारी बन गया, योगीजी की प्रेरणा से बना है, वह भटकता नहीं है।

हेमचन्द्र किले के द्वार पर जा पहुंचा। दीवानखाने में उसकी प्रतीक्षा हो रही थी, वह अदब कायदे के साथ आकर बैठ गया। जासूस बताने लगा था कि ताज खां मालवा के शुजात खां के बेटे दौलत खां को मिलाकर बगावत की तैयारी कर रहा है, बेगम साहिबा अपने खजाने से मदद कर रही हैं।

गादी खां ने तुरन्त हमला करने की सलाह दी जिससे बगावत को जल्द कुचला जा सके।

वजीरों ने इसकी ताईद की।

बादशाह आदिलशाह की नजर हेमचन्द्र पर पड़ी। हेमचन्द्र ने कहा--'जहांपनाह! हमले में देर न हो। ताज खां से निपटकर पंजाब पर ख्याल करना है, हुमायूं के कदम बढ़ न सके।'

'लाहौर में अहमद खां सूर मौजूद है, उधर तो परेशानी नहीं है।'

'परेशानी पेशावर के पास है, सल्तनत की पूरी ताकत उधर लगनी चाहिए। इसलिए ताज खां के ताज को मिट्टी में मिलाना ही होगा।'

'बहुत खूब, हेमचन्द्र! अगर आप तैयार हों तो मैं घोड़े पर सवार हूं। इस बार ताज खां को नहीं छोड़ गा।' यह सिपहसालार इब्राहिम था।

'मैं खुद चलूंगा, हेमचन्द्र भी जरूर चलेगा।' बादशाह ने कहा।

'बादशाह सलामत और सिपहसालार-दोनों का हुक्म है, मैं तैयार हूं, एक अर्ज है।'

'वह क्या..?'

'फौज के साथ नाच-गाना न हो। विजय के बाद ही नाचगान अच्छा लगता है।

'इतने खुश्क हो! इतने पत्थरदिल हो!'
'जंग में पत्थरदिल बनना पड़ता है, शहंशाह!'
'फिलहाल तुम्हारी शर्त मान लेता हूं। सुबह फौज कूच करेगी।'
'हमारे जासूस आज ही उधर निकल जाएं।' यह हेमचन्द्र की राय थी।
सबने इस राय को मान लिया। बैठक खत्म हो गई, इब्राहिम खां सोचता हुआ लौटने लगा कि मुल्ला साहब ने सरवरअली से मुलाकात कराई है। सरवर का कहना मुनासिब है कि इस काफिर को हद से ज्यादा बढ़ने नहीं देना है। मौका मिलने पर इसके पर कतर देने हैं। बादशाह इससे खुश हैं। वह तो उनका करीबी रिश्तेदार है। उसे अपने को मजबूत बनाना है और बादशाह को अपने काबू में रखना है।

इब्राहिम खां अपने दौलतखाने पर पहुंचा, आराम करने लगा। अब तो ग्वालियर की तरफ जाना है। शाम को अपना चेहरा छिपाये सरवर आ गया। इब्राहिम ने कहा-'खुश आमदीद!'

'हुजूर बहुत खुश हैं। लगता है कि मेरी सलाह पर गौर किया गया है।' सरवर ने खुशामद की आवाज में कहा।

'हां, सरवर! मैंने गौर किया है। मानने को जी चाह रहा है।'

'यह मेरी खुशकिस्मती है। आप सिर्फ ख्याल रखें। वक्त आपके कदमों को चूमेगा।'
'वह वक्त आ गया है, सरवर! कल ग्वालियर के लिए फौज कच करेगी। मैंने हेमचन्द्र को भी ताव पर चढ़ा दिया है।'
'बिल्कुल सही...! आप जंग में उसे ताव पर चढ़ाते रहें, खुद ही फंसेगा। लेकिन जीत का सेहरा आपको मिले।'
'यही होगा, इत्मीनान रखो।'
'मुझे इत्मीनान नहीं है, हुजूर! अभी तो बादशाह शादी खां पर मुनहसर हैं। उस काफिर से सलाह लेकर ही कदम बढ़ाते हैं। आप पर मुनहसर होना है।'

'तब तो मैं तेरी सलाह से कदम बढ़ाऊंगा। तुझ पर यकीन हो गया है, सरवर!'

‘ऐसा हो कि वे रक्कासाओं के आगोश में पड़े रहें। शराब और साकी का शौक तो है ही, और सल्तनत की जिम्मेवारी अपने आप आपके हाथों में आ जाय।'

इब्राहिम दो लमहा देखता रह गया और फिर उसने सरवर की हथेली को अपने हाथों में ले लिया। कहा–'तूने मेरी आंखें खोल दी हैं। बादशाह हसीनों के आगोश में और सल्तनत मेरे आगोश में...बादशाह की बहन तो मेरे हरम में है ही।'

'हुजूर! आहिस्ता बोलें। दीवारों के भी कान होते हैं।' सरवर ने झुककर कहा, और सोचा कि तीर निशाने पर लगा है।

उधर हेमचन्द्र किले से लौटकर योगी की कुटिया में जा पहुंचा। धर्मपाल आ गया था। उसने बताया-'हरखलाल ने लक्ष्मी भवन के पतन के लिए तांत्रिक का आश्रय लिया है, और दूसरी तरफ सरवर सिपहसालार इब्राहिम से मिला है।'

'शायद इसीलिए इब्राहिम खां ने ग्वालियर चलने के लिए ताव दिया है। सरवर की घुसपैठ हो गई, कांटे बिखरने लगे।'

'चिन्ता मत करो, हेमचन्द्र! हरखलाल कुछ नहीं कर सकता।' योगी ने भरोसा दिलाया।

‘पर सरवर अली सिपहसालार के कान भर रहा है। वह तो कुछ कर सकता है?

'हां, थोड़ा सावधान रहना है। ग्वालियर के युद्ध में जाओ। उसे चिढ़ाना मत, और यशस्वी तुम बनो, अब सब अनुकूल है। योगी ने समझाया।

'पर हेमचन्द्र अपने को संकट में नहीं डाले। सरवर और इब्राहिम की यही चाल हो सकती है। यह धर्मपाल का विचार था।

दोनों इस तर्क से सहमत हुए। 'सावधान' का मन्त्र लिये हेमचन्द्र लौटा।

लक्ष्मी भवन में पार्वती अपनी मां के पास लेटी हुई थी। ग्वालियर जाने की घोषणा सुनकर सिहर उठी। वह हेमचन्द्र की ओर देखती रह गई। इन्हें युद्ध में जाना है, नंगी तलवारों की कौंध में जीना है। मारकाट का कोलाहल....रक्त के नाले...शवों का ढेर...हर क्षण यमदूत के सामने...नहीं...नहीं...इन्हें नहीं-पर कैसे राके? ये तलवार से खेलते रहे हैं। भाले के साथ उछलते रहे हैं। यह लक्ष्मी भवन...फूलों की बाड़ी...पार्वती-पारो...रोकने में असमर्थ हैं? किला, दरबार और बादशाह के आसपास मंडराते रहे। अब वजीर हैं, पर वजीर का युद्धक्षेत्र से क्या सम्बन्ध? वजीर क्यों खून का खेल खेले?

पर पार्वती कुछ बोल नहीं सकी। पलकें बन्द कर ली, आंसुओं को रोकने लगी। मां

दुर्गा कुंवर ने पूछा - 'बेटा! तुम तो वजीर हो। तुम्हें तो बादशाह के पास रहकर विचार करना है। राय-सलाह देनी है। युद्ध में क्यों...?'

'युद्ध में बादशाह, वजीर, सिपहसालार–सभी जाते हैं, मां! मुझे जाना है। आशीष दें, पारो उदास क्यों है?'–हेमचन्द्र ने कहा।

'इसने मारकाट, खून-खराबी को देखा नहीं है। लड़ाई के नाम से उदास हो गई है। हम दोनों के लिए चिन्ता की बात है, सोचकर मन कांप उठता है, बेटे! तुमको रुकना चाहिए।'

'मुझे विजयी और यशस्वी होना है, मां! सोचना और रुकना नहीं है। रामायण और महाभारत की कथा सुनकर रोयें सिहर उठते हैं। एक बार और सिहर उठे। बस, इतना ही! आशीष और मंगलकामना से मैं सकुशल लौटूंगा।'
'तुला छोड़कर तलवार लिये मरने-मारने के लिए भागदौड़ रुचिकर तो नहीं है, बेटे!'

'मां! योगीजी ने बताया है कि ये हाथ तलवार के लिए बने हैं। समय ने भी यही संकेत किया है, फिर मैंने संकल्प भी कर लिया है।'

दुर्गा कुंवर भी चुप रह गई। पार्वती ने आंसुओं को रोक भोजन का प्रबन्ध किया। हेमचन्द्र भोजन कर विश्राम करने लगा। उसने देख लिया कि दोनों मंगल भाव से पूजा पर बैठ गई हैं। उसे नींद आ गई।

दूसरे दिन प्रभात में किशनपुरा ने देखा कि हेमचन्द्र वीर वेश में तिलक-चन्दन से शोभित होकर घोड़े पर चढ़ रहा है। विजयवाहन और खेमराज के घोड़े हिनहिना रहे थे। दुर्गा कुंवर और पार्वती के साथ जमाल और नूरी-सभी फूल-अक्षत से विदा कर रहे थे।

हरखलाल घोडों की टापों से दहल उठा, पर शीघ्र ही अपने को सम्भाला और बुदबुदाया — 'जाओ, बच्चू! सारी अकड़ निकल जाएगी, तांत्रिक के पास जाना है। उनका तन्त्र जगे। उस तरफ से भी भेंट।'

किशनपुरा के लोग शुभकामना कर रहे थे। सबकी शुभकामना ले हेमचन्द्र अपने साथियों के साथ बढ़ता जा रहा था।

छियालीस

'क्या सोच रहे हैं?' नूरी ने जमाल से पूछा।

'सीकरी की तरफ जाने को सोच रहा हूं।' जमाल ने उत्तर दिया।
'सूफी फकीर से मिलना है या शायर मंझन से?'
'सूफी फकीर से तो भेंट हो सकती है। मंझन से मिलना मुश्किल है, वे मनमौजी जीव हैं।'
'उनकी मनसबी-शायरी को सुनने-पढ़ने की ख्वाहिश जग गई है। लेकिन उनका तो पता ही नहीं है।'
'सीकरी की तरफ उनका पता चल सकता है।'

'लेकिन आप कौन-कौन काम करेंगे? मेहमान साहब ने गल्ले का रोजगार सौंप दिया है, कपड़े का काम चल ही रहा है। किधर-किधर दौड़ेंगे?'

'मुंशी चाचा की मदद से सम्भल जाएगा। चिन्ता क्या है! एक दूसरी चिन्ता है।' 'वह क्या है?

'अफगान राज कमजोर हो रहा है। उधर मुगल सरहद पर हुंकार कर रहे हैं। हेमचन्द्र समय पर इस राज्य को मदद करने को तैयार हुआ है।'

'यह तो सियासी मामला है। आपके रोजगार से क्या मतलब है? आप क्यों परेशान होने लगे?'

'देश में सुख-शांति रहने पर ही रोजगार हो सकेगा।'
'तब आप क्या करेंगे?'
'अफगान राज को अफगान, हिन्दी मुसलमान और हिन्दू-सभी मदद करें, यह हेमचन्द्र का विचार है। मैं भी सहमत हूं, यह राज्य सबको अपना समझे। बराबरी का व्यवहार करे, तभी सब लोग अपना समझकर मदद कर सकेंगे।'

'बहुत सही ख्याल है। यह होना चाहिए।'
'इसलिए मुझे हिन्दी मुसलमानों को समझाना है। सबको एक-दूसरे से जोड़ना है। कबीरदास की बानी द्वारा सबको जोड़ना है, मन की खाई को पाटना है।'

'यह तो ऊंचा ख्याल है, लेकिन आप कैसे करेंगे? सरवर भाई नाराज हैं, मुल्ला साहब नाराज हैं, हिन्दू भाई नाराज हैं। आप क्या कर लेंगे?
'मैं जमाल हूं, हिन्दी मुसलमान हूं, कबीरपंथ की ओर बढ़ रहा हूं। जानती हो, नूरी! हिन्दी मुसलमानों में कुछ जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए हैं। कुछ डर से बने हैं, कुछ समाज में बराबरी का दर्जा पाने के लिए बन गए हैं। और मैं नूरी के लिए।

'नूरी भी साईंदास का भजन सुनने लगी है। वह ज्योति कहा सकती है। आग दोनों तरफ है, मेरे प्रीतम!'

'नूरी को ज्योति नहीं, मोहन को जमाल बनना पड़ा है।'

'हां, यह तो है। रतनसेन को जोगी बनकर पद्मिनी रानी के लिए सिंहल द्वीप जाना

पड़ा। आपको भी जोगी बनकर किशनपुरा से सिकन्दराबाद यानि सिंहल द्वीप आना पड़ा है।'

दोनों मुस्करा उठे। 'अच्छा, मुझे जाने दो, नूरी!'

'लेकिन आप सियासी मामलों में दखल न दें। एक साहब तो फंस गए।'

'सरवर भी उधर पहुंच रहा है, कुछ उपद्रव करेगा।'

'तब दो फूंक-फूंक कर कदम उठायें।'

'तुम फिक्र मत करो, कुछ अनुभवी हो गया हूं।'

जमाल ने सरजू को काम समझा दिया और वह सीकरी के लिए चल पड़ा। नगर से कुछ दूर निकलता गया। सोचता जा रहा थानये बादशाह ने हेमचन्द्र को वजीर बनाया है। वह बादशाह का विश्वासी बन गया है। सबसे विदा होकर युद्ध में चला गया। मां और बहन - दोनों बेचैन थीं। आंसूओं को रोकना कठिन था, भय स्वाभाविक है। वह तो उत्साह में था। वह विजयी हो, यशस्वी हो। पर मां और बहन को संभालना कैसे हो?

कोई गांव आ गया था, वह रुक गया, गांव में घुसते ही बुनकरों से भेंट हो गयी। इनमें कुछ लोग हिन्दू थे और कुछ लोग मुसलमान बन चुके थे। दूसरी तरफ जाट किसान थे, तीसरी तरफ अछूत थे। मिट्टी के छोटे-छोटे घर थे। कुछ फूस के थे। बाहर ओसारे में चमड़े का काम कर रहे थे। कहीं जूता बन रहा था। कहीं मशक की सिलाई हो रही थी, कहीं जीन बनायी जा रही थी, ओसारे के बाहर उनके बच्चे मिट्टी के ढेले और कंकड़ से खेल रहे थे। उनके काले शरीर पर नाममात्र को ही कपड़े थे। स्त्रियां पानी भरने के लिए जा रही थीं। पुराने-फटे कपड़ों में किसी प्रकार शरीर को छिपाती हुई।

वह दो क्षण के लिए ठिठक गया, चाहा कि वह जल्दी ही निकल जाये। अचानक उसने सुना कि कोई बूढ़ा भजन गा रहा है। वह धीरेधीरे चलने लगा। रैदास का भजन था। यह सुनकर उसे अच्छा लगा। किसी सन्त के सबद मन को सहारा दे रहे हैं। ये एक तरफ गरीबी की मार से टूटे रहते हैं और दूसरी तरफ अछूत होने के कारण, और लोग तो बचकर निकल जाते हैं। इनसे दूर रहने का स्वभाव बन गया है। सन्तों के चरण इधर आने लगे हैं, इधर न पंडित-पुरोहित आयेंगे और न मुल्ला-मौलवी। सन्त ही आ पाते होंगे, कबीर और रैदास ने इन्हें सहारा दिया है।

उसे ध्यान में आया कि जते को थोड़ा सिलवाना है, वह रुक गया। चमड़े की गन्ध फैल रही थी, पर वह एक के ओसारे में पहुंच गया। जूते की मरम्मत के लिए कहा। उसने झांककर घर के भीतर देखा। भीतर लिपा-पुता साफ-सुथरा था। बूढ़ा ध्यान लगाकर भजन गा रहा था। वह भी ध्यान से सुनने लगा, रैदास के बाद कबीरदास का भजन शुरू हो गया। इधर जूते की मरम्मत हो रही थी। उसने बातचीत शुरू की-'लगता है कि फौज के लिए जूते बन रहे हैं, फिर से मुगल आ. रहे हैं, इसी की तैयारी है।'

'जी, हां! हम राम का नाम लेकर जी लेते हैं। लड़ाइयां तो होती रहती हैं।'

'ये मुगल विदेशी हैं, इस बार सभी मिलकर मुगलों से लड़ेंगे।'

'यह होना चाहिए, साहबजी! पर हम क्या कर सकते हैं! हम तो अछूत हैं! पेट पालना ही कठिन है।'
'सभी को मिलकर सोचना है, सभी कुछ-कुछ करेंगे तभी तो कुछ हो सकेगा।'
'कौन सबको समझायेगा, कौन सबको जोड़ेगा? हम किसके साथ बैठ सकेंगे?'
जमाल चुप हो गया, लगा कि उसके पास कोई उत्तर नहीं है। दो क्षण चुप रहकर बोला-'साधु सन्त तो आ जाते होगे!'
पंडित-पुरोहित तो उस जाट बस्ती से ही होकर आगे बढ़ जाते हैं। इधर कबीरपंथी आ जाते हैं। मन को भरोसा हो जाता है। मन को अपने राम मिल जाते हैं, एक रैदास बाबा हो गये हैं, उनके चेले भी आते हैं। यहां वे ठहरते हैं, उनके सबद सुनने को मिलते हैं, बस, यही धरम-करम है।'
'एक आसरा तो मिला।'

'छि:-छि:' और...ना...छु' के बीच अपने घर में राम का नाम लेकर जी लेना तप है, हम तप रहे हैं। सभी हमें दबाकर रखते हैं। हम दबकर सिर झुकाकर रह लेते हैं। पेट के लिए जीना तो है।'

जमाल को फिर चुप रहना पड़ा, वह देखता रह गया, इनका जीवन तो हर क्षण चोट खाता है, घायल को आहें भरकर जीना ही है, पर सन्तों से सहारा मिलने लगा है। घाव पर शीतल लेप लगने लगा है।

उसने जूते पहन लिये, मजदूरी दे दी, आगे बढ़ गया, सीकरी पहुंच गया। पहाड़ी पर मस्जिद और खानकाह दिखायी पड़ने लगीं। बाबर ने विजय की खुशी में बनवाया था इसलिए यहां मुगलों के लिए रुझान है। तभी तो हेमचन्द्र का ध्यान इधर है।

वह तालाब के पास पहुंच गया, हाथ-पैर धोकर बैठा, लगा कि उत्तर के कोने पर पेड़ की छांव में शायर मंझन है। उसी का चेहरा झलक रहा है। वह थकान के बाद भी अपने को रोक नहीं सका। वह उठकर उधर ही चल पड़ा, मंझन का मुखड़ा स्पष्ट होता गया।

उसके पैरों की आहट से मंझन की पलकें उठीं, आंखें मिलीं। वह उठ बैठा और बोल पड़ा- 'जमाल मोहन, इधर कैसे?'

‘अपने शायर से मिलने आ गया जमाल!'

'जमाल मोहन हो, सिर्फ जमाल नहीं। सभी अच्छे हैं न!'

'जी, हां! आपकी कृपा से सभी ठीक हैं।'

'तो मेरे रैनबसेरे चलो फिर और कुछ...।

दूसरे दिन जमाल मंझन के साथ सूफी फकीर के पास पहुंचा, बहुत लोग थे, सूफी फकीर बोल रहे थे-'उस परवरदिगार का जमाल सारे खल्क में फैला है। देखने वालों की नजर में इश्क चाहिए। यह इश्क-हकीकी है, यह जरूरी है इंसान की जिन्दगी में। खुदा के जमाल का अहसास कर प्यार में डूब जाना है। इस बेखदी में खदा! हमारे शायर इश्क-हकीकी का बयान कर रहे हैं। मंझन साहब मौजूद हैं, उनसे सुनेंगे, लेकिन चारों तरफ इश्क-मजाजी का बोलबाला है। इस मुल्क का आदमी बुतपरस्त है या शहबतपरस्त, इसलिए जरूरी है कि सबको ईमान पर लाया जाय। हुकमत भी वैसी हो। आज की हालत देख लीजिए, कोई दीनो-ईमान वाला शेर-दिल आया था। खानकाह बना गया। बनाने वाला भटक रहा है, ऐयाश मौज कर रहे हैं।

'सूफी इस मुल्क की अच्छाइयों को अपना रहे हैं। इस मुल्क को भी हमारे पास आना है, एक खुदा और एक रसूल पर ईमान लाना है। हम फकीरों को सियासत-हुकूमत से कोई वास्ता नहीं है, लेकिन शैतान और कुफ्र की हरकतें बढ़ती जाती हैं तो दारूल सल्तनत को सलाह देनी पड़ती है नहीं तो खुदा से मुहब्बत-इश्क ही हमारी जिन्दगी है।'

मंझन जमाल की ओर देखने लगा, जमाल की आंखों में अचरज का भाव था। मजहब और सियासत के तालमेल पर कुछ कहना मुश्किल था।

सूफी फकीर शेख सलीम चिस्ती के शागिर्द थे। उनकी तकरीर खत्म हो चुकी थी। जमाल मंझन के साथ उठकर जाने लगा। मंझन ने चाहा कि फकीर से बातचीत हो जाय, लेकिन जमाल नहीं रुका, इसलिए मंझन को भी साथ अपने रैनबसेरे में लौट आना पड़ा।

सैंतालीस

'मैना! देखो, गांव के लोगों ने चन्दा के ब्याह के लिए आटा, घी और शक्कर दिया है, संभालो।' खुदादीन ने पास के गांव से लौटते हुए कहा।

मैना बड़े उत्साह के साथ खेमे से बाहर आयी, देखा कि गठरियों में आटा और शक्कर है, मिट्टी के बर्तन में घी है। उसका मन गद्गद हो उठा। वह सब सामान उठाकर रखने लगी, अचानक उसे कुछ ध्यान में आया। वह बोल उठी-'आप कपड़ा खरीदने गए थे। कपड़े का नाम भी नहीं है।'

'कपड़े भी हैं, पहले आटा की गठरी और तब कपड़े। रंग-बिरंगे कपड़े हैं।'

'मुझे तो लगा कि आप भूल गये, बाजीगर की बुद्धि का क्या ठिकाना!'

'बाजीगर की बुद्धि पर आज तक विश्वास नहीं हुआ, मैना?'

'बाजीगरी से किसी को मूर्ख बनाना बुद्धि का काम है तब तो यह संसार बाजीगरी से ही

चलेगा।'

'अपना तो काम चल रहा है, मैना! हम दोनों चन्दा के उजड़े संसार को बसाने जा रहे हैं।'

'हां, हमने उसे प्यार देकर जीना सिखा दिया, यह पिछले जन्म का पुण्य है कि आपने एक कुलीन कन्या को बरबादी से बचा लिया। प्यार के मंडवे तले ब्याह का गीत गूंजेगा, बड़ा पुण्य होगा।'
'बरबादी से तो तुमने बचाया है, मैना रानी! तुम बहुत अच्छी हो। शाही हुक्म गरजता रह गया, कमाल हो गया।'
'यही धरम है, धरम-करम को कैसे भूला जाय! इस मारकाट, खन-खराबी के जमाने में किसी दुखी को शरण देना धरम है और हां, गांव के पंडितजी को आने को कहा है न?'
'जरूर कहा है, पहले तो वे तैयार नहीं हुए। खुदादीन के खेमे में आकर वे क्या करते ? उन्हें समझाया गया कि वर-वधू दोनों क्षत्री हैं, तब वे तैयार हो गये।'

'आपकी बुद्धि को मान गयी, अब शिकायत नहीं है।'

'तो अब खिलाओ-पिलाओ, बहुत दौड़ चुका हूं। दोपहर का सूरज सर पर आ गया है।' यह कहकर खुदादीन ने गमछी में बंधे कपड़े को दे दिया और हाथ-पैर धोने लगा।

उधर पोखर के पास मंडवा बनाया जा रहा था। गजेन्द्र दूर बैठा बांसुरी बजा रहा था। चन्दा खुदादीन काका को खाना खिलाने आ गयी। वह कभी काका को देखती, कभी मैना काकी को, कभी पोखर के किनारे देखने लगती, बांसुरी बज रही थी। वह सोच रही थी इसी बांसुरी ने उसके जीवन में अनुराग जगाया है। इसी बांसुरी के गीत पर उसकी हथेलियों में हल्दी लगेगी और फिर ब्याह। इस पोखर के किनारे जीवन का चक्र कहां से कहां पहुंचा देता है। यदि काका-काकी का स्नेह नहीं मिलता तो क्या वह सड़कों पर नाचती-फिरती, कभी नहीं! यदि यह बांसुरी वाला नहीं आता तो क्या वह भटकती रहती ? नहीं। क्या कोई तुर्क सरदार या सिपाही उसे छू लेते? वह ज्वाला बनकर जला देती। पर वह कुलवंश-गोत्र-नाम से दूर रहकर जी रही है।

थोड़ी प्रतिष्ठा तो बची है, ब्याह के बाद बांसुरी वाले के सामने बात खुलेगी, उसे कैसा लगेगा? वह एक साधारण सैनिक परिवार का है और वह...। अब यह नहीं सोचना है। दोनों में किसी को कुछ नहीं सोचना है। समतल पर यह मिलना होता है। मन प्राण एक हों। कोई गांठ न रहे। बांसुरी ने गांठ नहीं आने दी है। अब एक नयी गांठ में एक साथ बंध जाना है। यह गांठ साथ-साथ जीने की है।

चन्दा ने काका को भोजन करा दिया। हाथ धो लिया। बांसुरी का स्वर चरम बिन्दु पर पहुंच रहा था, चन्दा ने आंख मूंदकर हाथ जोड़ दिया। सूर्य की लाली पश्चिम में फैल रही थी। गांव के पुरुष, स्त्री और बच्चे आ पहुंचे। पंडितजी भी साथ आये, पूजा का सामान लेते आये। मंडवे तले ब्याह का विधान होने लगा। अब बांसुरी अन्तर में बजने लगी। बाहर ढोलक का स्वर वातावरण को मंगलमय बनाने लगा। चंदा नयी साड़ी में आयी, गजेन्द्र पग्गड़ बांधे तलवार लिये और बांसुरी संभाले आया। पंडितजी ने

सूखी लकड़ियों को जोड़कर आग जला दी। मंत्रपाठ करने लगे, मैना का हृदय भर आया।
गांव के लोग मंडवे के पास बैठकर श्रद्धा-स्नेह से ब्याह देखने लगे।

सहसा दूर से धूल उड़ती नजर आयी, कोलाहल सुनायी पड़ने लगा। एक ग्रामीण ने आकर सूचना दी कि अफगान बादशाह की फौज ग्वालियर से जीत कर लौट रही है।

यह सुनकर गांव के लोग घबराकर एक-दूसरे को देखने लगे और फिर सभी लाठियों-भालों को लेकर खड़े हो गये। विवाह-विधान होता रहा। ग्रामीण आपस में बातचीत करने लगे कि उन्मत्त सिपाहियों पर विश्वास नहीं है, दूल्हा-दुल्हिन को छिपाना चाहिए, खुदादीन भी यही सोच रहा था, कोलाहल निकट आ रहा था। पंडितजी ने स्थिति को भांप लिया। उन्होंने अग्निदेवता के सात फेरा लगवाकर विधान को पूरा किया। ढोलक बजना बन्द हो गया। सभी गांव में छिपाने के लिए उतावले हो उठे, खेमे गिरा दिये गये। मैना के इशारे पर गजेन्द्र चन्दा के साथ गांव की ओर बढ़ा। गांव के लोग अपने शस्त्रों की छाया में उन्हें गांव में लाये। वे दोनों एक घर में छिपा दिये गये। सारे द्वार बन्द हो गये, खिड़कियां भी खुली नहीं रह सकीं।

गजेन्द्र एक अंधेरी कोठरी में चन्दा के साथ बैठा हुआ था। चन्दा चूंघट में सर झुकाकर बैठी थी, एक नन्हा-सा दीया जलने लगा। कोलाहल निकट आ रहा था। गजेन्द्र का हृदय धड़क उठा। वह तो शस्त्रधारी होकर छिपा हुआ है। शाही फौज के कारण गांव को छिप जाना पड़ता है, यह परिपाटी हो गयी है। भैया भी शाही फौज में हैं। वे नदी तट के प्रहरी हैं, इस फौज में नहीं होंगे। सुनने में आया है कि हेमचंद्र ने हिन्दुओं को फौज में शामिल किया है। हो सकता है कि उसके गांव के कुछ लोग हों। उसने चन्दा के लिए तलवार की जगह बांसुरी को अपनाया है। इसी बांसुरी के कारण चन्दा मिली, आज विवाह हो गया। पर आतंक में बांसुरी चुप है। मन में तो बज रही है, उसने मन के अनुराग को सबसे ऊपर माना, इसके लिए सब छोड़ दिया। उसने कुल-परिवार की भी चिन्ता नहीं की। शायद चन्दा भी अच्छे कुल की है। नहीं रहती तो भी वह अपनाता, प्रेम की भावना के सामने जाति-कुल नहीं।

'आप क्या सोच रहे हैं?' चन्दा बोल उठी।
'मधुर रात के तीसरे पहर में कोयल कूक उठी है और मैं कोइली के पास आ गया हूं।' गजेन्द्र ने उत्तर दिया।
‘पर कोइली तो बांसुरी की टेर पर फुदकती हुई आ गई है।'
'दोनों एक-दूसरे के मन के संगीत पर सुध-बुध खो रहे हैं।'
'परन्तु शाही सेना के कोलाहल ने।'
'बांसुरी के संगीत पर राधाजी का बेसुध होना सत्य है। शाही सेना का कोलाहल इस बेसुधी को बार-बार आहत कर देता है। आहत की पीड़ा...ओह!' चन्दा के स्वर में व्यथा उभर आई। गजेन्द्र विकल हो उठा, उसने उस विकलता में खिड़की खोल दी।

गांव से थोड़ी दूर सड़क से होकर फौज लौट रही थी। कुछ शब्द उड़ते हुए आ रहे थे। बादशाह जिन्दाबाद! हेमचन्द्र जिदाबाद! सिपहसालार इब्राहिम खां जिन्दाबाद!

वह सोचने लगा कि शायद इस फौज में भैया हों। वे नहीं होंगे, तो भी उसे छिपना है।

कहीं यह फौज उपद्रव कर दे तो...। पर यह फौज बिना उपद्रव किए लौट रही है, और पहली बार एक गैर-मुस्लिम का जयघोष हो रहा है। यह तो विचित्रता है!

उधर ग्वालियर-आगरा सड़क से फौज जा रही थी। हेमचन्द्र ने बादशाह आदिलशाह से सलाह कर सिपहसालार इब्राहिम खां से अर्ज किया था जिससे फौज अगल-बगल गांवों को नुकसान न पहुंचाए। इसलिए फौज जिन्दाबाद के नारे लगाती लौट रही थी, बादशाह जीत पर खुश थे। उन्हें हेमचन्द्र की वफादारी और बहादुरी पर एतबार हो गया था, लेकिन बादशाह के बहनोई सिपहसालार इब्राहिम को चिढ़ हो रही थी। वह गुस्से में था। सरवर अली की सलाह से उसने हेमचन्द्र को जंग में आगे बढ़ने दिया। वह बादशाह के साथ रहा। ताज खां के दबाव बढ़ने पर बादशाह ने हेमचन्द्र की राय मान ली। उसी के मुताबिक लड़ाई लड़ी गई। मालवा से दौलत खां नहीं आ सका। ताज खां हार कर भाग गया, हेमचन्द्र का नाम आकाश तक उछलने लगा।

ताज खां को आगे बढ़कर पकड़ने की बात आई। हेमचन्द्र ने बहत जोर दिया। उसने बात नहीं मानी, ताज खां को छोड़ दिया गया। उसकी इज्जत रह गई, लेकिन फिर उसकी शान बढ़ गई। हिन्दू और हिन्दी मुसलमानों ने उसके इशारे पर अपनी बहादुरी दिखाई है। बादशाह बहुत खुश हैं, और वह नाखुश...वह क्या करे? दिल पर पत्थर रखकर लौट रहा है। वह हेमचन्द्र को नुकसान नहीं पहुंचा सका। सरवर की सलाह सही थी, लेकिन वह कामयाब नहीं हो सका। कामयाबी का सेहरा तो हेमचन्द्र के सर पर ही रहा!

हेमचन्द्र सोच रहा था यदि पूरी ईमानदारी से अफगान, हिन्दी मुसलमान और हिन्दू एकजुट होकर खड़े हो जाएं तो मुगल कुछ नहीं कर सकेंगे। इस लड़ाई में तो सबने मिलकर युद्ध किया है, उसे भी पहली बार युद्ध करने का अवसर मिला। सफलता भी मिल गई, लेकिन यह सिपहसालार इब्राहिम खां ऐसा क्यों कर रहा है? यह तो बादशाह का नजदीकी रिश्तेदार है। एकदम अपना है, फिर ऐसा क्यों? उसका विरोध क्यों? सरवर की सलाह से चल रहा है। सावधान और सतर्क रहना पड़ेगा!

अड़तालीस

फतह का नगाड़ा बज रहा था। सारा आगरा शाही फौज का स्वागत करना चाह रहा था। पहली बार प्रजा भी जीत पर बधाई देने के लिए किले के पास आ गई थी। बादशाह आदिलशाह, सिपहसालार इब्राहिम खां और हेमचन्द्र का जयघोष होता जाता था। बादशाह के साथ साथ दोनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार थे, फौज बढ़ी चली आ रही थी।

नदी पार कर सरवर अली आगे बढ़ा। हरखलाल भी उसी नाव से पार हुआ था, दोनों आगे-पीछे चल रहे थे। अभी तक दोनों में जान-पहचान नहीं हुई थी, अचानक दोनों के पैर रुक गए, दोनों के कान खड़े हो गए। 'हेमचन्द्र जिन्दाबाद' के नारे ने उनके दिलों पर चोट कर दी। ऐसा लगा कि अनदेखे बिच्छु ने राह चलते डंस लिया है। दोनों एक साथ खड़े हो

गए, दोनों के मुंह से निकला-'यह क्या हेमचन्द्र जिन्दाबाद! यह कैसे हो गया!'

दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। हरखलाल ने समझा कि वह इसी तुरक को ढूंढ़ रहा था। तांत्रिक ने इसी से मिलने का संकेत दिया था, वह मिल गया। मन में हर्ष हुआ, बोल उठा - 'लगता है कि आप हेमचन्द्र से नाराज हैं। मैं भी नाराज हूं, इससे बहुत परेशान रहा हूं।'

'अगर आप साथ दें तो इस हेमू को सबक सिखाया जा सकता है। आपकी सारी परेशानियां दूर हो सकती हैं।' सरवर ने चारा डाला। वह समझ गया कि यह काफिर हेमू के खिलाफ है, इससे फायदा उठाया जा सकता है।

दोनों साथ-साथ किले की तरफ बढ़े। सरवर सोचने लगा कि हेमू को फतह का सेहरा कैसे पहना दिया गया! क्या सोचा था, क्या हो गया! इससे तो हेमू और मजबूत होगा। सिपहसालार खां साहब ने कैसे मौका दे दिया?

धर्मपाल दोनों को देख रहा था, वह बदले हुए वेश में उनके पास ही था। दोनों की बातचीत का अंश भी कानों में आ गया। उसने देखा कि दोनों एक साथ जा रहे हैं। इब्राहिम खां सूर से ही मिल सकते हैं। हेमचन्द्र के विरोध में स्वार्थ के दोनों पुतले एक गुट में आ गये। दोनों का षड्यन्त्र इब्राहिम को भड़काएगा। अपनी गति रुक जाएगी। यह सोचकर धर्मपाल सिहर उठा, पर वह विजयी और यशस्वी हेमचन्द्र को देखकर सब भूल गया। उसने देखा कि गजराज सिंह, बहादुर खां, विजयवाहन और खेमराज की आंखों में विजय की आभा झिलमिला रही है। मुखड़े पर चमक है, जयघोष सुनकर वह भी झूम उठा।

फतहयाब बादशाह आदिलशाह ने किले के दरवाजे पर सरदारों, हाकिमों और रिआया से स्वागत-सम्मान पाया। बादशाह के ताज की कलगी धूप में चमक उठी। उन्होंने हेमचन्द्र की ओर देखा। मुस्कानों का आदान-प्रदान हुआ। जयघोष और फूलों की वर्षा से सारा किला गूंज उठा। सालारे आजम शादी खां ने मुबारकबाद दी। ताजे फूलों का गुलदस्ता पेश किया। इब्राहिम खां और हेमचन्द्र को भी गुलदस्ते दिये, पर इब्राहिम हेमचन्द्र की प्रतिष्ठा को देखकर जल उठा।

बादशाह आदिलशाह ने ऐलान किया कि कल शाही दरबार होगा, और रात में महफिल सजेगी। सबने सिर झुकाकर कबूल किया।

धर्मपाल ने इब्राहिम के चेहरे को पढ़ लिया। कुछ-कुछ समझा, यह चिन्ता की बात है।
हेमचन्द्र के प्रभाव से कुछ लोग जलेंगे, सावधान रहना है। अब किशनपुरा को संवाद मिलना चाहिए। लक्ष्मी भवन को इस गौरव से सुख मिले, पूजा-पाठ में बेसुध मां-बेटी को समाचार नहीं मिला होगा। उन्हें प्रसन्न होने का अवसर मिले। हेमचन्द्र तो विलम्ब से लौटेगा। यह विचार कर वह लौट चला।

बादशाह आदिलशाह शादी खां, इब्राहिम खां और हेमचन्द्र के साथ शाही हरम के दरवाजे तक पहुंचे। सबने बादशाह को सर झुकाकर रुखसत पा ली। सभी साथ ही लौटे।

शादी खां दोनों की तारीफ कर रहे थे, पर इब्राहिम को अच्छा नहीं लग रहा था। वह कुछ दूर साथ चला, और अपनी हवेली की ओर मुड़ गया। शादी खां को अजीब-सा लगा, वे हेमचन्द्र के साथ आगे बढ़ गये। गजराज सिंह, विजयवाहन, खेमराज और बहादुर खां साथ हो गए।

_ इब्राहिम खां ने देखा कि हवेली के पास सरवर अली खड़ा है, साथ में और कोई भी है। कोई काफिर है, दोनों ने सिपहसालार इब्राहिम को बधाई दी। उसने सरवर के इशारे पर हरखलाल को भी साथ ले लिया, सरवर ने हरखलाल की तारीफ की। इब्राहिम अपने बनते हुए गुट को देखकर भीतर-ही-भीतर मुस्कराने लगा। दो क्षणों के बाद सभी दीवानखाने में बैठे, मिठाइयों की तश्तरियां आ गयीं।'

इब्राहिम ने शाह हरखलाल को नगर सेठ के ओहदे पर ला देने का वादा किया। हरखलाल का चेहरा दमक उठा। सरवर ने हरखलाल को बधाई भी दे दी, और दो लमहे ठहर कर धीरे से कहा- 'शाही महफिल के लिए एक खूबसूरत रक्कासा को मैं पेश कर सकता हूं, अगर आप...।'

इब्राहिम ने सरवर की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा-- 'जरूर इन्तजाम करो। बादशाह सलामत को अपने काबू में रखना है। मेरा रिश्तेदार मुझसे दूर कहां जाएगा?'

'ऐसा ही इन्तजाम होगा, लेकिन आप शादी खां साहब को खुश रखें।'

'वे तो हेमचन्द्र को अपना शागिर्द मानते हैं।'

'इसीलिए तो आप उन्हें खुश रखने की कोशिश करें। महफिल जमे, रक्कासा बादशाह को रिझा ले। हेमचन्द्र शामिल हो जाय तो मजा आ जाय।

'वह तो शराब और साकी- दोनों से परहेज रखता है, अजीबो-गरीब है।'

उधर धर्मपाल हेमचन्द्र से पहले लक्ष्मी भवन पहुंच गया। संवाद फैला हुआ था, किशनपुरा में हेमचन्द्र के जयघोष से अभूतपूर्व उत्साह दिखाई पड़ रहा था। वह मां दुर्गा कुंवर के पास पहुंचा, विजयी हेमचन्द्र के सकुशल लौट आने का संवाद सुनाया। पूजा में लीन पार्वती ने देवमूर्ति के सामने शीश झुकाया। दूर बैठी नूरी कबीरदास का पद गुनगुना रही थी। जमाल मोहन मुंशी हरसुखलाल के साथ स्वागत की तैयारी करने लगा। लक्ष्मी भवन में वसंत का वातावरण छा गया। दुर्गा कुवर ने सबसे पहले धर्मपाल का मुंह मीठा कराया। धर्मपाल तृप्त हो उठा, वह विजयी हेमचन्द्र के मुख का स्मरण करने लगा। उसे ऐसा मालूम हुआ कि अब आया...अब आया। साथ ही सरवर और हरखलाल के चेहरे भी झलक उठे। वह सावधान हो गया। उसने सोचा कि इस गुट के पीछे रहना बहुत आवश्यक है। राजधानी में यह गुट बनना ठीक नहीं हुआ, पर यह अपने वश की बात नहीं है, पर इनके षड्यन्त्र को विफल करना अपने वश की बात है।

जयघोष के मध्य हेमचन्द्र आ गया। साथ में गजराज सिंह, विजयवाहन, खेमराज और बहादुर खां थे। सारा किशनपुरा स्वागत कर रहा था। हेमचन्द्र हाथ जोड़कर सबका स्वागत स्वीकार करने लगा। द्वार पर मां दुर्गा और पत्नी पार्वती मंगल आरती के

लिए आ गयीं।

साथ में नूरी भी थी, सोना नूरी को आरती का मतलब समझा रही थी। नूरी को बड़ा अच्छा लग रहा था। उसके हाथों में गुलदस्ता था। हेमचन्द्र घोड़े से उतरा, मां के चरणों में झुका। दुर्गा कुंवर ने आशीष देते हुए आरती उतारी, तिलक किया, मुंह में मीठा रख दिया। पत्नी पार्वती ने आरती की और चरणों में झुक गई। नूरी ने बड़े स्नेह से गुलदस्ता पेश किया।

सबका स्वागत हुआ, सभी अन्दर आये। जमाल सबके भोजन के प्रबन्ध के लिए मंशी चाचा को परामर्श दे रहा था।

दुर्गा कुंवर और पार्वती दोनों हेमचन को देखे जा रही थीं। शरीर पर कहां-कहां घाव हैं! कैसे इन्होंने युद्ध को जीत लिया! रक्त की बूंदें, घाव, धूल और थकान-ये सब विजय से दमकते मुखड़े में छिप गई थीं। परन्तु पार्वती तो एक क्षण प्रसन्न होती और दूसरे क्षण विकल हो जाती, नूरी साथ दे रही थी।

हेमचन्द्र अपने मित्र सेनानियों के साथ बैठा हुआ था। उसी समय शायर मंझन आये, सबने स्वागत किया। मंझन ने बधाई दी, हेमचन्द्र ने शीश झुकाकर स्वीकार किया, और फिर मिठाइयों का दौर चला। वैद्य जी आकर बैठ गए, पर अभी मलहमपट्टी की बात कोई सुनने वाला नहीं था। हेमचन्द्र ने कहा- 'बादशाह मेरे साथियों की वीरता पर चकित हैं। इन्हीं के कारण यह विजय मिली है। बादशाह यह समझ गए हैं।'

'यह शुभ लक्षण है, लेकिन सिपहसालार इब्राहिम खां जल उठा है।' धर्मपाल ने बताया।

'उसका वश चलता तो मुझे शत्रुओं के बीच डाल आता और खुद हारकर लौट आता। यह बादशाह भी महसूस कर चुके हैं। हेमचन्द्र ने उत्तर दिया।

'बादशाह का बहनोई इब्राहिम खां आपको देखना नहीं चाहता। क्योंकि सरवर अली सलाहकार बन गया है। सरवर और हरखलाल का गुट सक्रिय है।' धर्मपाल ने स्पष्ट किया।

'इन दोनों का गुट बना है?' जमाल ने पूछा।

'जी, हां! मैं देख कर आ रहा हूं। अब तो आगरा में काम करना सहज हो गया। इन्हीं दोनों से मालूम होता जाएगा।'-धर्मपाल ने जमाल की तरफ मुड़कर जवाब दिया। ‘और उधर सीकरी में सूफी फकीर मुगलों के प्रति अपना भाव छिपा नहीं पा रहा है। वह मुगलों के पक्ष में प्रचार कर रहा है, शायर मंझन साहब ही थे।' जमाल ने अपना विवरण रख दिया।

मंझन ने इस कथन का समर्थन किया। हेमचन्द्र ने चिन्तित स्वर में कहा-'उधर विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। कल दरबार में इस पर बातचीत होनी चाहिए।'

'सूफी फकीर पर शाही दरबार कुछ नहीं कर सकेगा, आप बादशाह से मिलकर समझायें।' मंझन

ने राय दी।

जमाल ने कहा – 'मंझन साहब का विचार सही है, मुगलों के खिलाफ भी प्रचार होना चाहिए।'

बहादुर खां और गजराज सिंह ने समर्थन किया।

उनचास

दूसरे दिन प्रभात में हेमचन्द्र योगी शिवनाथ की कुटिया में आया। योगी शिवनाथ प्रतीक्षा कर रहे थे, हेम चन्द्र को देखते ही आगे बढ़कर हृदय से लगा लिया। हेमचन्द्र का हृदय उछल रहा था। दोनों साथ-साथ बैठकर बातचीत करने लगे। धर्मपाल आता दिखाई पड़ा, दोनों बातचीत में मग्न थे। धर्मपाल आकर खड़ा हो गया। योगी ने देख लिया, साथ बैठने का आग्रह किया। हेमचन्द्र ने साथ में बैठाकर पूछा-'किधर चक्कर लगा आए?'

'मैं गुप्तचर हूं, सब कुछ गुपचुप...आप पूछ नहीं सकते।' धर्मपाल ने बनावटी गम्भीरता में उत्तर दिया।

'अभी तो आप प्रकट हैं।' हेमचन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा।
'जी, हां! धर्म प्रकट हुआ है, कुशल मनाइए। सरवर साहब ऐसी नर्तकी का प्रबन्ध कर रहे हैं जो बादशाह और वजीर-दोनों पर अपना जादू चला सके, और इब्राहिम खां की पकड़ मजबूत हो सके।'

'मतलब यह है कि विषकन्या का प्रयोग किया जायेगा।'
'अनुमान तो यही है।' धर्मपाल ने उत्तर दिया।
'हेमचन्द्र तो सावधान रहेगा, कठोर होना पड़ेगा। पर बादशाह तो विलासी हैं, उन्हें कैसे सावधान किया जाए।'-योगी ने शंका की।
'प्रयत्न तो किया ही जाएगा।' हेमचन्द्र ने आश्वासन दिया।
'विषकन्या को अवसर ही नहीं मिले, उसे डरा दिया जाय।' धर्मपाल ने सुझाव दिया।
'यह हो सकता है।' हेमचन्द्र ने इस सुझाव को मान लिया।
'धर्मपाल! एक दूर की बात है। मुगल पेशावर में जमे हुए हैं, उनके कदम बढ़ रहे हैं, और इधर सीकरी और आगरा में षड्यन्त्र चल रहा है तो मेवाड़, जयपुर, जोधपुर, बंदी आदि के अपने राजाओं से सहायता के लिए अनुरोध हो सकता है?' योगी ने जिज्ञासा की।

'इसके लिए उधर जाना पड़ेगा। सभी तो अलग-अलग हैं, सभी को जोड़ना कठिन साधना है।
सभी जुटकर अफगान बादशाह और हेमचन्द्र को सहायता करें- यह और भी कठिन है।' धर्मपाल ने अपना विचार रखा।

'प्रयत्न हो सकता है। परन्तु तुम्हें आगरा में रहना आवश्यक है। उधर के लिए थोड़ा सोचना पड़ेगा।' योगी ने निर्णय दिया। हेमचन्द्र ने इस निर्णय का समर्थन किया और कुछ देर के बाद वह दरबार के लिए लौट आया।

अपराह्न में दरबार सजा हुआ दिखायी पड़ा। किला क्षेत्र दहल, करनाई और नौबत बजने से गूंज रहा था। लग रहा था कि दरबार संगीत की लय पर झूम रहा है। नफीरी की मधुर धुन पर बादशाह आदिल शाह सूर तख्त पर बैठे। सारे दरबारी सर झुकाकर बैठ गए। बादशाह ने ग्वालियर की शानदार जीत के लिए अपने सिपहसालार इब्राहिम खां का नाम लिया। शाबासी दी, इब्राहिम खुश हो गया। उसने सर उठाकर दरबार को देखा। हेमचन्द्र पर मुस्कराती नजर डाली। उसी वक्त बादशाह ने कहा-'इस जंग में हेमचन्द्र ने बड़ी अक्लमंदी और बहादुरी से काम किया है। वह सिपहसालार का मददगार साबित हुआ है। चुनांचे वह सिपहसालार को पाथ देता रहेगा। सालारे आजम शादी खां साहब देखरेख करते रहेंगे।'

इब्राहिम को लगा कि उसका हक छीना जा रहा है। लमहे भर के लिए उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसने अपने को संभाल तो लिया, पर उसका सर तना नहीं रह गया।

बादशाह का ऐलान सूनायी पड़ा.--'हेमचन्द्र को रेवाड़ी की जागीर अता की जाती है।'

यह सुनकर इब्राहिम की इच्छा हुई कि वह उठकर चला जाय और सरवर से सलाह करे।

बादशाह ने अपनी फौज को शाबासी देते हुए कहा-'अफगानों, हिन्दी मुसलमानों और हिन्दुओं की फौज इस हुकूमत की रीढ़ साबित होगी। इसकी हिम्मत और जवांमर्दी से मुगलों के छक्के छूट जायेंगे। सारे सालारों को इनाम दिया जाए। अपनी रिआया की दुआएं हमें मिली हैं, मैं शुक्रगुजार हूं। आगे भी वे हमारी हिम्मत बढ़ाती रहेंगी। हिन्दुस्तान की तवारीख में नयी बात हुई है। कलमकार इसे याद रखेंगे।'

‘अब हम रात की महफिल के लिए तैयार हों। यह जश्न की रात है, यह रात सबको मुबारक हो।'

सारे दरबार ने अपना उत्साह प्रकट किया। नफीरी बजने लगी, बादशाह तख्त से उठ गए। सारे दरबारी अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गए। बादशाह के कदम बढ़े, साथ में शादी खां और इब्राहिम खां चले। बादशाह के इशारे पर हेमचन्द्र भी साय हुआ, वजीरों के साथ बादशाह दीवानखाने में आ गए। इब्राहिम सोच रहा था कि सरवर ने रक्कासा का इन्तजाम कर लिया है। जन्नत की हूर भी शरमा जाएगी, वह नाचेगी या बादशाह लट्टू-सा नाचेंगे-यह देखना है।

हेमचन्द्र बोल उठा--'हुजूरे आलम! हम जश्न की रात मुगल को खत्म करके ही मनायें। उधर ताज खां भाग गया है। वह साजिश करने से बाज नहीं आएगा।'

'उसे छोड़कर गलती हो गयी है। उसकी बगावत नहीं रुकेगी।' शादी खां ने कहा।

'हुमायूं की फौज पेशावर से आगे बढ़ रही है। पूरी खबर तो नहीं मिली है, लेकिन लाहौर में अहमद खां सूर को ताकीद करना जरूरी है। उधर का पाया कमजोर न हो।
हेमचन्द्र ने सुझाव दिया।

इब्राहिम को गुस्सा आ रहा था। शादी खां हेमचन्द्र की समझदारी पर खुश हो रहे थे, बादशाह तो कुछ क्षण तक देखते रह गये, और फिर बोल उठे – 'तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन रात में नाच की महफिल होगी। कुछ देर के लिए मारकाट-खूनखराबी और सियासत को भूल जाना है, जिन्दगी महज खून-खराबी तो नहीं है। वह रंगोबू है, हुस्नोजमाल है, ऐशोइशरत है।'

'जी, हां! कुछ देर के लिए मन को बहला लेना है, पर उसमें खो नहीं जाना है। सियासत इसकी इजाजत नहीं देती, हुकूमत में हर जगह साजिश है।'

'तुम्हारी सब जगह सियासत और सियासत पर ही नजर रहती है।'

'मजबूरी है। हमेशा ख्याल रखना है।'

'ख्याल रखना...चुस्त चौकस रहना वजीरों और सिपहसालारों का फर्ज है।'

हेमचन्द्र ने इसे हुक्म मान कर कबूल किया। इब्राहिम कुढ़ रहा था।

रात की महफिल शुरू हुई। चांदी की कुर्सी पर बादशाह आदिल शाह रौनक महफिल थे। सारे वजीर, सालार और सरदार मौजूद थे। हेमचन्द्र को धर्मपाल से पता चल गया था कि सरवर ने एक खूबसूरत रक्कासा को बुलाया है। लेकिन यह समझ नहीं सका कि रक्कासा विषकन्या के समान जहर घुली होगी। शायद वह शौकीन मिजाज बादशाह को ऐयाशगाह में बन्द करने की कोशिश करेगी। इसी तरह इब्राहिम अपने साले बादशाह को काबू में रखने का प्रयत्न करेगा।

कितनी ओछी बात है! साजिश ही है! अभी बादशाह से जरूरी बातों पर सलाह करनी है। वक्त मिलेगा?

झाड़-फानूस की झलमलाती रोशनी में धुंघरुओं की आवाज झनक उठी। झिलमिल-लिबास में नर्तकी नादिरा अपने लबों से मुस्कानों के गुलाब बिखेरती हुई आ गयी। बादशाह की आंखें टंगी रह गयीं। नादिरा ने पास आकर कोनिश की, जुल्फों की नागिन लहरा उठी, और पीछे हटती गयी। बिजली के समान वह नृत्य की मुद्रा में आ गयी। वादकों की उगलियों ने सरगम की तरंगें पैदा कर दीं। सरस संगीत और मोहक पदगति के बीच नादिरा का उत्तेजक रूप बादशाह को मदहोश करने लगा।

हेमचन्द्र की दृष्टि सिपहसालार इब्राहिम खां पर गयी। बादशाह और इब्राहिम की नजरें मिल रही थीं। बादशाह इब्राहिम पर खुश हो गए थे। इब्राहिम की मुस्कराती नजरें उस पर आ गयीं, वह उन नजरों को समझने के लिए दिमाग पर जोर देने लगा। नादिरा

बादशाह के पास आकर झुक गयी, फारसी गजल का नशीला समां बंध रहा था।

हेमचन्द्र आंखें गड़ाकर देख रहा था कि रक्कासा के होंठों और कपोलों पर विषैला आलेप तो नहीं हैं। यह पता लगना कठिन था, अचानक उसने देखा कि इब्राहिम के इशारे पर रक्कासा उसकी ओर मुखातिब हो गयी। उसने बलात् मुस्कराने की कोशिश की, नादिरा ने जंग में कामयाब हेमचन्द्र को मुबारकबाद दी। और फिर आसमानी कौंध के समान वह बादशाह से बोल उठी-'मैं फारस से हिन्दुस्तान के हुजूर बादशाह की खिदमत में आयी हूं। रास्ते में मुगल सरदार हुमायूं ने रोकना चाहा। मेरे धुंघरुओं ने इनकार कर दिया, वे अपने कद्रदां बादशाह सलामत के दिल की धड़कनों के पास आकर झनक उठी हैं। इन धुंघरुओं की जिन्दगी में बहार आ गयी है। बहार को आप अपनायेंगे, बस इतनी-सी गुजारिश है।'

बादशाह इब्राहिम की ओर देखा। इब्राहिम ने सर हिलाया, बादशाह ने खुश होकर सोने का जड़ाऊ हार रक्कासा के गले में पहना दिया। बिजली-सी सनसनी उंगलियों से होकर बादशाह के सारे शरीर में फैल गयी।

एक जासूस आहिस्ता-आहिस्ता आया। जासूसों के वजीर के पास आया, उसने कुछ बताया। हेमचन्द्र ने झुककर पूछ लिया, वह सहम उठा। उसने सोचा कि इस बेवक्त की शहनाई को कौन सुनेगा! पर बादशाह को आगाह करना जरूरी है। वे नाराज हो गए तो देखा जाएगा।

हेमचन्द्र बादशाह के पास आया। हिम्मत कर कानों में बताया'हुजूर! हुमायूं पेशावर को जीतकर आगे बढ़ गया है। इधर ताज खां पूरब की ओर बंगाल के सूबेदार मोहम्मद खां के पास पहुंच रहा है। पूरब और पश्चिम दोनों तरफ कयामत की बिजलियां चमकने लगी हैं। एक लमहे की भी गफलत न हो।'

बादशाह ने झुंझलाकर हेमचन्द्र की ओर देखा। और होंठ काटकर शादी खां की ओर मुखातिब हुए। शादी खां आ गए, उन्होंने सलाहमशविरा के लिए दीवानखाने में चलने का इसरार किया। इब्राहिम के सर पर गुस्सा चढ़ने लगा। उसने समझा कि उसके खिलाफ यह मोर्चेबन्दी है। लेकिन बादशाह हेमचन्द्र और शादी खां की बातों की संजीदगी को समझ गए। उनका नशा धीरे-धीरे उतरने लगा। नादिरा इब्राहिम की ओर देख रही थी। इशारा समझना चाह रही थी। इब्राहिम खां हालात को बदलते देख कुछ तय नहीं कर पा रहा था। उसी समय बादशाह ने महफिल मुल्तवी करने का इशारा कर दिया। इब्राहिम बादशाह के पास आया। बादशाह ने उसे भी सल्तनत के हालात के बारे में बताया। वह चुप रह गया। उसे भी दीवानखाने में जाना था, सलाहमशविरे में शामिल होना था। नादिरा को छोड़कर जाना पड़ रहा था, लगा कि धुंघरू टूट गए। बादशाह के हुक्म पर धुंघरुओं को बिखेर कर दूर जा रहा है।

पचास

बादशाह दूसरे दिन सुबह दीवानखाने में वजीरों और सिपहसालारों के साथ सल्तनत की हालत पर गौर करने के लिए आये। वकील ने जासूसों का पूरा ब्यौरा पेश किया। बैठक में सन्नाटा छा गया, कुछ देर के बाद शादी खां ने इस सन्नाटे को तोड़ा-'हमें दोनों मोर्चों पर जूझना है। पेशावर के पास अहमद खां सूर को डट जाना है, इधर ताज खां को सबक सिखाना है जिससे मोहम्मद खां बागी न बन सके। सल्तनत में कोई टूटन न हो। कोई बागी न बने।'

'पश्चिम में हुमायूं को रोकना है। पूरब में बागी को पस्त कर बादशाह सलामत के कदमों पर झुकाना है। भीतर की बगावत से मुगलों से मुकाबला मुश्किल हो जाएगा। अन्दर की मजबूती पहली शर्त है।' ये हेमचन्द्र के शब्द थे।

'लाहौर के सूबेदार अहमद खां को होशियार कर हम सासाराम होते बंगाल की ओर चलेगे।
हम शमशीर और साकी दोनों को गले लगायेंगे।' बादशाह ने फैसला कर लिया।

'दारुल सल्तनत-आगरा के साथ दिल्ली और लाहौर की देखभाल के लिए मैं यहां रहना चाहता हूं। सासाराम की ओर हेमचन्द्र को जाना चाहिए, इस सलाह पर गौर किया जाय।' इब्राहिम खां ने बादशाह के सामने अपनी राय रखी।

हेमचन्द्र यह बात सुनकर संभल गया। और उसने कहा-'जनाब इब्राहिम खां की सलाह ठीक है। उनके साथ सालारे आजम शादी खां साहब तो रहेंगे ही। मैं बादशाह सलामत के साथ पूरब जाने को तैयार हूं।'

बादशाह ने इस सलाह पर शादी खां से बातचीत की। दोनों सहमत हो गए, इब्राहिम खां मन-ही-मन खुश हुआ। उसे लगा कि शतरंज की गोटियां सही जगह बैठ रही हैं। नादिरा को भी बादशाह के साथ जाना चाहिए। उसका जादुई असर उधर भी मदहोश रखे। हेमचन्द्र की सारी होशियारी निकल जाएगी। बादशाह तो चाह रहे हैं कि साथ
में साकी रहे, साकी और जाम का इन्तजाम होना ही चाहिए! तफरीह के लिए...। हेमचन्द्र के बोल सुनकर वह रुक गया।

हेमचन्द्र कह रहा था-'अगर हम भीतरी मजबूती पर गौर करें तो हम सारे संकटों से मुकाबला कर सकेंगे। इसके लिए रिआया को भी खुश रखना चाहिए। मुनासिब होता कि एक बार बादशाह सलामत सीकरी जाकर सूफी फकीर से मुलाकात कर लेते और उनसे दुआ पाते।'

हेमचन्द्र ने सबकी ओर देखा। सभी सहमत मालूम पड़े। इसलिए वह फिर बोल उठा--'रिआया तो हिन्दू ही है। वे अफगान हुकूमत से खुश हैं, वे साथ देने लगे हैं, अगर जजिया पर सलाह कर रिआया को रियायत दी जाए तो उनका पूरा साथ मिलेगा। सल्तनत की ताकत ढ़ जाएगी।'

हेमचन्द्र ने देखा कि इस बात पर सभी चुप हैं। शादी खां ने दो क्षणों के बाद कहा-'सूफी शायर मंझन का यही ख्याल है। सीकरी में इस सवाल पर सलाह ली जा सकती है।'

बादशाह ने इस सुझाव को कबूल कर लिया। और सासाराम की ओर कूच करने के लिए फौज को तैयार होने का हुक्म दे दिया। इस बीच सीकरी से होकर लौटा जा सकता है।

हेमचन्द्र ने सबके साथ समर्थन किया। बैठक खत्म हो गयी। बादशाह शाही हरम की ओर चल पड़े। हर कदम के साथ सोच रहे थे कि तख्तनशीन होते ही परेशानी बढ़ गयी। उलझनें बढ़ती जा रही हैं, लगता है कि शमशीर के साथ ही खाक छाननी होगी। भटकन की साकी से हरारत मिट जाती है। दर्द काफूर हो जाता है, आगरा से जौनपुर और सासाराम होते बंगाल जाना है। शाही हरम को भी जाना है, लेकिन परीचेहरा नादिरा को कैसे छोड़ दिया जाए! शमशीर और साकी दोनों को गले लगाना है, यही जवांमर्दी है। यही मर्द की जिन्दगी है, शायद हेमचन्द्र को अच्छा नहीं लगे। उसकी फकीराना अदा जब-तब कुढ़ा देती है। उस काफिरा पर इब्राहिम थोड़ा नाराज लगते है। आदमी तो लायक है, हुकूमत को मदद मिल रही है। लेकिन जजिया में रियायत मुश्किल है, सलाह की जाएगी। नादिरा जरूर चलेगी, काफिला हुस्नोजमाल की मस्ती के साथ चले। जिन्दगी की प्यास सियासत की तपिश से सूख न जाय। जिन्दगी की मांग सियासती साजिशों से हाय-हाय न करे, जिन्दगी में शमशीर और साकी दोनों दस्तयाब हों। अभी तो सीकरी के फकीर से मिलना है।

दोपहर के बाद बादशाह अपने वजीरों, सालारे-आजम शादी खां और शायर मंझन के साथ सीकरी के लिए चल पड़े। फौज की टुकड़ी आगे-पीछे चल रही थी। सूरज की धूप के साथ बादशाह का काफिला आगे बढ़ रहा था। लोग समझ गए कि जीत की खुशी में बादशाह आदिल शाह सूर सीकरी जा रहे हैं। सबको अच्छा लगा।

सीकरी में सूफी पीर ने अफगान बादशाह के आगमन पर अपनी खुशी जाहिर की। बादशाह ने खानकाह और फकीरों के लिए हुकूमत की ओर से सोने और चांदी के सिक्कों का चढ़ावा पेश किया। फल और मिठाइयों की टोकरियां भी कतार में लग गयीं। पीर ने कबूल किया, चेहरे पर हल्की मुस्कान आ रही थी। बादशाह को सूफी फकोर का सलूक अच्छा लगा। उन्होंने खानकाह देखने का इसरार किया, बादशाह तैयार हो गए। पीर ने गर्मजोशी से दिखाया।

बादशाह ने अहसास किया कि यह तो मुगल बादशाह की यादगार है। पीर में मुगलों के लिए रुझान है, वे बोल पड़े-'अफगान हुकूमत हमेशा खानकाह की खिदमत में रही है, आपकी दुआ की बदौलत यह सल्तनत चल रही है।'

साल में दो बार अफगान हुकूमत की ओर से जकात आती है। यह कैसे भूला जाएगा!' पीर ने कहा।

'आपकी इनायत हो तो यह हुकूमत सलामत रहे।'

'अल्लाहताला की इनायत है तभी तो मरहूम शेरशाह ने इसे कायम किया था।'

'कुछ परेशानियां बढ़ रही हैं। कुछ लोग बगावत करने पर तुले हुए हैं।'
'बादशाह सलामत! सियासत में परेशानियां आती हैं, क्या फिक्र!
जवांमर्दी से मुकाबला करें। अल्लाह पर भरोसा रखें और दीन की खिदमत करें, हमारी दुआ तो हमेशा है।'
'एक सवाल है जिसपर गौर फरमाना है।'

'क्या है, फरमाइये?'

'हिन्दू रिआया के लिए थोड़ी रियायत की बात उठी है। जजिया के बारे में आपका ख्याल...!'

'अगर हुकूमत इस्लामी है तो काफिरों को जजिया का भुगतान करते रहना है। जजिया तो उनके लिए रियायत है, इस नुख्ते को समझना चाहिए।'

'सूफी तो सबको मुहब्बत दे रहे हैं! हम उनके पास जा रहे हैं, वे दिल से हमारी कद्र कर रहे हैं। अगर थोड़ी रिआयत से उनके दिल को जीता जाये तो अच्छा रहेगा।' मंझन ने अपनी राय रखी।

'शायर मंझन साहब! सूफी फकीर और हुकूमत में फर्क है। फकीर मुहब्बत से उन्हें जीतेंगे। हुकूमत उनपर दबाव रखेगी, दबदबा खत्म, हुकूमत खत्म-यह कोई बड़ी बात तो नहीं है। इस मुद्दे को समझना जरूरी है।'

'बात तो सही है, लेकिन....।' मंझन ने कहा।

'मेरी सलाह मांगी गयी। मैंने दे दी, अब अफगान हुकमत को गौर करना है, बादशाह सलामत वजीरों से सलाह कर लें! आपका एक वजीर काफिर है न!'

‘जी, हां!' बादशाह ने जवाब दिया।
'उसे हद में रखें। उसे आपके इशारे पर चलना है।'
'वह मेरे लिए खून दे रहा है, चुनांचे उस पर एतबार हो गया है।' बादशाह ने सफाई दी। 'वह आपकी रिआया है। काफिर है, अफगान हुकूमत की खिदमत उसका फर्ज है। इससे ज्यादा तरजीह न दें।'
बादशाह शादी खां और मंझन के साथ सर हिलाकर रह गये।

इक्यावन

रात के तीसरे पहर सपना देखकर हेमचन्द्र की नींद टूट गई। जिधर उसके पैर बढ़े थे,

उधर उसका झंडा फहर उठा था, जिधर से उसके पैर हटे थे, उधर उसका झंडा झुक गया था, और फिर उसने कदम बढ़ाकर अपने हाथों से झुके झंडे को लहरा दिया था। परन्तु वह रक्त में नहा उठा था, ऊपर काले-काले बादल छा रहे थे।

उसकी दृष्टि पार्वती के निद्रामग्न मुखड़े पर गई, दृष्टि क्षण भर ठहरी। अंधेरे में उस मुख की कल्पना की, और कल्पना में पारो झलक उठी। चिता की लपटें झलमला उठीं। उसने मन-ही-मन कहा—मेरा संकल्प कालगति से मिलकर आगे बढ़ेगा, सपने जैसे भी हों। परिस्थितियां प्रतिकूल होती जा रही हैं। सूफी फकीर ने बादशाह को स्नेहाशीष नहीं दी। सामान्य शिष्टाचार भर निबाहा। जजिया को हटाने की सलाह नहीं मानी, यदि वे मान जाएं तो हिन्दू-मुसलमानों में अपनापन हो जाय। दूसरी श्रेणी की प्रजा होने की पीड़ा दूर हो जाय। कबीरपंथी साधु हृदय-हृदय को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। ये पीर फकीर नहीं कर पा रहे हैं।

शासन प्रजा-वत्सल बन नहीं पाता क्योंकि मजहब की बंदिशें हैं, संकीर्ण दृष्टि है। हिन्दू राजा तो शैव, वैष्णव और जैन में भेदभाव नहीं करते। सामाजिक स्तर पर जाति की दृष्टि से भेदभाव है, इसे भी दूर करने का प्रयत्न हो रहा है। एक बार सारे विद्रोहों से निबट लिया जाय, मुगलों से मुकाबला हो जाय, और तब जजिया को हटाना है। शासन को प्रजा के अनुसार चलना है, कोई प्रथम और कोई द्वितीय श्रेणी का नहीं माना जाएगा। पर हिन्दुओं में जातियां और श्रेणियां युगों से हैं। समाज में ऊंच-नीच का भेदभाव है, असन्तोष है।

संत इस भेदभाव को मिटा रहे हैं, विषमता को हटा रहे हैं। इस विषमता को मिटाना है, नहीं तो आत्मीयता कहां? समाज कहां? एक आरोपित व्यवस्था जो टूट ती-बिखरती जाएगी-समता और स्नेह के अभाव में। अभी तो स्थिति को सम्भालना है, जनाब खां आगरा में इब्राहिम खां पर अंकुश रख सकेंगे। धर्मपाल भी यहीं रहेगा। पार्वती ने दाहिनी तरफ करवट ली, कुछ बुदबुदायी, उठ बैठी। देखा कि वे विचारमग्न हैं, उसने झुककर चरणों को स्पर्श किया, हेमचन्द्र ने हृदय से लगा लिया।

मुंशी हरसुखलाल का भजन मन्द स्वर में सुनाई पड़ा। मां दुर्गा कुंवर का भी प्रातःस्मरण आरम्भ हुआ।

पड़ोस में साह हरखलाल सरवर के साथ तांत्रिक के पास जाने के लिए तैयार होने लगा। थोड़ी ही देर में वह श्री विलास से निकल पड़ा, गलियों से होता सरवर के पास जा पहुंचा। सरवर भी इन्तजार कर रहा था। दोनों ने कोशिश की कि जमाल की नजर से बचकर आगे बढ़ जाएं। दोनों ने अलग-अलग कदम बढ़ाये, जमाल देख नहीं सका। परन्तु धर्मपाल की दृष्टि से बच नहीं सके। वह उन दोनों का पीछा करने लगा, वे दोनों साथ-साथ नदी तट पर पहुंचे। सरवर ने कहा'शाह जी! आप तांत्रिक के पास जाएं, मुझे जनाब इब्राहिम खां साहब से मिलना जरूरी है।'

'सरवर साहब! तांत्रिक पहुंचे हुए फकीर हैं। उन्होंने हम दोनों को साथ ही बुलाया है, हम जो चाहेंगे, वह होकर रहेगा।' हरखलाल ने अनुरोध किया।
'मैं आपके साथ हूं, शाह जी! आप हमारे साथ हैं। सिपहसालार साहब से मुलाकात बहुत

जरूरी है, वक्त कम है।'

'तब काम कैसे सिद्ध होगा?'

'मेरा रूमाल ले लें, मैं इसके साथ रहूंगा। दरगाह के औलिया ने भी बताया है कि हम दोनों कामयाब होंगे। मैं आपको ले चलूंगा, यह रूमाल ले लें।

हरखलाल ने रूमाल ले लिया, पर मन का उत्साह दब-सा गया। आंखें उठाकर देखा-सरवर मुस्करा कर किले की ओर जाने के लिए इजाजत मांग रहा था। हरखलाल का मन मान गया, उस पार किले का परकोटा शान से खड़ा दिखाई पड़ा। उसने मुस्करा कर जाने के लिए कह दिया। सरवर ने पहले एक नाव पर हरखलाल को तांत्रिक की कुटिया के लिए विदा किया, और खुद एक दूसरी नाव से किले की तरफ रवाना हुआ। धर्मपाल माली के वेश में सरवर के पीछे था, वह नाव से उतरकर सरवर से पहले इब्राहिम की हवेली में पहुंच गया। बगीचे में पौधों की सेवा में लग गया, और तब सरवर आया। इब्राहिम खुशआमदीद कहकर मुस्कराया। सरवर के लबों पर मुस्कान थिरक उठी, दोनों मुस्कराते हुए बाग में खिले गुलाब को देखते रहे, उसी वक्त कूच का डंका बजने लगा। दोनों उधर ही मुखातिब हुए।

सरवर ने पूछा-'हजर! रक्कासा नादिरा लश्कर के साथ जा रही हैं न?'

'जरूर जा रही है, बादशाह ने खुद चाहा है, हूर ने असर डाला है, कमाल तो तेरा है। मैंने अपने को जब्त किया है।' मुस्कराते हुए इब्राहिम ने जवाब दिया।

'आपके पास दूसरी नादिरा आ जाएगी, आप क्यों फिक्र कर रहे हैं? उसे दोनों का शिकार करने दीजिए, फिर तो वह लौटकर आपके ही पास...।'
माली वेश में धर्मपाल गुलाबों का गुलदस्ता लेकर गया था। कानों से सुन लिया था, वह गुलदस्ता लिये दूर खड़ा रहा।

'शादी खां साहब लाहौर चले जाएं तो मैं आगरा में खैर मनाऊं।' इब्राहिम ने अपने इरादे को जाहिर किया।

माली ने खिदमत में गुलदस्ता पेश किया, दोनों खुश हो गए। उन्हें लगा कि अच्छा सगुन हो गया, इब्राहिम से इनाम पाकर माली बाग में लौट आया, कुछ देर के बाद वह वहां से चलता बना।

सरवर कह रहा था-'लाहौर के अहमद खां साहब तो बादशाह के भतीजे हैं, आपका मेलजोल हो तो ताकत बढ़ सकती है।'

'यह दिमाग में है, लेकिन पहले तो शादी खां को आगरा से हटाना है। जब तक वे यहां से नहीं हटते हैं तब तक आगरा पर अपनी पकड़ मजबूत नहीं होगी। हेमचन्द्र सासाराम-चुनार की तरफ हो, शादी खां साहब लाहौर चले जाएं और वह आगरा-दिल्ली को संभाले।' इब्राहिम ने अपना मंशा बता दिया।

सरवर ने संजीदगी के साथ सर हिलाया, उसने सोचा कि यह हो सकेगा। यह रास्ता आसान है, कोई कठिनाई नहीं है। इस नाचीज को वजीर बनने का मौका मिल सकेगा। हरखलाल को भी। वह बोल उठा-'बिलकुल सही निशाना, हुजूर! एक करिश्मा...बिला खूनखराबी के!'

‘सियासत में खून-खराबी से नहीं घबराना, सरवर अली!'

'मैं आपके लिए खून देने को तैयार हूं, आपके साथ घबराना कहां? दीनोईमान हमारे साथ। उनके साथ सिर्फ रक्कासा और एक काफिर!'

दोनों हाथ मिलाकर हंस पड़े, हंसते रहे। कूच का डंका बज रहा था, आवाज ऊंची हो रही थी। इब्राहिम को ख्याल हो आया, वह सरवर के साथ बादशाह को रुखसत करने चल पड़ा।

हेमचन्द्र गजराज सिंह, विजयवाहन, खेमराज और बहादुर खां के साथ आ गया था। धर्मपाल ने अफगानवेश में हेमचन्द्र को इब्राहिम के इरादे की जानकारी दे दी। हेमचन्द्र ने शाही फौज का इन्तजाम देखा, बादशाह से सलाह कर जरूरी हिदायतें दीं। शादी खां ने शाबासी देते हुए खुशी जाहिर की।

शाही फौज नगाड़े और डंके की आवाज पर किले से निकलने लगी। पीछे-पीछे रसद की गाड़ियां थीं, उनके पीछे शाहीहरम था। एक खास गाड़ी में नादिरा थी, सबसे पीछे हथियारबन्द सिपाही रक्षक के रूप में थे।

हेमचन्द्र ने शादी खां के सामने बादशाह से कहा–'जनाब शादी खां पर आगरा से लेकर लाहौर तक को सम्भालने की जिम्मेवारी है।'

शादी खां साहब को लाहौर जाकर अहमद खां को चुस्त-चौकस करना है, आगरा को इब्राहिम खां सम्भाल लेंगे।'-बादशाह ने जवाब दिया।

'मैं तो चाहूंगा कि आगरा पर भी इनकी निगरानी रहे।' 'मेरे अपने रिश्तेदार पर शक नहीं, हेमचन्द्र!'

'हालात ऐसे हैं, जहांपनाह! कि आपको हर लमहा होशियार रहना है, हर सरदार से...।'

'हेमचन्द्र ठीक कह रहा है, बादशाह सलामत!' शादी खां ने कहा।
'जैसे बाबर ने जंग को जीतने के लिए शराब के जाम को तोड़ दिया था, हजूर! आप भी कुछ तय कर लें।'
'बोलो, क्या तय करूं?'
'शराब और साकी से दूर रहकर हर बगावत को कुचल देना है। अभी सिर्फ शमशीर से खेलना है।'
'नादिरा पर क्यों नाराज हो, हेमचन्द्र!'
'वह सिर्फ शराब है...जहरीली शराब, आलीजाह!'
'नहीं, हेमचन्द्र! वह हुस्न और फन का धुंघरू है, उसे जब-तब तफरीह के लिए बज उठना

है। उसे नहीं छोड़ना है, कोई बादशाह छोड़कर नहीं चलता। तुम साथ हो, ताकीद रखोगे।'

हेमचन्द्र चुप रह गया, उसी क्षण सिपहसालार इब्राहिम खां सरवर के साथ आया। शादी खां ने हेमचन्द्र को इशारा कर दिया, वह बादशाह के साथ आगे बढ़ने को तैयार हो गया। वजीरों, शादी खां और इब्राहिम ने सलाम-बन्दगी कर कामयाबी की दुआ करते हुए बादशाह को रुखसत की। हेमचन्द्र जनाब शादी खां को सलाम कर विदा हुआ। सरवर तो चेहरा छिपा रहा था, इब्राहिम सोच रहा था कि इससे छुटकारा मिला।

अफगान हुकूमत के फहराते झंडों को लेकर शाही फौज कूच कर रही थी। हेमचन्द्र देख रहा था...दूर-दूर तक आसमान....झण्डे-भालों और तलवारों की चमक' 'नारे और वह आगरा, पारो, मां-सबको छोड़कर जा रहा है। दूर जा रहा है, इधर क्या होगा? ऐयाश बादशाह...बागी सरदार और कदम बढ़ाते मुगल....क्या होगा? उसका संकल्प कालगति से मिलकर साकार हो सकेगा?

बावन

तीसरे दिन हरखलाल सरवर को साथ लेकर तांत्रिक के पास पहुंचा। तांत्रिक ने रात के अंधेरे में श्मशान में शव-साधना की तैयारी की। उसे एक अधजला शव मिल गया था। हरखलाल और सरवर अली- दोनों तांत्रिक की कुटिया में मौजूद थे। हरखलाल सोच रहा था कि वह इस तंत्र-साधना से हेमचन्द्र को झुका सकेगा, वह खुद नगर सेठ बनेगा। अनाज और कपड़े के व्यापार पर उसका एकाधिकार हो जाएगा। सोहनलाल का लक्ष्मीभवन खंडहर हो, आंसू बहाएगा। उसके मन को शांति मिल सकेगी। तांत्रिक सिद्ध पुरुष हैं। इन्हीं का चमत्कार है कि सोहनलाल चल बसे। लगता है कि सरवर को पूरा विश्वास नहीं हो सका है, आज बहुत समझाने पर आया है। रूमाल से काम नहीं होना था, साथ रहना आवश्यक था, अब वह अपनी आंखों से देखेगा। उसमें अपने आप विश्वास पैदा होगा। वह उसके साथ दरगाह भी जाएगा। उनका भी चमत्कार देखेगा, उसे विश्वास है कि इन साधुफकीरों से काम बनेगा।

सरवर सोच रहा था कि वह काफिरों के तंतर-मन्तर को देखने आ गया है। कैसे यह फकीर जिन्न-भूत को अपने काबू में कर लेता है! अगर यह काबू में कर लेता है तो बड़े-से- बड़ा काम हो सकता है। उधर दरगाह का फकीर कुछ करने वाला है, वह तो करिश्मा कर दिखायेगा। हरखलाल भी देख सकेगा, पहले यहां देखना है, स्याह रात में आदमी की लाश के साथ इबादत औत पूजा-पाठ का नजारा-यह ख्याल कर रोंगटे खड़े हो रहे हैं। ये कौन-कौन जादू जानते हैं! सुबह में सिपहसालार के पास पहुंचना है, उन्होंने बुलाया है। उनका पूरा एतबार हो चला है, उसे सियासत का मजा मिलने लगा है। जोड़-तोड़, झूठ-फरेब और खून-खराबी से ताकत हासिल कर लेना-यही सियासत है। इस तन्तर-मन्तर से भी

मदद मिल जाय जो अच्छा ही है, हर्ज क्या है! वैसे इस पर यकीन नहीं है, लेकिन थोड़ा यकीन करना पड़ता है। किसी तरह कामयाबी मिले, वह हेमचन्द्र और जमाल को मात देना चाहता है,

वह इन दोनों को बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसीलिए तो वह सियासत में आ गया। आते ही रास्ता दिखाई पड़ने लगा, मजहब मददगार जो है, इस सियासत में आम आदमी रिआया की जरूरत नहीं है। महज तिकड़मबाजी और ताकत की आजमाइश है। हुकूमत में घुस जाना है, और फिर जिन्दगी के मजे...। दुश्मनों को कुचल दो, आम आदमी को फुसला लो। सरवर अली मुस्करा उठा, मशाल की रोशनी में तांत्रिक का भयानक चेहरा दिख रहा था, वह सिहर उठा।

तांत्रिक दोनों को लेकर श्मशान की ओर जाने लगा, उसी समय घाट पर आग धधक उठी। आग की लपट की रोशनी में कुछ लोग दिखाई पड़े, तांत्रिक ठिठक गया। उसे लगा कि शव जल रहा है, उसका क्रोध दहक उठा, उसके पैर आगे बढ़े। हरखलाल को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, क्या शव जलने लगा? अपने आप जलने लगा? किसी ने जला दिया? यह भूतों का उपद्रव है या हेमचन्द्र का? वह तांत्रिक के साथ साहस कर चला। उसे विश्वास हो गया कि शव ही जल रहा है। नया शव तो नहीं है, ये लोग कौन हैं?

सरवर के कदम रुक गये, वह डर गया था, फिर उसने देखा कि दोनों उधर जा रहे हैं। वह भी आहिस्ता-आहिस्ता जाने लगा, लेकिन वह इस ख्याल से परेशान हो उठा कि कहीं जिन्न की हरकत न हो। वह यहां क्यों आ गया? उसे इधर नहीं आना चाहिए था, कहीं कुछ हो गया तो वह कहीं का नहीं रहेगा। घाट पर ये लोग कौन हो सकते हैं? ये जिन्न-भूत तो नहीं लगते! क्या ये हेमचन्द्र के ताबेदार हैं? क्या इनको मालूम था? हेमचन्द्र के लोग हर जगह मौजूद हैं? वह सिहर उठा।

तांत्रिक हाथ में त्रिशूल लिये आ पहुंचा। कुछ लोग अधजले शव को जला रहे थे, सबके हाथों में लाठियां थीं, पगड़ी में चेहरे छिपे हुए थे, नदी में नाव लगी हुई थी। तांत्रिक ने ऊंची आवाज में उन्हें डांटा और त्रिशूल लेकर उछल गया, वे लोग डरे नहीं। तांत्रिक के पैर रुक गए, कोई डर नहीं रहा है। शव जल रहा है, जब साधना शुरू ही नहीं हुई तो वह क्या कर लेगा? अचरज की बात है ये लोग तांत्रिक बाबा से डर नहीं रहे हैं। उसके पैरों से नीचे धरती खिसक रही थी। हरखलाल का माथा चक्कर खा रहा था। सरवर को अपने पर गुस्सा आ रहा था, उसे कुछ हथियारबन्द साथियों के साथ आना चाहिए था।

दूसरी बार तान्त्रिक ने अपने चेहरे को और भयानक बनाया। कुछ बुदबुदाकर मंत्र बोलकर उन्हें डांटा, उन पर झपटा। वे लोग धीरेधीरे हटने लगे और झटके से अपनी नाव पर सवार हो गये। सरवर ने कोशिश की कि वह उन्हें पहचान ले, उनसे उलझ जाय, लेकिन वह अकेला था, निहत्था था। कुछ कर नहीं सकता, सिर्फ उन्हें पहचानने की कोशिश कर रहा था। उनकी नाव खुल चुकी थी, सरवर ने हिम्मत की, वह दूसरी नाव में सवार हो गया, नाव चल पड़ी।

सरवर अंधेरे में कैसे पहचाने? कोई आवाज भी नहीं आ रही थी। वह अपने दिमाग पर जोर

दे रहा था। अचानक उसने सोचा कि कहीं वे हमला कर बैठे तो इस दरिया में उसकी कब्र बन जायेगी। उसने फिर बेवकूफी की है। आवाजें आयीं, वह समझ गया कि ये हेमचन्द्र के तरफदार हैं, इनमें जमाल भी हाजिर है, तो वह भी सियासत में दखल देने लगा। हिन्दी मुसलमानों और काफिरों की जमात है। ये हेमचन्द्र के गुट में हैं और वह अफगान-पठान है, ये अफगानों पर हावी होना चाहते हैं। यह नहीं होगा, भले ही मुगल आ जायें।

उसने देखा कि नाव बढ़ती जा रही है। रात के स्याह सन्नाटे में छप-छप की आवाज आ रही है। उसने मांझी को उस पार चलने के लिए कहा। उसकी नाव रुककर उस पार जाने लगी, पहली नाव बढ़ गयी थी। सरवर उस पार पहुंचकर नाव पर लेटा रहा। कभी वह नदी की तरफ देखता कि कहीं वे लोग उसकी तरफ तो नहीं आ रहे हैं और कभी गुस्से में होंठ काटने लगता। मांझी समझ रहा था। मन ही मन मुस्कराकर अपनी नाव में सो गया। सरवर को नींद नहीं आ सकी।

सुबह होते ही वह इब्राहीम खां की हवेली के दरवाजे पर पहुंचा। पहरेदार पहचान गये, बाइज्जत बैठने और इन्तजार करने के लिए कहा गया, वह बेवक्त पहुंच गया था। इब्राहिम खां ऐशगाह में था, उसे इन्तजार करना था।

घण्टे भर के बाद सिपहसालार इब्राहिम खां से मुलाकात हुई। सरवर ने सारा किस्सा नमक-मिर्च के साथ बयान कर दिया। जमाल अहमद एक हिन्दी मुसलमान को गिरफ्तार करने और उसके रोजगार -को बन्द करने की सलाह भी दे दी। रात की खुमारी में अधलेटे इब्राहिम खां ने सब सुना। पलकें बन्द कर गौर किया और फिर कहा—'सरवर अली! खतरा लेकर खबररसां बने हो, बहुत खूब! सलाह भी सही है, लेकिन थोड़ा रुकना चाहिए।'

'ऐसा क्यों? जमाल हमारे खिलाफ है, हेमचन्द्र की जमात को तोड़ना मुनासिब है।'

'जमाल हेमचन्द्र का रिश्तेदार है और हेमचन्द्र कमजोर नहीं है। वजीर उसके साथ हैं, अभी वजीरों को अपने माकूल बनाना है, उसके बाद हेमचन्द्र की जमात को मसल दिया जायगा, जमाल पर नजर रखो, अभी इतना ही!'

सरवर कुछ लमहों के लिए चुप रह गया, उसने सोचा कि इब्राहिम खां का ख्याल दुरुस्त है। ये सियासत के दांव हैं। अभी उसे सीखना है, उसने मुंह खोला-'आप सही हैं। फौज के जरिए वजीरों को अपना तरफदार बनाइए, यह काम जरूरी है।'

'हां, यही करना है, आज जनाब शादी खां लाहौर जा रहे हैं। उसके बाद कार्रवाई शुरू होगी।'
'उधर हुमायूं और इधर हेमचन्द्र से निपटना है। मैं हेमचन्द्र के गुर्गों पर नजर रखूगा।'
'हां, कड़ी निगाह रखनी है, सही वक्त पर कार्रवाई की जायगी।'
'शाह हरखलाल ने बताया है कि एक जोगी-फकीर हेमचन्द्र का गुरु है।'
'हरखलाल को फुसलाये रखो, काम का आदमी है, उसी से रसद की खरीद की जायगी, जमाल को चोट देना जरूरी है।'

'जी, हां! यही तरीका ठीक है वाह-वाह! मान गया, हुजूर!' यह कहकर सरवर मुस्करा उठा, और ख्याली पुलाव भी पकाने लगा- जमाल को बरबाद होना है, नूरी को आगोश में आ जाना है।

उधर अपनी कुटिया में योगी शिवनाथ धर्मपाल और जमाल के साथ विचार कर रहे थे, कह रहे थे।

'हरखलाल और सरवर के गुट का मनोबल तो कुछ टूटा। सरवर बौखला गया होगा, वह इब्राहिम खां को भड़का सकता है।'

'मैं चाहता था कि सरवर को जमनाजी की लहरों में...। पर उपद्रव बढ़ सकता था।' जमाल ने रोष में कहा।

'अवसर अच्छा था, हम सोच नहीं सके, उपद्रव तो बढ़ सकता था पता लगने पर। अब शत्रु क्रोध में है, सावधान रहना है। शादी खां साहब लाहौर के लिए चल पड़े होंगे। इब्राहिम पर अंकुश कैसे रहे?' योगी ने चिन्ता प्रकट की।

'आप कहें तो वजीरों से मिलकर बादशाह के प्रति वफादारी को समझने की कोशिश करें।' धर्मपाल ने विचार रखा।
'एक सुझाव दिया जा सकता है, बादशाह की कामयाबी के लिए किले के मैदान में इबादत हो। शाही इमाम इसे संपन्न करें। सभी इकठे होकर दुआएं करें।' योगीजी ने बताया।

'जी हां! यह सुझाव ठीक है। इससे इब्राहिम पर अंकुश लगाया जा सकता है।' जमाल ने कहा।

धर्मपाल और जमाल दोनों संध्या में वजीरों से सम्पर्क की योजना से निकल पड़े। उन्होंने देखा कि फौज की चहलकदमी बढ़ गयी है। लगभग सभी वजीरों के मकान पर फौज की टुकड़ियां तैनात हैं, वे उधर जा नही सके, एकाध जगह प्रयत्न किया तो पूछताछ शुरू हो गयी। दोनों को हटना पड़ा, शादी खां के मकान में छिपना पड़ा। लगा कि वे अंधेरे में कैद हैं। रास्ते पर नंगी तलवार लिये राक्षसों का पहरा है। किसी प्रकार मिलकर शादी खां और हेमचन्द्र को संवाद भेजना है।

तिरेपन

गांव के बड़े-बूढ़ों ने गजेन्द्रसिंह को समझाया कि ब्याह के बाद उसे अपने गांव जाना चाहिए। अपने घर में बहू का स्वागत-सत्कार हो। कुलदेवता की पूजा हो, धरती से घर बस जाय। अब यह भटकन क्यों? इस तरह भटकना सम्मान की बात नहीं है। खुदादीन बाजीगर भला मानूष है। वह नहीं रोकेगा, इस तरह भटकने से कभी भी संकट आ सकता है। तुर्कों का बोलबाला है, स्त्री को घर में छिपकर रहना पड़ता है। मुखड़े पर बूंघट डालकर पुरुषों की देख-रेख में आना-जाना होता है। तुर्क औरत तो सात परदों के

भीतर रहती है, इस सच्चाई पर हमेशा ध्यान रखना होगा।

गजेन्द्र सर नीचा कर सुन रहा था, दो क्षण सोचकर कहा-'आप सबकी आज्ञा सर आंखों पर है, घर में मां रास्ता देख रही होंगी। मैं गांव जाना चाहता हूं, पर शंका होती है कि गांव वाले कैसा व्यवहार करेंगे।'

'अनजान स्त्री को बहू मानने में लोग आना-कानी कर सकते हैं। कुल-मर्यादा की बात उठ सकती है, पर इस शंका से भटकना ठीक नहीं है, घर जाना चाहिए। उन्हें समझाना चाहिए।' एक अधेड़ ने अपना विचार रखा।

'पुरोहितजी और आप उन्हें समझा सकते हैं, मेरी बात को कौन मानेगा?'

हम तैयार हैं, हम चलेंगे, हम साखी हैं।' यह कहकर उस अधेड़ सज्जन ने खुदादीन और मैना से बातचीत की, वे सहर्ष तैयार हो गये। वे स्वयं चाहते थे कि इन दोनों का घर बस जाय।

सभी गजेन्द्र और चन्दा के साथ गांव की ओर चल पड़े। खुदादीन को खेल-तमाशा नहीं दिखाना था, इस बार तो बेटी को ससुराल चाने की बात थी, उत्साह के साथ यह दल बढ़ता जा रहा था। थोड़ा पहुंविश्राम करते हुए सभी बढ़ते गए।

गजेन्द्र ने चन्दा की ओर देखा, चन्दा मुस्करा उठी, उसका हृदय शंकाओं से मुक्त हो उठा। उसने कल्पना की कि वह गांव के पास पहुंचेगा। उसके मित्र दौड़कर घर पर संवाद देंगे, मां की सारी उदासी दूर हो जायगी, वह पास-पड़ोस को बटोरकर अक्षत और फूलों से स्वागत करेगी, भाभी का गीत गूंज उठेगा। बहू का घर में प्रवेश होगा, घर जगमगा उठेगा। जब गांव के लोग पूछताछ करेंगे तब वह क्या उत्तर देगा!

गजेन्द्र का मुख इस बात पर आकर उदासी में डूबने लगा। चन्दा ने बांसुरी को संभाल लिया था, वह गजेन्द्र के चेहरे के बदलते रंग को देख नहीं सकी। वह तो सोच रही थी, बांसुरी वाला बांसुरी बजायेगा और वह उसी धुन पर थिरक-थिरककर घर को सजायेगी। बांसुरी को छीन कर भोजन करायेगी। कभी-कभी वह बांसुरी बजा लेगी। सासु मां का हृदय प्रसन्नता से भर उठेगा। पर वे कैसी होंगी? प्यार देंगी? कुल परिवार के बारे में पूछने पर वह क्या बता सकेगी? बताना तो पड़ेगा। बिना कुल गोत्र की मर्यादा के प्रतिष्ठा कहां? क्या उन्हें विश्वास होगा? खुदादीन की बात मानी जायगी? इस नट की बात को कौन मानेगा? उसने सड़क पर नाचा है। उसने बांसुरी बजाकर बाजीगर-नट के तमाशे को पूरा किया है। बाजीगर के साथ रहती है, सभी तो यही जानते हैं। सड़क-चौराहे से घर के आंगन में पहुंचना कठिन है, यही भाग्य चक्र है!! ये क्या हैं? गिराया है तो उठायेंगे? बांसुरी वाले ने तो उठाया है। उसने गिरे हुए पर कृपा नहीं की है। उसने तो हृदय दिया है, उसने मन से प्यार किया है। छोटे कुल का सैनिक मानुष बहुत ऊंचा है। अब गांव-घर के लोगों को प्यार देना है। ये प्रेमकथा सुनते हैं, ये प्रमगीत गाते हैं, पर प्रेम करने वालों पर क्रोध करते हैं। ये दया भी नहीं करते। वह तो मुसलमान के साथ रहती रही है। लोग क्या सोचेंगे ? उसका हृदय सिहर उठा।

गजेन्द्र ने देखा कि गांव निकट आ रहा है। उसे रोमांच हो उठा, खुदादीन का दल आगे- आगे था। पुरोहित जी थे। गांव वाले थे, पीछेपीछे चन्दा चल रही थी। रास्ते में लोग कौतूहल से देखते, कुछ पूछते और चुप रह जाते। वे बहू को देखने के लिए ठहर जाते, आंखों में प्रशंसा का भाव तर जाता। पर इस बारात को देख कर उन्हें हंसी आती।

गांव में संवाद फैल गया। लोग इकट्ठे होने लगे, किशोरों और नौजवानों में जिज्ञासा थी। बड़े-बूढ़े सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। गजेन्द्र का हृदय धड़क उठा, उसके पैर अपने घर के पास पहुंच रहे थे। घर के पास स्त्रियों की भीड़ आ गयी है। अब क्या होगा? स्वागतसत्कार या दुत्कार...? मां हैं! भाभी हैं! गीत नहीं गूंज रहा है!

पुरोहितजी और गांव वाले अधेड़ के साथ गजेन्द्र आगे बढ़ा। मैना ने चन्दा को साथ कर लिया। वह गजेन्द्र के साथ घूघट में धीरे-धीरे बढ़ने लगी। द्वार पर सभी आ गए, पड़ोस के चाचा ने कहा--'गजेन्द्र! रुक जाओ। यह स्त्री कौन है?'

'चाचा जी बहू है, पुरोहितजी साथ में हैं। वे साक्षी हैं।' उत्तर देता गजेन्द्र मां और भाभी को ढूंढ़ने लगा। वे द्वार पर आ गयी थीं, पर शीश नवा कर खड़ी थीं। कभी-कभी देख लेती थीं, पर स्वागत करने का साहस नहीं कर पा रही थीं। पड़ोसी चाचा का तीखा स्वर सुनायी पड़ा- 'तुम बाजीगर के पीछे-पीछे चले गए थे। इस स्त्री के लिए घर-द्वार को छोड़ कर गए थे। यह बाजीगर की बेटी है न! कुलवधू बनेगी! ब्याह कैसे हो गया?'

'मैंने गांव के लोगों की सहमति से यह विवाह कराया है। साक्षी के रूप में ये आये हैं।' पुरोहित ने समझाने की चेष्टा की।

'मेरे गांव ने बेटी का ब्याह किया। हम बेटी को विदा करने आए हैं, आपको विश्वास दिलाने आये हैं।' अधेड़ ग्रामीण ने बताया।

‘मान लिया कि आपने पुरोहित को भरपूर दक्षिणा देकर विवाह करा दिया। बड़ा अच्छा किया, पर बाजीगर-नट की बेटी इस घर की बहू कैसे बनेगी?'
'यह नट की बेटी नहीं है। मेरी बेटी नहीं है, यह तो मारकाट के समय उजाड़ गांव में रोती हुई मिल गयी थी। मैंने बेटी समझ कर पाला है, यह अच्छे कुल की है।' खुदादीन ने भ्रम को दूर करने की कोशिश की।

मैना ने चाहा कि वह स्त्रियों के पास जाकर समझा दे। पर सब कुछ सहमा-सहमा था, दूरी बनी हुई थी। वह दो कदम बढ़ी, किसी ने मिलने का उत्साह नहीं दिखाया। वह रुक गयी। पड़ोसी चाचा बोल उठे-'मतलब यह है कि किसी को कुलगोत्र का पता नहीं है। इतना तो "पता है कि वह बाजीगर-नट के साथ रहती रही है। गजेन्द्र भी भ्रष्ट हो चुका है, गांव नहीं अपनाएगा।'
'मेरे बेटे पर आप लोग बैठ कर विचार करें। इस दुखिया मां पर दया करें।' गजेन्द्र

की मां सिसकती हुई बोल पड़ी।
गजेन्द्र और चन्दा दोनों के अन्तर में थोड़ी आशा जगी। वे दोनों कभी मां को देखते और कभी पड़ोसी चाचा को। पड़ोसी चाचा ने 'घोषणा कर दी-'गजेन्द्र की मां चाहें तो इस नटिन को बहू बना लें। इसके बाद वे जाने और उनका काम!'

यह सुनकर मां की आंखें पथरा-सी गयीं। भाभी धरती की ओर देखती रह गयी, चन्दा ने चाहा कि वह कुछ बोले। वह अपने कुलगोत्र को बता दे। पर वह नहीं बताएगी। उसे कृपा नहीं चाहिए। वह बांसुरीवाले प्रेम को चाहती है। उस प्रेम की मान्यता चाहती है, उसने अपने से छोटे कुल को अपनाया है - प्रेम के कारण, वह भी छोटा समझ कर अपनावे। वह गिड़गिड़ाएगी नहीं, वह बांसुरीवाले के साथ भटक कर जी लेगी। मां में प्यार उमड़ आया है, इतना बहुत है। मां को एक बार प्रणाम कर लौट भी सकती है।

'मैं पुरोहित हूं, मेरी बात को आप नहीं मान रहे हैं। यह अचरज की बात है, आप विवाहिता कन्या को ठुकरा रहे हैं। यह अनुचित है।' पुरोहित ने एक और प्रयत्न किया।
'ठीक है, विवाहिता है। गांव में ठहर सकती है, पर हम तो कुलगोत्र को समझ कर ही अपनायेंगे। गजराज सिंह आ जाय तो विचार हो सकता है।'
'गांव के बाहर ठहर कर प्रतीक्षा करनी होगी?'
'हां--यही एक रास्ता है।'
'मैं बेटी को अपने गांव ले जाऊंगा। आप पता लगाते रहिये, इच्छा हो तो संवाद भेज दें।' अधेड़ ग्रामीण ने स्वाभिमान के साथ कहा।

'यही ठीक है, हम अपना निर्णय भेज देंगे।' चाचा ने उत्तर दिया।

मां और भाभी सिसकती हुई आगे बढ़ीं। पुरोहित के संकेत पर गजेन्द्र और चन्दा दोनों चरणों पर झुक गए। आंसुओं से आशीष मिली, चन्दा का हृदय जुड़ा गया। मां और भाभी दोनों ने चन्दा को उठाया, दोनों देखती रह गयीं। यह देवी का रूप है, किसी राजकुमारी का रूप है। नटिनी नहीं हो सकती, कुलकन्या है। पर वे क्या करें? कैसे घर में ले जायें? गांव ने नहीं माना है, सबसे अलगाव...गांव से बाहर...जाति से बाहर यह कैसे सहा जाएगा? कैसे जिया जाएगा? गजराज कब आएगा?

अधेड़ ग्रामीण ने ऊंचे स्वर में कहा-'बेटी चलो! मेरे गांव चलो, इन्हें समझने का समय दो।'

मां और भाभी चन्दा को छोड़ नहीं पा रही थीं। घर में ले जा नहीं सकती थीं, गांव की स्त्रियां दूर रह कर कुछ बोल रही थीं। चाचा ने, जो गांव के प्रधान भी थे, आदेश दिया कि वे अब जा सकते हैं। गजराज के आने पर विचार करेंगे।

चन्दा को पीछे मुड़ना पड़ा, गजेन्द्र भीतर-ही-भीतर उबल रहा था। मां और भाभी सिसक रही थीं, खुदादीन को इनके इस व्यवहार पर तरस आ रहा था। इसी व्यवहार से कहीं-कहीं लोग धर्म बदलने को मजबूर होते हैं।

सब मन मार कर लौटने लगे, चाचा गांव के प्रधान ने सबको भोजन और विश्राम के लिए कहा। सबने ठुकरा दिया, भाभी घर से दही-शक्कर लेकर आ गयी, चन्दा और गजेन्द्र को दही-शक्कर खिलाया, और प्यार से आशीष दी।

गजेन्द्र के साथी दूर-दूर खड़े थे। चाह कर भी निकट नहीं आ पा रहे थे। गांव के बड़े-बुजुर्गों का भय था।

सभी लौट पड़े, गजेन्द्र बार-बार मां और भाभी को देख रहा था। अपने मित्रों पर दृष्टि डाल रहा था, एक करुण वातावरण में सनी लौट चले।

गजेन्द्र के मित्र सोचने लगे कि यह ठीक नहीं हुआ। इतना कठोर नियम-कानून! पर कोई उपाय नहीं है, उनमें से एक चुपके से गजेन्द्र के पास पहुंच गया। गांव को सीमा तक पहुंचाने साथ चलता रहा। गजेन्द्र के मन को थोड़ा ढांढ़स मिला, पर गांव दूर होता गया।

चौवन

'हुजूर! जौनपुर की फतहयाबी पर मेरी मुबारकबादी कबूल करें।' नादिरा रात की महफिल के खत्म होने पर हेमचन्द्र की रावटी (खेमा) के पास आकर चहक उठी।

हेमचन्द्र अपनी रावटी के पास खड़ा था। गजराज सिंह और विजयवाहन को विश्राम के लिए विदा कर रहा था। उसी समय नादिरा चूंघरू की रुनझुन के साथ आ पहुंची। गजराज और विजय दोनों जाने लगे।

'आप तो महफिल में मुबारकबादी दे चुकी हैं। फतहनामा सुना चुकी हैं, बादशाह सलामत ने कबूल किया है। सबने कबूल किया है।' हे मचन्द्र ने जवाब दिया।

'शायद आपने कबूल नहीं किया है। दूर-दूर जो रहते हैं, इसलिए नजदीक आ गयी हूं।'

'शहंशाहे हिन्दुस्तान शमशीर और साकी दोनों को प्यार करते हैं। उनके लिए सही है, मैं एक सिपहसालार हूं। मुझे दिनरात शमशीर को गले लगाना पड़ता है। इसलिए धुंघरू से दूर रहना है।'

'धुंघरू घायल की दवा है, हुजूर! नादिरा की आंखों में आबेहयात है, और आप दूर-दूर...! क्या कोई गुस्ताखी हो गयी है मुझसे!'

'अपने बादशाह के ऐशगाह के धुंघरू पर नजर लगाना मुनासिब नहीं है, नादिरा! मैं एक वफादार सिपाही हूं। मुझे माफ कर दो। एक बात और है, बादशाह को बंगाल से पंजाब तक

दौड़ना है, इसलिए उन्हें धुंघरुओं से बेहोश नहीं कर देना।'

'हुजूर! मैं फारस से बेहोश करने नहीं, धुंघरू की आवाज से खुश करने आयी हूं। थकी जिन्दगी को आबेहयात पिलाने आयी हूं। बादशाह तो खुश हैं, सिर्फ आप नाराज लगते हैं।'

इस खुशी में मेरी भी खशी है, मैं नाराज नहीं हैं, नादिरा! देख लो, आज बादशाह और बादशाहत के सामने जिन्दगी और मौत का सवाल आ खड़ा हुआ है। इसलिए धुंघरुओं पर खुश होकर जवाब देना भूलना नहीं है। आज आराम करना है और कल सासाराम की ओर कूच करना है।' यह कहकर हेमचन्द्र ने मुंह फेर लिया।

नादिरा मजबूरी में मुड़ गयी। बुदबुदाती हुई चली गयी- यह काबू में नहीं आता। सरवर साहब और हजर इब्राहिम खां दोनों ने बादशाह के साथ इसे भी बेहोश कर देने के लिए कहा था। बादशाह तो बेहोशी में आ रहे हैं, लेकिन यह शख्स तो अजीब है। इस पर हुस्नोअदा का कोई असर नहीं पड़ता है, ऐसा लगता है कि यह सरवर साहब के मतलब को समझता है। जान-बूझकर दूर रहने की कोशिश करता है। दिलेर तो है, लेकिन दिलरुबा से दूर-दूर भागता है। देखा जाएगा–कभी-न-कभी इसे दिलबस्तगी की जरूरत पड़ेगी।

दूसरे दिन सुबह हेमचन्द्र बादशाह के पास पहुंचा। वे जौनपुर के शाहो महल में आराम फरमा रहे थे. नींद टटी नहीं थी। नादिरा का मदहोश चेहरा दिखायी पड़ा, हेमचन्द्र सामने से हट गया। वह चली गयी, बादशाह ने हेमचन्द्र को बुला लिया। और लेटे-लेटे कहा-'हेमचन्द्र! तुम्हें जंग में थकान नहीं आती क्या? थोड़ा आराम कर लो। फिर कूच का डंका बजेगा।'

'हुजूर के फैसले के मुताबिक आज सासाराम को ओर कूच करना है। सभी आराम कर चुके हैं, ज्यादा आराम करने पर बागी-पेशावर के नजदीक आ जायेंगे।'

'जंग और फतह के बाद जश्न की रात गलत है?'

'हुजूर! रक्कासा सिर्फ नाचना और नचाना जानती है। बादशाह थलामत को इतनी बड़ी हुकूमत को संभालना है। बाबर घोड़े की पीठ पर रहकर हिन्दुस्तान को जीत सका था। हम इस बात को नहीं भूल सकेंगे।'

'ओफ हो! बोलो क्या चाहते हो?'
'सासाराम के लिए कूच का डंका बजे, वहां मरहूम शहंशाह के मकबरे के दीदार का मौका भी है।'
'यह तो ठीक कह रहे हो, हेमचन्द्र! तो आज दिन भर आराम कर शाम को हम कूच कर दें।' 'जी, हां! यही ठीक रहेगा! एक फिक्र की बात है।'
'कामयाबी के बाद फिक्र क्या?' 'आगरे की खबर नहीं मिल रही है।
आगरे में सिपहसालार इब्राहिम खां हैं, मेरे नजदीकी हैं। सालारे आजम शादी खां साहब हैं। फिक्र क्या?'
'हम राजधानी से बहुत दूर हैं, जहांपनाह! बगावत की लपटें हैं, उधर मुगलों के कदम

बढ़ चले हैं। इसलिए उधर की फिक्र।'
'हमारे कदम भी बढ़ रहे हैं। बगावत की लपटों पर पानी डाला जा रहा है, हम मुगलों को मसल देंगे।'
'और इसलिए इधर का काम खत्म कर जल्द लौटना है। तब तक बेगमें और नादिरा यहीं आराम करें।। 'सारा काम तेरे मुताबिक हो रहा है, हेमचन्द्र! अपनी बेगमों
और नादिरा को तो मेरे साथ चलने दो।'
'फारस की यह रक्कासा मदहोश करने के फन में माहिर है। और हमें होश में रहना है।' 'तुम्हें होश में रहना है, हेमचन्द्र! और मेरे लिए थोड़ी-सी मदहोशी...! तुम पर यकीन है कि मुझे होश में रखोगे।'

हेमचन्द्र चुप रह गया। अधिक बहस उचित नहीं है, वह इजाजत लेकर अपनी रावटी में चला आया। हाजी खां और बहादुर खां के साथ फौज की कवायद देखने के लिए निकला। गजराज सिंह, विजयवाहन और खेमराज चुस्त-चौकस थे। सिपाहियों में जोश था, मन को संतोष हआ। लौटते वक्त सोचा-ताज खां ने जौनपुर और सासाराम को अपने प्रभाव में लाकर बंगाल को भी शिकंजे में कस लिया है। मोहम्मद खां ताज की साजिश से खुदमुख्तार हो गया है। निपट कर ही लौटना है, उसे सफलता मिल रही है। एक पुकार से वही सिपहसालार है, उधर से धर्मपाल का संवाद नहीं मिल सका है। संवाद मिल जाता तो संतोष के साथ पैर बढ़ते।

संध्या में कूच का डंका बजा। फौज बढ़ चली, गोमती के तट से गंगा तट की ओर हेमचन्द्र का मन दौड़ने लगा। बनारस और उसके बाद सासाराम...और उसके बाद मुंगेर, भागलपुर होते गौड़।

जौनपुर पर कब्जा होने के बाद बनारस तक कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। इसलिए आदिलशाह की फौज सासाराम आ पहुंची, खेमों का शहर बस गया। हेमचन्द्र ने हाजी खां, बहादुर खां और गजराज सिंह से सलाह-मशविरा कर ब्यूह की रचना की, उसी समय आगरा का संवादिया आ पहुंचा। उसने वजीर हेमचन्द्र को बताया कि इब्राहिम खां सूर आगरा में खुद बादशाह बन गया है, लाहौर में अहमद खां ने सिकन्दर शाह के नाम से अपने को पंजाब का सुल्तान ऐलान कर दिया है।

यह सुनकर हेमचन्द्र स्तम्भित रह गया। दो क्षण के बाद सोचा कि किसी ने अंधेरे में प्रहार कर दिया है। और वह बेहोश हो रहा है, लेकिन वह होश नहीं खोएगा। अंधेरे की साजिश को चकनाचूर करेगा, उसका संकल्प...

हेमचन्द्र युद्ध के मैदान में जा पहुंचा।

उधर इब्राहिम का जासूस नादिरा के पास आ पहुंचा। नादिरा ने उसे अपने नौकर के रूप में रख लिया, जिससे किसी को शक न हो। जब बांदियां काम करके चली गयीं तब उसने बातचीत शुरू की—'हुजूर इब्राहिम खां का क्या हुक्म है?'

'इब्राहिम खां तख्तनशीन हो चुके हैं, दिल्ली से दोआब तक उनके कब्जे में है।' जासूस ने बताया।

'मेरी तरफ से बधाई है, लेकिन मैं जहांपनाह से बहुत दूर हूं। अगर दरबार के जश्न में बुलावा हो तो में तैयार हूं।'

'अभी आपको इधर ही रहना है, आदिलशाह और हेमचन्द दोनों को बेहोश रखना है।'

'पूरी कोशिश कर रही हूं। बादशाह बेहोशी की हालत में आ रहे हैं, लेकिन यह काफिर काबू में नहीं आ रहा है।'

'सरवर अली साहब...वजीरे आजम का...।'
'वजीरे आजम के ओहदे पर सरवर साहब! खुदा बड़े मेहरबान हैं!'
हां, उन्हीं का इशारा है कि ये दोनों बेहोशी में न आवें तो दोनों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया जाय।'
'हां, यह नुस्खा तो आजमाया जा सकता है।'
'जब तब ये दोनों एक-दूसरे से जुदा होकर सर नहीं तोड़ते हैं, तब तक आगरे का तख्त...।'
'ख्याल तो दुरुस्त है!'
'बादशाह इब्राहिम खां आपका इन्तजाद करेंगे, आपको शाहीमहल में जगह देने के लिए तय कर चुके हैं।'
यह सुनकर नादिरा उस जासूस की ओर देखती रह गयी। जासूस के दिल की धड़कनें बढ़ गयीं। नादिरा मुस्करा उठी, उसने जासूस को मिठाइयों से भरी तश्तरी पेश की। जासूस ने समझा कि वह जन्नत में पहुंच चुका है।

नादिरा सोचने लगी कि वह धुंघरुओं से जमीन-आसमान को झुमा दे। फारस की एक रक्कासा के हाथों में हिन्दुस्तान की सल्तनत! वह कितनी खुश-किस्मत है! इब्राहिम खां और सरवर अली दोनों उसके आशिक हैं। दोनों उसके तबस्सुम पर जांनिसार हैं, यहां आदिल शाह उसे छोड़ने को तैयार नहीं। पर वह आगरे में बेगम कहलाएगी अभी तो इन दोनों को...!

शाही रावटी में बेग में जंग की खबर पाने के लिए बेचैन थीं। वे अपने बादशाह सलामत की कामयाबी के लिए इबादत कर रही थीं। बांदियां दरवाजे पर झांक जातीं। हर आवाज पर कान लगाये हुए थीं, जब-तब चौंक जातीं। बेगमें कुरानशरीफ को पढ़ने में मशगूल हो गयीं। लेकिन भीतर की बैचैनी बढ़ रही थी। इसी बेचैनी में वक्त कट रहा था।

पचपन

विजय के उल्लास के साथ अफगान फौज लौट रही थी। आदिलशाह की बेगमों की घबराहट दूर

हो गयीं। नगाड़ों का बजना बड़ा अच्छा लगा, रावटियों के बीच खुशियां छा गयीं। फौज मस्ती में धीरेधीरे आ रही थी। बेगमों की नजरें बादशाह को देखने के लिए उतावली थीं। ऊंचे आसमान तक उड़ती धूल के बीच केवल झडे दिखायी पड़ रहे थे। हाथी और घोड़ों के आकार झलक उठते थे।

शाही फौज आ गयी, लेकिन बादशाह घायल थे। बेगम चिहुंक उठीं, खुशी से दमकते चेहरे पीले पड़ गये। उनकी बेचैनी बढ़ गयी, लेकिन घायल बादशाह ने सबको इशारे से भरोसा दे दिया। हकीम इलाज के लिए दौड़े आये, बेगमें खिदमत में लग गयीं। हेमचन्द्र आ पहुंचा, वह भी थोड़ा घायल था। बादशाह को बचाने में घायल हो गया था, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी थी। उसी जोश ने उसे कामयाबी दिला दी, और वह विजयी बनकर लौटा। ताज खां की मौत हो चुकी थी, सासाराम पर कब्जा हो गया, उसके सिपाही रोहतास के किले की ओर भाग गये। किले को घेरने के लिए बहादुर खां और गजराजसिंह जा चुके थे।

हकीम ने बादशाह के घावों की मरहम-पट्टी कर आराम करने की सलाह दी, और फिर वह हेमचन्द्र के इलाज के लिए मुखातिब हुआ, हेमचन्द्र हकीम के साथ अपनी रावटी में आया। हकीम ने घावों को साफ करना शुरू किया, वह दर्द को भुलाने के लिए सोच रहा थासफलता का सिलसिला शुरू है, वह विजयी होता जा रहा है, परन्तु आगरा पर इब्राहिम का अधिकार हो गया। अब आदिलशाह हिन्दुस्तान के शहंशाह नहीं हैं। यह मालूम नहीं हो सका है, मालूम होता है। बंगाल में मोहम्मद खां सुल्तान बन चुका है, उधर जाना है, लेकिन आगरा में पारो-पार्वती फिर संकट में पड़ चुकी है। जमाल और नूरी पर भी विपत्ति आ गयी होगी, सरवर चूक नहीं सकता। वह बेचैन हो उठा, दर्द से कराह उठा, हकीम साहब घबरा गये। वह क्या बताए? जासूस से पूरी बात की जानकारी भी नहीं मिल सकी है।

हकीम ने जख्मों में दवा लगा दी, पट्टियां बांध दी, साथ ही आराम करने की ताकीद की। हेमचन्द्र ने मन्द मुस्कान से हकीम साहब को विदा किया और वह आराम करने लगा, पर भीतर बेचैनी बढ़ गयी। वह सो नहीं सका, उसने आगरा से आये जासूस को बुलवाया। उसी समय नादिरा के एक नौकर ने खबर दी कि कोई बाहर से आया है जिससे नादिरा छिपकर गुफ्तगू कर रही है, उसे अपना नौकर कहकर साथ में रख रही है।

यह जानकर हेमचन्द्र बौखला गया। वह अपने घावों को भूल गया, दर्द भूल गया। उनकी साजिश यहां भी! मुगलों के लिए रास्ता साफ हो रहा है! खुदगर्जी और ऐय्याशी में अफगानों का दिमाग खराब हो गया है। उसने सोचा कि उसे जल्द गिरफ्तार करना है, उसने निर्देश दे दिया।

आगरे का जासूस आया, हेमचन्द्र पूरी जानकारी के लिए बेताब हो उठा। उसने विस्तार से बताया कि इब्राहिम ने फौज की मदद से तख्त पर कब्जा कर लिया है। सरवर और हरखलाल उसके मददगार हैं। लक्ष्मीभवन पर पहरा बैठा दिया गया, परिवार कैद में है। जमाल साहब भी कैद कर लिये गए, लेकिन।'

'लेकिन क्या?'

'धर्मपाल साहब ने हथियार बन्द लोगों के जरिए सबको कैद से छुड़ा लिया है, सारे शहर में जलजला आ गया।'

यह सुनकर हेमचन्द्र ने आंखें मूंदकर हाथ जोड़े। उसे लगा कि सब कुछ पा लिया और फिर पूछा।

'शादी खां साहब तो लाहौर गये थे, उनका क्या हुआ?'

'वे भी कैद से बच गये हैं, लेकिन वे आगरा लौट नहीं सके हैं, शायद इधर आ जायें।' हेमचन्द्र का मन सन्तुष्ट हुआ, वह विश्राम करने लगा।

दूसरे दिन बादशाह को जख्मों के दर्द से आराम मिला, उन्होंने नादिरा के नाच की ख्वाहिश की, महफिल का इन्तजाम होने लगा। हेमचन्द्र रोक नहीं सका, सोचा कि महफिल के बाद ही आगरे के जलजले की खबर मिले।

महफिल में नादिरा आ गयी, इस बीच इब्राहिम के जासूस को पकड़ने के लिए सिपाही लपक पड़े। वह भागने की कोशिश में था। वह गिरफ्त में आ ही रहा था, पीछे से उस पर हमला हुआ, वह कटे दरख्त-सा गिर पड़ा। आंखों की पुतलियां भय से खुली रह गयीं, सिर्फ लाश कब्जे में आ सकी।

नादिरा का नाच पूरा हुआ, बादशाह ने इनाम दिया। नादिरा ने कोनिश कर कबूल किया, उसी समय हेमचन्द्र ने कहा- 'बादशाह सलामत की खिदमत में कुछ कहना है।'

'आप कुछ भी कह सकते हैं इस फतह की खुशी में।' बादशाह ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

'आगरा से अपना जायूस आया हुआ है, इसी वक्त खबर देना चाहता है, और जनाब इब्राहिम खां का जासूस भी आ गया है। वह भी आपके सामने पेश है।'

नादिरा का सर झुक गया, इनाम उसकी हथेली में था, उसकी हथेली कांप रही थी। बादशाह बोल उठे-'अपना जासूस और इब्राहिम खां का जासूस, यह क्या?

'अपने जासूस से खबर सुन लें, फिर इब्राहिम खां साहब के जासूस का मतलब साफ झलक जायगा। हेमचन्द्र ने बताया।

नादिरा ने जाने की इजाजत मांगी, हेमचन्द्र ने मधुर स्वर में कहा-'आप अभी यहीं रहें। महफिल को गमगीन न बनायें। घायलों पर कुछ तो रहम करें।' यह सुनकर बादशाह खुश हो गये। नादिरा की परेशानी बढ़ गयी, लेकिन उसने परेशानी को जाहिर नहीं होने दिया। उसे लगा कि वह पकड़ में आ गयी।

जासूस ने खड़ा होकर बाअदब आगरे के हालात का बयान पेश किया।

आदिलशाह ने महसूस किया कि ताज की कलगी गिरकर धूल में मिल गयी। ताज हिलने लगा है, जख्मों का दर्द बढ़ गया।

उसी समय इब्राहिम खां के जासूस की लाश भी आ गयी। हेमचंद्र ने कहा-'यह नादिरा की रावटी में मौजूद था, वहीं गिरफ्तार किया जा रहा था, किसी ने पीछे से मार डाला। इसका क्या मतलब है? नादिरा बता सकती है।'

नादिरा ने अपने को संभाल कर जवाब दिया-'जहांपनाह! आपकी खिदमत से मुझे हटाने की साजिश चल रही है। उसी साजिश के तहत मेरे नौकर को मारा गया है, और उसे जासूस बताया जा रहा है। जासूसी का कोई सबूत नहीं है। अगर मुझ पर शक है तो मुझे ‘फारस लौट जाने की इजाजत दी जाये।'

आदिलशाह ख्यालों में डूब गये, उन्हें जहीन दिलेर और जवांमर्द हेमचन्द्र की तलवार का सहारा चाहिए तभी उनका ताज बचेगा। जिन्दगी को जीने के लिए नादिरा के धुंघरू के बोल भी, नादिरा रक्कासा है, फारस की है, यह क्या जासूसी करेगी? यह फकीर मिजाज हेमचन्द्र की नफरत है, उन्हें तो नादिरा बेहद पसंद है। इस गुलाबी नशा के बगैर जिन्दगी क्या! लेकिन अब कोई एतबार के लायक नहीं रह गया। इब्राहिम ने भी दगा. अब वह हिन्दुस्तान का बादशाह नहीं सिर्फ जौनपुर और सासाराम...वह भी हेमचन्द्र की बदौलत...हेमचन्द्र निहायत जरूरी है, एक काफिर ही सबसे बड़ा सहारा है।

बादशाह आदिलशाह हेमचन्द्र की ओर देखते रह गये और फिर बोल उठे-'अब हेमचन्द्र इस अफगान सल्तनत के वजीरे आजम हैं। इनकी सलाह से इस सल्तनत को चलना है। इस जमाने में किसी पर यकीन करना बहुत मुश्किल है, नादिरा चाहे तो लौट सकती है। अगर वह वफादारी का सबूत दे तो उसे एक मौका मिल सकता है। वजीरेआजम के मुताबिक उस पर निगाह रखी जायगी।'

नादिरा ने झुककर सलाम-बन्दगी की, और वफादारी के लिए एक मौका पाकर अपने को खुश-किस्मत माना।

हेमचन्द्र मन मसोस कर रह गया, क्रोध को पी गया। सोचा कि यह कमजोरी मौत की राह है। एक बार और मौका देना है, क्या इसी सल्तनत के आधार पर मुगलों से मुकाबला संभव है और प्रजा को अपना अधिकार पाना है। वैसे अब सभी असम्भव लग रहा है पर वह असंभव को सम्भव करने की चेष्टा करेगा! संकल्प कालगति से मिलकर आगे।

नादिरा बादशाह के इशारे पर जाने लगी।

हेमचंद्र ने घोषणा की- 'हम सासाराम की जीत की खुशी में अफगान सल्तनत को कायम करने वाले मरहूम शेरशाह के मकबरे पर चलेंगे। हम सर झुकाकर चाहेंगे कि वे इस सल्तनत पर अपनी दुआएं बरसा दें। उनका लगाया हुआ गुल फूलता-फलता रहे। अपनी खुशबू से सारे हिन्दुस्तान को खुशबू देता रहे। जो बेरहमी से इसे काटना चाहेंगे उनके चेहरे लहूलुहान हो जायेंगे।'

सबने सर हिला-हिलाकर इस ऐलान का समर्थन किया, बादशाह आदिल शाह ने मकबरे की ओर चलने की तैयारी करने का हुक्म दे दिया।

छप्पन

आदिलशाह ने अपनी बेगमों की मदद से रेशमी चादर और ताजे फूलों का गजरा मरहूम शेरशाह के मजार पर चढ़ाया। बेगमों ने अगरबत्ती जलायी, सबके सिर झुक गए। अचानक झुके हुए आदिलशाह खांसने लगे, पैर कांपने लगे, जख्मों से खून रिसने लगा। हेमचन्द्र ने संभाल लिया, दुआओं के साथ लौट चले।

मकबरे से निकलने के बाद हेमचन्द्र पोखर के पास आया। पोखर में झांका, उसका चेहरा झलकने लगा। मकबरे की मीनार भी झलकती दिखायी पड़ी। मीनार के आसपास उसका चेहरा प्रतिबिम्बित हो रहा था। मीनार की ऊंचाई को छू लेना चाहता है, उसका संकल्प कालगति के साथ जुड़कर बढ़ जाना चाहता है! वह युद्धों में विजय पा रहा है लेकिन पश्चिम में हुमायूं बढ़ता आ रहा है। आगरा में इब्राहिम ने ताज पहन लिया है और वह सुदूर पूर्व में है। और पूर्व में बंगाल जाना है पर बादशाह बीमार हैं। खिदमत में नादिरा है। नादिरा इब्राहिम। की भेजी हुई रक्कासा-तवायफ है। उसने बादशाह को बांध लिया है। अपनी हसीन हरकतों से कमजोर आदिल शाह को बेहोश कर दिया है। कालगति उसके संकल्प में साथ नहीं दे रही है?

चाचा शादी खां को इधर आना चाहिए, अगर वे साजिश से बच गए हों तो उनको इधर आ ही जाना है। उसे बंगाल जाना है, बंगाल के मोहम्मद खां को रास्ते पर लाना है।

आगरा में पारो, जमाल मोहन, नूरी, धर्मपाल और योगीजी बुला रहे हैं। मोहम्मद खां को आजाद छोड़कर कैसे लौटा जाय? लौटना ठीक नहीं होगा। उधर पारो बिलख रही है, क्या पारो बार-बार आत्महत्या करेगी? ऐसा नहीं होगा, उसकी तलवार का मोल क्या रह जायेगा? वह अपहरण बलात्कार और आत्महत्या के जुल्म को रोककर ही जी सकेगा।

उसने चेहरा उठाया। पोखर की दूसरी तरफ मन्दिर का शिखर दिखाई पड़ा, मन्दिर छोटा- सा है। उसकी छाया जल में पड़ रही है, छाया मीनार की छाया से दूर-दूर है। दोनों दो तरफ हैं, मीनार ऊंची है, तनी हुई है। मन्दिर का शिखर छोटा है, झुका हुआ-सा लगता है। कबीरपंथी साधु और मंझन ऐसे शायर कोशिश कर रहे हैं कि सभी साथ-साथ रहें। दोनों में टकराव न हो, कोई तना हुआ और कोई झुका हुआ न रहे, पर मन्दिर तो आतंकित है। सब जगह टूटे हुए हैं, मथुरा का कृष्ण जन्म मन्दिर देख लिया है। टूटा हुआ, बिखरा हुआ है! अब लौटते हुए अयोध्या में बाबर के विध्वंस को देखना है। उसी बाबर का बेटा दिल्ली की ओर आ रहा है, और वह इधर है, उसे भी शीघ्र लौटना है।

उसने पोखर के पानी में फिर झांका। आकाश की नीलिमा जल पर छायी हुई थी, उसमें उसका चेहरा दिखाई पड़ा। उसे लगा कि उसका चेहरा एक पंछी बनकर अनन्त आकाश में उड़ान भर रहा है। उड़ान भरता ही जा रहा है, उसके पंख नहीं थके हैं। पर आकाश का ओर-छोर भी तो नहीं है, बाजों का भय भी है। उसे भय तो कभी नहीं हुआ, योगी शिवनाथ ने उसे अभय बना दिया है। आज वह पारो के लिए शंकाकुल है। आगरे की हालत...मां दुर्गा कुंवर और पारोपार्वती "वह विवश है।

उसने देखा कि उसके पास बहता-बहता एक फूल आ गया है। तट से टकराकर रुक गया, छोटी छोटी लहरों में हिलता रहा। उसने फूल को उठा लिया, वह फूल को लिये आगे बढ़ गया।

हकीम बादशाह को देख रहे थे, ढाढ़स बंधा रहे थे। उन्होंने दवाइयों की तजबीज कर आराम करने की सलाह दी। बेगमों की आंखों में बेचैनी झलकने लगी। नादिरा दर्दमंद बनकर हाजिर थी। हेमचन्द्र आ पहुंचा। उसने हकीम से बातचीत की। उसने समझने की कोशिश की, और फिर हकीम से बोला-'क्या काशी से किसी अच्छे वैद्य को बुलाया जाय?'

हकीम ने सर हिलाकर जवाब दिया- 'जरूर बुलाइए। बादशाह सलामत को पूरा आराम मिले, इन्हें कहीं जाना-आना नहीं है।'

बादशाह ने कहा- 'हेम चन्द्र! मुझे आराम करने दो, सब ठीक हो जाएगा। तुम बंगाल को फतह कर जल्द लौटो, गजराज सिंह और बहादुर खां रोहतास से लौट आए न?'

'हां, वे लौट आए हैं। ताज के सिपाही मारे गए हैं या कैद हो गए हैं। अब हमें बंगाल जाना है, आपके इकबाल से फतह करके ही लौटूंगा।'

नादिरा सोच रही थी कि बादशाह आदिलशाह उसकी खिदमत में आराम करते रहें, और वह काफिर बंगाल में मर-खप जाये।

हेमचन्द्र की दृष्टि बार-बार बादशाह से होकर नादिरा पर जा लगती थी। इससे कैसे छुटकारा मिले! कुछ उपाय करना होगा, वह बंगाल जा रहा है, इस बीच इसे हटाया जा सकता है। यह सोचता हुआ वह अपनी रावटी में आया। गजराज सिंह, खेमराज,विजयवाहन, बहादुर खां और हाजी खां से सलाह की। फौज को कूच करने का आदेश मिला, तैयारी होने लगी।

दूसरे दिन प्रातःकाल हेमचन्द्र ने बादशाह से भेंट कर बंगाल जाने के लिए विदाई मांगी। साथ ही उनकी खिदमत और हिफाजत के लिए इन्तजाम किया, उसने एक अफगान सरदार को नादिरा पर कड़ी नजर रखने की हिदायत दी।

डंके और नगाड़े की आवाज पर अफगान फौज चल पड़ी। सूर्य का तेज हेमचन्द्र के लिए प्रेरक बन रहा था, उसे अनुभूति हुई कि तेजस्वी सूर्य आशीष दे रहे हैं। वह पूर्व दिशा में जा रहा है, सूर्य के देश की ओर जा रहा है। उधर तो सूर्यास्त हो रहा है, भटकती हुई पारो प्रतीक्षा कर रही है। पता नहीं, जमाल मोहन और नूरी किस हालत में

हैं! और यहां नादिरा का जहर फैल रहा है। गनीमत है कि वह उस जहर से बचा रहा, अब उस जहर को शान्त करना पड़ेगा। उस तवायफ ने बादशाह को इस हालत में पहुंचा दिया, लेकिन उन्हें होश नहीं आया। अभी भी समय है, उन्हें होश आ जाना चाहिए। वह बादशाह के लिए रक्त दे रहा है, और वे उस रक्कासा को अपना खून दे रहे हैं। ऐसे ऐयाश बादशाह के लिए वह काल से खिलवाड कर रहा है। यह भी विवशता है, परन्तु उसने एक नयी परम्परा का आरम्भ किया है। सफल होने पर दोयम दर्जे की जिन्दगी से हिन्दुस्तान की प्रजा को जजिया से छुटकारा हो सकता है। गांव उजड़ने से बच सकेंगे, और सभी मिलकर रह सकेंगे।

लेकिन अरबों, तुर्कों और अफगानों के मन से विजेता और शासक का अहंकार कैसे दूर होगा? वे तो समझते हैं कि वे तलवार से जीतकर हुकूमत कर रहे हैं। प्रजा को गरदन झुकाकर रहना है। वे जब चाहें, दीन-हीन प्रजा की गरदने उड़ा सकते हैं।

हिन्दुओं और हिन्दी मुसलमानों के बीच का सम्बन्ध कैसे अच्छा हो? दोनों का रक्त एक ही है, दोनों एक ही मिट्टी के हैं। बहादुर खां क्या दूसरे हैं?

बादशाह आदिलशाह की फौज हेमचन्द्र के सेनापतित्व में आगे बढ़ रही थी।

सालारे आजम शादी खां लाहौर से बचते हुए लौट आए। उनके कुछ सिपाही टूटकर अहमद खां यानि सिकन्दर शाह से मिल गये थे। अपने थके-मादे और भूखे-प्यासे सिपाहियों के साथ सासाराम पहुंच गए। रास्ते में मालूम हो गया था कि हेमचन्द्र ने जौनपुर और सासाराम को जीत लिया है। शादी खां की थकान और निराशा कम हो गई थी, लेकिन सासाराम पहुंचते ही मालूम हुआ कि आदिलशाह बीमार हैं, वे आराम फरमा रहे हैं। हेमचन्द्र फौज के साथ आगे बढ़ गया है। शादी खां सबसे पहले आदिलशाह से मिलने आए। खांसते हुए बादशाह को नजदीक से देखा। बगल में नादिरा को देखा, समझ गए कि शराब और रक्कासा ने बादशाह के जहन को खोखला बना दिया है। इनको लाहौर, दीपालपुर और आगरा की कौन-सी खबर दी जाये? इनकी फीकी हंसी को बरबाद न किया जाय, अगर वे पहले आ जाते तो हेमचन्द्र के साथ ही चल देते। अब तो यहीं रहकर उसकी कामयाबी के लिए दुआएं करनी हैं।

आदिलशाह बोल उठे- 'शादी खां साहब! आप थके हुए हैं, आराम करें। हेमचन्द्र कामयाब होकर लौटेगा, हम फिर एक साथ सलाह करेंगे।'

‘जी, हां! थोड़ा आराम करना चाहता हूं।'
'उधर मगरिब की कोई अच्छी खबर!'
‘अभी तो कुछ नहीं-हेमचन्द्र को लौटने दें।'

बादशाह शादी खां की ओर देखने लगे, समझने की कोशिश करने लगे कि इसका क्या मतलब हुआ?

शादी खां सोच रहे थे कि बीमार बादशाह को कैसे बताया जाय कि अहमद खां सिकन्दरशाह बनकर पंजाब में हुकूमत करने लगा है। वह इब्राहिम को हराकर दिल्ली और आगरा पर

कब्जा कर चुका है, और हुमायूं लाहौर पर कब्जा कर दिल्ली की ओर बढ़ रहा है। हालत बदतर है, अफगान सल्तनत टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर रही है। उन्हें भागना पड़ा है, यहां बादशाह बीमार हैं। एक ही उम्मीद है-हेमचन्द्र। वह फतह करके लौटे। यही रोशनी की लकीर हो सकती है। रोशनी की इसी लकीर के सहारे हम हिन्दुस्तान के नक्शे को बदलने की कोशिश कर सकते हैं।

सत्तावन

अपनी रावटी में नादिरा बांदी से बातचीत कर रही थी। शादी खां लाहौर और दिल्ली से होकर लौटे हैं, आगरे की क्या खबर है? नये बादशाह इब्राहिमशाह के बारे में जानना है। शादी खां के सिपाहियों से जानकारी मिल सकती है।

बांदी नादिरा के इशारे पर सिपाहियों से मिलने चली गई। नादिरा सोचने लगी कि बादशाह आदिलशाह बीमार पड़े हैं। बदन के ऊपर के जख्म सूख रहे हैं, लेकिन बदन के अन्दर भी जख्म हैं। तभी तो खांसने लगे हैं, अब ये पड़े रहेंगे, खांसते रहेंगे। अब उसे क्या दे सकेंगे? हेमू की नफरत की आग से भी बचा नहीं सकेंगे, लेकिन वे आज भी उसके आशिक हैं। वे उसे छोड़ना नहीं चाहते, उनकी बेगमें अपने बीमार शौहर को घेरे रहती हैं। वह बादशाह के बाजू में बैठकर क्या करे? वे उससे कुछ सुनना चाहते हैं, वह गजल सुना देती है। वे नाच देखना चाहते, वह नाच लेती है। वे खुश हो जाते हैं। वह भी मुस्करा देती है, बेगमें जल उठती हैं। लगता है कि वे उसे जिन्दा जला देंगी। वह आतिश फिशां पर बैठी लग रही है। आगरा की अच्छी खबर मिल जाय तो वह यहां से रुखसत हो जाये।

बांदी आगरा की जानकारी लेकर आ गई। उसने देख लिया कि उसका पीछा किया जा रहा है। वह डर से कांपती हुई रावटी में आई। नादिरा ने भी देख लिया कि कोई आसपास मंडरा रहा है, वह भी डर गई। बांदी ने अपनी आवाज को दबाकर दिल्ली-आगरे का हाल बता दिया। इब्राहिम के पतन की खबर सुनकर नादिरा चौंक उठी। वह शून्य में देखने लगी, स्याह आसमान दिखाई पड़ा। उसकी नजर रावटी की छोटी खिड़की की ओर गई, कोई कान लगाए हुए था।

होंठ काटकर बुदबुदायी-वह हेमू का बच्चा दूर चला गया है। लेकिन वह उसे धमकाने लगा है, खुदा उसे मौत ला दे। वह उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकी, उधर आका इब्राहिम खां साहब तख्त से हटा दिए गए। सिकन्दर शाह तख्तनशीन हो गया है, ये अफगान सरदार आपस में लड़कर कट मरेंगे, उसे क्या? कोई भी आए, मुगल ही आए। लेकिन उसे यहां से चल देना चाहिए। बहुत कुछ पा चुकी है, अब कोई उम्मीद नहीं है। जान पर खतरा जरूर है, यह बूढ़ा शादी खां भी उससे नफरत ही करता है, अब उसकी खैर नहीं। वैसे वह चाहे तो अपनी दौलत से किसी अफगान सरदार को खरीद सकती है, लेकिन फायदा क्या होगा?

उसने तय कर लिया कि उसे यहां से चल देना है, यहां रहना फिजूल है। उसने खिड़की की ओर देखा, कोई नहीं था। उसने अपने नौकर को बाहर भेजा जिससे हेमचन्द्र की जासूसी

का अन्दाज मिल सके और फिर नौकरानी के कानों में कुछ कहा।

नादिरा का नौकर रावटी के बाहर किसी से उलझने लगा, कुछ ही देर में पीठ सहलाता हुआ लौट आया। नादिरा गुस्से में आ गई। वह बादशाह से शिकायत करेगी, लेकिन बीमार बादशाह क्या कर सकेंगे! वह कुछ शिकायत भी नहीं कर सकेगी। अन्दर बेगमें हैं, बाहर शादी खां हैं। वह अकेली पड़ गई है, अब खैरियत नहीं है। किसी के जरिए हल्ला कराया जाय कि दौलत के लिए उसका कत्ल कर दिया गया है। बादशाह छटपटायेंगे, हेमचन्द्र सफाई देगा, ये खुद ही आपस में लड़ मरेंगे।

आदिलशाह बेचैन थे कि नादिरा अभी तक नहीं आई है। बेगमें बादशाह की इस बेचैनी पर खीझ रही थीं। शादी खां काशी से वैद्यराज को लेकर आ गये। बेगमें पर्दे में चली गयीं। बादशाह ने तिलक चंदन वाले वैद्य को देख मुंह फेर लिया। नादिरा के बदले तिलक चंदन वाला कहां से आ गया? लेकिन वे बोल नहीं सके। वैद्य की उंगलियों में उनकी कलाई आ गई। नब्ज को पकड़कर रोग का अनुमान करने लगे। कुछ क्षणों के बाद रोग की जानकारी मिल गई। वैद्यराज ने शादी खां को बता दिया कि यह तो राजरोग है, राजयक्ष्मा है, फेफड़े की बीमारी है। शराब और साकी से दूर रहकर समय पर ओषधियां, पौष्टिक भोजन और इन्हें पूर्ण विश्राम चाहिए।

शादी खां ने बादशाह की ओर देखा। चेहरे को देखते रहे, और फिर वैद्यराज की सलाह को कबूल किया, और दवाओं के लिए वैद्य के साथ बाहर चले गए।

आदिलशाह ने खबर भेज दी कि वे नादिरा को याद कर रहे हैं। नादिरा तो आहिस्ता- आहिस्ता अपने सामान को इकट्ठा कर रही थी, उसे खबर मिली। उसने सोचा कि वह आखिरी बार नाच ले, कुछ और पा ले, शक नही हो। फिर मुगल तो आ ही धमकेंगे। उनका आफताब आसमान में चमकेगा, लेकिन एक रुकावट है-हेमचन्द्र। उसने भागने की तैयारी के लिए अपने नौकर को शहर में भेज दिया, और खुद सज-धज कर बादशाह के पास पहुंची। धुंघरू की आवाज सुनकर बादशाह का चेहरा खिल उठा, उसने कोनिश की। बादशाह उसे निहारने लगे, वह एक कदम पीछे हटी। नाचना शुरू किया, लगा कि घुंघरुओं के संगीत पर रूप की वर्षा हो रही है। आदिलशाह भीग रहे हैं, बेगमें दूर-दूर बैठी रहीं। बादशाह ने अपनी एक बेगम को इशारे से बुलाया। अपना जड़ाऊ हार नादिरा को देने के लिए कहा। वह बिफर उठी। बादशाह की आंखों के डोरे लाल हो गए। उसने हार उतार कर नादिरा को दे दिया। नादिरा ने बेगम के सामने झुककर सलाम किया, और फिर बादशाह सलामत के आगे झुकी। अपने स्पर्श से उन्हें रोमांचित कर दिया, उनकी आंखें मुंद गयीं।

नादिरा रुकी रही, देखती रही। फिर इजाजत लेकर लौटना चाहा। बादशाह इजाजत नहीं दे रहे थे, लेकिन नादिरा ने अपनी शीरी जुबान में इसरार किया। बादशाह ने इजाजत दे दी। वह जड़ाऊ हार को गले से लगाए लौट आई। भागने की तैयारी करने लगी। रात के अंधेरे में वह निकल जाएगी। शहर में पालकियां तैयार मिलेंगी, पहरेदार भी मिल जाएंगे।

अफगान सरदार को उसके भागने की जानकारी मिल गई। हेमचन्द्र ने उसे कुछ समझाया था, उसने कुछ और सोच लिया। उसने नादिरा को फौजी छावनी से भागने दिया। नादिरा

पहरेदारों को कुछ ले-देकर निकल गई। शहर पहुंचकर पालकियों में कपड़े-जेवर रखकर नौकरानियों के साथ भाग चली। शहर से बाहर हुई। अफगान सरदार ने एक सराय के पास आ घेरा। नंगी तलवारें देख वह घबरा उठी। उसके पहरेदारों ने लोहा लेना चाहा। उनकी मौत सामने आ गई, नादिरा सिसक उठी।

सरदार ने कड़क आवाज में कहा-'रक्कासा! बादशाह को लूटकर नहीं जा सकती।'

'कातिल लुटेरे! मैंने लूटा नहीं है। तुम लूट रहे हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए।' नादिरा ने हिम्मत करके जवाब दिया।
'अभी तक तुम बादशाह सलामत की जिन्दगी से खिलवाड़ कर रही थी, अब हम तुम्हारी जिन्दगी से खेलेंगे।'
'तुम क्या चाहते हो?'
'एक तवायफ से हम क्या चाहेंगे। हम तो गुनाह को मिटा देना चाहेंगे।'
'नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। किसी बेकसूर औरत को मारकर गुनहगार न बनो।'
'तुम औरत नहीं हो, गुनाह की आग हो। आग जला कर भाग रही हो, इस आग में तुम्हें भी जलना होगा।'
'यह किसकी साजिश है? मैं सब समझती हूं।'
'यह साजिश इब्राहिम खां की है या मुगल सरदार की, अब इसका पता चल जायेगा।'

'अफगान सरदार! इतने बेरहम न बनो, मुझसे दौलत ले लो।'

'यह दौलत तो मेरी है ही।' यह कहकर अफगान सरदार ने जेवर और सिक्कों वाली पालकी पर कब्जा कर लिया।

नादिरा छाती पीटने लगी। अचानक उसने एहसास किया कि तलवार की नोंक उसकी गरदन पर है, वह सिहर उठी। वह सरदार के पैरों पर गिर पड़ी। सरदार अंधेरे में मुस्कराता रहा। वजीरे आजम और सिपहसालार हेमचन्द्र के हुक्म को भूल गया। वह नादिरा को सराय के भीतर ले गया। शाही रक्कासा सरदार के आगोश में आ गिरी।

रात बीतते-बीतते नादिरा कुछ जेवरों और कुछ सोने के सिक्कों के साथ भागने में कामयाब हो गई।

अट्ठावन

'शादी खां साहब! वैद्य की दवा से थोड़ा आराम लग रहा है।' आदिलशाह ने करवट बदलते हुए कहा।

'हुजूर! बनारस का मशहूर वैद्य है। बनारस से ही दवाएं आयी हैं, आराम तो मिलना

चाहिए।' शादी खां ने बताया।

'सचमुच रात में अच्छी नींद आई थी, लेकिन आपने मेरी शराब को बन्द कर दिया। नादिरा के धुंघरू को भी गूंजने से रोक दिया, यह तो अच्छा नहीं हुआ।
'वैद्य ने शराब से दूर रहने की हिदायत की है। नादिरा तो दुश्मनों की ओर कहर ढाने के लिए आई थी, कहर ढाकर चली गई।'
'मुझे यकीन नहीं होता, हेमचन्द्र की वजह से ही उसे भागना पड़ा है।'
‘आपको यकीन करना पड़ेगा, जहांपनाह! उसका पीछा भी किया गया है, लेकिन वह निकल गई।'

'मैंने उसे इतना प्यार दिया, दौलत दी। और वह बीमार बादशाह ‘पर मेहरबान नहीं हुई !'

'तवायफ किसी पर मेहरबान नहीं होती।'

'दिल पर पत्थर रखकर बर्दाश्त कर रहा हूं। लाचारी है, नादिरा की खोज होनी चाहिए।' 'आपका हुक्म है तो जरूर खोज की जाएगी, लेकिन आपको खुले मैदान की रावटी में रहना ठीक नहीं है। हम रोहतास के किले में डेरा डालें या चुनार के किले में?'

'मैं सासाराम से हटना चाहता हूं, रात में एक ख्वाब मंडरा रहा था। उसी ख्वाब की वजह से उठ गया, देखा कि मरहूम बादशाह शेरशाह मुझ पर नाराज हैं। कह रहे हैं कि तुमने दिल्ली-आगरा को गंवा दिया, सासाराम में उनका मजार है। वे ख्वाब में आते रहेंगे, अब यहां नहीं रहना है।' आदिलशाह ने कहा।

'तब तो यहां से हट जाना ठीक है, बादशाह सलामत!'
'चुनार ही ठीक रहेगा।'
'चुनार का किला मजबूत भी है, उसी को मरकज बनाकर हम जंग करेंगे। दिल्ली-आगरे को वापस ले लेंगे, हेमचन्द के लौटते ही चुनार चल पड़ेगे।'
शादी खां की इस बात पर बादशाह ने सर हिलाया, और शहद के साथ दवा खा ली। पर्दे से बेगमें झांक रही थीं।

शादी खां ने दवाओं के बारे में बांदी को समझा दिया। बादशाह से इजाजत ली और रावटी से बाहर आए। फौजी छावनी का चक्कर लगाने लगे, एक रावटी के पास आते ही हार, कंगन और नथ के शब्द सुनायी पड़े। उनके पैरों की आहट पाते ही बातचीत बन्द हो गयी। वे रुके रहे, भीतर सन्नाटा छाया रहा। वे चुपचाप आगे बढ़ गए, लेकिन उनके दिमाग में वह बातचीत गूंज रही थी। रावटी में वह सरदार भी था, जिसने खबर की थी कि नादिरा को भगा दिया गया। वजीरे आलम हेमचन्द का इशारा था क्योंकि नादिरा की वजह से बादशाह को नुकसान हो रहा था। तो क्या इन लोगों ने उसके जेवरात छीन लिये हैं? ये आपस में बांट रहे थे? अफगानों में यह गिरावट आ चुकी है! तभी तो हाथ से हुकूमत निकली जा रही है। रावटी में चला जाना चाहिए था। सच्चाई दिखायी पड़ जाती, वे दूर चले आये हैं। सामने मकबरे की मीनार दिखायी पड़ रही है। उस शेरदिल शेर खां ने अपनी तलवार की ताकत से अफगानी सल्तनत को कायम किया था। हिन्दुस्तान के

इस कोने से उस कोने तक अफगानों का परचम 'फहर रहा था। मुगलों को भागना पड़ा था, और आज बादशाह आदिलशाह की अपनी खैरियत नहीं है। भांजे का कत्ल किया, तख्त ‘पर बैठ गये। अफगानी मिल्लत के नाम पर मदद मिली, लेकिन हिन्दुस्तान के बादशाह बनकर साकी की शराब में डूब गए।

खुदा की मेहरबानी से हेमचन्द्र फरिश्ता बनकर आ गया है। इसने अपनी अक्ल से अफगानों, हिन्दी मुसलमानों और हिन्दुओं की एक ताकत खड़ी कर दी है। एक बड़ी बात हो रही है, और हमारे बादशाह नादिरा के लिए गमगीन हैं।

सामने से कुछ लोग आ रहे थे, थोड़ा ताज्जुब हुआ। वे पूछ बैठे'आप लोग कौन हैं? इधर कैसे आ गए?'
'हम मालत्रा से आ रहे हैं। शुजात खां का फरजंद दौलत खां खदमुख्तार हो गया है। हम जान बचाते हुए आए हैं।' एक ने बताया।
'बादशाह बीमार हैं और सभी को खुदमुख्तारी का शौक जग गया है। हम उसे सबक सिखायेंगे, आप लोग आराम करें।' शादी खां ने जवाब देते हुए वफादार सिपाहियों और सरदारों को आराम के लिए इशारा कर दिया।

मालवा से आए हुए सिपाही आगे बढ़ गए। शादी खां कभी मकबरे की मीनार को देखते, कभी तालाब की ओर और फिर आसमान में टकटकी लगाये रह गए। आसमान में उठने-गिरने का बिम्ब बन रहा था, मिट रहा था। तो क्या हारा हुआ भागा हुआ मुगल फिर दिल्ली में आ जाएगा? अहमद खां सिकन्दर तो बन गया पर हुमायूं को रोक नहीं सका। टुकड़े-टुकडे हुए और दूसरे के निवाले बनने लगे। हिन्दुओं की यह बीमारी अफगानों में फैल चुकी है। हजारों जात में बंटे हिन्दू मिलकर खड़े नहीं हो सकते, हरेक एक-दूसरे से अकड़ता है, जलता है। हेमचन्द्र दिलेर और दानिशमंद है, और इसने अपनी एक शख्सीयत बना ली है। राजा होने के काबिल है, लेकिन हिन्दू ही इसे नहीं बनने देंगे। इनके यहां राजा-महाराजाओं की एक जात है। फौजी लड़ाकों की जात है, हेमचन्द्र तो सौदागर (बक्काल) है। शायद इसीलिए जयपुर, जोधपूर और मेवाड़ के राजे इसे मदद नहीं करेंगे। लेकिन इसकी मदद से अफगानों का राजा फिर से खड़ा हो रहा है। हिन्दू रिआया के साथ अच्छा सलूक किया जाए तो पूरी मदद मिल सकेगी। इन्हें अच्छे सलूक की ख्वाहिश है। हर इंसान को यही ख्वाहिश होती है।

दूर धूल उड़ती दिखायी पड़ी। हाथो पर अफगान झंडा फहराता नजर आया, जरूर फतहयाब हेमचन्द्र लौट रहा है। मोहम्मद खां नहीं हो सकता। उसी वक्त जासूस ने खबर दी कि जनाब हेमचन्द्र मोहम्मद खां को जीतकर लौट रहे हैं।

शादी खां सब भूल गए। हेमचन्द्र, फतह के परचम और खुशियों की सौगात- इन तीनों ने शादी खां को घेर लिया। उन्हें महसूस हुआ कि मकबरे की मीनार पर नूर बरस रहा है। तालाब की मौज में जीत का जश्न शुरू हो गया है, वे हेमचन्द्र को गले लगाने के लिए उतावले हो उठे। कामयाबी तो इसके कदमें को चूमने के लिए हमेशा बेचैन है।

फौज नजदीक आ गयी। हाथी पर हेमचन्द्र दिखायी पड़ा, शादी खां ने हाथ उठाकर बधाई दी। हेमचन्द्र हाथी से उतर आया, वह शादी खां के पैरों पर झुका। शादी खां ने

उठाकर सीने से लगा लिया, सिपाही 'जिन्दाबाद' के नारे लगा रहे थे।

दोनों बादशाह के पास खुशखबरी सुनाने जा पहुंचे। उसी समय केश-दाढ़ी बढ़ाये और फटे-चिथड़े पहने धर्मपाल आ पहुंचा। हेमचन्द्र के पैर रुक गए। गले से शब्द फूट पड़े-'धर्मपाल! इस रूप में और लोग कहां हैं?'

सभी लोग सुरक्षित हैं। भागते-छिपते सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए हैं। मुझे मजबूरी में आना पड़ा है।'

'कौन-सी मजबूरी है? स्पष्ट करो।'

'हुमायूं ने दिल्ली और आगरे पर कब्जा कर लिया है। फिर से मुगलों का राज्य...। सिकन्दरशाह को भागना पड़ा है।'

हुमायूं आगरे में..! जो सोचा, नहीं हो सका! अफगान सरदारों का इतना पतन! अब मैं क्या करूं? कितना खून दूं? चाचा जी! आप ही बतायें।'

'यह इम्तहान है, बेटे! जो सोचा है, वही होगा। वक्त की मौज को तुम काबू में करोगे। मेरी दुआएं तेरे साथ हैं, घबराना नहीं।' शादी खां ने भरोसा दिलाया।

धीरे-धीरे हेमचन्द्र के मन की विकलता दूर हुई। तीनों बादशाह के पास आये, जीत की खबर दी। आदिलशाह ने खुश होकर कहा'हेमचन्द्र! तुम विकरमाजीत हो।'

हेमचन्द्र ने सर झुकाकर इस बधाई को स्वीकार किया। लेकिन सिकन्दरशाह की बेवकूफी और कमजोरी की बात भी खुल गयी। जीत और हार का माहौल अजीब-सा बन गया। इसी माहोल में तय हुआ कि चनार के किले को मरकज बनाकर जंग करना मुनासिब है। चुनार चलकर थोड़ा आराम हो, बादशाह अपनी सेहत के लिए वहीं रहें। और फिर हेमचन्द्र मालवा या आगरा की ओर कूच करे।

हेमचन्द्र सोच रहा था-पारो को भागना और छिपना पड़ रहा है। जमाल मोहन और नूरी को भी भागना पड़ा है, योगीराज को कितना कष्ट उठाना पड़ा! सचमुच कालगति उसकी परीक्षा ले रही है। उसके संकल्प की दृढ़ता की परख कर रही है! श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर को विध्वंस करने वाला फिर आ गया। उसने बहुत कुछ संभाला, पर ये अफगान संभल नहीं सके। वह आयोध्या जाएगा। सुना है कि वीरों ने कई बार जन्मभूमि मन्दिर के उद्धार के लिए युद्ध किया है। रक्त दिया है, पशु नहीं, मानव मानव के रक्त का प्यासा है। उसे रक्त चाहिए, वह रक्त देता रहा है और देता ही रहेगा।

उनसठ

हेमचन्द्र ने बादशाह आदिलशाह और शादी खां से सलाह कर सासाराम की शासन-व्यवस्था को ठीक किया। उसने पाया कि उसे देखकर प्रजा में एक नया विश्वास जगा है। लोगों में नया उत्साह है, इसीलिए प्रजा ने भीगी आंखों से उसे चुनार के लिए विदाई दी। लेकिन बादशाह आदिलशाह रिआया को प्यार नहीं दे सके। उनकी आंखों में तो नादिरा बस गयी, वे बोल पड़े-'हेमचन्द्र! क्या विकरमा जीत ऐसे ही थे?'

'बादशाह सलामत का मतलब नहीं समझा।'

'तुमने एक तरफ मोहम्मद खां को पस्त किया है तो दूसरी तरफ मेरी नादिरा को भी भगा दिया है।'

'इस हालत में नादिरा आपकी खिदमत नहीं करती। वह खिदमत करने नहीं आयी थी, मैंने भगाया नहीं है। वह खुद।'

'तुम्हारी नाराजगी के खौफ से भागी है- यह मेरा दिल कह रहा है, उससे फिर मुलाकात होगी-ऐसा लग रहा है।'

'आप अभी इलाज और आराम के बारे में ख्याल रखें। सेहत ही हजार न्यामत है, और मुझे मुगलों से मुकाबला करने का हुक्म दें।'

मुकाबला तो करना ही है। विकरमाजीत जरूर जीतेगा। अभी तो आराम कर लो।'

'मैं तो शहर-दर-शहर भटकने के लिए इस दुनिया में आया हूं। मेरी जिन्दगी में आराम कहां! एक गुजारिश है कि पास के तीर्थ में जाने की इजाजत मिले।'

'जरूर तीरथ कर आओ, यह सारी फौज तुम्हारे साथ है। अब मालवा से लाहौर तक तुम्हारी शमशीर चमकेगी। जीत के झंडे लहरायेंगे, मुगलों का पूरा सफाया होना है।'
'आपका हुक्म सर-आंखों पर-आप की दुआएं मेरी झोली में।' 'मैं-एक बूढ़ा भी साथ रहूंगा, हेमचन्द्र!' शादी खां के शब्द थे। 'तब तो हमारी फौज पेशावर तक पहुंच जायेगी।'

शादी खां मुस्करा उठे, पीठ थपथपा दी। काफिला बढ़ता रहा, सभी चुनार आ पहुंचे। धर्मपाल ने बता दिया कि आगरा और ग्वालियर के बीच की एक खंडहर में सबको सुरक्षित कर दिया है। चुनार के बाद चलने पर सबसे भेंट हो सकती है। हेमचन्द्र का अन्तर संतुष्ट हुआ। उसने बादशाह और बेगमों के निवास का प्रबन्ध किया, शादी खां से राय ली कि वह अयोध्या की ओर जा रहा है। वह उधर ही से आगे बढ़ेगा, वे फौज के साथ कुच

करें। कालिंजर में भेंट हो जाएगी। पहले मालवा को जीत लेना है, फिर आगरा की ओर कदम बढ़ेंगे। शादी खां ने इस राय को मान लिया।

दोनों साथ ही विश्राम करने लगे। हेमचन्द्र की आंखों में कभी डरी हुई पारो का चेहरा झलक उठता था और कभी आगरे में हुमायूं का अट्टहास....!

शादी खां ने चुनारगढ़ के सहारे मरहूम शेरशाह की लड़ाइयों का किस्सा सुनाना आरम्भ किया। हेमचन्द्र शेरशाह और मुगलों की लड़ाइयों का किस्सा सुनने लगा। वह मुगल का अट्टहास भूल गया, वह हारे हुए और भागते हुए हुमायूं की झलक पाने लगा।

शाम हो गयी थी, दीपक जलने लगे। उसी समय पहरेदारों की आवाज सुनायी पड़ी। पहरेदारों ने किले के पास छिपे और भागते हुए लोगों को पकड़ लिया था। नादिरा अफगान फौज को देखकर भाग रही थी, वह पकड़ में आ गयी। क्षण भर के लिए घबरायी, फिर हिम्मत करके उसने बादशाह सलामत के सामने ले चलने के लिए कहा। पहरेदार बादशाह के पास ले जाने लगे। अफगान सरदार को जानकारी मिल गयी, उसकी हालत खराब होने लगी। अब वह छिपने या भागने की बात सोचने लगा।

शादी खां और हेमचन्द्र दोनों को पता चल गया कि कोई औरत पकड़ी गयी है। वह रक्कासा नादिरा ही है, वह उठकर बाहर आया। उसने बादशाह के सामने ले जाने से रोकना चाहा। वह वजीरे आजम है, वह कसूरवार को सजा दे सकता है। लेकिन शादी खां ने रोक दिया। बादशाह बर्दाश्त नहीं करेंगे, उन्हें समझाना मुश्किल है। हेमचन्द्र ने सर हिलाकर बादशाह के सामने ले जाने का हुक्म दे दिया।

नादिरा बादशाह के सामने पहुंच गयी। उसने अपनी लूट और अपनी बेइज्जती की कहानी सुना दी। सिसक-सिसक कर अपनी कहानी सुनायी। वजीरे आजम हेमचन्द्र की साजिश की ओर भी इशारा किया।

बादशाह आदिलशाह का गुस्सा उबल पड़ा। उन्होंने खांसते हुए अफगान सरदार को तलब किया। वह अफगान सरदार छिप गया। उसकी खोज हो रही थी। उसका पता नहीं चल रहा था। बादशाह का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। अफगान सरदार की सन्दूकची में कुछ जेवर बरामद हो गए थे। अब उसे वजीरे आजम भी नहीं बचा सकते थे। वह पकड़ में आ गया, बादशाह के सामने लाया गया। उसने भी हेमचन्द्र के हुक्म की बात की, बादशाह होंठ काट कर रह गए। और कुछ लमहों के बाद गुनहगार सरदार को चुनार के किले से गिरा देने की सजा तजबीज कर दी। सरदार कांप उठा, नादिरा मुस्करा उठी। उसने हेमचन्द्र के गुनाह पर भी फैसला करने को कहा। बादशाह पशोपेश में पड़ गए, वे भीतर-ही-भीतर बेचैन हो उठे। वे तो हेमचन्द्र की तलवार की ताकत पर ही बादशाह बने हुए थे।

उन्होंने नादिरा को समझाने की कोशिश की-'हेमचन्द्र ने भगा देने का हुक्म दिया होगा। लूटने और बेइज्जत करने का हुक्म नहीं दिया होगा, इस शैतान ने तुम्हें लूटा है, इसे सजा मिल रही है। अब हेमचन्द्र को माफ कर दो।

'आप माफ कर सकते हैं, मेरा दिल तो धधक रहा है।' नादिरा ने आवेश में कहा।

'नादिरा! मैं तेरे लिए बेचैन था, तू मिल गई। कसूरवार को सजा मिल गई। अब तुम्हें कोई भी मेरे पहलू से हटा नहीं सकता। हेमचन्द्र को अपनी गलती महसूस करने का मौका दो।'

'आप अफगान बादशाह होकर एक काफिर को इतना बड़ा ओहदा दे चुके हैं। उसका गरूर बढ़ता जा रहा है, आप अपने लिए ख्याल रखें।

'वह इसके लायक है, नादिरा! और मेरी मजबूरी भी है, और मेरी कमजोरी तुम हो।'

नादिरा चुप रह गई। बादशाह की ओर बढ़ती हुई दिल में कह रही थी-बादशाह और वजीर में फर्क डालने के लिए यहीं रहना है, उसे तो फायदा ही है।

हेमचन्द्र ने नादिरा के बारे में सोचना बन्द कर दिया। शादी खां ने सो जाने के लिए कहा। दूर से एक चीख सुनाई पड़ी, अफगान सरदार को किले से फेंक दिया गया।

प्रभात की लाली दिखाई पड़ी। हेमचन्द्र, धर्मपाल, गजराज सिंह और खेमराज के साथ अयोध्या के लिए चल पड़ा। बहादुर खां, हाजी -खां और विजयवाहन शादी खां को साथ देने के लिए रह गए।

हेमचन्द्र अफगान सल्तनत के वजीरे आजम के रूप में गंगातट से सरयू तट की ओर बढ़ा। रास्ते में प्रजा समझती कि तुरकों की फौज आ रही है। वह भयभीत हो जाती, लोग घरों में छिप जाते। बेटीबहुओं को सबसे पहले छिपा देते। खेत-खलिहान को भगवान भरोसे छोड़ देते। परन्तु हेमचन्द्र सबके भय को मिटाने का प्रयत्न करता। गांव के लोगों से मिलता और उन्हें समझाता आगे बढ़ता जाता। परगने और सरकार के हाकिमों को हिदायत देता अयोध्या के पास आ पहुंचा। धर्मपाल ने कहा- 'वजीरे आजम! हम सरयू जी में स्नान कर दर्शन के लिए चलेंगे।

खेमराज ने व्यंग्य किया-'मुगल बादशाह की शैतानियत को देखने के लिए स्नान करना है!'
'राम तो कण-कण में विराजमान हैं! यह तो उनकी जन्मभूमि है। यह हमारा विश्वास है, हमारे विश्वास को कोई तोड़ नहीं सकता, हम स्नान कर जन्मभूमि के दर्शन करेंगे। हेमचन्द्र ने समझाया।

हजारों लोग पवित्र जन्मभूमि के उद्धार के लिए रक्त दे चके हैं, हम भी रक्त देंगे।'- गजराज सिंह बोला।

'अभी किससे युद्ध करना है? अफगान राज है! राज के वजीरे आजम हेमचन्द्र हैं!' धर्मपाल ने प्रश्न कर दिया।

'ठीक कह रहे हो, धर्मपाल! अफगान बादशाह इतने उदार और समदर्शी नहीं बन सके हैं कि विध्वस्त मन्दिर अपनी प्रजा को सौंप दें। मुझे अभी भी यह अधिकार नहीं मिला है।'

'आपको अधिकार पाना है, यह राज हमारी तलवार पर टिका है।' गजराज सिंह ने संकेत दिया।

'विकरमाजीत को सचमुच विकरमाजीत बनना है।' यह खेमराज के शब्द थे।

हेमचन्द्र की दृष्टि सरयू की लहरों पर केन्द्रित हो गयी। सभी स्नान करने लगे थे, अन्त में उसने भी स्नान किया, स्नान के बाद सभी रामजन्मभूमि मंदिर के सामने आ गये। मन्दिर नहीं मंदिर का अवशेष दिखायी पड़ा, लगा कि किसी साधु का क्षत-विक्षत और संज्ञाहीन शरीर है, और उस पर कोई खड़ा होकर कहकहे लगा रहा है। कुछ लोग दूर-दूर खड़े हैं, उनके हाथ जुड़े हुए हैं, आंखों में आंसू हैं। वे आहों के साथ राम का नाम ले रहे हैं।

एक बूढ़ा लाठी टेकता आ गया, अफगान साम्राज्य के वजीरे आजम और सिपहसालार के सामने आने का साहस किया। कोई रोक नहीं सका।

बूढ़े ने गंभीर स्वर में कहा-'हुजूर! आज से 27 वर्ष पहले बाबर ने एक फकीर-हजरत फजल अब्बास की सलाह पर मन्दिर को तोड़ डाला। मन्दिर की ईंटों और पत्थरों से ही इसे बनाया गया है। हर ईंट साक्षी है, आप देख लें। मेरे टूटे हुए पैर और मेरे घर में दो विधवा बहुएं साक्षी हैं। हमने मन्दिर की रक्षा के लिए रक्त बहाया है।

‘रानी जयराज कुमारी ने बाबर के बेटे हुमायूं से युद्ध किया। जीत-- हार का सिलसिला चलता रहा। अन्त में रानी ने वीरगति पायी, संन्यासी महेश्वरानन्द ने संन्यासियों और गांव के साहसी वीरों को लेकर मन्दिर के उद्धार के लिए अपना बलिदान दिया। मेरे दो बेटे मारे गये। मैं अपंग होकर आंसू बहाने के लिए बच गया हूं। सबको बलिदान की कथा सुनाता हूं जिससे बलिदान की परम्परा कायम रहे। मन्दिर का उद्धार हो, मन्दिर जैसा ही अपने देश का भी उद्धार हो।'

हेमचन्द्र को रोमांच हो आया, वह कभी टूटे मन्दिर को देखता और कभी अपंग बूढ़े आदमी को।

साठ

गजराजसिंह के परामर्श पर हेमचन्द्र ने अयोध्या के क्षेत्र में सैनिक भर्ती का निर्णय ले लिया। आसपास के गांव के किसानों और परम्परा से सैनिक परिवारों में उत्साह दिखायी पड़ा, वे सेना में भर्ती के लिए आये, गजराजसिंह तथा खेमराज ने सबका स्वागत किया, सैनिक शक्ति बढ़ी, एक नयी चेतना से सभी जाग खड़े हुए।

हेमचन्द्र अयोध्या से आगे बढ़ा। अब उसे अनुभूति हो रही थी कि वह अपनी धरती मां

की रक्षा के लिए रक्त देने जा रहा है। धरती मां करोड़ों हाथों वाली मां हैं पर वे पीड़ित हैं, आतंकित हैं। इस धरती मां के बेटे जीने के लिए जजिया देते हैं।
जहां-तहां इसकी बेटियां सिसकती रहती हैं। इसके मन्दिर के खंभे अपने भाग्य पर आंसू बहाते रहते हैं, बर्बर मुगल फिर आ गये हैं। इब्राहिम और अहमद खां ने आपस में लड़कर मुगलों के लिए द्वार खोल दिया। ऐयाश बादशाह नादिरा के लिए बेताब है। अब उसे स्वयं विक्रमादित्य के तेज को प्रकट करना है।

कालिंजर के पास जनाब शादीखां से मुलाकात हो गयी, पूरी फौज मालवा की ओर बढ़ चली।

आगरा में सरवर अली इब्राहिम की मदद करता हुआ नाकामयाब हुआ। आगरे के तख्त पर सिकन्दर शाह आ गया। इसलिए वह उसी का मददगार बन गया, जब हुमायूं ने आगरे पर कब्जा किया तो वह थोड़ा परेशान हुआ, वह पठान होकर मुगलों का तरफदार कैसे बने, लेकिन मुल्ला मजहब के नाम पर मुगलों का साथ देने की सलाह दी। वह तैयार हो गया, लेकिन मुगल अफगानों-पठानों से दूर बचते थे। सरवर ने अपने ढंग से उनके दिल को जीतने की कोशिश की। मुगल सरदारों से मेल-जोल कर लिया।

सीकरी की खानकाह मुगलों की तरफदारी कर रही थी। हुमायू दिल्ली में था, उसे कामयाबी मिल रही थी। वह सीकरी आने वाला था, उसे दुआएं चाहिए। वालिद बाबर को दुआएं मिली थीं, उसे भी मिलेंगी।

सरवर नूरी और पार्वती को भूल नहीं सका था, जमाल को भूलने को तैयार नहीं था। हेमचन्द्र को वजीर और सिपहसालार के ओहदे पर देखना नहीं चाहता था। वह सिपाहियों की टुकड़ी के साथ नूरी और पार्वती को खोजने निकल पड़ा।

धर्मपाल ने आगरा और ग्वालियर के बीच जंगल के पास के खंडहर में सबको सुरक्षित कर दिया था, कुछ सैनिक भी साथ में थे। योगीराज शिवनाथ की देख-रेख में सारी व्यवस्था हो रही थी। योगी सबको भययुक्त करने का प्रयत्न करते रहते थे, परन्तु पार्वती भय से मुक्त नहीं हो रही थी, वह भरे कंठ से कह रही थी--'मां! लग रहा है कि वे हमें भूल गये हैं।'

'नहीं, बेटी! वे भूल नहीं सकते। बादशाह आदिलशाह के साथ बहुत दूर चले गये हैं, उधर से लौटने में समय लगेगा।'

'हो सकता है कि उन्हें संवाद ही न मिला हो कि हम आगरा को छोड़कर जंगल में छिा रहे हैं। आगरा में उथल-पुथल है, राज पर राज बदल रहा है।'

'संवाद मिलने में थोड़ा विलम्ब तो होगा ही, पर वे राजपुरुष हैं। दिल्ली-आगरे के सब समाचार मिल रहे होंगे! धर्मपाल भी उधर ही गये हैं।'

'इस उथल-पुथल में धर्मपाल जी का उतनी दूर जाना और उनसे मिलना बड़ा कठिन लग रहा है।'

'ऐसा न सोचो, बेटी! भगवान भला करेंगे। जब वे राजकाज में लग गये हैं तो इस उथ ल-पुथल के बीच ही जीना है। अब तो भय, अधीरता, शुभ-अशुभ से ही हमारा भाग्य बनेगा।'

'क्यों, मां! पारो फिर घबरा उठी है? इसे कैसे समझाया जाये? हम सभी तो हैं, योगी बाबा हैं, इतनी अधीरता!' जमाल ने कहा।
'हां, बेटे! पारो शस्त्रधारी से ब्याह रचा कर भी भय खाती रहती है।' दुर्गा कुंवर ने जवाब दिया।
'योगी बाबा से कहना है कि वे इसे त्रिशूल भांजना सिखा दें जैसे हेमचन्द्र को सिखाया था। भय भूत के समान भाग जायगा।' जमाल ने कहा।
'हम दोनों त्रिशूल लेकर आ जाये तो आप भी डर जायेंगे।' नूरी बोल उठी।
'और मुगलों को देखकर..।'
'हो सकता है कि आप उन्हें इत्र पेश करने लगें।'
'जनाब इलाहीबख्श साहब की मेहरबानी होगी तभी तो इत्र वगैरह का इन्तजाम हो सकेगा।' जमाल ने जवाब दिया।
'उन्होंने तो आपकी जिन्दगी में खुशबू-ही-खुशबू फैला दी है।'
'इसी खुशबू के कारण साले साहब-सरवरअली दिन-रात पीछा कर रहे हैं। तभी से हिफाजत कर रहा हूं।'
'अरे, तुम दोनों का झगड़ा फिर शुरू हो गया! अच्छा हुआ! 'पारो का मन बहल गया। देखो, मुस्करा रही है। मां दुर्गा कुंवर ने स्वयं मुस्कराते हुए कहा।

सभी मुस्करा उठ, वातावरण हल्का हो गया। योगीराज ने आकर बताया कि सेनापति हेमचन्द्र सेना के साथ मालवे की दिशा में गये हैं। चारों तरफ चर्चा है, और सरवर इधर ही आया है पर घबराना नहीं, हम पूर्णतः सुरक्षित हैं।

जमाल ने देखा कि नूरी और पारो के मुखड़े पर भय और अभय दोनों भाव आ-जा रहे हैं।
इन्हें इस द्वन्द्व से मुक्त करना सहज नहीं है। सरवर तो आदमी के वेश में शैतान है। अब वह मुगलों की मदद से तंग करेगा। नूरी और पारो पर बुरी नजर...उसकी आंखें निकाल लेने की इच्छा हो रही है।

सरजू जंगल से फल-फूल और सब्जियां लेकर आया। सबका ध्यान बंट गया।

सरवर ग्वालियर की तरफ जाने लगा। कभी गांवों में पूछताछ करता, लोगों को डराना- धमकाना बढ़ता रहा। कभी जंगलों में भटक आता, कभी टूटे मन्दिरों में झांक लेता, जब उसे मालूम हुआ कि हेमचन्द्र बहुत बड़ी फौज के साथ मालवे की तरफ गया है, उसका गला सूखने लगा, आगे बढ़ने की हिम्मत छूट गयी। प्यास मिटाने के लिए एक पोखर के पास आया। वहीं पर खुदादीन बाजीगर का खेमा था। गजेन्द्रसिंह चन्दा के साथ आया था, सरवर पोखर में उतरकर हाथ-पैर धोया। पानी पिया, जब पोखर के ऊपर आया तो उसकी नजर खुदादीन के खेमे पर पड़ी, वह उधर पहुंच गया, गरजकर बोला-'खेमे में कौन गुस्ताख पड़ा हुआ है? पठान सरदार के सामने आओ।'

खेमे से खुदादीन कांपता हआ निकला, सरवर को सलाम करते हुए कहा- 'हुजूर! मैं खुदादीन बाजीगर हूं, खेल-तमाशा दिखाता हूं।'

'मैं मुगल बादशाह की ओर से आया हूं, और तुम खेमे में पड़े हुए हो?'

'अनजान में गलती हो गयी, खां साहब! क्या दिखमत करूं?'

'तमाशा दिखाओ, और पता लगाकर बताओ कि आगरे से भागे हुए कुछ दुश्मन किधर छिपे हैं ?'

'तमाशा तो दिखा सकता हूं, हुजूर! लेकिन भगोड़ों के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है।'

'इधर कोई नहीं आया है?'
'इधर तो कोई नहीं दिखायी पड़ा है।'
'खेमे में कौन-कौन हैं, सभी बाहर आओ।'
'मैं तो मुसलमान हूं, खां साहब! आपका खैरख्वाह हम पर भी शक-शुबह!'
'सियासत में किसी पर ऐतबार नहीं किया जाता।'
'आपका जैसा हुक्म! लेकिन पर्दे में औरतें हैं। बीवी-बच्चे हैं।'
'सबको बाहर आना है, शाही हुक्म है।'
खुदादीन का सर झुक गया, उसने सबको बाहर आने के लिए कहा। सभी बाहर आये। चन्दा मैना काकी के साथ छिपी-छिपी खड़ी रही। गजेन्द्र सिंह तल वार लिये काकी के आगे खड़ा था जिससे चन्दा दिखायी नहीं पड़ सके, लेकिन सरवर की नजर तो तेज थी। वह कड़क कर बोल उहा-'नटों-बाजीगरों के बीच तलवार लिये कौन है? ये औरतें कौन हैं?' गजेन्द्रसिंह आवेश में आ गया, उसने कहा-'मैं पास के गांव का हूं। खुदादीन काका का शागिर्द हूं, बाजीगरी सीख रहा हूं। यह काकी हैं, और यह मेरी घरवाली है।'

'घरवाली बाजीगरों के साथ है तो पर्दा कैसा? पर्दा हटाओ।'
'यह शाही हुक्म नहीं हो सकता, खां साहब!'
'दोनों को कैद करो। मेरे सामने ऐसी जुर्रत!'

गजेन्द्रसिंह ने तलवार निकाल ली। खुदादीन आरजू-मिन्नत करता रहा, लेकिन सरवर के सिपाहियों ने गजेन्द्रसिंह को घेर लिया। चन्दा का रो-रोआं कांप उठा। गजेन्द्रसिंह ने दो सिपाहियों की तलवारों को गिरा दिया। गुस्से में सरवर सामने आया, कुछ ही क्षणों में उसे समझ में आ गया कि तलवार में पानी है. वह होशियार हो गया। उसके और सिपाही आ गये। खुद पीछे हट गया, गजेन्द्र घिर गया।
तलवार से मुकाबला करता रहा, घायल हो गया पर पीछे नहीं हटा। मैना काकी चीख पड़ी, चन्दा के आंसू बह चले।

गजेन्द्र और चन्दा दोनों कैद कर लिये गये।

इकसठ

सरवर अली गजेन्द्र और चन्दा को पकड़कर आगरा की तरफ बढ़ जाना चाहता था। खुदादीन गिड़गिड़ा रहा था, सरवर उस पर गुस्सा उड़ेल रहा था। खुदादीन के दल का एक नया नट भागता हुआ पास के गांव में पहुंच गया। गांव के लोगों को जानकारी मिली, शस्त्रधारी नौजवानों ने गजेन्द्र और चन्दा की रक्षा के लिए कुछ करने का प्रण किया। वे लाठी-भाला सम्भाले आ गए, सरवर बढ़ चला था। वे घेर लिये गए, पास के खंडहर में छिपे योगी शिवनाथ ने भी अपने शस्त्रधारी रक्षकों को भेज दिया। सरवर की टुकड़ी चारों ओर से घिर गई, लाठीभालों से मुकाबला शुरू हो गया।

ग्वालियर की ओर से हेमचन्द्र की विजयवाहिनी जयघोष के साथ लौट रही थी। जयघोष का स्वर गूंज रहा था, आकाश में धूल उड़ रही थी। सरवर के कानों में 'हेमचन्द्र जिन्दाबाद' के शब्द पड़े थे। वह समझ गया कि अब वह नहीं बच सकेगा। वह अपने सिपाहियों को लडता छोड़कर धीरे-से खिसक गया, उसके कुछ सिपाही मारे गए, कुछ घायल हुए, कुछ भाग गए। गजेन्द्र सिंह और चन्दा-दोनों मुक्त हो गए।

योगी शिवनाथ खंडहर से बाहर आये। हेमचन्द्र की विशालवाहिनी आ गई, पोखर के पास भीड़ देखी, पास में ही खंडहर था, उसे कुछ आभास मिला। गांव के लोग और योगी के रक्षक हेमचन्द्र का स्वागत कर रहे थे। हेमचन्द्र हाथी से उतर पड़ा, योगीराज दिखाई पड़े, उसने झुककर प्रणाम किया। योगी ने आशीष दी, और सरवर के उपद्रव के सम्बन्ध में बताया। उसकी कैद से मुक्त गजेन्द्र सिंह और चन्दा की ओर संकेत किया, विजयी सेना रुक गई। हेमचन्द्र उन दोनों को लेकर योगी जी के साथ खंडहर के भीतर पहुंचा। पार्वती पैरों पर झुक आई, आंसुओं से पैर धुल गए। मां दुर्गा कुंवर की आंखों में हर्ष के आंसू बह रहे थे। जमाल और नूरी ने फूलों का गुच्छा प्रदान किया, सारा वातावरण हर्षाकुल हो उठा।

गजेन्द्र चन्दा के साथ एक कोने में खड़ा था। दोनों को यह दृश्य बड़ा सुहावना लग रहा था। पर वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। हेमचन्द्र की दृष्टि उन दोनों पर गई, फिर अपने परिवार को देखा। सरवर के उपद्रव की कल्पना की। वह बोल उठा—'मां! सरवर आप सबको पकड़ने आया था, पर सामने ये दिखाई पड़ गए। ये दोनों पकड़ में आ गए। गांव के लोगों के साहस के कारण इनकी रक्षा हो गई, यही साहस आवश्यक है। तभी ऐसे शैतानों की हरकतों पर रोक लग सकेगी।'

'हां, बेटे! सरवर की शैतानी से ये बाल-बाल बच गए।'- दुर्गा कुंवर ने भाव-विह्वल होकर कहा।

'क्यों भाई! अपना नाम-गांव तो बताओ। तुम कौन हो?'

'जी, मैं...गजेन्द्र सिंह हूं, पोखर पार के गांव का निवासी हूं। यह मेरी बहू है।' गजेन्द्र ने बताया।

'गजेन्द्र सिंह' शब्द ने हेमचन्द्र को चौंका दिया। धर्मपाल साथ में था। उसके संकेत पर वह बाहर चला गया, गजेन्द्र का हृदय धड़क रहा था। क्या बड़े भैया आ सकते हैं? कैसा व्यवहार होगा? धैर्य रखना है, थोड़ा साहस दिखाना है।

हेमचन्द्र ने पूछा-'क्या सरवर ने गांव में उपद्रव किया था?'
'जी...नहीं! हम लोग खुदादीन काका से मिलने आए थे। वे नटबाजीगर हैं, उनके साथ रहना हुआ है। उसी समय वह पठान सरदार पोखर पर आ पहुंचा, और खेमे को देखकर उसने पूछताछ की। फिर कैद कर लिया।

'शस्त्रधारी नौजवान समय पर आ गए?'
'जी, हां!' गजेन्द्र ने उत्तर दिया।
धर्मपाल के साथ गजराज सिंह आ गया, वह गजेन्द्र को देखते ही बोल उठा-'आखिर तुम मिल ही गए इस नटनी के साथ!'
गजेन्द्र का सर झुक गया।
'इसने कुल-परिवार को इस नटनी के लिए छोड़ दिया, और सड़कों पर नाच-गा रहा है।'- गजराज ने रोष में कहा।
‘ऐसी बात नहीं है, भैया!' गजेन्द्र ने मन्द स्वर में उत्तर दिया।
'तो क्या यह स्त्री कुलकन्या है?
'जी हां, मैं कुलकन्या हूं।'-चन्दा के स्वर फूट पड़े।
सभी चकित हो गए।
'नट के साथ कुलकन्या कैसे और कहां से आ गई? यह छल मेरे साथ नहीं चलेगा।'

'तो आप सभी सुन लें। मैं रायसेन के दुर्गपति पूरनमल की राजकुमारी चन्द्रावती हूं। अफगान बादशाह शेरशाह ने संधि के बाद भी किले को घेरकर सबको धोखे से मार डाला, और मुझे नट के हाथ नाचने के लिए सौंप दिया। मेरे दो चचेरे भाइयों को नपुंसक बनाकर दिल्ली में भेज दिया। मेरा सारा परिवार खत्म हो चुका है-बादशाह की बेरहमी से। मैं किसे अपना दुखड़ा सुनाती! कौन सुनता! खुदादीन काका ने मेरी प्रतिष्ठा बचाई है। मैना काकी ने अपना समझकर पाला है। आज तक मैंने किसी को अपना परिचय नहीं दिया, केवल काका-काकी जानते हैं। आप लोग जो समझें।'-यह कहकर चन्दा ऊंची सांसें लेने लगी।

सभी चन्दा की ओर देख रहे थे। गजेन्द्र सिंह आश्चर्य में था। गजराज सिंह कुछ बोलने-पूछने में असमर्थ रहा। हेमचन्द्र कभी चन्दा को देखता और कभी बादशाह शेरशाह की याद करता। वह भीतर से बेचैन हो उठा। सारे वातावरण में आश्चर्य, पीड़ा और रोष की लहरें दौड़ पड़ों। सबके मन में एक ही भाव उठा कि रायसेन की राजकुमारी चन्द्रावती के साथ इतना अत्याचार! इतना अपमान! क्या इस देश की बेटी-बहू की यही नियति है?

'राजकुमारी चन्द्रावती! हम सबको क्षमा कर दो। तुमने बहुत दुःख सहा है।'- हेमचन्द्र ने विनम्र स्वर में कहा।
'अफगान सेनापति जी! अब मैं चन्दा हूं। बांसुरी वाले की बहू हूं। इसी रूप में मुझे स्थान मिले, और आपकी तलवार बहू-बेटियों की रक्षा करे। तुर्कों के जुल्म को

बढ़ावा न दे।'
'चन्दा...चन्दा! तुम्हें कुल-परिवार और गांव-सभी पूरी प्रतिष्ठा देंगे।...क्यों गजराज सिंह!'

'जी, हां! अनजान में गलती हो गई। पूरी प्रतिष्ठा मिलेगी, मैं वचन देता हूं।'- गजराज सिंह ने उत्तर दिया।

'और मैं संकल्प कर चुका हूं कि मेरी तलवार बहू-बेटियों की रक्षा करेगी।' हेमचन्द्र ने ऊंचे स्वर में कहा।

दुर्गा कुंवर, पार्वती और नूरी ने चन्दा को साथ ले लिया। चन्दा सबके स्नेह को पाकर विह्वल हो गई। गजेन्द्र अपने भाग्य पर इठला रहा था।

हेमचन्द्र खंडहर के बाहर चला गया। मन अशांत था, पेड़-पौधों के बीच खड़ा हो गया। सामने टूटा हुआ मन्दिर था, ऊपर सूना-सूना आकाश था। वह सोचने लगा-तुक-अफगानों के अत्याचार को बढ़ावा न दें। यह चन्दा का व्यंग्य है या अनुरोध? मैंने अत्याचार को रोकने के लिए संकल्प किया है। गांव उजड़ा, व्यापार उजड़ा, पारो की मृत्यु हुई। संकल्प कर तलवार लिये शहर-दर-शहर भटक रहा हूं। आगरे में सोचा कि यदि अफगान, हिन्दी मुसलमान और हिन्दू मिलकर खड़े हो जाये तो विदेशी मुगल नहीं आ सकेंगे। इनके अत्याचार को पंजाब ने भोगा है। रायसेन, दिल्ली और अयोध्या-सबने सहा है। चन्दा की पीड़ा हृदय को टुकड़े-टुकड़े कर रही है, इसने कितना सहा है! शेरशाह ने भी इतना जुल्म किया? अपनी धरती मां कितना, कब तक सहती रहेगी? वह विक्रमादित्य कहला रहा है। अच्छा लग रहा है। क्या वह प्रजा को न्याय दिला सकेगा? हमारा ऐयाश बादशाह खाट पर पड़ा है, वह उस ऐयाश के लिए खून बहा रहा है। नहीं, वह अपने देश के लिए बहा रहा है। क्या सभी इसे मानेंगे? उसे और कुछ सोचना होगा, उसे और कुछ करना होगा। प्रजा पर अत्याचार न हो। बहूबेटियों की प्रतिष्ठा पर प्रहार न हो। जजिया कर से प्रजा मुक्त हो। कोई दूसरे दर्जे की रिआया न बने। इसके लिए तलवार उठे! पारो की राख और चन्दा की पीड़ा-उसे रास्ता दिखाएं!

उसके मन को थोड़ी शान्ति मिली। वह धीरे-धीरे सबके सामने आया, सभी उसकी गंभीर मुद्रा को देख रहे थे, कोई कुछ बोल न सका। _सालारे आजम शादी खां साहब आए। महिलाएं ओट में चली गयीं। शादी खां ने आकर खबर दी कि दिल्ली में हुमायूं का इन्तकाल हो चुका है। सुना है कि शेरमंडल की सीढ़ियों से फिसल कर गिर जाने की वजह से मौत हुई है। मुगल परेशान हैं, उन्होंने गुरुदासपुर के कलानौर में अकबर की तख्तनशीनी की रस्म पूरी कर दी है। यह मौका है, हम न चूकें।

'लेकिन बादशाह तो चुनार के किले में पड़े हैं।'- हेमचन्द्र ने प्रश्न कर दिया।

'अगर उनके लिए रुका जाए तो हिन्दुस्तान मुगलों के कब्जे में चला जाएगा, हेमचन्द्र! तुमने इतनी बड़ी फौज तैयार की है। फतह पर फतह पायी है, तुम पर मुल्क को भरोसा हो गया है, हेमचन्द्र!'

- शादी खां ने हृदय से अनुरोध किया।

'आपकी दुआओं को पाकर मैं आगे बढ़ता रहा हूं। अब भयानक समय आ गया है, निर्णय आपको करना है।'
'तुम्हें आगे बढ़ना है, मैं साथ हूं। अफगानों-पठानों की फौज तेरे साथ है।'
'मैं आपका हुक्म मानता रहा हूं, फिर मानूंगा। इस युद्ध के लिए और भी मदद चाहिए।' 'जरूर ली जाये।'

'धर्मपाल जयपुर, जोधपुर, बूंदी आदि राज्यों के राजाओं से अनुरोध करे कि विदेशी मुगलों से अपनी धरती मां को बचाने के लिए वे हेमचन्द्र की मदद करें।

बिल्कुल सही राय है, हेमचन्द्र! धर्मपाल को उधर जाना ही चाहिए, और तुम मेरे साथ फौज से आखिरी जंग के लिए अर्ज करो।'

हेमचन्द्र ने दोनों हाथ जोड़कर इस सलाह को कबूल कर लिया।

बासठ

आप सबकी एकजुट ताकत के सहारे हमने बंगाल से मालवा तक के बागियों को रास्ते पर ला दिया है। अफगान राज का झंडा फहरा रहा है। आप जानते हैं कि अफगान सरदारों की आपसी फूट से मुगलों को मौका मिल गया है। वे दिल्ली तक आ चुके हैं, उधर बादशाह आदिलशाह एक बड़ी बीमारी की वजह से चुनार के किले में पड़े हुए हैं। वे उधर नहीं आ सकते, उनका दिया हुआ झंडा साथ में है। सिर्फ आप हैं और आपके साथ मैं हूं।

'अफगानों, हिन्दी मुसलमानों और हिन्दू सैनिकों की वीरता के कारण हम जीत का झंडा लहराते बढ़ रहे हैं। तीनों की एकता नयी ताकत बनकर आई है। मालिक की मेहरबानी है और प्रजा भी खुश है। अब आगरा की ओर बढ़ना है, मुगलों से मुकाबला है। आप चाहेंगे तो सालारे-आजम शादी खां साहब के करम से बढ़ेंगे। मैं भी आप सबके साथ चल पड़गा, खून की आखिरी बूंद तक लड़गा, और अपनी मिट्टी में मिल जाऊंगा।'–हेमचन्द्र ने कथन समाप्त कर सबकी ओर स्नेह से देखा और हाथ जोड़ दिए।

शादी खां ने खड़े होकर हेमचन्द्र का साथ देने की कसम खाई। खुदा को हाजिर नाजिर किया।

हिन्दी मुसलमानों की ओर से 'हेमचन्द्र जिन्दाबाद' की आवाज आई। अफगानों के भी हाथ उठ गए, नारे गूंजने लगे। गजराज सिंह, विजयवाहन और खेमराज ने जयघोष किया।
शादी खां ने अपना एक हाथ हेमचन्द्र की पीठ पर रखा, दूसरे हाथ से नंगी तलवार को आसमान की ओर उठा दिया।

हेमचन्द्र के सेनापतित्व में फौज आगरे की ओर बढ़ चली। योगी शिवनाथ, गजेन्द्र

सिंह, जमाल मोहन और सरजू के साथ महिलाएं वहीं रह गयीं, अभी उधर जाना सम्भव नहीं था।

हाथी, घोड़े, तोपखाने और पैदल सिपाहियों के साथ फौज आगे बढ़ने लगी।

फौज ने देखा कि रास्ते में गांवों और हाटों की प्रजा हेमचन्द्र का जयघोष कर रही है, सैनिकों का स्वागत कर रही है। अफगान सिपाही और सरदार रिआया के रुख में इस बदल को देख ताज्जुब कर रहे थे। खुश हो रहे थे, लेकिन एकाध के दिलों में ये भी ख्याल आता था कि लोग बादशाह का नाम भूल रहे हैं। शादी खां साहब भी उनका नाम नहीं लेते, लगता है कि उनसे सभी नाउम्मीद हो चुके हैं। बस, अफगान परचम के साये में बढ़ना है, मुगलों से जूझना है।

हमायूं ने अपना दारुल सल्तनत दिल्ली में बनाया था, तो भी आगरे की इज्जत बनी हई थी। मुगल सरदार सिकन्दर खां उजबेक आगरे की देखभाल कर रहा था। अफगानों का खौफ मिटाकर आगरे के किले में रह रहा था। आगरा से लेकर लाहौर तक अफगान बादशाह की ऐयाशी की बात फैल गई थी, इसलिए उनका भी खौफ नहीं रह गया था, लेकिन मुगल हेमचन्द्र के नाम से घबरा जाते थे।

सिकन्दर खां उजबेक को खबर मिली कि हेमचन्द्र मालवे को जीतकर आगरे की ओर आ रहा है। सरवर ने ही खबर दी, वह कांप उठा, लेकिन सरवर ने हेमचन्द्र से मुकाबले के लिए उकसाया। खुद पठानों की ओर से साथ देने की कसम खायी। सिकन्दर खां को मालूम हुआ कि हेमचन्द्र के लिए रिआया में खुशी है और छोटी-सी मुगल फौज में घबराहट है। इसलिए वह कुछ तय नहीं कर सका, इसी परेशानी में रातें कटने लगीं।

अचानक खबरनवीस ने बताया कि हेमचन्द्र आगरा की सरहद में दाखिल हो चुका है। अफगानों, हिन्दी मुसलमानों और हिन्दुओं की बहुत बड़ी फौज साथ में है। मुगल फौज भागने को तैयार हो गई। सिकन्दर ने तय कर लिया कि वह इस घबराई फौज से मुकाबला नहीं कर सकता। दिल्ली में तारदी बेग के साथ मोर्चा लगाना ठीक रहेगा। यह सोचकर वह अपनी फौज के साथ दिल्ली की ओर बढ़ गया। आगरे को खाली कर दिया, सरवर हाथ मलता रह गया।

हेमचन्द्र की फौज आगरे में प्रवेश कर गई। प्रजा ने हेमचन्द्र का स्वागत किया। सरवर हरखलाल के निवास में छिप गया। हरखलाल स्वयं भागने की तैयारी करने लगा।

बिना युद्ध के आगरा पर हेमचन्द्र का अधिकार हो गया। हेमचन्द्र की जय' के शब्द सारे नगर में गूंज रहे थे। हेमचन्द्र गंभीर बना रहा। शादी खां ने रिआया के जजबात का एहसास कर लिया।

हेमचन्द्र ने कहा-'हमारे कदम नहीं रुकें, अब हम दिल्ली की ओर चले।'

'जरूर बेटे! आगे बढ़ो।'

फौज तो खुश थी कि बिना लड़े जीत हो गई। फौज ने सिकन्दर खां का पीछा किया, वह भागता जा रहा था। उसे लगा कि एक बार तो तलवार टकराये, लोग क्या कहेंगे?

उसने आगरे के बाहर मोर्चे-बन्दी की, मुगल झंडे को ऊंचा किया। हेमचन्द्र ने फौज की एक टुकड़ी भेज दी, मुगल सरदार सिकन्दर खां उजबेक टिक नहीं सका। उसकी आधी फौज मारी गई और वह जान बचाकर भागा।

दिल्ली में तारदीबेग मुगल बादशाहत की ओर से हुकूमत कर रहा था। चौदह साल का अकबर जालन्धर में था, मुगल सेना अफगान सिकन्दरशाह सूर से निपटने के लिए शिवालिक की पहाड़ियों में चक्कर काट रही थी। पर दिल्ली में मुगल फौज कम नहीं थी। तारदीबेग ने किले में सरदारों के साथ बैठकर हालात पर मशविरा किया। सब पर हेमचन्द्र का आतंक छाया हुआ था। कोई कह रहा था कि बादशाह के पास खबर भेजकर इन्तजार करना चाहिए। किसी का ख्याल था कि अली कुली खां शैबानी को जल्द आ जाना चाहिए, तब तक हम किले में इन्तजार करें। किसी ने सलाह दी कि किले में रहकर रात में हेमू की फौज पर छापा मारें, नुकसान पहुंचाते हुए वक्त ले लें। चौथे ने सलाह दी कि मजहब के नाम पर अफगानों को फोड़ना चाहिए।

तारदीबेग इन सभी सलाहों पर गौर करने लगा। एक बार तय किया कि वह जालन्धर खबर भेजकर इन्तजार करे, लेकिन जालन्धर में बादशाह अकबर के साथ बैरम खां है। वह उससे नाखुश है। बादशाह बैरम खां के मुताबिक चलते हैं। बैरम खां से क्या मदद मिलेगी? इधर हेमू की फौज बढ़ी चली आ रही है, इससे मुकाबला मुश्किल है। लेकिन वह तुर्क है, हेमू से डरना नहीं चाहिए, उसे डट जाना चाहिए। किसी हालत में खैरियत नहीं है, वह क्या करे!

दूसरे दिन खबर मिल गयी कि हेमू की फौज दिल्ली की ओर बढ़ती आ रही है, अब वह न इन्तजार कर सकता था और न हट सकता था। उसने तुगलकाबाद के मैदान में मुकाबला करने का फैसला कर लिया।

तुगलकाबाद के मैदान में दोनों फौजें आमने-सामने आ गयीं, पहले तोपों के गोले ने जंग की शुरुआत की। फिर बरछे और भाले चमकने लगे। मुगल फौज का हरावल हेमचन्द्र की सेना के दाहिने हिस्से पर टूट पड़ा, वह हिस्सा कुछ कमजोर था। मुगलों के हमले से पठान सिपाही हटने लगे। मुगल बढ़े, वे भागने लगे। मुगलों ने पीछा किया, वे होडलपलवल तक जा पहुंचे। अपनी पहली कामयाबी पर तारदीबेग बहत खश था. लेकिन वह हेमचन्द्र की सेना के मध्यभाग पर आक्रमण नहीं कर सका। वह हाथी पर सवार हेमचन्द्र को देखकर साहस जुटा नहीं पा रहा था। हेमचन्द्र दाहिने भाग की कमजोरी को देख परेशान हो रहा था। शीघ्र ही उसने रणनीति निश्चित कर ली। उसने बहादुर खां, गजराजसिंह और विजय वाहन को इशारा किया। तारदीबेग दो तरफ से घेर लिया गया, उस पर दोनों तरफ से प्रहार हुए। तारदीबेग के पैर उखड़ गये।

उसे भागते देखकर मुगल फौज भाग खड़ी हुई। हेमचंद्र ने भागती मुगल फौज का पीछा किया। मुगल फौज भागती चली गयी। फौज की छावनी पर कब्जा हो गया। होडलपलवल से लौटती मुगल टुकड़ी अपनी हार देखकर अचंभित रह गयी। हेमचन्द्र ने इन्हें भी घेर

लिया, सभी बन्दी बना लिये गये।

विजयी हेमचन्द्र ने जयघोष के मध्य दिल्ली में प्रवेश किया। विजय सेना 'हेमचन्द्र जिन्दाबाद' का घोष करती हुई प्रवेश कर गयी। दिल्ली की प्रजा ने 'राजा हेमचन्द्र की जय' के उत्साहपूर्ण नारों से विजयवाहिनी का स्वागत किया। फौज के कुछ सिपाही और सरदार 'राजा' शब्द पर चौंक गए। सालारे आजम शादी खां को भी थोड़ा अजीब लगा, लेकिन उन्होंने देखा, सुना और महसूस किया कि दिल्ली का सारा माहौल हेमचन्द्र को अपना रहा है। सभी आदिलशाह को भूल गये हैं, वे तो चुनार के किले में नादिरा का नाच देख रहे होंगे। यहां हेमचन्द्र को रिआया ने अपना लिया है, यह तो एक करिश्मा है हेमचन्द्र का, तकदीर का या मालिक का। वक्त किसे उछाल देगा, कौन बताये। अफगान फौज, अफगान सल्तनत का परचम और राजा हेमचन्द्र की जय-कमाल है!

शादी खां ने देखा कि हेमचन्द्र उनके पैरों पर झुक रहा है, उन्होंने उठाकर हृदय से लगा लिया, और कहा -'हेमचन्द्र! सचमुच तुम विक्रमाजीत हो। रिआया तुमसे बहुत खुश है! लगता है कि तेरा हिन्दुस्तान तेरा ही इन्तजार कर रहा है।'

'यह तो हम सबका देश है, चाचा! यह धरती मादरेवतन है।'

'ठीक कहते हो, बेटे! इसकी हिफाजत, इज्जत और खुशहाली के लिए तलवार उठाना ही दिलेरी और बहादुरी है। तुम इस कसौटी पर खरे उतर रहे हो, हेमचन्द्र! अब फतहयाब हेमचन्द्र को किले में चलना है।'

'आपका जैसा हुक्म हो।' हेमचन्द्र ने जवाब दिया।

तिरेसठ

हाजी खां और सईदी खां कह रहे थे—'यह क्या सुनायी पड़ रहा है, सालारेआजम! वजीर और सिपहसालार राजा हो गया। अफगान सल्तनत का हुक्मरान एक काफिर!'

'हेमचन्द्र की तलवार में आब है, बंगाल से दिल्ली तक की जीत हेमचन्द्र की जीत है, रिआया उसके साथ है। उसकी आवाज को कौन रोके! वक्त का तकाजा है कि अफगान सल्तनत का हुक्मरान हेम चन्द्र हो। कोई अफगान सरदार दिखायी पड़ रहा है क्या?' शादी खां ने पूछा।

'आप ठीक कह रहे हैं लेकिन...।'
'इस उफान को कौन रोकेगा? बीमार आदिलशाह का कौन
इन्तजार करेगा? हेमचन्द्र की तलवार, उसकी फौज और रिआया -सब तो उसके साथ हैं। इसको कबूल करना ही होगा, मैं तो अपने शागिर्द पर निछावर हूं।'

शादी खां का यह जवाब सुनकर हाजी खां और सईदी खां किले की दीवार की ओर देखने लगे। उन्होंने महसूस किया कि दीवार की हर ईंट से 'राजा हेमचन्द्र की जय' के शब्द प्रतिध्वनित हो रहे हैं। बाहर नौबत बज रही हैं और शहनाई का मीठा स्वर फिजां में फैल रहा है।

उन्होंने ऊपर देखा कि किले के ऊपर अफगान हुकूमत के झण्डे फहरा रहे हैं, उनके दिल को तसल्ली मिली।

एक घड़ी के बाद राजभवन के भीतर शहनाई का स्वर सबको आकृष्ट करने लगा। दरबार में सारे सेनानी और सरदार एकत्र हो गये। सिंहासन खाली था, आसपास शादी खां और हेमचन्द्र आकर बैठ गये।

बहादुर खां ने उठकर कहा–'विक्रमादित्य हेमचन्द्र ने तलवार के बल से आगरा और दिल्ली को जीता है। मुगलों को हराया है, अभी आखिरी लड़ाई बाकी है। हम विदेशी मुगलों को अपने देश से निकाल कर बाहर करेंगे, अपने देश में अपना राज हो, यह सिंहासन विक्रमादित्य को बुला रहा है। जनाब शादी खां साहब हेमचन्द्र की ताजपोशी के लिए आगे आयें।

गजराजसिंह ने शादी खां के हाथों में स्वर्ण मुकुट दिया। शादी खां ने हेमचन्द्र को सिंहासन पर बैठने का इसरार किया। शंख बजने लगे, बाहर दुन्दुभि बजने लगी। हेमचन्द्र ने सिंहासन को सुशोभित किया और फिर शीश पर स्वर्ण मुकुट जगमगा उठा।
चारों ओर से फूल बरस पड़े।

विजय वाहन, खेमराज, हाजी खां और सईदी खां ने फूलों की मालाओं को राजा हेमचन्द्र के गले में डालकर अपनी मंगल कामना प्रकट की। दिल्ली के वयोवृद्ध पुरोहित ने हेमू के उच्च भाल पर राजतिलक अंकित कर दिया।

हेमचन्द्र ने घोषणा की-'दिल्ली के किले पर फहराते इस झंडे के साथ हम नंगी तलवार लिये एक साथ चले थे। हमने एक साथ खून दिया है। आज हम इस झंडे के नीचे अपने वतन की हिफाजत की शपथ लेते हैं। अफगान, हिन्दी मुसलमान और हिन्दुओं की एकता के बल पर हमने दुश्मनों को मात दी है, इसी ताकत के सहारे हम विदेशी मुगलों से आखिरी लड़ाई लड़ेंगे। हम सब मिलकर हिन्दुस्तान को नया बनायेंगे। एक नया इतिहास लिखेंगे।'

सबने राजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य के जयघोष से इस घोषणा का स्वागत किया।

सारे सेनानियों का नये वस्त्र, फूलमाला और सनद (प्रमाण पत्र) से सम्मान किया गया।

दरबार का समारोह समाप्त हुआ, परन्तु सारे नगर में समारोह चलता रहा। संध्या में दीपावली का दृश्य दीख पड़ा। राजा हेमचन्द्र सारे नगर में घूम-घूमकर प्रजा को बधाई दे रहे थे। प्रजा की उमंग उमड़ चली, राजा हेमचन्द्र सैनिक छावनी में पहुंच

गए। घायल सैनिकों की सेवा में शामिल हो गये। सबने अहसास किया कि उनका सिपहसालार उनके साथ है, वहां भी जयघोष गूंजने लगा।

वृन्दावन से चौधरी नरवाहन राधावल्लभ जी का प्रसाद और गोस्वामी हितहरिवंश तथा पिताश्री पूरनदास का आशीर्वाद लिये आ गये। हेमचन्द्र ने सहर्ष ग्रहण किया, साथ ही नरवाहन जी से राजकाज में सहयोग देने का अनुरोध किया। नरवाहन जी ने हर तरह से सहयोग देने का वचन दिया।

योगी शिवनाथ के साथ दुर्गा कुंवर, पार्वती, नूरी, और चन्दा आ गयीं। गजेन्द्र, जमाल मोहन और सरयू साथ में ही थे। शहनाई के संगीत के साथ राजभवन ने इन सबका स्वागत किया।

राजा हेमचन्द्र ने सबके समक्ष कहा-'अब अपने देश में पारो आत्महत्या नहीं करेगी, पार्वती का अपहरण नहीं होगा, गांव और खेत नहीं उजड़ेंगे, हम शांतिपूर्ण नये जीवन की रचना करेंगे।'

मां दुर्गा कुंवर आंखें बन्द कर राधावल्लभ जी का स्मरण कर रही थीं।

पारो-पार्वती अपने पति को देखती और सोचती-ये दिल्ली के राजा हैं। वह रानी है! इनके आत्म-विश्वास और तलवार ने क्या से क्या कर दिया! पारो की राख और गांव के विध्वंस से इनके मन में एक विकलता पैदा हुई। विकलता ने संकल्प कराया, संकल्प ने तलवार संभालने को कहा और वे तलवार उठाकर निर्भीकतापूर्वक लड़ते रहे। इनका संकल्प कालगति से एक बिन्दु पर मिलकर आगे बढ़ गया। आज यहां तक आ पहुंचा है।

चन्दा अपने जीवन के उतार-चढ़ाव पर विचार कर रही थी। क्षण क्षण रोमांच हो रहा था। उनकी बांसरी ने शन्य में संगीत भर दिया। बाद में हेमचन्द्र की तलवार ने संगीत को सुरक्षा दे दी, वह राजभवन में है। राजभवन से सड़क पर आयी और फिर राजभवन में, पर वह खुदादीन काका और मैना काकी को भूल नहीं सकती, उन्हें छोड़ नहीं सकती।

नूरी सोच रही थी कि अत्तार की बेटी ने सेठ से शादी कर ली। सरवर की हरकतें जारी हुईं। इस खौफनाक उथल-पुथल के बाद शाहीमहल देखने को मिला। मेहमान राजा बन गया।

हेमचन्द्र पूछ बैठे-'क्या सोच रही हैं, नूरी भाभी!'

'जी....सोच रही हूं कि मेहमान तो राजा होता ही है। सचमुच राजा मेहमान मिल गया। अब मैं किसी से नहीं डरूंगी।'
राजा ने मुस्कराकर उत्तर दिया-'भाभी जान! आप भाई साहब से भी कहां डरती रही हैं जो आज ही डरेंगी?'
'ये तो प्यार की मूरत हैं। इनसे क्या डरना, प्यार और डर दोनों जुदा-जुदा हैं।' 'मुझसे प्यार है या डर?'
नूरी क्षणभर के लिए चुप रह गयी, सभी हंस पड़े। नूरी भी मुस्करा उठी, और कहा–'मेहमान से प्यार और राजा से डर...।'

'नहीं भाभी! मुझे आप सबसे प्यार मिला है। प्रजा से भी प्यार मिल रहा है। तभी तो हेमचन्द्र के संकल्प ने सबके प्यार की ताकत से मुगलों को हराया है, दुश्मन से भी नहीं डरना है।'

सबने सर हिलाकर इस बात का समर्थन किया। हेमचन्द्र ने देखा कि खुदादीन काका आ गये हैं, वे कुछ कहना चाहते हैं। संकेत पाकर काका ने कहा- 'महाराज, आपका राज फले- फूले। रिआया को प्यार मिले। धरम-मजहब का भेदभाव न हो। ऊंच-नीच का भेदभाव खत्म हो, और गरीबों का ख्याल रहे।'

'काका! आप तो हिन्दी मुसलमान हैं। आप जानते हैं कि इस देश में धर्म के नाम पर भेदभाव नहीं होता, ऊंच-नीच का भेदभाव अधिक है, इसे मिटाना है। साधु-संत इसे मिटाने की कोशिश कर रहे हैं, हम भी कोशिश करेंगे। राजा तो गरीबों के लिए होना चाहिए। यह मैं नहीं भूलूंगा।'

काका को सन्तोष हुआ, सबको अच्छा लगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल हेमचन्द्र ने सभी प्रमुख सेनानियों की सभा बुलायी, शादी खां, हाजी खां, सईदी खां, बहादुर खां, गजराजसिंह, गजेन्द्रसिंह, विजय वाहन एवं खेमराज सम्मिलित हुए। साथ ही योगी शिवनाथ, चौधरी नरवाहन और जमाल मोहन भी शामिल हुए। दो समस्याओं पर विचार करना था। नये राज की मजबूती और मुगलों से युद्ध इन दोनों पर विचार-विमर्श आरम्भ हुआ।

शादी खां ने सुझाव दिया- 'मुगल सर पर हैं। पहले उनसे निपटने की तैयारी की जाये।

बहादुर खां ने कहा - 'नये शस्त्रों का जल्द इन्तजाम हो। शस्त्रों का अभ्यास हो, अन्तिम लड़ाई के लिए पूरी तैयारी की जाए।'

गजराज सिंह ने बताया- 'गुप्तचरों का जाल बिछा दिया जाए। अपनी शक्ति का संवाद लाहौर तक फैल जाय। दिल्ली-आगरे में शत्रु के भेदियों पर पूरी नजर रहे।' चौधरी नरवाहन ने अनुमति लेकर अपना विचार रखा।

'मुगलों के मददगारों को हटाकर वफादार अफगानों, हिन्दी मुसल-
मानों और हिन्दुओं को बहाल किया जाय। आप तो सबको जानते हैं। राज की मजबूती के लिए ढिलाई न हो।'

अन्त में योगी शिवनाथ ने परामर्श दिया-'जब तक अपने देश में मुगल हैं तब तक न कोई उत्सव हो और न राजभवन का मोह। हमारे महाराज विक्रमादित्य के समान प्रजा और सैनिकों के स्नेह से आगे बढ़ें, शत्रुओं को नष्ट करें।

राजा हेमचन्द्र ने विनम्र स्वर में कहा—'आप सबके सुझाव के अनुसार कार्य होगा। शेरशाह की अच्छी परम्परा आगे बढ़ रही है, सबके स्नेहपूर्ण सहयोग से एक नये युग का शुभारम्भ हो रहा है।

योगी शिवनाथ ने यशस्वी होने की मंगल कामना की। गजेन्द्र ने अपने लिए जिम्मेवारी चाही। हेमचन्द्र ने विचार-विमर्श कर किले का भार सौंप दिया।

चौंसठ

पार्वती देख रही थी कि पूजा के समय महाराज का ध्यान टिक नहीं पा रहा है। खिले हुए फूल हैं, दीप जल रहा है। अगर की सुगन्ध फैल रही है, अष्ट गन्धयुक्त धूप है। फिर क्यों इतने विकल हैं? किले में चारों तरफ सैनिकों का युद्धाभ्यास चल रहा है। मन उधर ही भटक रहा है क्या? मुगलों से युद्ध करना है। जब तक मुगलों पर विजय नहीं होती, तब तक न राज्य की नींव दृढ़ होती है और न इस नींव पर महल खड़ा हो पाता है, यही चिन्ता है!

दासी ने द्वार पर झांका, संवाद मिला कि जमाल साहब के साथ साईंदास आए हैं। उसे प्रसन्नता हुई, परन्तु वह उन्हें कैसे बताये?

हेमचन्द्र ने आंखें खोल दीं। पद्मासन से उठकर सहज ढंग से बैठ गए। हाथ जोड़ा, सामने पार्वती-पारो दिखाई पड़ी। पार्वती सामने से हटने लगी।

वे बोल उठे-'पारो! तुम देवी हो। जुड़ी हुई हथेलियों को देख कर हट क्यों रही हो?'

'मैं पूजा में सहयोगिनी हूं, पूज्या नहीं हूं।'

'रम्या भी पूज्या होती है।'

'अभी तर्क-विनोद के लिए समय नहीं है, महाराज! बाहर भैया के साथ साईंदास आए हैं।'

'तो चलो मिल लिया जाय। पूजा ध्यान के बाद संत-समागम उचित ही है।'

दोनों राजभवन के बाह्य कक्ष में आए। वहां जमाल मोहन के साथ साईंदास बैठे थे, राजदंपति ने नमस्कार किया। साईंदास ने सद्गुरु कबीर का नाम लेकर आशीर्वाद दिया।

जमाल मोहन ने कहा-'साईंदास जी मिलना चाह रहे थे। पर राजभवन में आने से हिचक रहे थे। मेरे अनुरोध पर आपने आने का कष्ट किया है।'

'मुझसे मिलने में संकोच क्यों?' हेमचन्द्र ने कहा।

'यही तो मैं कह रहा था।'

हेमचन्द्र ने साईंदास से सद्गुरु वाणी के लिए अनुरोध किया।

साईंदास ने कहना आरम्भ किया-'सद्गुरु ने सभी मानवों के लिए एक राम एक रहीम की बात की है, और मानव-मानव के बीच के भेदभाव को मिटाने का यत्न किया है। उनका दिव्य सन्देश फैल रहा है। हिन्दू राम-रहीम की एकता की बात को समझ रहे हैं। हिन्दी मुसलमान भी समझ जाते हैं, पर ये अरबी-फारसी-तुरुक जानकर भी सुनना नहीं चाहते। सूफी मिजाज के तुरुक जरूर सुनते-समझते हैं। हिन्दू राम-रहीम की बात को मान लेते हैं, लेकिन शूद्रों और अछूतों के प्रति इनका व्यवहार बुरा है। सद्गुरु इन्हें सद्बुद्धि दें। राज की ओर से भी कोशिश हो कि मानव-मानव के बीच का फर्क दूर हो।'

हेमचन्द्र ने इसे सद्गुरु का आदेश समझकर स्वीकार किया। साईदास ने सहर्ष सूचना दी कि सूफी शायर मंझन साहब ने आपके प्रति शुभकामनाएं भेजी हैं। वे दूर निकल गए हैं, वे इधर आयेंगे तो अवश्य ही मिलेंगे।

उसी समय संवाद मिला कि धर्मपाल शर्मा का आगमन हुआ है। हेमचन्द्र मिलने को बेचैन हो उठे, शीघ्र ही उन्हें बुलाया।

पैरों की आहट सुनाई पड़ी, धर्मपाल आ गए।
'आइए, धर्मपाल शर्मा! राजदूत का स्वागत है!'
'महाराज की जय हो!' धर्मपाल निकट आकर झुका। हेमचन्द्र ने बैठने का अनुरोध किया और यात्रा का समाचार पूछा।
'महाराज! आपके विक्रम और पराक्रम की चर्चा सर्वत्र है। दिल्ली विजय पर सबको आश्चर्य है, मुगलों के संकट का भी अनुमान है। परन्तु सभी राजे-महाराजे एक-दूसरे से अलग-अलग रहने में अपना गौरव मानते हैं। सबको अपनी शक्ति पर विश्वास है, वे तलवार और अभिमान के धनी हैं। परन्तु वे एक साथ मिल नहीं सकते। अखण्ड भारत की चिन्ता नहीं करना चाहते। पता नहीं कैसे महाराणा सांगा ने इन्हें जोड़ रखा था! एक-दो ने मेरे अनुरोध पर विचार करने का वचन दिया है। अधिकांश ने आपके लिए खत लिखने के बहाने से इनकार किया है। कुल मिलाकर निराशा ही मिली है।'

हेमचन्द्र साईंदास की ओर देखने लगे। साईंदास ने कहा-'महाराज! यह रामभक्त की आवाज नहीं है, यह तो रोगी की आवाज है। इस रोग की दवा संत कबीर की वाणी है, उन्हें यह सब बताना पड़ेगा।'

जमाल मोहन ने श्रद्धा से सर हिलाया। राजा हेमचन्द्र के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आयीं। दो क्षण के बाद क्षोभ झलक आया, और वे क्षुब्ध स्वर में बोले - 'इस पवित्र भारतभूमि पर एक तुर्क गुलाम ने तुर्क शासन आरम्भ किया था। कुतुबुद्दीन ऐबक एक खरीदा हुआ गुलाम था। उस विदेशी दास के शासन को सबने सहा, दिल्ली गवाह है। तुगलक खानदान को शुरू करने वाला भी एक गुलाम था, उस गुलाम ने देश पर भी हुकूमत की।

'बर्बर तैमूर और चंगेज खां के रक्त से जन्मे मुगल सारे देश को धमकी दे रहे हैं, और हमारे राजे-महाराजे अपने अभिमान की कोठरी में बन्द हैं, यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

'आज एक परिवर्तन आ रहा है, विजेता अफगान-पठान रिआयाहिन्दुओं के साथ बैठने लगे हैं। सबने मिलकर मुगलों को पराजित किया है। सबने मुझे मुगलों से अन्तिम संघर्ष के लिए अवसर दिया है, पर ये राजपूत इस सत्य को समझने को तैयार नहीं हैं। यह देश का दुर्भाग्य है, धर्मपाल!

'मुगल मुझे काफिर कहकर गालियां दे रहे हैं, और अपने राजा राणा-रावल भी मेरी उपेक्षा कर रहे हैं। यह अविवेक है।

'मैं अकेला रक्त दूंगा, प्रजा साथ दे रही है। मेरा संकल्प कालगति से एक बिन्दु पर मिलकर आगे बढ़ रहा है, इसे कोई रोक नहीं सकेगा।'

हेमचन्द्र चुप हो गए, झरोखे से बाहर देखने लगे। नील गगन में एक पंछी उड़ान भर रहा था, वह अकेला था। नहीं, वह अकेला नहीं था, पीछे-पीछे अनेक पंछी उड़ रहे थे। वह अकेला ही बढ़ रहा था, पर आकाश अछोर, अनन्त।

धर्मपाल ने कहा-'महाराज! पांच हजार राजपूत, जाट और मीणा योद्धा शस्त्रधारण कर मेरे साथ आए हैं। वे आपके साथ रक्त देने के लिए कटिबद्ध हैं।'

हेमचन्द्र का मन स्वस्थ हुआ, उन्होंने मन्दस्मिति से इस संवाद पर हर्ष प्रकट किया। उनसे मिलना चाहा। साईंदास मंगल-कामना करते हुए विदा हुए, जमाल मोहन साथ ही चला गया।

हेमचन्द्र धर्मपाल के साथ अपने नते सैनिकों के बीच आये। सबने राजा हेमचन्द्र का जयघोष किया। हेमचन्द्र ने हाथ जोड़कर सबका अभिवादन स्वीकारा। उनके प्रमुखों से प्रत्यक्ष मिलकर परिचय पाया, अपनी धरती मां के लिए रक्त तर्पण का आह्वान करते हुए उनकी रणकला को देखने की इच्छा की।

सैनिकों ने दुन्दुभि और डंके की आवाज पर अपनी रणकला को बारी-बारी से प्रशित किया। तलवार और भाले के ये प्रदर्शन रोमांचकारी थे। राजा हेमचन्द्र का मन बांसों उछलने लगा, सबको बधाई दी।

सहसा धर्मपाल ने घोषणा की- 'महाराज हेमचन्द्र विक्रमादित्य, जिनके विक्रम से मुगल थर्रा उठे हैं, आपके सामने अपनी रणकला प्रस्तुत करेंगे।'

जयघोष से आकाश गूंजने लगा। हेमचन्द्र ने दोनों हाथों में तलवार लेकर अपनी रणकला को दिखाया। जयकार के शब्द नंगी तलवारों की कौंध के साथ वातावरण को भेद डालते थे। राजपूताने से आए सैनिक और सेनानी अपने दिल्ली-आगमन पर संतुष्ट हुए,

उनका उत्साह बढ़ गया।

उसी समय शादी खां जमाल मोहन के साथ आते दिखाई पड़े। हेमचन्द्र उधर ही उन्मुख हुए। शादी खां पास आ गए, देखा कि चेहरे पर थोड़ी परेशानी है।

शादी खां ने कहा-'महाराज! इस बूढ़े जईफ को आराम करना चाहिए, लेकिन आराम नहीं मिलता। इनसे एक खबर सुन लें, और खबरदार हो जायें।

जमाल ने बताया-'सरवर और मुल्ला दो मुगलों के साथ दिल्ली में मौजूद हैं, वे पठान सिपाहियों को आपके खिलाफ भड़का रहे है।'

'चाचा जी! मुझसे राय लेने की क्या जरूरत थी! उन्हें फौरन कैद किया जाय। किसी की गद्दारी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।
'यही हो।' यह कहकर शादी खां जमाल के साथ सरवर और मुल्ला को गिरफ्तार करने चल पड़े।

पैंसठ

हेमचन्द्र ने अफगान राज के पुराने वजीरों में से अधिकांश को थोड़े हेरफेर के साथ पुनर्नियुक्त कर दिया था। एक तो सिकन्दरशाह सूर के साथ चला गया था, दूसरे की मौत हो गई थी। तीसरा वयोवृद्ध हो चुका था, चौथा उथल-पुथल में छिपा हुआ था। इसलिए कुछ नये लोग मंत्रिमंडल में सम्मिलित कर लिये गए। सर्वोपरि कार्य करने की व्यवस्था को बदलने का प्रयत्न होने लगा।

राजसभा में सभी उपस्थित थे, शहनाई बज रही थी। राजा हेमचन्द्र उपस्थित हुए, साथ में गुप्तचर प्रधान था। वजीरे आजम के इशारे पर प्रधान ने बताया कि महाराज की वीरता और फौज के सैलाब के सामने मुगल सरदार सिकन्दर खां और तारदीबेग को भागना पड़ा है। मुगलों में दहशत है, वे काबुल लौट जाना चाहते हैं। सभी मुगल सरदार अकबर को काबुल से नयी फौज लेकर आने की सलाह दे रहे हैं, लेकिन बैरम खां लौटना नहीं चाहता है। इसी उधेड़-बुन में चौदह साल का अकबर पड़ा हुआ है, वह खुद कुछ फैसला नहीं कर पा रहा है।

हमारे जासूस उनमें खौफ फैलाने में कामयाब हो रहे हैं। रास्ते का रोड़ा है-बैरम खां। वह तारदी बेग से खफा है। उसने उसे कैद कर रखा है और वह हमारी फौज में बगावत कराने की साजिश कर रहा है। उसके जासूस भी इधर आ रहे हैं।

हम मुगलों के जासूसों से होशियार हैं। कुछ तो गिरफ्तार हो चके हैं।'-हेमचन्द्र ने आश्वासन दिया।

सरवर अली अपने चार साथियों के साथ हथकड़ियों में लाया गया। वह गुर्राकर देख रहा था और सबके सर झुके हुए थे।

'सरवर अली! कभी औरत के लिए और कभी दौलत के लिए फसाद कर रहे हो। खूबसूरत रक्कासा को बादशाह आदिलशाह सूर के पास भेजा है बरबाद करने के लिए, और अब गद्दारी कर रहे हो!'

हेमचन्द्र ने भर्त्सना की।

'काफिर के खिलाफ खड़ा होना गद्दारी नहीं, जेहाद है।' सरवर ने बेखौफ जवाब दिया।

‘गैर मुल्की हमलावर का साथ देना गद्दारी है, सरवर! इस गद्दारी के सारे सबूत मिल गए हैं, गद्दारों को सख्त सजा दी जाय।' वजीरे आजम ने राय दी।

'इन सबको कैदखाने में रखा जाय, सरवर को तो हरखलाल के साथ कैदखाने की अंधेरी कोठरी में....न्यायाधीश अन्तिम निर्णय देंगे।' राजा हेमचन्द्र ने आदेश दिया।

सरवर और जमाल की आंखें मिलीं। लगा कि दोनों एक-दूसरे को आंखों की आग से जलाकर खाक कर देंगे। वजीरे आजम के इशारे पर कैदी कैदखाने की ओर ले जाए गए।

राज सभा ने सन्तोष की सांस ली।

उसी समय पूर्वी क्षेत्र-गंगा-यमुना के दोआब से कुछ ग्रामीण आ गए। उन्हें राजसभा में प्रवेश की अनुमति मिली, सभी फटेहाल थे। कुछ दरबारी तो उन्हें देखकर खीझ रहे थे।

हेमचन्द्र ने दोआब के क्षेत्र का समाचार पूछा। ग्राम प्रमुख ने उठकर कहा
— 'महाराज! गांवों में अकाल पड़ा हुआ है। सावन-भादों की फसल नहीं हो सकी है, कार्तिक की फसल की भी आशा नहीं है। हम परगने के हाकिमों से बार-बार निवेदन कर चुके हैं, कोई सुनवाई नहीं है। खाने के लिए अन्न नहीं है, खिराज और मालगुजारी कहां से दें! किसान और कमकर जन-सभी गांवों को छोड़कर भागने की सोच रहे हैं, लेकिन कहां जायें? लड़ाई और उथल-पुथल में कहां जायें, क्या करें?

'इसलिए हम अपने महाराज के पास आए हैं।'

'यहां से निराश नहीं होना है, राज प्रजा का ही है। राज के लिए प्रजा नहीं है। मैं स्वयं अपनी प्रजा से मिलने चलूंगा और यथासम्भव प्रबन्ध करूंगा।' राजा हेमचन्द्र ने घोषणा कर दी।

लेकिन बैरम खां से निपटने के लिए आपका दिल्ली में रहना जरूरी है। उसे मौका नहीं देना है, जल्द कूच करके उसे हम कुचलना चाहेंगे।'-शादी खां ने सलाह दी।

'जंग की तैयारी आप करेंगे, सालारे-आजम! मैं दोआब से होकर आता हूं।'

'फौज के लिए अनाज, कपड़े और हथियार-सभी चाहिए।'

'सब हो जाएगा, मुझे थोड़े समय के लिए प्रजा के पास जाने दीजिए। प्रजा भूखे मरे तो राजा किसलिए!'

ग्रामीण प्रसन्न हो उठे, पर शादी खां इस ऐलान से सन्तुष्ट नहीं थे। राजा को लाहौर की ओर चलना है, अभी रिआया के पास नहीं जाना।

दूसरे दिन राजा हेमचन्द्र योगी शिवनाथ और चौधरी नरवाहन के साथ ग्रामीणों के लिए दोआब क्षेत्र की ओर चल पड़े। सोचते जा रहे थे-सारे संकट मेरे लिए इकट्ठे हो रहे हैं! उधर युद्ध की आग धधक रही है। विदेशी मुगलों से मुक्ति के लिए युद्ध करना है। हम कब तक विदेशी हमलों के शिकार होते रहेंगे! लेकिन इधर अकाल की आग में प्रजा झुलस रही है, यह मेरी अग्नि-परीक्षा है।

गांव का क्षेत्र आरम्भ हो गया। खेतों में छोटे-छोटे पौधे सूख रहे थे, पेड़ों के पत्ते गिर रहे थे। पशु मिट्टी सूंघ-सूंघकर निराश हो रहे थे। जहां-तहां मरे पशुओं की लाशें पड़ी हुई थीं, कौवे और गीध मंडरा रहे थे।

गांव में बूढ़े-बच्चे-जवान भूख से बेहाल दिखाई पड़े, न पेट में अन्न था और न शरीर पर कपड़े। उनका हाहाकार हृदय को छेदने लगा। नंगे और भूखों की भीड़ हर गांव में दिखाई पड़ी। राजा हेमचन्द्र बढ़ते गए, सर्वत्र भुखमरी का दृश्य था।

गांवों के चौधरी और परगने के हाकिम आए। शिकदार, अमीन और पटवारी को लापरवाही के लिए कसा गया। इस अकाल और भुखमरी के लिए उनको जिम्मेवार ठहराया, सबके सर झुके हुए थे।

राजा हेमचन्द्र ने आदेश दिया-'राज्य के अन्नागार से सबको अन्न दिया जाय। बाजार में कम मोल पर कपड़े और कम्बल बिकेंगे। जो बिल्कुल दरिद्र हैं, उन्हें कपड़े मुफ्त दिए जाएं, और इस वर्ष खेत की मालगुजारी की माफी रहेगी। जजिया की वसूली नहीं होगी।

'ये सारे हाकिम और मुलाजिम राहत के काम में लगेंगे। लापरवाही होने पर सख्त सजा मिलेगी।

'और योगीराज शिवनाथ तथा चौधरी नरवाहन इस सहायता कार्य की देखभाल करेंगे।'

योगी जी तथा चौधरी नरवाहन ने शीश हिलाकर इस निर्णय को माना।

राजा हेमचन्द्र ने दुःखी स्वर में कहा–'योगिराज! इस स्थिति में मुगलों से

मुकाबला कैसे होगा? उधर विशाल सेना के लिए अन्न, वस्त्र और शस्त्रों की व्यवस्था हो रही है। खजाना खाली हो रहा है, और इधर यह अकाल...!'

'महाराज! अकाल ने भयानक चोट की है, पर आप कभी अधीर नहीं हुए हैं। आज भी अधीर नहीं होना है।'-योगी ने समझाया।

'हम सारी व्यवस्था करेंगे। आप निश्चिन्त होकर बैरम खां की ललकार का जवाब दें।- नरवाहन ने कहा।

'मैंने कभी पीठ नहीं दिखाई है, आज भी पीठ नहीं दिखाऊंगा। पर यह हाहाकार नहीं देखा जाता। धरती मां क्या चाहती हैं?'

'धरती मां चाहती हैं कि आप इतिहास में नया अध्याय जोड़ दें। पारो की चिता की लपट हो या इस अकाल की लपट. 'आप प्रेरणा लेकर अग्रसर हों।'-योगी ने एक नया विश्वास जगाया।

'हां, गुरुदेव! आपके आशीर्वाद से मेरा संकल्प आगे बढ़ेगा। इस संक्रांति और संघर्ष में एक नये भारत का जन्म होगा।'

'तों अब आप राजधानी जायें। यहां की चिन्ता हम पर..!'योगी शिवनाथ और नरवाहन ने एक साथ कहा।

उस रात हेमचन्द्र को नींद नहीं आ सकी। बायीं तरफ प्रजा का हाहाकार सुनाई पड़ रहा था, दाहिनी तरफ बैरम की ललकार थी। वे करवट लेते रहे, रात के तीसरे प्रहर में नींद आई तो सपने मंडराने लगे।

एक बूढ़ी मां पास आकर बोल पड़ी-'हम पसीने से अन्न उपजाते हैं, और राजे-महाराजे तलवार दिखाकर राजभवन खड़ा कर लेते हैं। राजभवन छोड़कर यहां क्यों आए?'

चौधरी नरवाहन को क्रोध आ रहा था। राजा ने उन्हें शांत करते हुए कहा- 'दुखिया मां से मिलने आया हूं। देर से खबर मिली, इसलिए विलम्ब से आया हूँ।

'बेटे को बेचना चाहती हूं। खरीदकर बुढ़िया पर दया करोगे?'
- बुढ़िया ने थरथराते स्वर में कहा।
'इस राज में बेटा-बेटी को बेचना-खरीदना पाप है, मां!'

'तो तुम मुझे मार डालो अपनी तलवार से या एक मुट्ठी अन्न दे दो।....वह अफगान बादशाह लूट कर कहां भाग गया है?'

'ऐसा मत कहो, मां! राजा से भूखे पेट के लिए अन्न पाना अधिकार है। सबको अन्न मिलेगा, और मुझे आशीष दो।'

'भूखे पेट आशीष!...इस फटे आंचल से आशीष!'

हेमचन्द्र की नींद टूट गई। ललाट पर पसीना आ गया।

छियासठ

दिल्ली पहुंचते ही राजा हेमचन्द्र को जानकारी मिल गई कि बैरम खां ने तारदीबेग की हत्या कर सारे मुगल सरदारों को डरा दिया है। सबको काबुल के बदले दिल्ली की तरफ बढ़ चलने के लिए ऐलान कर दिया है, अकबर ने सहमति दे दी है।

राजा हेमचन्द्र ने वजीरों की बैठक बुलाई। अकालग्रस्त गांवों में अन्न-वस्त्र के शीघ्र वितरण की व्यवस्था का निर्देश दिया। साथ ही भूमिकर (मालगुजारी) और जजिया की वसूली को बन्द करने का निर्णय भी बता दिया।

राजा हेमचन्द्र के अन्दर भी गौरव का भाव जगा। पर विनम्रता के साथ शादी खां की तारीफ को कबूल किया। गजराज सिंह, विजयवाहन, खेमराज और बहादुर खां से भेंट की।

गजराज सिंह ने सर ऊंचा कर कहा---'महाराज! हम इसी दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सारे हिन्दू सैनिक अपनी धरती मां की रक्षा के लिए प्रतिज्ञा कर चुके हैं। आपने सारे भारत की स्वाधीनता का सभी के भाव मनों में जगाया है। वह हमारी आत्मा का भाव बन चुका है।'

खेमराज ने मुस्कराते हुए कहा- 'मैंने तो गांव में ही साथ-साथ जीने और मरने की कसम खा ली थी। वह समय आ गया है, महाराज!'

विजयवाहन बोल उठा---'सैकड़ों बरसों का सपना साकार हो रहा है, देश को रक्त चाहिए। अन्तिम बूंद तक रक्त दूंगा।....मैंने पिताजी को भी कह दिया है।'

बहादुर खां का गम्भीर स्वर सुनाई पड़ा-'अत्याचार ने हमें गांव के कोने में फेंक दिया था। आपने प्यार से अपनाया, हमें आप जो कहें-भ्रष्ट राजपूत या हिन्दी मुसलमान! हम अपनी धरती मां के लिए मर मिटेंगे, मुगलों को भागने की राह नहीं मिलेगी।'

हेमचन्द्र की भुजाएं फड़कने लगीं। मन्द मुस्कान के साथ तलवार उठाकर सबका अभिनन्दन किया।

जय ध्वनि देर तक गूंजती रही।

उस रात राजा हेमचन्द्र को नींद नहीं आ रही थी। वह करवट बदल रहे थे। लग रहा था कि बायीं तरफ अकाल के कारण प्रजा का हाहाकार है, दाहिनी तरफ बैरम खां की ललकार है। काल की गति सांप के समान टेढ़ी है। जब-तब डंसने के लिए घेर लेती है, इसके फण को कुचलना होगा!

'आप जगे हुए हैं?' पार्वती ने पूछा।
'हां, पारो! तुम भी तो जगी हुई हो।'

'कल सेना का शंख बजेगा। डंके और दमामे गड़गड़ायेंगे, मेरा हृदय धड़कने लगा है। आज प्रभात में मां ने जब पूजा का शंख बजाया तो लगा कि सेना का शंख स्वर आपको बुला रहा है। तब से मेरे हृदय में...।'

'हां, पारो!....पारो की भस्मी को देखकर संकल्प किया था, वही संकल्प भारत मां के लिए विराट रूप धारण कर चुका है। मुझे पानीपत के मैदान में पहुंचना है।'

'मैं क्या करूंगी?'

'विजय की मंगल कामना....पारो!'
'मन अधीर हो रहा है, इसे कैसे सम्भालू?'
'फिर मां को....नूरी को...चन्दा को कौन सम्भालेगी?'
'मैं सम्भालूंगी? मेरी धड़कनों को कौन धीर बंधायेगा?'
'मेरा स्नेह और मेरा विश्वास...पारो!'
'मेरी आंखें लगती हैं। पलकें बन्द हो जाती हैं, और तीर और तलवार की चमक कौंध जाती है। आंखें खुल जाती हैं, एक त्रास फैल जाता है।

तीरों और तलवारों की चमक में ही मेरा जीवन बढ़ता गया है, पारो! इनसे भय कैसा! इस चमक को आंखों में भर लो, और नये विश्वास के साथ भविष्य को देखो।'

पार्वती चिहुंक कर हृदय से लग गई।

दूर से गजेन्द्र की बांसुरी का वेदनाभरा स्वर गूंजता हुआ आ रहा था।

सड़सठ

दूसरे दिन सुबह के कुहासे में राजा हेमचन्द्र और सालारे-आजम शादी खां की देखरेख में पैदल सैनिकों और तोपचियों का हरावल दस्ता सईदी खां के साथ पानीपत के लिए चल पड़ा।

उधर बैरम खां ने अलीकुली खां शैबानी को सिपहसालार बनाकर हरावल दस्ते के साथ अपनी आधी फौज भेज दी। बाकी फौज अकबर के साथ थी, यह फौज थानेसर के पास आकर ठहर गई। थोड़ा आराम कर बैरम खां अकबर के साथ करनाल होते पानीपत की ओर बढ़ता गया।

शादी खां सालारे-आजम थे। गजराज सिंह, विजयवाहन, खेमराज, बहादुर खां और हाजी खां ने अपनी-अपनी टुकड़ियों को संभाल लिया। डंके, नगाड़े और दमामे बज रहे थे। तुरही के स्वर आकाश को भेद रहे थे। लहराते झंडों से लग रहा था कि पंख पसारे पछी दूर-दूर उड़ानें भरने को बेचैन हैं।

हेमचन्द्र ने राधावल्लभ जी की प्रतिमा को प्रणाम किया, पूरी शक्ति से शंख बजाया। दो क्षण के बाद पारो की भस्मी पर फूल चढ़ाये। मां दुर्गा कुंवर से आशीष पायी। पार्वती ने आसुओं को रोककर गले में माला डाल दी, और वह धरती की ओर देखने लगी।

हेमचन्द्र ने गम्भीर स्वर में कहा- 'मेरी तलवार मेरे हाथों में दो, पार्वती!'

पार्वती ने तलवार को आगे बढ़ाया। हेमचन्द्र ने तलवार को धारण कर लिया।

नूरी ने पास आकर दूसरी तलवार सौंप दी और कहा -'मेहमान राजा! आपका इकबाल बुलन्द हो।'

जमाल मोहन ने गेंदे की जयमाला पहना दी।

हेमचन्द्र ने आग्रह किया - 'आप दोनों को आगरा जाना है। अकालपीड़ितों को सस्ते वस्त्र मिलें, इसी पर ध्यान देना है। चाचा हरसुखलाल इस कार्य में मदद देंगे। उनसे मेरा अनूरोध कर देंगे।'

हम जायेगे। अकाल-पीड़ितों के लिए सस्ते कपड़ों का प्रबन्ध होगा। आप निश्चिन्त रहें, आप विजयी हों।'-जमाल मोहन ने आश्वासन दिया।

चन्दा शूल लेकर आ गई। शूल को राजा हेमचन्द्र के हाथों में देते हुए कहा-'महाराज ! युद्ध-क्षेत्र में पारो और चन्दा के अपमान को प्रत्येक क्षण स्मरण करायेंगे। यह युद्ध मातृभूमि और मातृजाति (स्त्रियों) की प्रतिष्ठा के लिए होगा।'

'मुझे प्रत्येक क्षण स्मरण रहेगा, चन्दा! प्रत्येक पल स्मरण रखूगा। ये शब्द यमराज से भी टकरा जाने की प्रेरणा देंगे, और यहां गजेन्द्र 'सिंह की तलवार दिल्ली दुर्ग की रक्षा में कौंधती रहेगी बांसुरी के साथ।'

'मैं दुर्ग की रक्षा में तत्पर रहूंगा, महाराज!'-गजेन्द्र सिंह मुखर हो उठा।

हेमचन्द्र ने आकाश की ओर देखा। कुहासा छंट चुका था। सूर्य का प्रकाश फैलने लगा,

यह सन् १५५६ ई० का चार नवम्बर था।

हेमचन्द्र हवाई नामक मस्त हाथी पर सवार हो आगे बढ़े। दूसरे हाथी पर सालारे-आजम शादी खां सवार हुए। गजराज सिंह, विजयवाहन, खेमराज, बहादुर खां और हाजी खां ने अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो सेना का आह्वान किया। विशाल वाहिनी चल पड़ी। राजपथ के दोनों ओर खड़ी प्रजा ने जयघोष कर अपनी मंगल कामना की।

दिल्ली से बाहर आते ही सेना बिना रुके आगे बढ़ती रही। हेमचन्द्र ने सोचा कि हरावल दस्ते के साथ आग उगलने वाली तोपें हैं। उनके हरावल दस्ते के पास तोपें नहीं होंगी। ये तोपें ही शैबानी को धराशायी कर देंगी, और यह विशाल सेना बैरम और अकबर को पेशावर से आगे ढकेल कर ही लौटेगी। हरावल दस्ते की मदद के लिए किसी को भेजने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए। पर मन में एक खटका-सा हुआ। शादी खां से सलाह की।

शादी खां ने कहा-'हमारी फौज बढ़ती जा रही है। रुकना तो नहीं है, वैसे हरावल की मदद के लिए एक दूसरी टुकड़ी को भेजना चाहिए।'

अचानक खबर मिली कि अलीकुली खां शैबानी की ललकार पर मुगलों ने अपने सर पर कफन बांधकर तोपों को चारों ओर से घेर लिया। तोपों पर कब्जा कर लिया, सिपाही बिखरने लगे हैं। सईदी खां मदद के लिए इन्तजार कर रहे हैं।

हेमचन्द्र को लगा कि सूर्य कुहासे में छिप गया है, अन्धकार छा गया है। यह कैसे हो गया? लेकिन वे इसकी चिन्ता नहीं करेंगे। तोपों से भी भयानक नंगी तलवारों की धार है। हां, यह अशुभ हो गया। अशुभ को शुभ हो जाना है।

उनके आह्वान पर सेना बढ़ती रही, आगे बढ़ने पर सईदी खां अपनी बची-खुची फौज के साथ आ मिला। चेहरा पीला पड़ गया था, शादी खां ने हिम्मत बढ़ाई।

उधर शैबानी की जीत की खबर को सुनकर बैरम खां अकबर के साथ पानीपत के पास पहुंच गया।

५ नवम्बर सन् १५५६ ई० को दोनों सेनाएं आमने-सामने आ गयीं। नगाड़े, दमामे, डंके और तुरही की आवाज के साथ हाथियों की चिग्घाड़ और घोड़ों की हिनहिनाहट मिलकर भयानक उत्तेजना पैदा करने लगी। सेनापतियों की ललकार के साथ दोनों सेनाएं गुथ गयीं। हेमचन्द्र ने अपनी गजसेना को दोनों छोरों से आगे बढ़ाया। पन्द्रह सौ पर्वताकार मदमस्त जंगी हाथी थे।

मुगल सिपहसालार खानजमां शैबानी ने अपने तोपचियों को आग उगलने का हुक्म दे दिया। अब मुगलों के पास तोपों की संख्या दुगुनी थी। वे तो फौज के बीच में खड़ी थीं। इन तोपों ने आग उगलना शुरू कर दिया।

हेमचन्द्र की सेना का मध्य भाग घुड़सवारों का था। वे तोपों की आग व गोलों से

परेशान हो उठे। घोड़ों की हिनहिनाहट बढ़ गई, मौत बरस रही थी।

हेमचन्द्र ने गजराजसिंह को आदेश दिया कि तोपों पर उछलकर तोपों का मुंह बन्द कर देना है। गजराज सिंह के संकेत पर वीर सैनिक जयघोष कर उछल पड़े। आग में जलते- मरते-बचते उन्होंने तोपचियों को खत्म कर दिया। तोपों को बेकार बना दिया। तोपों के चुप हो जाने पर पैदल सैनिक तलवार और भाले लिये आगे बढ़े। साथ ही मदमस्त हाथी भी बढ़ने लगे। सूड़ों में बरछे लिये और हौदे में वीर धनुर्धरों को बैठाए हाथी झूमते हुए बढ़ चले। हाथियों के सिर पर डरावने जानवरों की खालें पहनाई गई थीं। पेट पर लोहे की पाखारें, मस्तक पर ढालें, दोनों तरफ कटारियां और सूड़ों में जंजीरें और तलवारें हिलाते हुए वे चल रहे थे।

हेमचन्द्र ने दाहिनी छोर पर मस्त गजसेना के साथ आक्रमण किया। साथ में बहादुर खां और खेमराज भी थे। गजसेना मुगलों को कुचलती हुई आगे बढ़ने लगी। हेमचन्द्र की ललकार पर बहादुर खां और खेमराज की टुकड़ियों के वीर सैनिकों ने भीषण आक्रमण किया। मुगल फौज एक जंगी हाथियों से कुचलने लगी। दूसरी तरफ तीरों और तलवारों की मार से उनकी चीखें फैलती गयीं।

खानजमां शैबानी फौज के बिचले हिस्से से भागकर आया। वहां बैरम खां मरहम खां के साथ डट गया। शैबानी ने दाहिनी तरफ आकर अपने भानजे हुसैन कुली खां को ललकारा। मुगल फौज थोड़ी संभल गई। उसने आगे बढ़ने की कोशिश की, परन्तु हेमचन्द्र की गजसेना आगे बढ़ती गई।

शैबानी ने कोशिश की कि तलवारों से जंगी हाथियों की सूड़ों को काट डाला जाए, परन्तु हाथी पर सवार शूरों ने उन्हें अपने तीरों से बेंध डाला। शैबानी को पीछे हटना पड़ा, बहादुर खां और खेमराज बढ़ते रहे।

अब हेमचन्द्र ने अपने विशाल हवाई हाथी पर बायीं तरफ पहुंच गए। मुगल फौज के बायें छोर को कुचलने के लिए गजसेना चिंघाड़ती हुई आगे बढ़ी। हेमचन्द्र की ललकार सुनाई पड़ी। विजयवाहन के सैनिक राजपूताने से आये सैनिकों के साथ तलवार और भाले लिये झपट पड़े। मुगल फौज हेमचन्द्र की गजसेना को अपनी ओर आते देख घबरा उठी। शाह कुली मरहम खां दौड़कर आया। उसने अपनी टुकड़ी के साथ हाथियों पर हमले किए। हाथी घायल होने लगे। हेमचन्द्र का क्रोध उफन पड़ा।

हाथी पर सवार योद्धा अपने तीखे तीरों से लक्ष्यभेद करने लगे। मीणा सैनिकों ने तीरों की वर्षा शुरू कर दी, मुगल फौज पीछे हटने लगी। हेमचन्द्र के आदेश पर गजसेना ने पीछे हटती हुई मुगल सेना को कुचल डाला, मुगलों में हा-हाकर मच गया।

फौज के बिचले हिस्से को बैरम खा और अलीकुली खां शैबानी ने संभालने की पूरी कोशिश की। उन्होंने शादी खां, हाजी खां और सईदी खां पर एक साथ हमला किया। मध्यभाग का युद्ध भीषण हो उठा, वृद्ध शादी खां जवांमर्दी से लड़ते हुए आगे बढ़ने लगे। परन्तु वे मुगलों से घिर गये।

हेमचन्द्र ने दूर से देखा, रोष उबल पड़ा, वे अपने हाथी पर आगे बढ़े। मध्यभाग के भयानक युद्ध में शादी खां भी शहीद हो गए। हेमचन्द्र के सामने सालारे-आजम शादी खां का कटा हुआ सर झलक रहा था। वे स्वयं धनुष-बाण को संभालकर युद्ध करने लगे। अब मुगलों को नहीं छोड़ना है, बायें और दाहिने हिस्से तो कुचल दिए गए हैं। अब यह अन्तिम युद्ध है, और वे बढ़ते चले गये।

शैबानी ने बैरम खां के इशारे पर अपनी सारी ताकत लगा दी। मौत और जिन्दगी का सवाल था। इसी जंग पर सब मुनहसर है। हेमू बढ़ता आ रहा है, दोनों ओर से तीरों की बौछार शुरू हो गयी। लगा कि आसमान छिप गया। तीरों की छाया में हेमचन्द्र का मस्त हाथी बढ़ता जा रहा था। मुगल फौज के पैर कांपने लगे, पीछे हटने की नौबत आ गयी, वे पीछे हटने लगे।

उसी समय अचानक एक तीर हेमचन्द्र की आंख में आ लगा।

आंख से खून बहने लगा, हेमचन्द्र ने अपने हाथ से तीर को खींचकर निकाल फेंका। आंख पर रूमाल बांध लिया, धनुष को फिर से संभाल लिया। तीर चला, मुगल आंखें फाड़कर देखने लगे। शैबानी को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसकी फौज तो पीछे हट ही रही थी। कुछ ही देर में हेमचन्द्र की आंख में पीड़ा बढ़ने लगी, पीड़ा बढ़ती गयी, बेहोशी छाने लगी। सहसा वह हौदे से गिर पड़े, दूर खड़ा शैबानी मुस्कराया। आंखों में कुछ चमका, उसने हल्ला कर दिया कि हेमू मारा गया। आवाज बढ़ती गयी, महावत ने हवाई हाथी को मोड़ लिया। उसने युद्धक्षेत्र से हाथी को हटा लेने की कोशिश की।

अफगान-पठान सिपाहियों ने देखा कि हौदे में राजा हेमचन्द्र गिर पड़े हैं। उन्हें यकीन हो गया था कि राजा मारे गए। सालारे-आजम तो पहले ही मारे जा चके हैं। उनकी हिम्मत टूट गयी। मुगल सिपहसालार शैबानी ने 'अल्ला हो अकबर' के नारे लगाकर हमला बोल दिया। हेमचन्द्र की फौज भागने लगी। बहादुर खां, गजराजसिंह, विजय वाहन और खेमराज ने अपनी सेना को संभालने की कोशिश की लेकिन फौज तितर-बितर होने लगी। महावत बेहोश हेमचन्द्र को लिये हटता जा रहा था। मुगलों ने दूनी ताकत से हमला किया। हारती बाजी जीत में बदल गई, मुगल जीत गये।
बैरम खां की नजर बेहोश हेमचन्द्र पर थी। उसने शैबानी को भागते हुए महावत को पकड़ने का हुक्म दिया। मुगलों ने आगे बढ़कर हवाई हाथी को घेर लिया। बेहोश हेमचन्द्र पकड़ लिये गये।

पानीपत के मैदान में मारने और भागने का रोमांचकारी दृश्य खड़ा हो गया। चारों तरफ लाशों का अम्बार था। खून की धाराएं बह रही थीं। चीख-चीत्कार से आसमान थर्रा रहा था। मुगल अपनी जीत के नारे लगा रहे थे।

६ नवम्बर १५५६। इसी दिन खून से लथपथ धरती ने देखा कि बेहोश हेमचन्द्र अकबर और बैरम खां के सामने लाये गये।

बैरम खां ने कहा- 'बादशाह सलामत के हुजूर में अफगानों का राजा हेमू बक्काल मौजूद है। इसने मुगलों की ताकत से टकराने की जुर्रत की है। इसे आप सख्त सजा दें

□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□'

'□□□ □□□□ ! □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□' □□□□ □□ □□□□

'□□□□□□□□□ ! □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□' □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□

□□□-□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□- '□□□□ □□ □□ □□□-□□-□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□

□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ '□□□□□□ □□□□ □□□

□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□-□□□□□ □□□□ □□□□

***** □□□□□□ *****

sjeet